

जयतु श्रीस्वामिनारायणः ॥

सद्गुरु श्रीगोपालानंद स्वामीनी वातो

प्रसिद्ध कर्ता

जेराम रामजी

૨૨૧૦૭ ૬.૦.૦

[illegible]નું વ્યાખ્યાન

श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम

परमभागवत, परमहंसवर्य

सद्‌गुरुश्री गोपाळानंद स्वामी

ध. धु. आचार्यश्री रघुवीरजि महाराज

सद्‌गुरुश्री शुकानंद स्वामीनी वातो.

अक्षरनिवासी सनातन ध. धु. आचार्यश्री १०८
श्री वासुदेवप्रसादजि महाराज तथा ध. धु.
आचार्यश्री १०८ श्री देवेन्द्रप्रसादजि
महाराजनी आज्ञाथी

छपावी प्रसिद्ध करनार

सत्संगसेवक मीस्त्री जेराम रामजी
कुंभारीया (कच्छ)

प्रत १५००

किंमत रु. १-०-०

सत्संग हितार्थे

श्री सूर्यप्रकाश प्रिन्टींग प्रेसमां मणिलाल कल्याणदास
पटेले छाप्युं, पानकोर नाका–अमदावाद

अर्पण पत्रिका

जेमणे उच्च कोटीना सद्गुणोथी उत्तम प्रतिना सद्वर्तनथी आर्यधर्मसंप्रदायने निर्मळी नवीन रंग चढाव्यो छे जेओश्रीए अखिल भारतीय सनातन वर्णाश्रम संघना सभाधिवेशनमां अपूर्व यश मेळव्यो छे

सं १९९८ चरणसेवक.

कुमारिया (कच्छ)

श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

विज्ञप्ति :-

योदिव्ये सततं निजाक्षरपदे मुक्तव्रजैः पूजितो
दिव्यैश्चंदनपुष्पहारवसनैर्ध्यातो निजे हृत्कजे ॥
नैकांडाधिपतिः स्वयं करुणया धर्मालये संस्थितो
काश्यप्यां व्यतनोद् वृषं स्वमहसा तं नौमि धर्मात्मजं ॥

अर्थः—जे श्रीहरि पोताना दिव्य अक्षरधाममां अनंत अक्षर मुक्तोए दिव्यचंदन पुष्पना हारो अने वस्त्रोथी पूजायेला छे तथा ते मुक्तोए पोताना हृदय कमलमां चिंतवन करायेला छे तथा जे अनंतकोटी ब्रह्मांडना अधिपति छे तेज श्रीहरिये पोते अतिकृपा करी धर्मदेवना भुवनमां प्रकट थइ पृथ्वीमां सर्वत्र एकांतिक धर्म प्रवर्ताव्यो एवा धर्मपुत्र श्रीहरिने हुं नमस्कार करुं छुं.

अक्षरातित पूर्ण पुरुषोतम भगवान जेते अंतर्यामीपणे सर्वे जीव प्राणीमात्रने विषे रहीने कर्म फळ आपे छे जे पोताना अक्षरधामने विषे अनंत कोटी मुक्तोए सेव्या थका सदाय दिव्य साकार स्वरुपे बिराजमान छे जेनो महिमा अनंत अपार छे अने काळ, माया, पुरुषने अक्षरना नियंता छे अने ते सर्वे अव-

तारोना कारण छे तेज भगवान आपणा उपास्य इष्ट देव छे जेमणे आ पृथ्वीने विषे स्वयं अवतारीपणे धर्मदेवने भक्तिमाता थकी मनुष्यरुपे आ भरतखंडमां प्रकट थइ स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्य ज्ञाने युक्त पोतोनी एकांतिक पराभक्ति प्रवर्तावी छे तथा पोताना आश्रित जनोना हृदयमां अनादीकाळनो अज्ञानरुप अंधकारनो ज्ञानरुपी सुदर्शन चक्रथी नाश कर्यो छे एवा श्रीसहजानंदस्वामी आपणा सर्व मंगलने विस्तारो.

श्रीमद् उद्धव संप्रदायमां श्रीजीमहाराज पूर्ण पुरुषोतम भगवाननो अवतार आ आर्य भूमिमां थयो त्यारे तेमना साथे अनंत अक्षर मुक्तोने साथे लावेल तथा पोताना मूळ अक्षरधाम स्वरुप सद्गुरु श्री गोपालानंद स्वामीने पण लावेल ते वार्ता सत्संगमां सुप्रसिद्ध छे अने जेम श्रीजीमहाराजे अनंत परचा तथा चमत्कार अने ऐश्वर्य वापरी मुमुक्षु विषयीने पामर जीवोने समाधी द्वारा अने सहेज दर्शन आपीने शरणे लीधा तेमज सद्गुरु श्रीगोपाळानंदस्वामीए पण श्रीहरिजीना अनुग्रह कृपाथी सत्संगनी वृद्धि थावा माटे परचा, चमत्कार, ऐश्वर्य वापरी अनंत जीवोने मोक्ष मारगे चडाव्या छे.

सद्गुरु श्री गोपालानंदस्वामीनी वातोंनुं पुस्तक वांची मनन करी वर्तवाथी श्रीहरिजीने विषे दृढ उपासना थाय छे तेमां श्रीजीमहाराजने सर्वोपरि केम जाणवा ? अने बीजा अवतारोने तथा मुक्तोने केवी रीते तथा केवा जाणवा तेना कारणो दाखला साथे बहुज सारी रीते समजावेल छे तथा अक्षर अने पुरुषोतमनो संबंध जेवो श्रीजीमहाराजे स्वामीने समजावेल छे तेवोज स्वामीए पण वातोना प्रसंगमां वखतो वखत बहुज खुलाशाथी समजावेल छे तथा काम, क्रोधादिकना वेग केम समाववा ? इंद्रियो अंतःकरणने केवी रीते नियममां करवा ? सुख दुःख विगेरे द्वंद केम सहन करवां तथा व्यवहारमां सारे नरसे समये केम भक्तनी निष्ठा दृढ रहे त्यागी तथा हरिभक्तोए केम वर्तवुं तथा केम उपदेश आपवो तथा केवानो उपदेश ग्रहण करवो अने केवानो उपदेश ग्रहण न करवो. अने अंतकाळे श्रीजीनीज प्राप्ति केम थाय ? केवा सद्गुरु सेववा ने केवा न सेववा, उपास्य, उपासक ने धामनी शुद्धी केवी रीते समजवी विगेरे घणीज जाणवा योग्य अने भक्तजनोने उपयोगी बाबदो स्वामीश्रीए बहुज सारी रीते कहेली छे तेने भक्त जो आ वातोनुं यथार्थ श्रवण मनन अने निदिध्यास पूर्वक अभ्यास

करे तो तेने मोक्षमां कोइ जातनुं विघ्न न थाय ने ठेठ श्रीजीमहाराजनी हजुरमां निवास थाय.

आ पुस्तकमां स्वामीनी वातोनां प्रकरण बे करेल छे तेमां पहेलुं प्रकरण स्वामीएज कृपा करी वातो करेल तथा संतोए प्रश्न पूछयां अने तेना उत्तर कर्या विगेरे पोतेज लखावी सद्गुरु शुकानंद स्वामी पासे शोधावीने पोतानी पासे राखेल ते छे तथा प्रकरण बीजुं स्वामीए वातो करेल ते तथा बीजा संतो तथा सत्संगीए प्रश्न पूछयां तेना उतर कर्या ते सद्गुरु श्यामलीआ चैतन्यानंदस्वामीए वातो सांभळेल ते पोतानी स्मृतिने माटे लखी राखेल ते छे.

स्वामीश्रीनी वातोमां कोइ नाना मोटा अवतारोनुं तथा पूर्वे थइ गयेला कोइ मुक्तोनुं खंडन थातुं नथी तथा शास्त्रोनी मर्यादाथी गंभीर अने सर्वेने प्रिय लागे अने स्हेजमां समजाइ शके तेवी रीते उंचा रहस्य साथे श्रीजीमहाराजनो महिमा सारी संस्कारी अने सादी भाषामां समजावेल छे जेमां सघळुं वेदांत रहस्य तथा आत्मा परमात्मा, माया, ब्रह्म, अने इश्वरनुं विवेचन घणीज बारीकीथी समजनाराने निःसंशय थाय तेवी छे.

स्वामीनी वातोपरथी तेमने श्रीजीमहाराजनो केवो अपूर्व महिमा तथा श्रीजी विषे निष्ठा, भाव, स्नेह छे ते जणाइ आवे छे. कारण के स्वामीश्रीए वातोमां सर्वत्र श्रीजीनुं नाम लेवुं होय त्यां "श्रीहरिजी महाराज" एवो मोटो मान भर्यो शब्द वापरेल छे तेथीज चोक्कस जणाइ आवे छे के स्वामीश्रीनेश्रीजीने विषे अगाध महिमा छे प्रसंगोपात आ वातोमां स्वामीश्रीए वातोना प्रसंगना स्वरुपनुं यथार्थ ज्ञान थवा माटे स्थळे स्थळे सारां द्रष्टांतो आपेलां छे.

आ स्वामीनी वातोनुं पुस्तक प्रथमावृत्ति हस्त लेखीत प्रतो उपरथी शा. वलभजी कुबेरदासे सं. १९६० नी सालमां छपावी बहार पाडी हती परंतु समयानुसार ते प्रतो पुरी थइ जवाना कारणे बीजी आवृत्ति छपाववामां में आशा करेल अने ते काम कोइ सारा संतमारफते कराववा धार्युं परंतु जमाना प्रमाणे सर्वे कोइ ने कांइक ने कांइ नवो फेरफार अने सुधारा वधारा करवा अने जुना मुळ सद्गुरुना वाकयो (शब्दो)मां नवो फेरफार अने नवी भाषा लखवानुं करे खरा ? तेम समजो आ काम में भुजना संतोनी इच्छा प्रमाणे करवानुं राख्युं. अने शा. वलभजी कुबेरदासनी वातोना पुस्तक साथे तपासवा माटे अमदावाद

मांथी स. स्वामीश्री निर्गुणदासजीना शिष्य स. स्वामीश्री भक्तिप्रसादजीना शिष्य संत मुक्तेश्वरदासजीना शिष्य पुराणी नारायणदासजी पासेथी हस्त लेखीत प्रत मली तथा बीजी प्रत अमदावादना सद्गुरु स्वामी माधवजीवदासजीना शिष्य स्वामी गोवींदप्रीयदासजी पासेथी मेळवी अने छेवटे तपास करतां भुज मंदिरमां सद्गुरु स्वामी श्री निर्गुणदासजीनी खास पोताने वांचवानी प्रत हस्तलेखीत मली आवी एटले ते उपरज खरो आधार राखीनेज छपावेल छे अमने जुनागढनी प्रत मली हती पण उपर जणावेल त्रण प्रतो साथे मळती नहि आववाना कारणे ते प्रतनो आधार न राखतां उपरोक्त त्रण प्रतो प्रमाणेज छपावी छे.

आ पुस्तकमां कोइने एम जणाशे के स्वामीनी महत्ता वधारी छे अने बीजानी घटाडी छे परंतु आ बाबदमां में कांइ नवो फेरफार कर्यो नथी जे कांइ प्रथमनी प्रतो तथा शा. वलभजी भाइए छपावेल पुस्तक प्रमाणेज कांइ ओछुं अदकुं कर्या वगरज छपाव्युं छे जेम में कोइ वातो नवी लखी नथी तेमज जुनी वातोनो अभाव पण कर्यो नथी जे लांबा वखतथी सत्संगमां संतो तथा सत्संगीओ वांचताज आव्या छे

अने जे जुनुं जे खरुं छे तेज छे छतां कोइने न रुचे तेम जणाय तो क्षमा आपशो वळी आ बाबद शुरु-आतमांज मारा जाणवामां आवतांज ज्यारे सं. १९९२ नी सालमां सनातन धर्मधुरंधर आचार्यजी श्री १०८ श्री वासुदेव प्रसादजी महाराज पासे आ पुस्तक छपाववानी आज्ञा लेवा समये तेमना रुबरु निवेदन करी पूछेल त्यारे तेमणे पण पुस्तक छपाववामां नवुं कांइ करवुं नहि तेमज जुनुं होय तेमां फेरफार करवो नहि जेमनुं तेमज रहेवा देवुं आ प्रमाणे आज्ञा आपतां जेमनुं तेमज रहेवा दीधुं छे.

आ पुस्तक छपाववा माटे मारो लांबा वखतथी विचार हतो अने ते काम में जुनागढना शास्त्री श्री बालकृष्णानंदजीने जामनगरना सत्संगी शिरोमणी भाइ दलपतराम मारफत सोंपेल मने ते काम शुरु पण थयुं हतुं. परंतु तेमणे जुनागढनी प्रत प्रमाणे छपाववा इच्छा दर्शावतां में आ काम मारा हाथथीज पुरुं करी छपाववा राख्युं दरम्यान अने केटलीक प्रवृतिना कारणे समय नहि मळवाथी छपावतां लांबो वखत थइ गयो जेथी सत्संग समक्ष मुकतां विलंब थयो छे.

आ पुस्तक में व्यापार माटे के यश कीर्ति माटे छपाव्युं नथी केवळ श्रीजीमहाराज तथा सद्गुरु गोपालानंद स्वामीए समजावेला रहस्य सिद्धांतमां तथा उपासनामां अने महिमामां चालता जमानाने लइने फेरफार थतो होय ते नहि थाय ते माटे आखा सत्संगमां बंन्ने देशना साधुओनां प्रत्येक मंडळे अकेक पुस्तक मफत आपवुं अने ते वार्ताने संतो समजीने ते प्रमाणे वर्तिने तथा बीजाओने सत्संगमां वर्तावीने सौ सत्संगीओने लाभ आपे तेटला माटेज निःस्वार्थपणे मने पोताने कृतार्थ थावा अने श्रीजीमहाराज तथा तेमना संतोनी प्रसन्नता माटे आ प्रवृत्ति करी छे वली आ पुस्तकनी थोडी वधारे प्रतो छपावेल छे ते कोइ सत्संगी भाइयोने जोइशे तो पडतर किंमते मळशे तेमां कांइ कमाणी करवा के मारी मोटप वधारवा माटे नथी केवळ सत्संगना उपयोग माटेज आ मारुं कर्तव्य छे.

आपणा संप्रदायमां हाल थोडो समय थयां केटलाक पुस्तकोमां श्रीजीमहाराज तथा आचार्यो तथा संतोना तथा सत्संगीओना फोटाओ मुकवामां आवे छे ते में अहीं राखेल नथी कारण के श्रीजीमहाराजना फोटामां बाध नथी पण मूर्तिनी मर्यादा जळ-

वाय नहि तेथी तथा ते सिवायना फोटाओ पुस्तकमां होय तो सांख्ययोगी बाइओ तेनो उपयोग करी शके नहि कारण के जेम साधुओने स्त्रीओ मात्रनी छबी (चित्रामण) ने अडायज नहि तेमज सांख्य योगी बाइयोने पण पुरुष मात्रनी छबी (चित्रामण) ने अडा-यज नहि तेम समजी फोटाओ राख्या नथी. कारण के कोइना धर्मने बाध आवे तेम करवुं ते श्रीजीमहा-राजना सिद्धांत विरुद्ध गणाय जेथी आ पुस्तक सर्व सत्संग जनताने उपयोगी थाशे माटे सौ राजी रहेशो. हमेशां जमाना प्रमाणे भाषामां के बीजुं कांइ नवुं होय ते सौने रुचे ए स्वाभाविकज छे परंतु में सदगुरु स्वामी अक्षरजीवनदासजीना सिद्धांत प्रमाणे आजना कवी के संतो सत्संगमां प्रमाण होय छतां पण श्रीजी-महाराजना वखतना संतो जेवा के मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, नित्यानंदस्वामी, ब्रह्मानंदस्वामी, शुकानंदस्वामी, निष्कुळानंदस्वामी प्रेमानंदस्वामी अने देवानंद स्वामी विगेरेनां बनावेलां शास्त्रो तथा का-व्योमां जेवो रहस्य, अभिप्राय, सिद्धांत अने प्रेम होय तेवो आवेज नहि तेम जाणी कांइ नवुं करवा इच्छा राखी नथी. चालता जमानामां केटलाके पोतानी तथा पोताना गुरुनी महत्ता वधारवा माटे असल जुना

शब्दोमां फेरफार कर्या छे परंतु तेम करवाथी तेमनी तथा तेमना गुरुओनी महत्ता वधी नथी सामी महत्ता घटी जणाय छे ने वगोणुं पण थाय छे असल सद्-गुरुओना सिद्धांत जुदीज प्रकारना शास्त्रोने मळताज होय अने तेओ त्रिकाळ दर्शी जेवाज होय ने सर्व वातने हस्तामळ देखीने तथा जाणीने करता होय अने आजना जे करे ते केटलुंक पोताना डहापणनुं होय एटले ते जुदु जणाया शिवाय रहेज नहि.

आ पुस्तक छपाववामां में मारी इच्छा प्रमाणे कांइ कर्युं नथी परंतु भुजना संतोना कहेवा प्रमाणेज जुना सिद्धांतने अनुसारे कर्युं छे जेमना सिद्धांत तथा वर्तन श्रीजीमहाराजनी आज्ञा प्रमाणेज छे ते वात सत्संगमां बंन्ने देशना जाणवा बहार नथी. अने तेमांना केटलाक संतो जेमणे श्रीजीमहाराजना वख-तना केटलाक परम हंसोना दर्शन समागम करेल छे तथा सदूगुरु स्वामी निर्गुणदासजी अमदावादवाळा तथा सदूगुरु स्वामी रामचरणदासजी गढपुरवाळा तथा सदूगुरु स्वामी अक्षरजीवनदासजी भुजवाळा तथा व्यास लक्ष्मीरामभाइ मांडवीवाळा तथा सद्गुरु स्वामी निर्गुणदासजीना कृपापात्र शिष्य सदूगुरु स्वामी योगेश्वरदासजी आदीनो समागम सारी पेठे

२२१०५

करेला हजी हयात छे तेमना अनुग्रह कृपाथी में तेमनी आज्ञानुसारे आ काम कर्युं छे.

आ पुस्तकमां सद्गुरु गोपालानंद स्वामीनी वातोमां केटलीक वातो आगळ पाछळ छपायेल छे. कारण के जे वातोनुं ज्यां प्रकरण होय ते वातोनुं तारण करी एकज स्थळे साथे वांचवानुं सानुकुळ थावा माटे कर्युं छे पण कोइ वातोमां फेरफार थयो नथी.

आ पुस्तकनी साथे सनातन धर्मधुरंधर आचार्यजी महाराजश्री १०८ श्री रघुवीरजी महाराजनी वातो जे शा. वलभजी कुबेरदासनी छपावेल पुस्तकमां होवाथी आंही पण छपावेल छे तेमनी असल हस्त लेखीत मत श्री वरतालमां तथा अमदावादमां तपास करतां नहि मळवाथी जेमनी तेमज राखी छपावी सर्व सत्संग समक्ष मुकेल छे वळी तेओनां जीवन चरित्र पण संक्षेपमां मली आवतां प्रसिद्ध करेल छे.

आ पुस्तकने तैयार करवा माटे नवुं लखवामां तथा बीजी त्रण प्रतो तथा शा. वलभजीभाइना पुस्तक साथे मेळाववा तथा क्यांक लखाणमां अक्षरो शुद्धाशुद्ध होय तेने सुधरावी लखाववा माटे तथा ते लखेलुं फरीथी तपासवा माटे भुजना संतो शास्त्रीश्री धर्मजीवनदासजी तथा श्री भक्तिवल्लभदासजीए परिश्रम

लइ संपूर्ण सहायता आपी छे तथा ते पुस्तकमां श्लोको लखी तेना अर्थ लखी आपवामां तथा धर्मधुरंधर आचार्यजी महाराजश्री १०८ श्री रघुविरजी महाराज तथा सद्गुरु स्वामीश्री शुकानंद मुनीना जीवन चरित्र मेळवीने लखी आपवामां शास्त्रीश्री धर्मजीवनदासजीए परिश्रम वेठी संपूर्ण सहायता आपेल छे जेना माटे तेमनो अत्यंत अंतःकरण पूर्वक आभारी छुं.

आ पुस्तक अमदावादना सद्गुरु पुराणीश्री नंदकिशोरदासजी तथा शास्त्रीश्री यज्ञपुरुषदासजीए छपाववामां तथा प्रुफ शोधवामां जे परिश्रम लीधो छे तथा सहायता आपी आ काम पुरुं कराव्युं छे जेना माटे तेमनो अत्यंत अंतःकरण पूर्वक आभारी छुं.

आ पुस्तक छपाववामां तथा सद्गुरु श्रीगोपाळानंद स्वामीनुं जोवन चरित्र तथा धर्मधुरंधर आचार्यजी महाराज श्री रघुविरजी महाराजनुं जीवनचरित्र तथा सद्गुरुश्री शुकानंदस्वामीनुं जीवन चरित्रना लखाणमां भूलचूक थइ होय तो क्षिर निर न्याये जोइ सर्वे संतो तथा सत्संगी भाइयो क्षमा आपशो अने मारा पर राजी थइ शुभाषिवाद आपशो. एज विनंति.

(कच्छ) कुंभारीआ | ली. सत्संग सेवक जेराम रामजि.

श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

अनादि मूळ अक्षर स्वरुप सद्गुरु श्री गोपाळानंद स्वामीनुं संक्षेपमां जीवन चरित्र. (वृतांत)

योऽसावष्टांगयोगे जनसमसमयं पूर्वसंस्कारभूम्ना
सिद्धिं प्राप्तो भवाब्धि प्रभवति मनुजो यस्य तत्तुं प्रसादात्॥
यश्चात्यन्तप्रसिद्धं भजति हि सहजानन्दपादारविन्दम्
गोपालानन्दनामा स जयतु सततं योगवर्याग्रगण्यः ॥

अर्थः—जन्म समयमांज पूर्वसंस्कारना प्रभावथी जेमणे अष्टांगयोगमां संपूर्ण सिद्धिने मेळवी हती जेमनी कृपाथी मनुष्य तत्काळ संसार सागर तरवामां समर्थ थाय छे, अने वलि जे वेदादिक समग्र शास्त्रोमां प्रसिद्ध भगवान् श्री सहजानंदस्वामीना चरणकमलने निरंतर सेवी रहेला छे तेमज जे सर्व अक्षर मुक्तोमां श्रेष्ठ छे. एवा आ श्रीगोपालानंद स्वामी ते निरंतर जय पामो. ॥

श्री अक्षराधिपति श्री पूर्ण पुरुषोतम नारायणनी इच्छाथी आ ब्रह्मांडनी अर्धी आवरदाने समये श्री बद्रिकाश्रममां श्री नरनारायण

भगवान तथा धर्म भक्ति अने मरिच्यादिक रुषिओने दुर्वासा ऋषिनो शाप थयो, ते शापने भूमा पुरुषने ब्रह्मांड सृजवा वखते जे वर आपेल हतो ते सत्य करवा माटे पोते श्री पुरुषोत्तम नारायणे स्वीकारी लीधो ने आ दुनियाना मध्य भागमां परम पवित्र आर्यभूमि तरीके प्रसिद्ध जंबुद्वीपमांना भरतखंडमां पोते जे महा घोर कलियुगमां अधर्मनो उच्छेद करी एकांतिक धर्म स्थापन करवा इच्छा करी, अने पोतानी साथे अक्षर धामना मुक्तोने साथे चालवा इच्छा जणाव्याथी तेओ पण साथे पोत पोतानी अनुकुळता प्रमाणे आ भारत भूमिमां श्रीहरिजीनी सेवा माटे जुदेजुदे स्थळे द्विजातिमां प्रकट थया.

श्रीहरिजीने ज्यारे आ भारत भूमिमां पधारवानुं थयुं त्यारे पोताना खास मंत्री तरीके महामुक्तने पण साथेज प्रकट थवा आज्ञा करी तेथी तेओश्री सेवक धर्मनो स्वीकार करी श्रीहरिजीथी मात्र बे मास आगळ प्रकट थया ने पाछळ पण श्रीहरिजीनी आज्ञानुसार श्री उद्धव संप्रदायनुं मजबुत बंधारण स्थापवा तथा दृढ उपासना ने महिमा प्रवर्तावना माटे श्रीहरिजी अंतरध्यान थया बाद लगभग बावीश वर्ष वधारे (विक्रम संवत १९०८ पर्यंत) रही दृढ स्थिति करावी. ए महा-

पुरुष ते, मूळ अक्षर ब्रह्ममूर्ति सद्गुरु श्रीगोपालानंद स्वामी हता, ए महामुक्तना उपदेश वाक्योना संग्रहरुप तेमनी वातोनुं पुस्तक एवुं नाम आपेलुं छे आ पुस्तक वांचनारने ए पुरुष कोण अने केवा समर्थ हशे ? एवी जीज्ञासा सहेजे थाय ते पूर्ण करवा माटेज अहीं तेमनुं संक्षेपमां जीवन वृतांत संप्रदायना ग्रंथोने अनुसारे ने मारी मति प्रमाणे लख्युं छे तेमां योग्यायोग्य जणाय तो सारग्रहि संतो तथा सत्संगी बंधुओए क्षमा आपवी.

इडरथी पंदरेक कोश दूर आवेला पाडाटोयडा गाममां श्रीकृष्ण भगवानना भक्त मोतीराम नामना माध्यंदिनी शाखाना शुक्ल यजुर्वेदी औदीच्य सहस्र ब्राह्मण रहेता हता तेमनुं गोत्र वच्छस हतुं अने वच्छस, च्यवन, आप्नवान, और्व अने जमदग्नी ए पांच प्रवर हतां तेमनी अटक छट्ठापदिया ठाकर हति तेमनां धर्मपत्नी कुशळवा नामे महा सती हतां.

एवा पवित्र ब्राह्मणने घेर श्री अक्षराधिपति पुरुषोतम नारायणना प्रतिनिधी महामुक्ते विक्रम संवत १९३७ ना महा सुदी ८ सोमवारे मकर राशीनां सूर्येना शुभ मूहुर्ते जन्म धारण कर्यो ते समये

पृथ्वीमां सरवे मनुष्योने मोटो आनंद उत्सव थयो ने देवताओए पण आकाशमां अति हर्ष पामी दुदंभी वगाड्यां.

आ वखते कृतिका नक्षत्र शुभ योग कौलवकरण अने मकर लग्न हतुं तथा सूर्य अने बुध मकर राशीमां हता मंगल अने चंद्र मेष राशीमां हता, राहु मीथुन राशीमां, शनी कर्क राशीमां, गुरु तुला राशीमां, अने केतु तथा शुक्र धन राशीमां हता, आवा संपूर्ण शुभ योगमां श्रीहरिना सेवक मूळ अक्षरब्रह्म मूर्तिनो प्रादुर्भाव थयो. पछी योग्य समये पिताए लग्न समयने अनुसारे खुशाल एवुं नाम धारण कर्युं.

ए महापुरुषनुं कृश अने गौर शरिर, शान्त अने तेजस्वी नेत्रो, अणीदार सुंदर नासिका, भव्य विशाळ भाल, आजान बाहु अने हाथपगनां चिन्हो जोनारने कोइ महायोगीनुं भान करावे तेवां हतां अने नानी वयमां तेमनी लौकीक क्रीयामां सौने अलौकिकपणुं भासतुं हतुं.

बालचंद्रनी पेठे वृद्धि पामता अने बाळ अवस्थामांथीज बाळकोने ब्रह्म विद्या शिखवता एवा पुत्रने पिताए आठमे वर्षे वेदविधीथी यज्ञोपवित आपीने

खुशालभाइने ते गामथी पंद्रेक कोश दुर आवेला नमोइ गामे विद्याभ्यास करवा मोकल्या. त्यां रहीने प्रतिभावाळा ते पुरुषे अल्प समयमांज व्याकरण, न्याय, मीमांसा, ज्योतिष, आदिक अंगोए सहित वेदादिक शास्त्रोनुं अध्ययन करी लइ तेनुं तत्वसहित सर्वे रहस्य जाणी लीधुं पूर्वना महायोगी होवाथी बालवयमांज अष्टांग योगना अभ्यासथी सिद्ध दशाने पाम्या अने निरंतर अक्षरातित पूर्ण पुरुषोत्तम भगवानना स्वरूपमां पोतानी मनोवृत्ति राखवा लाग्या.

खुशालभाइने नानी वयमांज गाम वाडासिनोरना काशीराम तथा मुरलीधर नामे बे सत्संगी पासेथी श्री स्वामिनारायण भगवान प्रकट थयाना समाचार मळया हता त्यारथीज पोताना पूर्वना संबंधने लीधे श्रीहरिजीनां दर्शन माटे पोतानुं मन आतुर थयुं हतुं. तेवा समयमां नमोइ गाममां श्री स्वामिनारायण भगवानना परमहंस सर्वेश्वरानंदनो मेळाप थयो, ने तेमनी वातो सांभळीने श्री सहजानंदस्वामी उपर पोतानो पूर्वनो अपूर्व प्रेम प्रकट थयो. तेथी ते परमहंस पासेथी वर्तमान धरावी श्रीहरिजीना आश्रित थया ने तेमनी साथे डभाण गामे श्रीहरिजीनां दर्शन माटे गया त्यां श्रीहरिनां दर्शन थतांज जाणे पूर्वना बधे मिश्रो होय

तेम अरसपरस हृदय खेंचायां ने खुशालभाइनुं मन श्री हरिनी मूर्तिने विषे लीन थयुं आ वखते श्रीजीना पुछवाथी खुशालभाइए जवाब आप्यो, तेनुं समर्थन करतां, श्रीहरिए अनुमोदननां वचनो कहेलां ते निष्कुळानंद स्वामीए भक्तचिंतामणी प्रकरण १४२मां कहेल छे "त्यारे ब्राह्मण कहे महाराज, हुं तो आव्यो छुं भणवा काज, त्यारे नाथ कहे घणुं सारुं, एमां गमतुं घणुं छे अमारुं" एम कही श्रीजीमहाराजे तेमना प्रति हार्दिक प्रेम अने विद्या प्रति भाव पण बताव्यो छे.

श्रीजीमहाराजनी आज्ञाथी खुशालभाइ पाछा घेर गया अने पोते एकज पुत्र होइ पिताना आग्रहथी पोताने इच्छा नहीं होवा छतां पण गृहस्थाश्रम कर्यो छतां पण पोतानुं मन अखंड श्रीहरिमां ज आतुर रहेतुं अने पोते निशाळ भणावता ते बाळकोने विद्यानी साथे श्रीहरिना स्वरूपनुं ज्ञान पण आपता श्रीहरिनी कृपाथी पोताने सहेजेज योगनी स्फुरणा थइ हती ने संपूर्ण निपुणता मेळवी सिद्ध दशाने पाम्या हता तेथी बाळकोने पण समाधीनिष्ठ कर्या हता, ए प्रमाणे ब्रह्म विद्यानो प्रचार करी रह्या हता तेवामां एक ब्रह्मचारी मंत्र विद्याथी पोताने सिद्ध मनावी लोकोने ठगवाना

कारणे ते गाममां आव्यो ते पोतानी पासे एक शाल-ग्राम राखतो ते ज्यां पोते जमवा जाय त्यां ते शाल-ग्रामने राखीने पोताने उतारे आवतो पछी रात्रीना वखतमां पोते मंत्रना प्रयोगथी ते शालग्रामने पोताने समीपे बोलावी लेतो, एम लोको बहु आश्चर्य पामी ते ब्रह्मचारीने महा प्रतापी मानता तेथी ते बहु अभि-मानी थइ गयो हतो. तेथी कोइने गणातो नहि. एक समये खुशालभाइए तेना अभिमानने टाळवा माटे पोताने घेर जमवा बोलाव्यो त्यां ते जमीने हमेशांनी माफक शालग्रामने मुकीने पोताने उतारे गयो पछी रात्रे शालग्रामने बोलाववा घणो जंत्र मंत्रथी प्रयोग कर्यो पण खुशालभाइना दिव्य प्रभाव पासे तेनुं कांइ सामर्थ्य चाल्युं नहि तेथी पोतानुं मान खंडन थयुं जाणी शालग्रामने मुकी ते वहेलो उठी नासी गयो ए प्रमाणे तेनो गर्व उतार्यो.

एक वखत खुशालभाइ श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करवा बेठा त्यारे तेमना शरिरमांथी घणुंक तेज निकळ्युं ते केटलाक गाउ सुधी छवाइ गयुं अने तेमां त्रण मोटा कडाका थया ते सांभळीने तथा तेज जोइने लोको घणा भयभीत थया ने जरुर पृथ्वीपर उतपात (प्रलय) थाशे तेम मानवा लाग्या एम थोडीवार

देखाया पछी ते तेज पाछुं खुशालभाइना शरिरमां लीन थइ गयुं.

एक वर्षमां वरसादे बहु ताण्युं तेथी दुकाळना भयथी लोको गभराइने खुशालभाइ पासे गया ने वरसाद वरसाववा विनंती करी लोकोनुं दुःख सांभळी तेमना पर दया आवी तेथी पोते श्रीजीमहाराजनी प्रार्थना करवाथी पृथ्वीपर सर्वे देशमां घणोज वरसाद थयो ने लोको सर्वे सुखी थयां. ने तेमने मोटा पुरुष मानवा लाग्या एम जगतमां प्रसिद्ध थयुं.

खुशालभाइ श्रीजीमहाराजनी आज्ञा परिपालन करी गृहस्थाश्रममां रह्या हता खरा? परंतु त्यां ते अतिशे उदाशीपणे वर्तता ने श्रीहरिजीनी सेवामां रहेवामां तेमनुं मन आतुर रहेतुं तेथी श्रीजीमहाराज ब्राह्मणने स्वरुपे तेमना पासे गया ने काठीआवाड तरफ पाछा वळतां खुशालभाइ पण तेमना साथे चाली नीकळ्या ने पोताना कुटुंब परिवार तथा मिलकतनो त्याग कर्यो मार्गमां ते ब्राह्मण स्वरुप श्रीहरि तेमनी ठीमण पाणी आदिकथी सर्वे प्रकारे रक्षा करता, तेमने जेतलपुर गामनी नजीक तळाव पासे मुकी "आ गाममां स्वामिनारायण भगवान बिराजे छे त्यां तमे जाओ हुं तळावमां स्नान करी आवुं छुं." एम कहीने

अद्रश्य थइ गया ने खुशालभाइ गाममां आवी श्रीजी-महाराजनां दर्शन करी शान्तिने पाम्या, तेमने श्रीह-रिए मार्गना समाचार पूछ्या ने निशान आप्यां त्यारे ओळखाण थइ ने विनंती करवा लाग्या के आप शिवाय मारी बरदास करी दूर देशमां लावनार बीजुं कोण होय ? तेम कही श्रीहरिनो अनुग्रह तथा उपकार मानी बहुज हर्ष पाम्या ने श्रीहरिनी इच्छा जाणी सेवामां रह्या.

एक वखत श्रीजीमहाराजने महाभारतनुं पुस्तक जोइतुं हतुं, तेनी तपास करावतां संपूर्ण पुस्तक भाव-नगरना एक ब्राह्मणने घेर होवाना समाचार मळ्या तेथी ते लाववा माटे गढपुरथी लक्ष्मीराम देराशरीने भावनगर मोकल्या ते त्यां जइने रु. ३००)मां ते पुस्तक लेवानुं साटुं करीने पुस्तक तपासी जोवा माटे भणेला माणसने तेडवा पाछा आव्या श्रीजीमहाराजे प्रागजी दवेने तेमनी साथे मोकल्या पण ते वखते ते ब्राह्मण फरी गयो ने पुस्तक आपवा ना कही तेथी तेओ पाछा गडपुर आव्या वली श्रीजीमहाराजे बीजी वखत बे त्रण जणने समजावीने पुस्तक लाववा माटे मोकल्या पण पुस्तकवाळा विप्रे मान्युं नहि तेथी चोथी वखत श्रीजीमहाराजे खुशालभाइने साथे मोकल्या

तेओ झीणाभाइ श्रीमाली ब्राह्मणने घेर उतर्या ने बीजे दिवसे ते पुस्तकवाळा ब्राह्मणने घेर गया ने ते ब्राह्मणे पुस्तक आपवानी ना कहीने खुशालभाइनुं अपमान कर्युं. ते वखते ते ब्राह्मण बालमुकुन्दनी पूजा करतो हतो त्यां सामा बेठा एटले तुरत बाल-मुकुन्दनी प्रतिमा खुशालभाइ सन्मुख फरी गइ त्यारे ते ब्राह्मणे फेरवीने पोताना तरफ पधरावी तो पण ते मूर्ति पाछी खुशालभाइ सन्मुख फरी गइ एम बे त्रण वखत थयुं. तेथी क्रोधे करी खुशालभाइनो तिर-स्कार करी त्यांथी चाल्या जवानुं कह्युं एटले खुशाल-भाइ पाछा उतारे आव्या पछी तेज रात्रीए ते ब्राह्मण सुतो हतो त्यां बे यमदूत आवीने मार मारवा लाग्या अने कह्युं के खुशालभट तो मोटा पुरुष छे तेमने पुस्तक आपतो नथी ने सारुं करी फरी गयो ने तेमनुं अपमान कर्युं. तेथी तने मारीने यमपुरीमां लइ जशुं तेथी ते ब्राह्मण गभराई गयो, ने माफी मागीने पुस्तक आपवा कबुल कर्युं. एटले यमदूतो पाछा गया. बीजे दिवसे ते विप्रे खुशालभाइने तेडावी अति आदर-पूर्वक सन्मान करी पुस्तक आप्युं. तेनी किंमत आपीने ते पुस्तक गढपुर लाव्या तेथी श्रीजीमहाराज बहु राजी थया.

खुशालभाइने श्रीजीमहाराजे साधु कर्या पहेलां वडोदरा सत्संग करावबा मोकल्या त्यां ते एक मास सुधी हमेशां सदाशिवभाइने घेर जमता, त्यारे ठाकोरजीने धरावेला नैवेद्यना थाळमांथी श्रीजीमहाराज दिव्यरुपे आवीने जमता तेमनां खुशालभाइ विना बीजाने प्रत्यक्ष दर्शन थतां नहि. पण थाळमांथी धिमे धिमे भोजन ओछुं थातुं हतुं ते सर्वे देखतां आवां अनेक प्रकारनां आश्चर्य श्रीजीमहाराज खुशालभाई द्वारा जणावता.

पछी श्रीजी महाराजे खुशालभाइने सं. १८६४ना कार्तिक वद ८ ने दिवसे गढपुरमां दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे (अक्षर ओरडीमां) भागवती दिक्षा आपी गोपालानंद स्वामी नाम पाड्युं, दिक्षा लीधा पछी श्रीजी महाराजनी आज्ञाथी तेओ वडोदरा घणे भागे रहेता ने कोइ वखते मास, बे मास के चातुर्मास पण रहेता स्वामीए वडोदरामां रहीने उत्तम प्रकारनो सचोट ज्ञानोपदेश आपी तथा अनंत प्रकारना ऐश्वर्यो तथा परचा बतावी मोटा मोटा विद्वानो अने राज्याधिकारीओनी शंकानुं समाधान करी केटलाक सद्‌गृहस्थोने तथा अधिकारीओने अने महाराजा श्री शियाजीरावने पण प्रत्यक्ष भगवान् श्री

स्वामिनारायणनो महिमा समजावी अनेक ऐश्वर्य चमत्कारने विद्वता भरेला उपदेशथी श्रीजीमहाराजना अनन्य आश्रितो करी पोताना शिष्यो बनाव्या हता.

भागवती दिक्षा आप्या पछी स्वामीए सत्संगमां बहुज समास कर्यो ने श्रीजीमहाराजनो अपूर्व महिमा साधु तथा सत्संगीने समजाव्यो. तेथी स्वामीनो महिमा दिन प्रतिदिन वधवा लाग्यो तेमां प्रथम परमहंस तरीके पछी गुरु तरीके अने पछी सद्गुरु तरीके, अने छेवटे तो तेओ श्री श्रीजीमहाराजने रहेवानुं अक्षर ब्रह्मधाम छे अने ते अनंतकोटी मुक्ते सहित श्रीजीमहाराजने धारी रहेला छे अने आंहीं तथा अक्षरधाममां सर्वे संतोने श्रीजीमहाराजनो महिमा समजावी रह्या छे तेम ओळखावा लाग्या.

सं. १८७४ नी सालमां गाम सुंदरीयाणामां डोसाखाचरने घेर श्रीजीमहाराज पधार्या हता, ते वखते डोसाखाचरे पोताना कारभारी शेठ हिमराजशा, तथा तेमना पूत्र नामे वनाशा, पुंजाशा, जेठाशा, तथा हिराशा, पासे वात करी के मारे त्यां स्वामिनारायण भगवान् पधार्या छे माटे दर्शन करवा चालो, परंतु शेठ हिमराजशा वैष्णवाग्रगण्य होवाथी कहे के स्वामी तो एकज वल्लभ स्वामी छे ते हुं

नहिं आवुं, अने तेमना पुत्रो चारे मनमां संकल्प करी गया के भगवान्‌ना चरणारविंदमां सोळ चिन्ह होय ते बतावे तो भगवान् खरा वली आपणा चारे पासे चोफाळ छे ते मागी ले तो भगवान खरा मानवा तेम धारी साथे गया तेओ त्यां जतांज श्रीजीमहाराजे तेमना संकल्प सिद्ध कर्या, ते माटे भगवान् पणानो निश्चय करी वर्तमान धराव्यां ने सत्संगी थया पछी कोइ वखते सद्‌गुरु गोपालानंदस्वामी गढपुरथी वर-ताल जवा तैयार थया त्यारे श्रीजीमहाराजे सुंदरी-याणा थइने जवानी आज्ञा आपी ते प्रमाणे स्वामी त्यां गया त्यारे वनाशा विगेरेने स्वामीए तेमना पिताश्रीने बोलावी लाववा कह्युं पण ते तो वैष्णवाग्र-गण्य होवाथी आवे तेम नथी पण पोते वैद्य छे ते मांदाने जोवा आवे खरा. त्यारे स्वामी कहे जाओ तेमने तेडी लावो के अमारा मंदिरमां स्वामिनारायणना बावा मांदा छे तेने जोवा चालो ते प्रमाणे कहेतां शेठ मंदिरमां आव्या ने स्वामीनी नाडी जोइ पण शरिरना कोइपण भागमां नाडी जणाइ नहि ने शेठ विस्मय पाम्या (कारण स्वामीए योग ऐश्वर्यथी ना-डीओनो संकेलो करी लीधो) ने स्वामीना चरणमां मस्तक नमावी बोल्या के श्रीकृष्ण परमात्मा पोतानी

नाडी प्राण खेंची शके ते काम तमे कर्युं. माटे श्री-कृष्ण तमेज छो ने मने "ब्रह्म संबंध" आपो त्यारे स्वामी कहे श्रीकृष्ण परमात्मा तो गढडे बिराजे छे. ने हुं तो तेमनो साधु छुं. शेठना खरा आग्रहथी वर्त-मान धरावी "ब्रह्म संबंध" जे अंतकाळे तेडवा आ-ववा वचन आप्युं. पछी शेठ तुरतज गढडे गया ने श्रीजीमहाराजथी "ब्रह्म संबध" लइ महाराजे स्वामी साथे तेडवा आववानो कोल आप्यो, पछी शेठ विगेरे कुटुंबी सारा सत्संगी थया, स्वामीए ऐश्वर्य बतावी ७६ वर्षनी उमरे सत्संग कराव्यो. पछी सं. १८८२ नी सालमां शेठनो अंतकाळ समय थयो त्यारे श्रीजीमहाराज तथा स्वामी गोपालानंदजी साथे अक्षर धाममां तेडी गया तेमना कारजमां नात करी पण स्वामिनारायणना सत्संगी होवाथी नात जमवा आवी नहि एटले शेठना पुत्र गढडे जइ श्रीजीमहाराजने पांचसो परमहंस तथा काठी वीगेरे सत्संगी साथे सुंदरीयाणे तेडो लाव्या, ने महाराज पण सात दिवस रहीने सर्वेने जमाडी त्यां वसंतपंचमीनो समैयो कर्यो, अने प्रसादीनां रंगीन वस्त्रो सर्वे शेठना पूत्रोने आप्यां. ते त्यांना मंदिरमां तेमना वंशवाळाए सर्वेने दर्शन माटे पधराव्यां छे ते हजी मोजुद छे.

सुरतना कोइ पारसी गृहस्थने एकज पूत्र वृद्धावस्थामां थयो हतो. ते जन्मथी मुंगो हतो तेने आराम थवा माटे केटलाक वैद्यकिय उपायो कर्या तथा केटलांक देव देवीओनी मानता करी तथा ते शिवाय बीजुं पण घणुं खर्च कर्युं परंतु आराम थयो नहि छेवटे तेमने स० गोपालानंद स्वामीनो प्रताप सांभळवामां आववाथी ते पोताना मुंगापूत्रने साथे लइ वरताल गामे गयो ने पोतानुं दुःख जणावीने आराम थवा निवेदन कर्युं ते वखते स्वामी पोतानो नित्य विधी पूजा विगेरे करी रह्या हता ने तेमनुं दुःख सांभली तेना पर अतिशय दया आवी पछी पोते श्रीजी महाराजने पूजामां जमाडेल केळामांथी अर्ध केळुं ते मुंगा छोकराने आप्युं ते प्रसादी जमतांज अहो! आ केवुं स्वादिष्ठ छे, विगेरे बोलवा लाग्यो ते सांभळी तेना पिताने अतिशय आनंद थयो, ने स्वामीने भगवान् तुल्य मानीने विनंती करी राजी थइ पोताने घेर गयो अने ते बाळक जीव्यो त्यांसुधी बोलतो रह्यो.

आवी रीते स. स्वामी श्री गोपालानंद स्वामीना ऐश्वर्य ने परचा अनंत छे अने मुमुक्षुने समाधी करावीने श्रीजीमहाराजनां अक्षरधाममां दर्शन करावता जेनो लखतां पण पार आवे नहीं. आटलु ऐश्वर्य ने

सामर्थी छतां स्वामी स्वमुखेथी एमज कहेता के भगवान् तो स्वामिनारायण छे ने हुं तो तेमनो साधु छुं. आवो श्रीजीमहाराज प्रत्ये तेमनो दासत्वपणानो भाव हतो, स्वामीए मुमुक्षु अथवा मुमुक्षु नहिं तेवा जनोने तथा भूत प्रेतोने पण वश करी मोक्ष भागी कर्या हता. जेमांना केटलाक परचा श्रीस्वामिनारायण चरित्र चिंतामणी ग्रंथमां प्रकरण २ अने ४ मां प्रसिद्ध थया छे ते त्यांथी जाणी लेवा.

कोइक समयने विषे श्रीजीमहाराजे कारीयाणी गामे समैयो कर्यो हतो तेमां सर्वे साधु तथा हरिभक्तो आव्या हता ने वडोदरेथी गोपालानंद स्वामी आवे छे एम खबर सांभली श्रीजीमहाराज घणा राजी थया अने आकळा थइने एम बोल्या जे हजु केम आव्या नहि एवुं सांभळी निष्कुळानंद स्वामीना मनमां एम थयुं जे महाराजनें गोपालानंद स्वामीपर अतिशे हेत छे पछी तो गोपालानंद स्वामी आव्या ने तेमने महाराज बाथमां घालीने घणीवार मळ्या पछी एम कह्युं जे उतारा करी आवो त्यारे ते उतारा करवा गया तेने आवतां वखत लागवाथी श्रीजीए सोमला खाचरने तेडवा मोकलवाथी आव्या एटले महाराज तेमने साथे लइ उगमणा बारनी अक्षर ओरडीमां

पधार्या ने निष्कुळानंद स्वामी महाराजने स्नान कराववा सारुं कुवा पासे चोकडी तथा कुंडी करावेली तेने चूनो देवरावता हता त्यांथी तेओ भेगा ओरडीमां पेठा तेमने जोइ श्रीजीमहाराज बोल्या के निष्कुळानंद स्वामी तमे चूनो टीपो त्यारे जवाब आप्यो के चुंनो ठर्यो नथी त्यारे महाराज कहे एतो ठर्यो जाओ. पछी स्वामी बहार उभा रह्या पछी महाराजे गोपाळानंद स्वामीने कह्युं के "तमे कुशळ छो" त्यां तो निष्कुळानंद स्वामी बोली उठया के हे महाराज! "शहेरमांथी आवे छे ते कुशळतो एवाज हशे तो?" ए वात श्रीजीने गमी नहि ने उतर आप्यो के "ए कांइ तमारा जेवा नथो के शहेर एने बाध पमाडे" वळी श्रीजीए गोपाळानंद स्वामीने पुछयुं जे "आपणे अक्षरधामथी अत्रे (आ ब्रह्मांडमां) आव्या तेनुं कारण जाणो छो?" त्यारे ते बोल्या के "ना महाराज" एटले श्रीजीमहाराज बोल्या जे अक्षराधिपति स्वयं श्रीपुरुषोत्तम जे अमे ने तमो तथा सर्वे अक्षर मुक्तो आगळ एम वार्ता करी जे "आ ब्रह्मांड घणा काळथी सरजाणुं छे, तो पण कोइ जीव मुक्त थइने अक्षर धाममां आवता नथी" एम कहीने अमोए श्रीवैकुंठनाथ भगवानने आज्ञा करवाथी तेमणे

पृथ्वीपर अवतार लइने त्रेतायुगमां दश हजार वर्ष मनुष्यनुं आयुष छतां पोते अग्यार हजार वर्ष देह राख्यो, तो पण एकांतिक धर्म प्रवर्तावी शक्या नहि. पछी गोलोकाधिपति ने आ ब्रह्मांडमां अवतार लेवानी आज्ञा करी त्यारे तेमणे कलीयुगमां शत् वर्षनुं आयुष छतां सवासो वर्ष पृथ्वी उपर रह्या त्यांसुधी अधर्मवंश पृथ्वीना भाररुप असुरोनो संहार करवामां काळ गयो. तेथी एकांतिक धर्म प्रवर्तावी शक्या नहि. पछी अमोए कह्युं जे अक्षरधाममां हजु केम कोइने मोकल्या नहिं. एटले तमोए कह्युं जे " हे महाराज ! जे जे धामना अधिपति पृथ्वी उपर पधार्या होय ने तेमनी उपासना जेमणे करी होय तेने तो पोताना धाममां लइ जाय " माटे अक्षर धाममां आवता नथी. " ते तो ज्यारे आप अक्षराधिपति स्वयं पृथ्वी उपर पधारो. त्यारे तमोने भजीने तमारा स्वरुपनी सर्वोपरि अवातारीपणानी दृढ उपासना करीने अक्षर धाममां आवे." त्यारे अमे कह्युं जे " ज्यारे अमो पृथ्वी पर पधारीए त्यारे तमारे पण अमारी साथे आववुं पडशे." त्यारे तमो अक्षर ब्रह्ममूर्ति (गोपाळानंद स्वामी) ए कह्युं जे अमारुंशुं काम छे? त्यारे अमे (श्रीजी महाराज) बोल्या जे " तमारुं

आवीने एकांतिक धर्मने पाळो ने बीजाने समजावो, ने पळावो त्यारे बीजा जीव तमने देखीने एकांतिक धर्मने पाळे ने पछी एकांतिक मुक्त थइने अक्षरधाममां आवे ए काम तमारुं छे" त्यारे तमे कह्युं जे ठीक महाराज ? तमे कहेशो त्यारे अमाराथी कांइ ना पडाशे ? अमो पण आपनी साथे आवशुं." पछी तमो तथा तमारा सरखा मुक्तोने साथे लइने अत्रे आव्या छीए. एटले निष्कळानंद स्वामी बोली उठया जे आज वात जाणी त्यारे महाराज कहे शुं वात जाणी त्यारे ते कहेजे हु भुजमां रामानंदस्वामीने दर्शने गयो हतो त्यारे मने स्वामीए मर्म करीने कह्युं जे "लालजी भगत आंहीं शा सारुं आव्या लोज जइए नहिं लोज" त्यारे में कह्युं जे "हे महाराज ! तमे आहीं बिराजो छो ने त्यां हु कोना दर्शन करवा जाऊं." त्यारे स्वामी बोल्या जे "त्यां तो कोइ एक मोटा योगी आव्या छे" त्यारे में कह्युं जे "रघुनाथदास जेवा" त्यारे ते कहे "ए ते शुं"? त्यारे में कह्युं जे "रामदासजी जेवा ?" त्यारे कहे जे ए ते शुं ?" त्यारे में पुछयुं जे "मुकुन्ददास जेवा" त्यारे कहे "ए ते शुं ?" त्यारे में कह्युं जे तमारा जेवा त्यारे स्वामी कहे हुं अने बीजा पण शुं ? ए तो बहुज भारे छे. ए वात

आज समजाणी ते पछी तेमणे पुरुषोत्तम प्रकाश नामे ग्रंथ रच्यो छे अने तेमां श्रीजीमहाराजनो अपूर्व महिमा वर्णव्यो छे.

अक्षराधिपति स्वयं पुरुषोत्तम भगवान् पोताना अक्षरधाम अने अनंतकोटी मुक्त अने पोताना ऐश्वर्य पार्षद सहितज पधार्या छे तेने समाधिवाळा देखे छे अथवा जेना उपर भगवान कृपा करे छे ते देखे छे, ए वात प्रथम प्रकरणना वचनामृत ७१ मां लखी छे. अने तेना छेला भागमां तमारे सर्वेने एमज समजवुं ने बीजा आगळ पण एमज वार्ता करवी एवी आज्ञा करी छे. ए मूळ अक्षर ब्रह्ममूर्ति सद्गुरु गोपालानंद स्वामीने उद्देशीने कहेल छे.

एक समये श्रीजीमहाराजे सद्गुरु मुक्तानंद स्वामी नित्यानंद स्वामी, निष्कुळानंद स्वामी, शुक स्वामी, सिद्धानंद स्वामी दादाखाचर ने हरजी ठकर विगेरे आगळ वात करी जे अमारो रहस्य अभिप्राय ने सिद्धांत आ गोपाळानंद स्वामी जाणे छे. माटे तेमनो विश्वास राखी समागम करी ते कहे तेम समजण दृढ करजो. एम श्रीजीए घणा संतो तथा हरिजनो आगळ स्वामीनो महिमा घणीवार कहेलो छे.

श्रीजीमहाराजे पोताने आ लोकमांथी अंतरध्यान

आडा पांच दिवस रह्या त्यारे अर्धरात्रिने समये अक्षर ओर डीमां एम बोल्या जे अमारा पासे कोण छे ? एटले रतन-जीभाइ बोल्या जे हुं. मूळजी ब्रह्मचारी ने शुकमुनि छीए पछी महाराजे कह्युं जे एक मुक्तानंद स्वामीने बोलावी लावो त्यारे महाराजनी आज्ञाथी मुक्तानंद स्वामीने तेडी लाव्या पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे स्वामी तमोने अमारी वातमां विश्वास छे हुं कहुं ते मनाशे त्यारे स्वामी बोल्या जे हा महाराज तमे कहेशो ते केम नहि मनाय ? त्यारे कह्युं जे गोपालानंद स्वामीनी आज्ञामां सर्वे रहेजो ने अक्षरधाममां पण ए सर्वेने वर्तावे छे ने जे मूळ अक्षर छे तेज तेओ स्वयं छे, त्यारे मुक्तानंद स्वामी बोल्या जे हे महाराज ! "ए तो बहुज मोटा" आटला दहाडा आ वात अमने केम कही नहि. त्यारे महाराज कहे. केटलाक जुनाने ठीक न पडे, ते सारुं कह्युं नहि. पण आजथी तेमनी आज्ञामां रहेजो. त्यारे मुक्तानंद स्वामी प्रणिपत करी बोल्या जे हे महाराज ! अमे एमनी आज्ञामां सदाय निश्चे वर्तीशुं, एम वंदना करी एटले श्रीजीमहाराजे आज्ञा करवाथी पाछा पोताने आसने गया.

श्रीजीमहाराज धाममां पधारवाना थया त्यारे मंदवाड ग्रहण कर्यो ने सर्वे मोटेरा सद्गुरु तथा हरि-

जनोने भेगा करी कह्युं के अमारे मोटेरा स्थापवा छे त्यारे ब्रह्मानंद स्वामी बोल्या जे आज्ञा करशो तो नाना छोकरानी आज्ञामां रहेशुं. त्यारे श्रीजी बोल्या जे एवो हुं अज्ञात नथी के तमो सर्वे आवा मोटाओने नाना छोकरानी आज्ञामां वर्तावुं. एम कही पछी कह्युं जे "आ गोपाळानंद स्वामी छे" ते कहे तेम सौने करवुं त्यारे स्वामी कहे के ए केवा मोटा छे. एटले श्रीजीमहाराज कहे "एतो मूळ अक्षर छे" ने चार स्वरुपे करीने अमारी सेवा करे छे. ते चार स्वरुप (१) मूर्तिमान् अक्षर धाममां अमारी सेवामां छे (२) धामरुपे अनंत कोटी मुक्तोने धरी रह्या छे. (३) अनंत कोटी ब्रह्मांडो जेना आधारे रह्यां छे (४) आ मनुष्य नाट्य धारण करेला "आ गोपालानंद स्वामी" जेने अमे बन्ने देशना आचार्य तथा त्यागी गृहस्थ सर्वे सत्संगीनी संभाळ राखवा अने सर्वेने वर्तावबा अमारे ठेकाणे स्थापी मध्यस्थ तरीके रहेवानो लेख करी आप्यो छे तेमनी आज्ञामां तमो सर्वे रहेजो.

सं. १८८६ ना जेष्ठ सुदी ९ सोमवारनी पाछली दोढ पहोर रात्री हती ते समे अक्षर ओरडीमां श्रीजी महाराज पासे सद्गुरु गोपाळानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी, शुकमुनि, मानजीभाइ हरजीपाळो एटला

हता तेमनी आगळ श्रीजी एम बोल्या जे हवे अमारे जमवुं नथी ने देह पण राखवो नथी शा शारुं कनडो छो ? त्यारे गोपाळानंद स्वामीए प्रणिपत करी वंदना करी के जेम आपनी मरजी अमारुं जेम थानार हशे तेम थाशे एटले श्रीजीमहाराज कहे जे तमारा उपर हुं बहुज राजी छुं. माटे जाओ तमे जेम मनमां धारशो तेम तमारा संकल्प सिद्ध थाशे. ने अमे सदायने माटे तमारी साथेज रह्या छीए. ने ज्यारे तमे याद करशो त्यारे तमने दर्शन देशुं एम कही दशमना दिवसे मध्यान्ह समये श्रीजी पोताना धाममां पधार्या ने देहोत्सव कर्यो स्वामीए पण श्रीजीमहाराजना अंतर्धान पछी तेमना प्रतिनिधी तरीके रही सत्संगनी मर्यादा बांधी, श्रीजीमहाराजनुं सर्वोपरिपणुं संतो तथा सत्संगीओने समजाव्युं अने श्रीजीना वचनामृतोना सिद्धांत ने रहस्यो जे मोटा मोटा सद्गुरुओने पण न समझायलां ते सर्वे यथार्थ समजाव्यां छे. एम तेमनी आ वातोमां तेमनां वचनो उपरथी स्पष्ट जणाय छे.

श्री सत्संगीजीवन ग्रंथना पांचमा प्रकरणमां सदगुरु गोपालानंद स्वामीने सर्वे संतोमां वरिष्ठ अग्रगण्य लखेला छे तथा एज ग्रंथना प्रकरण चोथा धर्मामृतना अध्याय छट्ठाना श्लोक ४२ मां श्रीजी कहे छे

के हे गोपालानंद मुने! तमे जेते एकांतिक धर्मने पाळता थका अमारा आश्रित जे सर्वे त्यागी साधुओ तेमने एकांतिक धर्म प्रमाणे वर्तावो जे माटे तमे जे ते एवी रीत्ये वर्तवुं तथा वर्तावबुं तेने विषे समर्थ छो. हरिवाक्य सुधासिन्धु ग्रंथना १९५ना तरंगमां दासत्व भक्तिमां (१) गोपाळानंद स्वामी (२) मुक्तानंद स्वामी (३) नित्यानंद स्वामी (४) शुकमुनी (५) गुणातितानंद स्वामी (६) ब्रह्मानंद स्वामी (७) आनंदानंद स्वामी (८) महानुभावानंद स्वामी आदिक दास भावमां अनुक्रमे एक बीजाथी अधिक न्यूनपणे वर्ते छे एम कह्युं छे, छेला प्रकरणना वचनामृत २१ मां "आ सत्संगी" सर्वे अक्षर मुक्तथी अधिक एम गोपाळानंदस्वामीनो निर्देश करेलो छे. अने ते लीपी अमदावादनी छेली छापेली प्रतनी मार्जीनमां दर्शावी छे सद्गुरु निष्कुळानंद स्वामीकृत भक्तचिंतामणी ग्रंथना प्रकरण १४२ नी चोपाइ बेमां "योगी पूर्व जन्मना, जेने वहाला संगे अति वहाल, प्रभु संगाथे प्रकट्या खरा भक्त ते नाम खुशाल" ए चोपाइ प्रथम प्रकरणना वचनामृत ७१ साथे लागु पडे छे जे भगवान पुरुषोत्तम नारायण अहीं पृथ्वीपर पोताना धामने ऐश्वर्य सहित पधारे छे. वळी एज ग्रंथना प्रकरण

१६० नी चोपाइ ४९ मां श्रीजीना मुखवचन "साधु वर्णी पाळा सुणी छेजो रे, गोपाळ स्वामीनी आज्ञामां रहेजो रे."

गढपुरमां सं. १८८३ नी सालमां श्रीजीमहाराजे राजी थइने गुणातितानंद स्वामीने जुनागढनी महंताइ आपवा मांडी ने बोल्या जे हार पहेरो त्यारे तेमणे कह्युं जे ना महाराज महंताइनो हार नहिं पहेरुं पछी श्रीजीनो आग्रह जोइ वंदना करी के "आ गोपाळानंद स्वामी प्रतिवर्ष एक मास मुने भगवत् वार्ता करवा सारु जुनागढ पधारे, तो हार पहेरुं." एटले महाप्रभुजीए गोपाळानंदस्वामीने हा पडावीने तेमने जुनागढ महंताइनो हार पहेरावीने मोकल्या त्यार बाद गोपालानंद स्वामी दरवर्षे श्रीजीनी आज्ञानुसारे जुनागढ भगवत् वार्ताओ करवा जता ने कोइ वर्ष न जइ शकाय तो बीजे वर्षे बे मास वार्ता करवा सारु रहेता, एवी रीते सद्गुरु गोपाळानंद स्वामी पृथ्वीपर सं. १९०८ नी साल सुधी रह्या त्यां सुधी जीर्णगढ कथा वार्ता करवा सारु पधारता हवा. पछी कोइक समयने विषे गोपालानंदस्वामिए गुणातितानंदस्वामीने कह्युं जे "तमने जे वार्ता कहेवानी छे ते तो बाकी छे" त्यारे गुणातितानंद स्वामी बोल्या जे 'स्वामी हमणां

नहिं हुं ज्यारे आ मंदिर छोवरावी रहुं त्यारे कहेजो' पछी गुणातितानंद स्वामी मंदिर छोवरावीने रामनवमीने समैये वरताल गया ने गोपालानंद स्वामीने कह्युं जे 'हवे तमो जीर्णगढ पधारो ने हुं हवे नवरो थयो छुं' पछी गोपालानंदस्वामी जीर्णगढ पधार्या पछी गुणातितानंदस्वामीए कह्युं जे 'स्वामी तमारे जे वात मने कहेवानी हती ते कहो' पछी गोपालानंद स्वामीए कह्युं जे ज्यारे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धारीने ध्यान करतां कोइक मान अपमान करे, कोइक सुख दुःख आपे कोइक सारा नरसा शब्द कहे, इत्यादिक विक्षेप पराभव करे त्यारे देहादिक जे मायानुं कार्य तेने चार प्रकारना प्रलये करीने निषेध करीने पोताना जीवात्माने शुद्ध सत्तारुप मानीने अक्षरब्रह्म संगाथे एकता करीने अने तेने विषे अक्षरातित पुरुषोत्तम हरिकृष्ण महाराजने धारे एटले सर्वे विक्षेप शांति पामे छे' पछी गुणातितानंद स्वामीए तेवीज रीते स्वामीना कहेवा प्रमाणे महाराजनुं ध्यान कर्युं. तेणे करीने देहादिकना भाव टळी गया ने आत्मा परमात्मानो साक्षात्कार थयो.

श्रीजीमहाराज देहोत्सव करी स्वधाममां पधार्या पछी गोपाळानंदस्वामी ज्यारे गढडे पधार्या हता

त्यारे सर्वे साधु ब्रह्मचारी तथा हरिभक्तो स्वामीना समागम करवा आवे अने सिद्धानंदस्वामी पासे बेसवा पण न आवे त्यारे श्यामलीआ चैतन्यानंद स्वामीए अने बालमुकुंदानंद स्वामीए कह्युं जे सिद्धानंद स्वामी 'गोपालानंद स्वामीना समागम विना समजणमां खामी रही जाशे त्यारे ए एम बोल्या जे गोपालानंद स्वामी तो मोटेरा छे ते कोइक सत्संगना वहेवारमां जोडी दे तो ध्यान भजन भूली जइए.' एम कहे पण मनमां एम जाणे जे 'एवा मोटा कहे छे त्यारे चालो वातो सांभळवा पासे बेसीए, एम जाणीने स्वामी पासे आवीने बेठा त्यारे स्वामीए पूछयुं जे सिद्धानंद स्वामी तमे समाधीवाला कहेवाओ छो ते तमोने कोइ प्रकारना विक्षेप महाराजनी मूर्ति धारतां पराभव करे छे? त्यारे तेमणे कह्युं जे हा स्वामी पराभव करे छे. पण ते निवृत्ति केम पामे? त्यारे स्वामी बोल्या जे 'तमे बहार मूर्ति धारीने समाधी पाम्या छो. ते सर्व मायीक उपाधीथी रहीत पोताना आत्माने शुद्ध चैतन्य ने अक्षरब्रह्मरूप मानीने तेमां महाराजनी मूर्ति धारो एम करशो तो सर्वे विक्षेप निवृत्ति पामशे, पछी एवी रीते कर्युं एटले सर्वे मायिक भाव (पराभव) निवृत्ति पामी गया.

सद्गुरु गोपालानंद स्वामीने संवत् १९०४ नी सालमां अठ्यावीश उपवास थया ने अनाज खवाय नहि. तेथी महंते समाधिवाळा साधु विज्ञानदासजी (पूर्वाश्रमनुं नाम रतनो भगत) ने आज्ञा करी जे श्रीजीमहाराजने पूछो के आपनी शी मरजी छे त्यारे श्रीजीमहाराजे जवाब आप्यो के अमारी सर्वोपरि अवतारीपणानी दृढ उपासना तथा एकांतिक धर्म बरोबर प्रवर्तावशो त्यारे तेडी जइशुं पछी चार वर्ष सुधी ए बे प्रकारनी घणी घणी वार्ताओ करी मोटा मोटा साधुओनां अंग फेरवी नांख्यां त्यार बाद संवत् १९०८ नी शालमां श्रीजीमहाराज प्रसन्न थइ तेमने तेडी गया.

मूळ अक्षरब्रह्ममूर्ति सद्गुरु गोपाळानंदस्वामीना समागमथी घणा त्यागी संतो अने गृहस्थो श्रीजी महाराजनो सर्वोपरि महिमा समजी परम एकांतिक भावने पाम्या छे तेमांना थोडाकना द्रष्टांतो आंही आप्यां छे.

श्रीजीमहाराजे संवत १८८१ नी सालमां आद-रेजमां अन्नकुटोत्सव कर्यो त्यारे प्रथम चार सद्गुरुओ सत्संगनो वहेवार चलाववा माटे निमीने आरती उतारी हती तेमां शामलीआ चैतन्यानंद स्वामी

(जेमणे आ पुस्तकमां स्वामीनी वार्तानो संग्रह कर्यो हतो जे आ साथे वार्तानुं बीजुं प्रकरण लख्युं छे ते) हता जेमनुं श्रीजीमहाराज ढोलीआ विगेरेथी सन्मान राखता ते पाछळथी तेमने सद्गुरु गोपाळानंद स्वामीनो समागम कर्या बाद श्रीजीमहाराजनो तथा संतोनो अपरिमित महिमा जणायाथी तेओ बहुज गरीब रीते वर्तता ने चरणरज धर्मशाळामांथी भेगी करी पखाळी बधा शरीरे चोपडता ए रीते घणी रीतभात (वर्तणुंक) फेरवी नाखी अने पोतानी पूजामां चरणारवींदनी ६० जोड हती तेने गोपाळानंदस्वामीनी आगळ मुकीने कह्युं जे गमे तेम करो पछी तेमणे जेना पासे नहोतां तेने यथा योग्य आप्यां अने बधारानां श्रीगोपीनाथजी महाराजनां करी अनामत सोंप्यां वली चैतन्यानंद स्वामी एम बोल्या जे जो गोपालानंद स्वामीनो समागम न थयो हत तो सत्संगनी परिपक्व समझण दृढ थया विना काचा ने काचा मरी जात तेज प्रकारे अमदावाद मंदिरना महंत सद्गुरु स्वामी सर्वनिवासानंद स्वामी त्यांथी पोतानुं मंडळ आदी पूजा विगेरे ध. धु. आचार्य श्री अयोध्या प्रसादजी महाराजने सोंपी बे शिष्य लइ वरतालमां सद्गुरु गोपालानंद स्वामीनो समागम करवा सारुं रह्या ने त्यां

स्वामीना साधु पुरुषानंद स्वामीनी आज्ञानुसारे वर्त्याने समागम कर्यो.

सद्गुरु शुकानंद स्वामी तथा गुणातितानंद स्वामी वीगेरे घणी वखत सभा विद्यमान कहेता के श्रीजी महाराज साथे रही वचनामृतो सांभळयां अने लख्यां पण ते दिवस पुरां समजातां नहोतां पछी ज्यारे सद्गुरु श्री गोपाळानंद स्वामीनो समागम थयो त्यारे परिपक्व समजण थइ त्यार पछी वचनामृतनो स्वाद निरंतर नवो नवो आवे छे, ने सुख शान्ति वर्ते छे.

सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामीए मूळीनुं मंदिर पुरूं थयुं. एटले देव पधराववानो दिवस ठेरावी प्रतिष्ठा करवा सारु सद्गुरु गोपाळानंद स्वामी गढडे हता तेमने लाववा महानुभावानंद स्वामी तथा तद्रूपानंद स्वामीने मोकल्या तेमणे त्यां जइ स्वामीनो संदेशो कह्यो, तेमने स्वामीए कह्युं जे "धोलेरे देव पधरावे छे ने त्यां ध. धु. आचार्य श्री रघुवीरजी महाराज आव्या छे ने एमणे पण मने तेडाव्यो छे तेथी त्यां जवुं पडशे ने तमो ब्रह्मानंद स्वामीने कहेजो जे तमे पण श्रीजी महाराजना लाडीला छो ते प्रतिष्ठा करजो" ए संदेशो ते बन्ने संतोए मुळी जइ ब्रह्मानंद स्वामीने कह्यो एटले स्वामी पोते तुरत एक साधु साथे लइ

गाडी जोडावी डाक चोकीथी बळद बदलावतां एक रात्रीमां गढडे पहोंच्या ने स्वामीने मुळी पधारवा कह्युं त्यारे स्वामीए प्रथमनी पेठे स्वामीने कह्युं ते सांभळी ब्रह्मानंद स्वामी बोल्या जे आपने धोलेरे पधारवुं होय तो सुखेथी जाओ हुं प्रतिष्ठानुं मूहुर्त फेरवीश ने ज्यारे तमो आवशो त्यारे देव पधरावीशुं कारण के श्रीजी महाराज मारी समक्ष एम बोल्या हता के "आ गोपाळानंद स्वामी आजथी अमारे ठेकाणे छे" माटे आप आवो तोज श्रीजीमहाराज पोते पधार्यां तुल्य शान्ति संतोष थाय ने धोलेरानुं मूहुर्त बे दिवस छेटुं छे. एटलामां मुळीमां प्रतिष्ठा करी तरत डाकचोकी बळद बदलावतां एकज रातमां धोलेरा पहोंची जवाय तेवी गोठवण करीश माटे तमे हा पाडो पछी स्वामी ब्रह्मानंदस्वामीनी साथे मुळी आवी प्रतिष्टा कर्या पछी रवाना थइ धोलेरा मूहुर्त पहेलां पहोंची गया एम मोटानो महिमा जे मोटा होय अने जेणे दीठा सांभळ्या होय ते जाणे.

एक वखत सदूगुरु गोपाळानंद स्वामीने सारंगपुरना वाघा खाचरे कह्युं के "स्वामी! अमारे गाम साधुनी आवजाव घणी रहे छे अने वळी रस्तानुं गाम छे एटले तिर्थवासी हरिभक्तोनो पण घणो घ-

सारो रहे छे. ते खर्चमां पहोंची शकातुं नथी माटे कांइक दया करो तो सारुं." ते सांभळी स्वामी कहे "तमने एक कमाऊ भाइ करी आपीए एटले खर्च माथे नहि पडे" एम कही एक हनुमानजीनी मूर्ति तैयार कराववानी आज्ञा आपी पोते देश फरवा गया त्यांथी पाछा आवतां मूर्ति तैयार थइ गइ हती ते संवत १९०६ ना आसो सुद ८ ने दिवसे पधराववानुं नक्की करीने हनुमानजीनी प्रतिष्ठा करवा नैष्ठिक व्रतवाळा शुकानंदस्वामी तथा गोविंदानंदस्वामीने आरती उतारवानी आज्ञा करी तेथी ते उतारवा लाग्या ने स्वामी पोते सामी द्रष्टी राखीने लाकडीने टेके उभा रह्या ते वखते हनुमानजी थर थर कंपवा लाग्या एटले सर्वे संतो कहे स्वामी नजीकमां श्री गोपीनाथजी तथा श्री मदनमोहनजी पधराव्या छे त्यां कोण जशे? ते सांभळी स्वामीए द्रष्टी पाछी खेंची राखी. ए स्वामीना प्रेरेला ऐश्वर्य वडे हनुमानजीनी प्रख्याति देश परदेशमां थइने बाधा राखनारा सत्संगी अने बीजा सर्वे लोकोना कामो करवा लाग्या तेथी बहु मानताओ आववा मांडी ते उपजमांथी खरच घणो थतो त्यारबाद वाघाखाचरे हनुमानजीने तेमनी पेदाश सहित श्री गोपीनाथजीने अर्पण कर्या. हनुमा-

नजी आगळ गमे तेवुं भूत प्रेत होय अने ते न बोलतुं होय ने न जातुं होय तो स्वामीनी आपेल लाकडी राखेल छे ते देखाडे छे के तुरत राडोराड पाडी बोले छे ने वळगनारना देहमांथी नीकळी जाय छे एवो चमत्कार मूर्ति तथा सोटी द्वारे जणाव्यो छे तो एमनी मोटय-पनी वातज शी ?

सद्गुरु गोपाळानंद स्वामीना समागमथी घणा त्यागी संतो तथा हरिभक्तोने सत्संगनी समजणनी पक्वता थइ अने तेमना पूर्वना अंग फरी गयां तेमने केटलाकने स्वामीनी कृपाथी आत्मा–परमात्मानां साक्षात् दर्शन थातां तेमना नाम संक्षेपथी जणाव्यां छे सद्गुरु चैतन्यानंद स्वामी, नृसिंहानंद स्वामी, अक्ष-रानंदस्वामी, बालमुकुन्दानंद स्वामी, शुकानंदस्वामी, दयानंदस्वामी, हरिहर्यानंदस्वामी, गुणातितानंदस्वामी, जयानंद स्वामी, तपसानंदस्वामी, विजयआत्मानंद स्वामी, विधात्रानंद स्वामी, मोटा ज्ञानानंद स्वामी, प्रज्ञानंद स्वामी, श्रीधरानंद स्वामी, सर्वनिवासानंद स्वामी, स्वामी विज्ञानदासजी, घनशामदासजी, केश-वदासजी, शास्त्री माधवदासजी, महापुरुषदासजी, निर्गुणदासजी, वृंदावनदासजी, व्रजवल्लभदासजी विगेरे संतो तथा भावो भक्त, दादोखाचर, हरजी

ठक्कर, दामोदरभाइ, नरसिंहभाइ, लक्ष्मीरामभाइ (कच्छ मांडवीना) ए आदिक अगणित मनुष्योने सुखीया कर्या.

सद्गुरु गोपालानंद स्वामीनो महिमा अने मोटप जाणनार जुनागढना ब्रह्मचारी अचिंत्यानंदजी तथा स्वामी योगेश्वरदासजी तथा नागर चकुभाइ तथा गोंडलना महंतस्वामी धर्मप्रसाददासजी तथा गढपुरना ब्रह्मचारी अनंतानंदजी, कोठारी भक्तिवल्लभदासजी तथा भीमजीभाइ, मोनजी भगत, वरतालना सद्गुरु अद्‌भुतानंद स्वामी, पावत्रानंद स्वामी, भूमानंदस्वामी, श्रीकृष्णदासजी, भट्ट भोळानाथ, स्वामी माधवदासजी, कोठारी गोवरधनभाइ, नडीआदना मयाराम जीभाइ, महुधाना रा. रा. त्रंबकलालभाइ, वसोना देवजीभाइ, अमीन वाघजीभाइ, तथा शास्त्री कृष्णारामभाइ, अमदावादना स्वामी निर्गुणदासजी, शास्त्री रामचंद्र दिनानाथभट्ट ए आदिक घणाए समजता हता.

श्रीजी महाराज आ लोकमांथी अंतर्धान थया बाद स्वामीए आ लोकमां लगभग बावीश वर्ष सुधी रही सत्संगने पोषण कर्युं देव, आचार्य, त्यागी, गृही अने शास्त्र विगेरेनी श्रीजीमहाराजनी आज्ञानुसार प्रवृत्ति थाय तेवी मर्यादाओ बांधी, धर्म नियमनी प्रवृत्ति करी अने श्रीजीमहाराजनुं यथार्थ सर्वोपरिपणुं

यथाशास्त्र प्रवर्ताव्युं. पछी संवत् १९०६ नी सालमां पोते श्रीहरिनी सेवामां जवा तैयार थया पछी धर्मधुरंधर आचार्यश्री रघुवीरजी महाराजनी प्रार्थना करवाथी श्रीजीमहाराजे आ लोकमां बे वर्ष वधारे राख्या एटले संवत् १९०८ना वैशाक वद ५ पांचमने दिवसे ७१ वर्ष, ३ मास अने १२ दिवसनुं आयुष्य भोगवी भौतिक देहनो त्याग करी पूर्वेनी पेठे मूळ अक्षरब्रह्म स्वरूपे थइने पुरुषोत्तम नारायणनी सेवामां अखंड रह्या.

सद्गुरु स्वामी श्री गोपाळानंदजीना चरित्रो ऐश्वर्य परचा पण श्रीजी महाराजनी पेठे अनंत अपार छे तेनुं वर्णन थइ शके नहि परंतु जेटलुं जेनी पांखमां बळ होय तेटली ते आकाशमां गति करी शके अने गरुड जेवा तो सद्गुरु स्वामी निर्गुणदासजी विगेरे घणा संतो तथा हरिभक्तो अपार महिमा कही गया छे तेमांथी में मारा जाणवामां जे प्रमाणे आवेल ते प्रमाणे यथामति अने यथा शक्ति संक्षेपमां वर्णव्युं छे ते वांची संतो तथा हरि भक्तो राजी थइ आशिर्वाद आपशो अने मने कृतार्थ करशो एम नम्र विनंती छे.

कुंभारीआ (कच्छ)
सं. १९९८ ना
श्रीहरिजयंति
(रामनवमी)

ली. श्रीहरिना दासानुदास
सत्संगनो कृपाभिलाषी सेवक
जैराम रामजी.

श्रीस्वामिनारायणाय नमः ॥

श्री महिमाष्टकः

सर्वोपरि सर्व अवतारना कारण सदादिव्य मूर्ति एवा जे श्री सहजानंद स्वामी महाराज तेमनुं धाम जे सर्वोत्तम सर्वाधार सनातन अक्षर ए प्रकारे कह्युं छे जे धामने विषे श्री सहजानंद स्वामी महाराज अखंड विराजमान छे ते धामनां संप्रदायना ग्रंथ जोतां चार स्वरुप जाण्यामां आवे छे एकरुपे सर्वना अंतर्यामिपणे रह्युं छे, बीजुं धामरुपे रह्युं छे, त्रिजुं मूर्त्तिमान श्रीहरिनी सेवामां रह्युं छे, चोथे रुपे श्रीहरि कृपाकरि अनेक जीवना कल्याण करवा माटे पृथ्वीने विषे मनुष्याकारनुं ग्रहण करे छे त्यारे मनुष्य रुपनुं धारण करी श्रीहरिनी अनुमति पूर्वक सेवामां रहे छे. हवे तें संप्रदायना ग्रंथोमां श्रीहरिनां वचन जोतां तेमज श्री हरिना मुख वचन सांभळेला समदृष्टिवाला सद्गुरुओनां वचन सांभलतां एम यथार्थ जणाय छे जे मूल अक्षर स्वरुप श्रीगोपालानंद स्वामी छे वळी जेवो अक्षर पुरुषोत्तमनो महिमा जाणे तेवो बीजो जाणी शके नहिं ते वात सत्य छे माटे अक्षर स्वरुप एवाजे गोपालानंद स्वामी तेमणे श्रीहरिना महिमानुं आ अष्टक करेलुं छे.

श्लोकः श्रीधर्मसद्मन्यवतिर्यविष्णुर्यो वासुदेवो हरिकृष्णईशः ॥ श्रीनीलकंठोऽत्र पुनाति मर्त्यान् ॥ ध्याये हरिं तं हृदि धर्मपुत्रम् ॥१॥

अर्थः—गोपालानंद स्वामि कहे छे जे वासुदेव एवा ने सर्वचिदचिद् वस्तुने विषे व्यापक माटे विष्णु एवा ने भक्तोना सर्व दुःख मात्रने हरनारा माटे हरि ने सर्व शांति मात्रना स्थान माटे कृष्ण हवे हरिने कृष्ण ए बे नाम भेलां करीये त्यारे हरिकृष्ण एवे नामे प्रसिद्ध एवा ने जीव इश्वर काल माया अक्षर आदि सर्वना नियामक माटे इश एवा ने शंकरना जेवो वैराग्य तथा तेमना जेवुं ब्रह्मचर्य तेथी नीलकंठ एवा जे श्रीसहजानंद स्वामि महाराज ते आ पृथ्वीने विषे धर्मदेवना गृहने विषे अवतारने धारण करीने मर्त्य-लोकना जनने पवित्र करे छे कहेतां अनादिकालथी मायाना संबंधने लिधे पोताना मोक्षना मार्गमां अज्ञान रुपिमल विशिष्ट जीवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपी पोताना धामनि प्राप्तिनी योग्यतारुप पवित्रताने करता एवाश्री धर्मदेवना पुत्र श्रीहरि तेमने मारा हृदयने विषे ध्यान करुं छुं ॥ १ ॥

यस्यस्वरुपे तिललक्षणानि स्वभक्तचेतांसि हरंति यद्वत् ॥ अयांसि चाकर्षमणिप्रवेकाः ॥ ध्याये ॥२॥

अर्थः-जेश्रीहरिना स्वरुपने विषे सामुद्रिक शास्त्रमां कह्यां एवां तिलने आकारे चिन्हो तथा बीजा पण अवतारी पणाने जणावनारां चिन्हो ते पोताना भक्तजनोना मनोने पोताने विषे खेंचि लेछे केनि पेठे तो जेम लोहचुंबकमां उत्तम एवा जे मणियो ते लोहने जेम पोताने सन्मुख खेंचि लेछे तेम एवा श्रीहरिने मारा हृदयने विषे ध्यान करुं छुं. ॥ २ ॥

यस्याक्षरे धामनि यत्प्रसक्ता क्रीडंति दिव्येऽक्षरसंज्ञमुक्ताः॥
सार्मतपुत्रा रवसर्वमान्याः ॥ ध्याये ॥ ३ ॥

अर्थः-श्रीहरिनुं मायापर एवुं जे अक्षरधाम तेमां अतिशय सुखमय एवि श्रीहरिनी मूर्ति तेने विषे निमग्न अर्थात श्रीहरिनी अनन्य उपासनाए करीने पुरुषोत्तमना साधर्म्यपणाने पामेला एवा जे अक्षर संज्ञ मुक्तो ते अन्य धामोना अधिपतियो तथा तेमना मुक्तादि तेमणे सत्कारने कर्या सता श्रीहरिनी सेवारुप क्रिडाने करे छे जेम चक्रवर्तिं एवो जे राजा तेमना पुत्रो ते खंडिया एवा जे राजा तथा सर्व प्रजाओ तेमणे सत्कार पूर्वक स्तुतिने कर्या एवासता स्वेच्छानुकुल विहारने करे छे. तेम एवा जे श्रीहरि तेमने मारा हृदयने विषे ध्यान करुं छुं ॥ ३ ॥

यस्यास्यपद्मेऽद्भुतभूरिशोभे वसंति नेत्रभ्रमराजनानाम् ॥
हंसा यथा मानसपद्मवृंदे ॥ ध्याये ॥ ४ ॥

अर्थः—आश्चर्यकारि घणीक छे शोभा जेमां एवुं श्री हरिना मुखरुपी जे कमल तेने विषे भक्तजनोनां नेत्ररुपी भ्रमराओ वसे छे केतां घणुं शोभायमान एवुं जे कमल तेने विषे सौरभ्यना लोभे करोने भ्रमरा वसे छे ते कमलने मुकि शकता नथी. तेम श्रीहरिनुं शोभायमान एवुं जे मुख तेने विषे भक्तजननां नेत्रो ते शोभाना लोभथी स्थिर थाय छे ते अन्य वस्तुने जोवाने समर्थ थाता नथी. केनी पेठे तो जेम हंसो छे ते मानसरोवरना पद्मवृंदने विषे वसे छे ते तेने मेली बीजे जवा समर्थ थता नथी तेम एवा श्रीहरिने मारा हृदयने विषे ध्यान करुं छुं. ॥ ४ ॥

यः पोषयत्यत्र निजान् स्वकीयज्ञानोपदेशेन सुधोत्तमेन॥
वत्स्यान्सुशीला पयसा यथा गौ ॥ ध्याये ॥ ५ ॥

अर्थः—जे श्रीहरि अमृतथी पण उत्तम एवो पोताना स्वरुप संबंधि ज्ञानोपदेश अर्थात् जीव इश्वर माया संबंधी जे ज्ञानोपदेश ते अमृत तुल्य छे ने सर्वोत्कृष्ट पोताना स्वरुप स्वभाव गुण विभूति ऐश्वर्य प्रताप तेज बल सर्वोपरिपणुं सर्वकारणपणुं ए ज्ञानोपदेश ते अमृतथि पण उत्तम छे ते ज्ञानोपदेशे करी आलोकने

विषे पोताना भक्तने पोषण करे छे केतां आत्यंतिकी मुक्ति जे सर्व धाममां शिरोमणी मारुं अक्षरधाम तेने विषे ब्रह्मरुप थइ मारी सेवामां रहेवुं ते मुक्ति तो सर्वोपरि मारा स्वरुपना ज्ञान विना दुर्लभ छे माटे मारा संबंधने पाम्या जे मारा भक्त तेने मारा स्वरुपनुं सर्वोपरि ज्ञान आपी आत्यंतिकी मुक्ति आपुं एवुं धारी पोताना भक्त उपर्थं पोताने घणी कृपा तेथी स्नेहे करीने पोताना स्वरुप संबंधि ज्ञानोपदेश करी पोषणने करे छे केनी पेठे तो रुडा शीलवाळी जे गाय ते दुधवते पोताना वत्सोने पोषणने करे छे ते स्वभाविक रीति छे जे ज्यारे गायने लोको दुवे छे त्यारे ते गाय पोताना वत्स वास्ते दुधने चोरी राखे छे ते ज्यारे वत्स आवे छे त्यारे गाय पारसो मुकी वतसने दुध पाइ पोषण करे छे तेम एवा श्री हरिने मारा हृदयने विषे ध्यान करुं छुं. ॥ ५ ॥

पार्षंड धर्मा ह्युद्येन यस्य शाक्ताश्चलियंत यथोदितेऽर्के॥
घुका वृषद्वेषिण एव चान्ये ॥ ध्याये ॥ ६ ॥

अर्थः-जे श्रीहरिनो प्रादुर्भाव तेणे करीने पार्षंड धर्मो शाक्त धर्मो त. अन्य एवा जे धर्म द्वेषियो ते लयने पामी जाय छे केनी पेठे तो सूर्यना उदयथी खद्यो तो

लयने पामे छे तेम एवा श्री हरिने मारा हृदयने विषे ध्यान करुं छुं. ॥ ६ ॥

यत्पादपद्मेऽक्षरमुक्तचेतो भृगा रमंते सरसीव मीनाः ॥
आसेव्यमाने भूरिभूरिभक्तैः ॥ ध्याये ॥ ७ ॥

अर्थः—पृथ्वीने विषे घणा एवा जे भक्तो तेमणे बहु प्रेमथी सेवेलुं एवुं जे श्रीहरिनुं चरणारविंद तेने विषे अक्षर मुक्तोना चित्तरुपि जे भ्रमरा ते आस्वादना ग्रहण पूर्वक रमण करे छे केनी पेठे तो जेम मच्छो छे ते सरोवरने विषे क्रिडा करे छे तेम. जेम मच्छने जल जीवनरुप छे तो ते जल विना रही शकता नथी. तेम अक्षर मुक्तोना चित्तोने पण श्रीहरिनुं चरण छे ते जीवनरुप छे ते क्षणमात्र पण चरणारविंदथी नोखा रही शकता नथी एवा श्रीहरिने मारा हृदयने विषे ध्यान करूं छुं ॥ ७ ॥

यदीय सौंदर्य गुणादिपारं शेषादयो यांति न यस्य भक्ताः॥
वांछंति नैवाक्षरसौख्यमंतः ॥ ध्याये ॥ ८ ॥

अर्थः—जे श्रीहरिनां सौंदर्य सौकुमार्य आदिक गुणो तेने शेषादिक पार पामता नथी. अने जे हरिना अनन्य भक्तो ते पोताना अंतःकरणने विषे अक्षर संबंधि सुख ने पण इच्छता नथी अर्थात् जे मुक्तो पुरुषोत्तमनी मूर्त्तिना सुखमां गुलतान रहे छे तेने अक्षरना सुखनी

पण वांछा रहेती नथी. तो तुच्छ मायिक सुखने तो इच्छेज केम एवा श्रीहरिने मारा हृदयने विषे ध्यान करूं छुं. ॥ ८ ॥

गोपालानंदनाम्ना रचितमतिशुभं त्वष्टकंसन्मयेदं
प्रीत्यै श्रीधर्मसूनोः प्रकटभगवतः स्वामिनारायणस्य ॥
तन्माहात्म्यावबोधं यइदमिहजनः श्रावयेत्कीर्तयेद्वा
स स्याद्वै ब्रह्मरूपो हरिरतुलमुदं चाप्नुयात्तत्रधार्मिः ॥९॥

गोपालानंद छे नाम जेमनुं एवो जे हूं ते मे तेणे अति शुभ एवुं ने श्री पुरुषोत्तम एवा श्री सहजानंद स्वामि तेमना महिमाने जणावनार एवुं जे आ अष्टक ते प्रत्यक्ष भगवान एवा जे धर्मदेवना पुत्र श्री स्वामिनारायण तेमनी प्रसन्नताने अर्थे कर्युं छे हवे उत्तम एवुं जे आ महिमा अष्टक तेनो आलोकने विषे जे जन पाठ करे अथवा ते संभलावे तो ते जन ब्रह्मरुप थाय छे ने ते जनने विषे धर्मदेवना पुत्र श्रीहरि घणाज प्रसन्न थाय छे॥ इतिश्री गोपालानंद मुनि विरचितं श्रीहरिमहिमाष्टकं संपूर्णम् ॥ इतिश्री मुनिश्वरानंद वर्णिकृत हरिमहिमाष्टक प्राकृतटीका समाप्ता ॥ ९ ॥

१ सद्‌गुरु गोपाळानंद स्वामीनी वातो.
प्रकरण–१

२ सद्‌गुरु गोपाळानंद स्वामीनी वातो.
श्यामळीया चैतन्यानंद स्वामीए
लखेली ते. प्रकरण--२

३ ध. धु. आचार्य श्री रघुवीरजी महारा-
जनी वातो.

४ सद्‌गुरु शुकानंद स्वामीनी वातो.

॥ श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

अनादि मूळ अक्षरमूर्ति सद्गुरु-

श्री

गोपाळानंद स्वामीनी वातो

सद्गुरु परम भागवत परमहंस श्री गोपालानंद मुनिए अनेक जीवोना मोक्षार्थे भगवाननी वार्ताओ कृपा करीने पोते करी छे तथा कोई संतो अने हरिभक्तोए प्रश्नो पुछया तेना उतर स्वामीए कर्या ते वार्ताओ लखेल छे.

प्रथम तो सर्व संकल्पने पडया मुकीने एकाग्र चित्त थइने श्रीजीमहाराज पुरुषोत्तमने संभारीने एम धारवुं जे स्वामी वातु करे छे ने आपणे सांभळीए छीए एम सांभळीने ते प्रमाणे पोताना अंतरमां तपास करता जावुं ने कह्यु छे ते समजीने वरतवुं.

स्वामीए वात करी जे दत्तात्रेय कहे छे हे साध्य देवो ! मारा गुरु थकी आ करवा योग्य सांभळ्युं छे ते शुं ? तो (१) धृति जे नाना प्रकारना दुःखे करीने पण विकळ न थावुं. (२) दम जे सर्वे इंद्रियोने जीतवी.

ने सत्य धर्मनी अनुवृत्ति राखवी. ने हृदयनी जे अहं ममतादिक सर्वे ग्रंथियो तेने टाळीने प्रिय, अप्रिय, जे सुख दुःख तेने आत्म समताने पमाडे कहेतां पोताने अने बीजाने समानपणे सुख दुःखने जुवे एटलुंज करवा योग्य छे एम गुरु थकी में सांभळयुं छे.

वळी पोताने कोइक कठण वचने करीने तिरस्कार करे तो तेने सामो तेवो तिरस्कार न करे ने तेनुं सहन करे केम जे सहन करनाराना जे क्रोध छे तेज ते तिरस्कारना करनाराने बाळी नांखे छे ने तेनुं जे सुकृत छे तेने सहन करनारो जे पुरुष ते पामे छे.

हे देवो ! जे पुरुष पोताना कल्याणने इच्छे ते पुरुष जेते बीजा कोइने कठण वचने करीने तिर-स्कार करे एवो न थाय तथा बीजा कोइनुं अपमान करे एवो न थाय तथा पोताना मित्रनो द्रोही न थाय तथा नीच पुरुषनी सेवानो करनारो न थाय तथा अभिमानवाळो न थाय हीन आचरणवाळो न थाय तथा क्रोधे युक्त वाणी न बोले अने क्रोधे युक्त एवी जे रुखिवाणी ते जेते आ लोकने विषे पुरुषना मर्म स्थळनां जे हाडकां तथा हृदय अने प्राण ए सर्वने बाळी नांखे छे ते कारणपणा माटे धर्मवाळो पुरुष जेते

बीजाने बाळे एवी जे रुखि वाणी तेने नित्य वरजे.

पारका मर्मस्थळनो पीडनारो अने रुखि छे वाणी जेनी एवो अने रुखी वाणीरुपी कांटे करीने मनुष्यने पीडनारो पुरुष अत्यंत शोभाए रहित जाणवो अने जननो जे मृत्यु तेने मुखने विषे वांधीने वहेनारो छे एवो एने जाणवो कहेतां कठण वचनरुप जे जननुं मृत्यु तेने मुखने विषे तैयार लइने फरे छे.

अतिशे तिखां अने अग्नि ने सूर्य सरखां प्रदिप्त एवां जे वाणीरुप बाण तेणे करीने जो बीजो एने अतिशे विंधे ने ते वाणे करीने विंधाणो छे तो पण अतिशे विवेके युक्त एवो जे ज्ञानी पुरुष ते जेते एम जाणे जे आतो मारा सुकृतने पोषण करे छे एम समजोने क्षमा करे छे.

जे पुरुष संतने सेवे, असंतने सेवे, तपस्वीने सेवे, चोरने सेवे, तो ते सेवनारो पुरुष जेते तेमना वशने पामे छे. कहेतां संतने सेवे तो पोते संत थाय छे अने असंतने सेवे तो पोते असंत थाय छे. अने तपस्वीने सेवे तो पोते तपस्वी थाय छे ने चोरने सेवे तो पोते चोर थाय छे केनी पेठे तो जेम वस्त्रने जेवा रंगमां रंगीए तेवा रंगवाळुं थाय छे. ॥ २ ॥

जे विवेकी पुरुष छे ते जेते पोता साथे जो कोइ अतिवाद करे तो पोते ते साथे अतिवाद न करे ने बीजा पासे करावे नहि. अने वळी जे बीजे मार्यो थको तेने पोते मारे नहि ने बीजा पासे मरावे पण नहि. अने पोताने जे मारनारो तेना भुंडाने नथी इच्छतो एवो जे पुरुष ते आवे तेने देवता पण इच्छे छे कहेतां ते देवताने पण मानवा योग्य थाय छे. ॥३॥

जो रुडुं वचन बोलतां न आवडे तो न बोलवुं ए श्रेष्ठ छे एम मोटा कहे छे. अने न बोलवा थकी पण जे सत्य वचन बोलवुं ते श्रेष्ठ छे अने ते सत्य वचन पण जो प्रिय लागे एवुं बोलाय तो ते सत्य वचनथी पण श्रेष्ठ छे अने ते प्रिय वचन पण धर्मयुक्त बोलाय तो तेथी अतिशे श्रेष्ठ छे एवी रीते वचन बोलवाना चार प्रकार छे तेने जाणवा. ॥४॥

जे पुरुष जेवा भेळो बेसे छे ने जेवा पुरुषने सेवे छे अने पोते जेवो थावाने ईच्छे छे तेवो थाय छे. माटे सत्पुरुष भेळे बेसवुं ने सत्पुरुषने सेववा ने सत्पुरुषना जेवो पोतानो स्वभाव करवाने ईच्छवुं पण असत्पुरुषनो प्रसंग तो कोइ प्रकारे करवो नहि. ॥५॥

जे पुरुष जे जे पदार्थ थकी निवृत्तिने पामे

छे ते ते पदार्थ थकी ए मुकाई जाय छे अने जो सर्वे पदार्थ थकी निवृत्तिने पामे छे तो ते अणु मात्र पण दुःखने नथी पामतो अने सर्वेथी निवृत्तिने पाम्यो एवो जे पुरुष तेने जितवाने इच्छता नथी अने ए पण बीजाने जितवाने इच्छतो नथी. अने कोइ साथे वैर करतो नथी अने कोइने मारतो नथी ने निंदाने स्तुति तेने विषे तुल्य छे स्वभाव जेनो एवो जे ए पुरुष ते कोइ पदार्थ नाश पामी जाय छे तेनो शोक करतो नथी अने कोइ पदार्थने पामीने तेनो हरख पण नथी करतो. ॥ ६ ॥

"अथ वार्ता विवेकः लिख्यते"

॥ साधुने परस्पर वार्ता करवानी रीत. ॥

भगवान पोताना अक्षरधामने विषे दिव्य ऐश्वर्य, पार्षद, दिव्य-शक्तिए सहित रह्या छे तेवाने तेवाज प्रत्यक्ष प्रमाण छे ए आदिक जे भगवानना माहात्म्य तेनी वार्ता करवी. ॥१॥

सर्व सुखमय, सर्व थकी पर, सर्वना नियंता, सर्वना करता, ए आदिक जे भगवाननी मोटप तेनुं ग्रहण करीने पोताना स्वभावने टाळवानी वार्ता करवी. ॥२॥

त्रण देह, दश इंद्रियो, चार अंतःकरण ते थकी प्रथक जे पोतानो जीवात्मा ते देह, इंद्रियो ने अंतःकरणना जे संकल्प उठे छे ते भेळो जीवात्मा भळयो छे तेने प्रथक पाडवो ने देहने देहना संबंधी खोटां थई जाय एवी रीते आत्मनिष्ठानी वार्ता करवी. ॥३॥

अने नित्य प्रलय, निमित्त प्रलय, प्राकृत प्रलय, आत्यंतिक प्रलय, ए चार प्रकारना प्रलये करीने सर्वेना भोग, देह ने लोक ते नाश थइ जाय छे ने मायामांथी थयां जे पदार्थ मात्र ते संबंधी जे सुख ते अपार दुःखे सहित छे ते दुःखने देखाडीने वैराग्यनी वार्ता करवी. ॥४॥

निर्लोभ, निष्काम, निःस्वाद, निःस्नेह, निर्मान ए जे साधुना धर्म ते जे धर्मशास्त्रमां कह्या होय तेने शीखीने ते प्रमाणे वर्तवुं. ने ते प्रमाणे वार्ता करवी. ॥५॥

भगवाननी जे नव प्रकारनी भक्ति ते मन, कर्म, वचने करीने निरंतर करवी पण ते भक्ति कर्या विना व्यर्थ काळ जवा देवो नहि. ने ते विना बीजी जे रीतनो पोताना स्वभाव अनुसारे प्रकृति होय तेने टाळवी ने ते अंगनी वार्ता करवी. ॥६॥

सत् असत् एवा जे देश काळादिक आठ तेनी जे प्रथम विक्ति तेनी वार्ता करवी. ॥७॥

सत्शास्त्रने विषे कह्यां एवां जे साधुनां लक्षण तेने जोईने ते लक्षण पोताने विषे केटलां आव्यां छे ने केटलां नथी आव्यां तेनो तपास करवो ने जे लक्षण न आव्यां होय ते शीखवां ने ते अंगनी वार्ता करवी. ॥८॥

श्रीजिमहाराजे स्थापन कर्यां जे देवमंदिर तथा धर्मवंशना आचार्य तेनी उत्कृष्टता थाय तेवी रीते वर्तवुं ने तेवी रीतेज वार्ता करवी. ॥९॥

शिक्षापत्री आदिक जे आपणा संप्रदायना ग्रंथ तेने भणवा भणाववानो अभ्यास पोतानी बुद्धि प्रमाणे राखवो ने ए अंगनी वार्ता करवी. ॥१०॥

आवी रीत्ये जे साधुने वर्तवानी रीत तेमां आळस रहेतुं होय तेने टाळवानी वार्ता करवी. ॥११॥

श्रीजिमहाराज पोताना भक्तजनने तत्काळ समाधिये करीने प्राण इन्द्रियोनो निरोध करावीने अनंत ऐश्वर्ययुक्त एवां जे ब्रह्मपुर, गोलोक, वैकुंठादिक दिव्य पोतानां धाम तेने विषे पोतानुं दिव्य दर्शन देवुं तथा पोताना भक्तजनने अंतकाळे विमान तथा रथ,

अश्वादिक दिव्य वाहन उपर बेसीने दिव्य पार्षद सहित आवीने दर्शन देवुं ने ते भक्तने पोताना धाममां लई जवुं ए आदिक जे श्रीजिमहाराजनां चरित्र तेनी विस्तारीने वार्ता करवी. ॥१२॥

सत्संगी हरिभक्त होय तेनी आगळ वात करवानी रीत.

शिक्षापत्रीमां कह्यां जे परस्त्रीनो त्याग तथा चोरी न करवी तथा मद्य, मांसनो त्याग करवो ए आदिक जे पंच वर्तमानना मोटा मोटा नियम तेनी द्रढता थाय तेवी वार्ता करवी. ॥१॥

श्रीजीमहाराजे वचनामृतमां कह्युं छे तेवी रीते भगवाननां दिव्यभावनुं अने मनुष्यभावनुं वर्णन करीने भगवानना निश्चयनी वार्ता करवी. ॥२॥

श्रीजीमहाराजे स्थापन कर्या जे देवमंदिर तथा आचार्य तेने दर्शने जावुं तथा उत्सव समैया उपर जावुं तेमां श्रद्धा उपजे एवी वार्ता करवी. ॥३॥

पोताना गाममां जे हरिभक्तो होय तेमने सायंकाले भेळा थईने परस्पर भगवद् वार्ता करवी अने सांभळवी एवी रीतनी वार्ता करवी. ॥४॥

प्रत्यक्ष भगवाननी निष्ठावाळा जे साधु तेनां लक्षणनी वार्त्ता करवी तथा प्रत्यक्ष भगवाननी निष्ठाए रहित जे असाधु तेनां लक्षणनी वार्ता सत्शास्त्रनी साख्य लावीने करवी. ॥५॥

देशकाळादिकने उपद्रवे करीने सुखदुःख आवी पडे तथा हाण वृद्धि थाय तेणे करीने सत्संगमांथी मोळा न पडे एवी रीते हिमतनी वार्ता करवी. ॥६॥

हवे प्रथम सत्संगी थावा आवे तेनी आगळ पुन्य पापनी वार्ता करवी तथा ते पुन्ये करीने थयुं जे मोक्षरुप सुख अने पापे करीने थयुं जे यमपुरी नरक चोराशीरुप दुःख तेनी वार्ता करवी. ॥७॥

अने जे साधुने संगे करीने जीवनुं कल्याण थाय तेवा साधुना लक्षणनी वार्ता करवी. ॥८॥

इतिश्री सहजानंदस्वामी शिष्य गोपाळानंद मुनी विरचिते वार्ता विवेकः संपूर्णः

यस्तिष्ठेदेकपादेन वायुभक्षः शतं समाः
ध्यानयोगीपरस्तस्मादिति ब्रह्मानुशासनम् ॥ १ ॥

अर्थः-जे पुरुप जेते वायुनुं भक्षण करतो थको सो वर्ष पर्यंत एक पगे करीने उभो रहे ते थकी पण ध्यानयोगी जे ध्याने करीने निरंतर भगवानना

योगनो राखनारो भगवाननो भक्त ते जेते श्रेष्ठ छे. एवी रीत्ये ब्रह्मानुं आज्ञा वचन छे. ॥ १ ॥

अश्वमेधसहस्त्रेण राजसूयशतेन च
पुंडरीकसहस्त्रेण योगिश्वावसथो वरः ॥ २ ॥

अर्थः—अने एक हजार अश्वमेघ यज्ञ करवा; एक सो राजसुय नामे यज्ञ करवा तथा एक हजार पुंडरीक नामे यज्ञ करवा ते थकी पण योगी जे भगवानना ध्यान योगने करनारा भक्तजन तेमने विषे निवास करवो ते श्रेष्ठ छे. केम जे तेमना समागमे करीने तेमना जेवा गुण आवे छे. ॥ २ ॥

ध्याताध्यानं तथा ध्येयं यच्च ध्यानप्रयोजनम्
एतच्चतुष्टयं ज्ञात्वा योगं युंजीत तत्ववित् ॥ ३ ॥

अर्थः—अने ध्याता जे ध्याननो करनारो पोतानो जीवात्मा तथा ध्यान जे ध्यान करवानो प्रकार तथा ध्येय जे ध्यान करवा योग्य एवुं भगवाननुं स्वरूप तथा ते ध्याननुं प्रयोजन जे भगवानने विषे सर्व वृत्तिनो निरोध थाय ए जे चार वानां तेने यथार्थ जाणीने पछी परमेश्वर एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेना स्वरुपने यथार्थ जाणनारो जे योगी ते जेते भगवानना ध्यान योगने करे. ॥ ३ ॥

गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन् जागृन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि
शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि ध्यायेत् सततमीश्वरम् ॥४॥

अर्थः—हवे ध्यान करवाना प्रकारने कहे छे ध्याननो करनारो जे भक्तजन ते जेते चालतो थको, बेठो थको, सुतो थको, जागतो थको, पोताना नेत्रने उघाडतो थको, मिचतो थको, पवित्र पणे रह्यो थको, अपवित्र पणे रह्यो थको पण परमेश्वर एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनुं निरंतर ध्यान करे केवी रीत्ये तो ते भगवानना चरणारविंद आदिक एक एक अंग तेनुं पृथक पृथक ध्यान करे ·अथवा समग्र मूर्त्तिनुं भेळुं ध्यान करे. ॥ ४ ॥

अहं ब्रह्म परं ब्रह्म वासुदेवोस्ति मत्प्रभुः
हृदीत्थं भावयन् शश्वत् ध्याता ध्यानं प्रयोजयेत् ॥५॥

अर्थः—हवे ध्याताने ध्येयने जाणवानी रीत्य कहे छे ध्याता जे ध्याननो करनारो भक्त ते पोताने एम जाणे जे हुं जेते ब्रह्म छुं केतां अक्षरब्रह्म साथे एकत्व भावने पाम्यो छुं अने ध्येय जे भगवान तेने एम जाणे जे अति समर्थ एवा मारा स्वामी जे वासु-देव भगवान ते परब्रह्म छे केतां अक्षरब्रह्म थकी पण स्वरूप, स्वभाव, गुण, विभूति, ऐश्वर्यादिके

करीने अति उत्कर्षपणे वरते छे एवी रीत्ये पोताना मनने विषे निरंतर भावनाने करतो केतां विचारने करतो थको निरंतर ते भगवानना ध्यानने करे. ॥५॥

ध्यानात् शांतो जपेन्मंत्रं जपन् शांतश्च चिंतयेत्
जपध्यानप्रसक्तस्य विष्णुः शीघ्रं प्रसीदति ॥६॥

अर्थः—एवी रीते ध्यान करता थका ते ध्यान थकी थाके त्यारे ते भगवानना नामनो अथवा अष्टाक्षर मंत्रनो जप करे अने ते जपने करतो थको थाके त्यारे वळी ते भगवाननुं ध्यान करे अने एवी रीते ध्यान अने जप तेने विषे आसक्त थयो एवो जे भक्त तेनी उपर ए भक्तना अंतर्यामी एवा जे भगवान ते जेते तत्काल प्रसन्न थाय छे केतां ए भक्तना एवा ध्यानना आग्रहने जाणीने तेने पोतानी मूर्त्तिनुं साक्षात दर्शन आपे छे अने ते मूर्त्तिने विषे ए भक्तना चित्तनो निरोध थाय छे अने एवी रीते जे चित्तनो नीरोध थाय ते ध्याननुं प्रयोजन छे. ॥६॥

वेदैस्तूक्ता सर्वयज्ञक्रियास्तु यज्ञाज्जप्यं ज्ञानमाहुश्च जप्यात् ॥ ज्ञानाद्ध्यानं संगरागादपेतं तस्मिन्प्राप्ते शाश्वतस्योपलंभः ॥७॥

अर्थः—अने सर्व यज्ञनी जे क्रियायुं जेते वेद तेमणे कही छे अने ते यज्ञ थकी पण जपवा योग्य एवा जे भगवानना मंत्र ते अधिक छे अने ते मंत्र थकी पण ज्ञान जे भगवानना माहात्म्यने जाणवुं ते अधिक छे अने मायिक पदार्थना प्रसंगे करीने थयो जे ते पदार्थने विषे राग तेणे रहीत एवुं जे ध्यान ते जेते ते ज्ञान थकी पण अधिक छे अने एवा ध्याननी प्राप्ति थये सते अनादि सिद्ध एवुं जे भगवाननुं स्वरुप तेनी प्राप्ति थाय छे कहेतां ते भगवाननी मूर्त्ति साक्षात् देखाय छे. अने ते मूर्त्तिने विषे ध्यानना करनाराना चित्तनो निरोध थाय छे. ए ध्याननुं प्रयोजन छे अने फल पण एज छे ॥७॥ एवि रीत्ये महाभारतना शांति पर्वना मोक्षधर्ममां कह्यु छे.

'प्रातिलोमवृत्तिए ध्यान करवानी रीतनो पत्र'

लिखावीतं स्वामी श्रीसहजानंदजी समस्त मुमुक्षु बाइ भाइ सर्वे अमारा नारायण वांचशो. जत " तमे सर्वे नारायण देव जे प्रत्यक्ष भगवान तेनुं ध्यान करो छो तथा अन्वय व्यतिरेकपणे करीने तेना स्वरुपनो विचार करो छो तथा तेनुं नाम स्मरण करो छो तथा क्षेत्र क्षेत्रज्ञनो विचार करो छो एटले करवे करीने पण

समग्रपणे करीने कृतार्थपणुं मनातुं नथी अने मनमां संतोष–शान्ती पण नथी थाती अने तृष्णा रहे छे तेनुं शुं कारण छे?" तो जे प्रथम भगवान आ जगतने सरजीने ते जगत प्रत्ये अंतर्यामिरुपे करीने प्रवेश करता हवा अने पोतानुं स्वरुप तथा जगतनुं स्वरुप तेने जाण्याने अथ वेदने सर्जता हवा ते वेद, पुराण, स्मृति तेने विषे जीवोनी शान्तिने अर्थे एम कह्युं छे जे जेम पराधीनपणे स्वप्नने अवलंबने करीने तथा सुषुप्तिने अवलंबने करीने अने मूर्छाने अवलंबने करीने आ जीव देहनां विवर प्रत्ये प्रवेश करे छे. अने ते देहना अवकाशने विषे अज्ञानमय सुखदुःखने प्राप्त थाय छे तेम ज्यारे स्वाधीनपणे करीने आ जीव भगवाननी मूर्तिना ध्यानने अवलंबने करीने हृदय प्रत्ये प्रवेश करे तथा स्मरणादिक जे नव प्रकारे भक्तिनां अंग तेना अवलंबने करीने देहना हृदयाकाश प्रत्ये प्रवेश करे तथा पुरक, कुंभक, रेचक आदिक जे अष्टांगयोग तेना अवलंबने करीने प्रवेश करे तथा अन्वय व्यतिरेकपणे करीने व्यष्टि समष्टिने, विषे रह्युं जे पुरुषोत्तमनुं स्वरुप तेना विचारना अवलंबने करीने देहना अवकाश प्रत्ये प्रवेश करे तथा श्रीमद् भगवद् गीताना बीजा अध्यायने विषे कह्युं जे जीवनुं स्वरुप

तेना विचारने अवलंबने करीने हृदयाकाश प्रत्ये प्रवेश करे एवी रीते भक्ति तथा विचारने अवलंबने करीने देहने मांही अवकाश प्रत्ये स्वाधीनपणे प्रवेश करे त्यारे ए जीवना स्वरुपने देखे ने संशय निवृत्ति पामे ने पुरुषोत्तमनुं स्वरुप जेवुं प्रत्यक्ष छे तेवुं देखे अने ब्रह्ममोहोल, वैकुंठादिक जे धाम तेने पण देखे अने मूळाधारादिक जे चक्र तेने विषे रह्या जे देवता तेने देखे अने पोताना जीवने विषे रह्या जे द्रष्टा तेने देखे एवी रीते ज्यारे देखे त्यारे कोइक इश्वर साथे एकपणाने पामीने शान्ति-संतोषने पामे अने कोइक स्वामी सेवकपणे रहीने संतोषने पामे एवी रीते पूर्वे नारायण देवे एवो नियम बांध्यो छे जे आ देहना विवर प्रत्ये प्रतिलोमपणे करीने ज्यारे प्रवेश करे त्यारेज शान्तिने पामे पण वेदांत शास्त्र तथा भक्ति शास्त्र तेने श्रवणे करीने अथवा तेने कहेवे करीने पण शान्ति न पामे अने तीव्र वैराग्ये करीने पण तेवी शान्तिने न पामे अने अल्प वैराग्यनुं बळ होय अल्प भक्तिनुं बळ होय, अल्प आत्मज्ञाननुं बळ होय पण जो प्रतिलोमपणे देहने विषे हृदयरुपी गुफाने विषे प्रवेश करे त्यारेज शान्तिने पामे एवी रीते सर्व शास्त्रने विषे मोटा साधु कही गया छे ते वात सत्य छे अने

अमे पण एवी रीतेज शान्तिने दीठी छे. ए वचनने जे अमारा हो ते साचुं मानजो. ॥

" श्री पुरुषोत्तम नारायण अवतारी जे स्वयं मूर्ति तेनां असाधारण लक्षण "

(१) पूर्वे थया जे सर्वे अवतार तेमने पोताना स्वरुपने विषे देखाडे.

(२) वैकुंठादिक धामने विषे रही जे दिव्य मूर्तिओ अने ते मूर्तियोमां रह्यां जे दिव्य ऐश्वर्य ते सर्वेने पोतानी मूर्तिने विषे बहु मनुष्यने देखाडे.

(३) जेवा तेवा जीव होय तेमने पण समाधिए करीने पोतानी मूर्तिने विषे चित्तनो निरोध अष्टांग-योग सिद्ध कर्या विना करावे.

(४) बीजा अवतार धारीने जेवुं जीवनुं कल्याण कर्युं तथा चित्तनो निरोध कर्यो तेवुं पोताना भक्त द्वारे सामर्थ्य जणावे.

(५) अपार तेजोमय एवुं जे अक्षरधाम तेना मध्यने विषे रह्युं जे दिव्य सिंहासन तेनी उपर सदा विराजमान ने चारे कोरे अनंतकोटी मुक्त मंडळनी सभाए विटाणा एवा जे दिव्य मूर्ति पोते तेनुं दर्शन जेवा तेवा जीवने सहेजे करावे.

(६) पूर्वे शास्त्रने विषे कह्या जे धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, तथा योग, सांख्य अने वेदांतादिक शास्त्रना मत तेमना स्वरुपनुं प्रतिपादन ज्यारे पोते करे तथा तेमना प्रतिपादननां शास्त्र करे त्यारे पूर्वेनां शास्त्र थकी तेमां बहुज चमत्कार आवे ने सहेजे सर्वना समज्यामां आवे ने ते वार्ता शास्त्रमां जेनी बुद्धि पुगती होय तेने यथार्थ जाण्यामां आवे.

(७) पोताना दर्शन मात्रे करीनेज अनेक जीवना मननी वृत्तियुं सहेजे पोतानी मूर्तिमां तणाइ जाय.

(८) जे कोइ जीवे पोतानो आश्रय मात्र कर्यो होय तेणे करीने पण तेनुं मोटुं कल्याण थाय ने ते जीवने अंतसमय थाय त्यारे पोते पोताना पार्षदे सहित रथ, विमान लइने तेडवा आवे.

(९) अने पोतानी आज्ञाए करीने अनेक स्त्री पुरुष ते पोतपोताना धर्मने मार्गे चाले तथा ज्ञान, वैराग्य, भक्तिने मार्गे चाले एवी रीतनो पोताना वचनमां प्रताप होय.

(१०) पोताना संबंधने पाम्युं जे वस्त्र पुष्पादिक वस्तु तेने दर्शन मात्रे करीने तथा तेनां स्पर्श मात्रे करीने तत्काळ जीवने अंतर दृष्टि थइ जाय ने ते

पछी ब्रह्मपुर आदिक धाम तथा ते धामनां दिव्य ऐश्वर्य ते देखाइ आवे.

(११) जेना स्वरुप संबंधी वार्तने कोइ परदेशमां जइने करे तेने सांभळीने मनुष्यने अलौकिकपणुं जणाइ आवे.

(१२) जीवात्मा, विराटपुरुषइश्वर, प्रधानपुरुष, मूळप्रकृतिपुरुष, ने अक्षरधामना मुक्त अने अक्षर धामना निवासी जे पोते पुरुषोत्तम ते सर्वेनुं निरुपण भेदे सहित ने ऐश्वर्य सहित नोखुं नोखुं स्पष्टपणे पोते करी देखाडे तथा ऐश्वर्य सहित तेमनां स्वरुप बीजाने देखाडे तथा आवी रीतना ज्ञानने पोता थकी पामीने पोताना भक्त पण कही देखाडे एवी रीतनी प्रवृत्ति होय.

(१३) पोताना अवतार ते पोतानी मूर्तिने विषे लीन थाय पण पोतानी मूर्ति कोइ अवतारने विषे लीन न थाय एवी क्रिया समाधिने विषे कोइक कोइकने देखाय.

एवा दिव्य मूर्ति प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान तेनी श्रवणादिक जे नव प्रकारनी भक्ति ते सर्वे पापने विनाश करवावाली छे. ॥ इति असाधारण लक्षण संपुर्णम् ॥

" श्रीहरिजीए भगवानना स्वरुपनी उपासना सिद्ध करवा लखावेलो पत्र "

लिखावितं स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज जत सर्वे सत्संगी नारायण वांचजो बीजुं लखवा कारण एम छे जे, जे मनुष्यने जेवुं पोतानुं प्रारब्ध होय तेने अनुसारे तेना देहने सुख दुःख थाय छे. तथा जन्म मरण थाय छे. जीवनां प्रारब्ध कर्मने उलंघन करीने तो रुद्र, भैरव, भवानी, आदिक जे देवने देवियो छे ते कोइ पण जीवने सुखदुःख देवाने अर्थे ने मारवा जीवाडवाने अर्थे समर्थ थातां नथी अने प्रारब्धकर्म ने काळ तेने खोटुं करी नाखवुं तथा मुवाने जीवतो करवो ने जीवताने मारी नाखवो तेने विषे तो एक परमेश्वर नारायण मात्र समर्थ छे. पण बीजा कोइ देवी देवता समर्थ नथी माटे एक परमेश्वरनो दृढ आश्रय राखीने नित्य भजन स्मरण कर्या करवुं ने कोइ देव देवीनो भय राखवो नहि अने आपणे तो सर्वे भगवानना भक्त छीए अने शुरवीर छीए माटे हरिभक्तने तो कोइ रीतनो मनमां भय राखवो घटे नहि. अने मंत्र, जंत्र, औषधिए करीने कोइ माणस जीवतो रहेतो होय तो पृथ्वीमां

कोइक तो दीठामां आवत पण कोइए दीठामां तो आव्यो नाहि. अने जे बहु मंत्र जंत्रने जाणे छे ते पण मरी जाय छे अने मंत्र जंत्र कोइ उपर कोइनां चालतां होय तो घणाक शत्रु जेनी उपर होय एवा मोटा जे राजा ते जीवता शा सारुं रहे ? ने जंत्र मंत्रे करीनेज सिद्धि थाती होय तो लाखो रुपिआ खर्चीने राजाओ लश्कर भेळुं करे छे. तथा आयुद्ध सामग्री राखे छे ते शा सारुं करे ? एक भारे मंत्रशास्त्री राखे अने जंत्र मंत्रनी सिद्धिये सर्वे प्रतिपक्षिने मारी नखावे पण तेम तो कोइ ठेकाणे देखातुं नथी ? माटे निर्भय थका नारायणनुं भजन करजो अने भगवाननोज दृड विश्वास राखजो जेम भगवाने धार्युं हशे ते सत्य थाशे. पण आपणुं धार्युं तथा बीजा कोइनुं धार्युं नहि थाय अने जो कोइ जीवनुं धार्युं थातुं होय तो कोइए जीव रंकतो रहेज नहि. सर्वेने राजा थयानो उमेद छे पण तेम थाय नहि. ॥ इति कागळ संपुर्णम्. ॥

" श्री पुरुषोत्तम नारायणना स्वरुपना ज्ञाननो निर्णय "

भगवाननो जे दिव्य भाव अने मनुष्य भाव तेने अभेदपणे समजवानी रीत देखाडीए छीए जे

अनंत कोटी सूर्य, चंद्रना प्रकाश जेवुं तेजोमय एवुं जे पोतानुं अक्षरधाम तेने विषे अनंत कोटी अक्षररुप मुक्ते सेव्या अने दिव्य अने द्विभुज मूर्ति एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते सदा बिराजमान छे ते केवा छे तो अनंत कोटी जे ते मुक्तो तथा अक्षर तथा पुरुषप्रकृति ने काळ ए सर्वेना नियंता छे अने ए सर्वेना स्वामी छे अने ए सर्वेने सुखना आपनारा छे. अने स्वतंत्र छे ने महाराजाधिराज छे अने एवा सामर्थ्ये युक्त जे एनाए पोते भगवान ते जीवोनी उपर दयाए करीने तेमना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थाय छे अने मनुष्य पोतानो आश्रय करे अने पोतानी भक्ति करे तेने अर्थे मनुष्यने अनुसरतां चरित्र करे छे. अने ते मनुष्य स्वरुपने विषे पोतानी जे अक्षरधाममां रही जे तेजोमय दिव्य मूर्ति ते देखाइ आवे तथा प्रकृति पुरुषना जेवुं सामर्थ्य जणाइ आवे तथा विराट पुरुषना जेवुं सामर्थ्य जणाइ आवे तथा एक थका अनंतरुपे जणाइ आवे तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिवना जेवुं सामर्थ्य जणाइ आवे तथा ते पोतानी मूर्तिने देखीने अनंत जीवना चित्तनो विरोध समाधिए करीने थइ जाय ए सर्वे मनुष्यपणामां दिव्यभाव जाणवो अने वळी एवो दिव्यभाव न जणावे अने मनुष्यनी रीते वर्ते अने

वळी पाछो दिव्यभाव जणावे अने क्यारेक तो एनी ए मनुष्यमूर्तिने विषे केटलाकने दिव्यभाव जणावे अने केटलाकने मनुष्यभाव जणावे ते माटे दिव्य-भावने मनुष्यभाव ते एकज छे. पण एमां किंचित पण भेद नथी एवी रीते दिव्यभाव अने मनुष्यभाव ने अभेदपणे समजवानी रीत कही देखाडी. ॥१॥

भगवानना निर्गुण सगुणपणानी रीत समजवी जे एवी रीते दिव्यभाव अने मनुष्यभावने जणावता एवा जे ए भगवान तेनी जे मूर्ति ते तो मायाना जे सत्व, रज, ने तम ए त्रण गुण ने ए त्रण गुणना कार्य तेणे रहित छे अने दिव्य छे ते माटे ए भगवानने निर्गुण जाणवा अने एवा जे ए निर्गुण भगवान तेने विषे सत्य, शौच, दया, ए आदिक जे अमायिक एवा दिव्य गुण ते रह्या छे माटे ए भगवानने सगुण जाणवा. अथवा मायाना त्रण गुणे युक्त अने ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयना कारण एवा जे अनिरुद्ध, प्रद्युम्न अने संकर्षण तथा ब्रह्मा, विष्णु अने शिव, ए छ जे पोतानां रुप तेणे करीने पण ए भगवानने सगुण जाणवा. ॥२॥

भगवानना साकार निराकारपणानी रीत समजवी जे आत्यंतिक प्रलयने अंते पण पोताना अक्षरधामने विषे दिव्य अवयववान् एवो नित्य सिद्ध

ए भगवाननो आकार ते रह्यो छे ते माटे ए भगवानने साकार जाणवा अने एवो जे भगवाननो सदा दिव्य आकार तेने ए भगवानना एकांतिक भक्त देखे छे. अने ए भगवाननो जे सदा दिव्य अवयव एवो आकार ते मायामांथी थयां जे चोविस तत्व तेणे रहित छे ते माटे ए भगवानने निराकार जाणवा अथवा ए भगवाननी अनन्य भक्तिए रहित ने आत्मज्ञानादिक साधने सहित एवा जे पुरुष ते तो भगवानना अक्षरधामना तेजनेज केवळ देखे छे पण ते भगवानना दिव्य आकारने नथी देखता ते सारु ए कैवल्यार्थी छे ते ए भगवानने निराकार कहे छे. ॥३॥

भगवानना कर्ता अकर्तापणानी रीत जाणवी जे एवा जे ए भगवान ते पुरुष, काळ ने माया तेना आदिकर्ता छे अने प्रेरक छे ने नियंता छे ते माटे ए भगवानने कर्ता जाणवा अने पुरुष, काळ ने माया ते पासे अनंत कोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलयने करावे छे पण पोते नथी करता अने पोते तो पोताना अक्षरधामने विषे पोताना भक्तजने सेव्याथका नित्य बिराजमान छे ते माटे ए भगवानने अकर्ता जाणवा अने ए पुरुष, काळ अने माया ते जे ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलयने करे छे ते ए भगवाननी

अंतर्यामी शक्तिनी प्रेरणाए करीने करे छे पण ते विना स्वतंत्रपणे करवाने समर्थ नथी अने जे एमने स्वतंत्र कर्ता जाणे छे ते तो नास्तिक छे ने ए भगवाननी प्रेरणाए करीने जे एमने कर्ता जाणे छे ते तो आस्तिक एवा भगवानना भक्त छे.

आ चार रीते जे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपने जाणे छे तेने भगवानना स्वरुपनुं यथार्थ ज्ञान थाय छे अने एवी रीते समज्यामां जेने कसर छे तेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपमां संशय थाय छे माटे भगवानना जे भक्त होय तेने आ वार्ता अवश्य समजवानी छे. ॥४॥

श्रीजीमहाराजे पोतानी रुचि कहि ते उपर स्वामीए वात करी जे, भक्तिसिद्धिमां ओगणपचास कह्या जे अधर्मना सर्ग तेणे रहित जे संत होय अने तेने विषे कह्या जे ओगणसाठ धर्मसर्ग तेणे सहित जे संत होय तथा धर्मामृतमां कह्या जे धर्म तेने अतिशे दृढपणे पाळतो होय तथा भगवाननी भक्तिए युक्त होय एवानो संग आपणे करवो पण दोषेयुक्त होय तेनो संग तो क्यारेय न करवो ते जो तेनो संग करे तो तेना दोष पोतामां आवे ते माटे विचारीने संग करवो अने भगवानने अर्थे करवुं तेने भक्ति कहीए. ॥१॥

निरंतर भगवाननो संबंध राखवो पण तेमां जो कांइक अंतराय आवे तोय पण जे अंतरायनो रोक्यो रोकाय नहि ने निरंतर भगवाननुं समीपपणुं राखे तेने उपासना कहिए. ॥२॥

लाधा ठकरे प्रश्न पुछ्युं जे " हे महाराज ! असद् पदार्थने विषे वासना बंधाणी छे ते केम टळे ? " पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवाननी मूर्ति मोढा आगळ धारीने भजन करे त्यारे तेने वासनानुं बळ मटे नहि अने ज्यारे भजननो करनारो जे द्रष्टा तेने विषे मूर्तिने धारे त्यारे वासनानुं जोर नाश थइ जाय जेम पंखीनुं काचुं इंडुं होय अने ते फुटे त्यारे पाणी होय पण कंइ आकार रहे नहि अने इंडुं पाकुं होय अने फुटे त्यारे तेमांथी बच्चुं निसरे तेनो आकार टळे नहि तेम जे द्रष्टामां मूर्ति धारे तेनो घाट ते काचा इंडा सरखो तेनो आकार रहे नहि अने जो बाहेर मूर्ति धारे त्यारे तेनो घाट ते पाका इंडा सरखो तेनो आकार मटे नहि माटे एम समजवुं जे द्रष्टारुप जे अक्षरधाम तेमां भगवान सदाय रहे छे अने बाह्य जे दर्शन आपे छे ते तो भक्तना उपदेशने अर्थे छे पण भगवान रह्या तो द्रष्टाने विषेज छे एवी रीते समजे तेनी वृत्ति अखंड भगवानमां रहे छे जेम वरकन्या होय तेनां मावतर तो जुदा

जुदा गाममां रहेतां होय पण ए बे जणनी सुरती परस्पर हेते करीने प्रोवाई रहे छे ते सर्वे धंधो करे पण पुरुषने एम स्मृति रहे जे मारी स्त्री फलाणे गाम रहे छे अने स्त्रीने पण एम स्मृति रहे छे जे मारो पति फलाणे गाम रहे छे तेम ए भक्त छे ते एम जाणे जे मारा पति एवा जे भगवान ते द्रष्टाने विषे रह्या छे तो ते भक्तनी वृत्ति अखंड भगवानमां रहे छे अने सर्वे वासना नाश थई जाय छे. ॥३॥

पछी शुकमुनीए पुछयुं जे "बाह्य मूर्ति धारे तेना घाटनो आकार बंधाय छे अने द्रष्टामां मूर्ति धारे तेना घाटनो आकार नथी बंधातो तेनुं शुं कारण छे?" पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे बाह्य मूर्ति धारे छे ते तो ए भक्तने भगवानने विषे मनुष्यपणानो भाव छे अने द्रष्टाने विषे मूर्ति धारे छे त्यारे मनुष्यपणानो भाव नथी आवतो ए हेतु छे. पछी शुकमुनीए पुछयुं जे "जेने द्रष्टाने विषे ने बारणे मनुष्यपणानो भाव आवतो न होय तेने केम करवुं?" पछी श्रीजी बोल्या जे जेने कोइ रीते भगवानमां मनुष्यभाव न आवतो होय ते भक्त तो अतिशे बळीओ छे माटे ते तो बाह्य धारे तथा द्रष्टामां धारे ते बेय बराबर छे. ॥४॥

मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे "भगवाननी

प्राप्ति थया केडे भगवानना भक्त होय तेने कोइ रीते करीने काम क्रोधादिक जे मायाना विकार तेणे करीने भगवानना भजनमां विक्षेप न थाय. अने कोइ जातनुं दुःख अंतरमां न व्यापे एवी शी समजण छे ?" पछी श्रीजी बोल्या जे, ए भक्त देहरुपे वर्ते छे के आत्मारुपे वर्ते छे ? पछी मुक्तानंद स्वामीए कह्यु जे "वर्ते छे तो देह रुपे" त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे ए भक्त देहरुपे वर्ते छे त्यारे तो ए अखंड भगवान पासे रहे अने चरणारविंद छातीमां राखे अथवा राधिका जेवी पदवी पामे तो पण एने अंतरमां सुख थाय नहि. तो एवाने आ लोकमां तो क्यांथी सुख आवे अने ते वैकुंठलोकमां जय विजयनी पेठे, अथवा गौलोकमां जाय अथवा ब्रह्मलोकमां जाय पण देहाभिमानीने क्यांय सुख थाय नहि त्यारे मुक्तानंद स्वामीए पुछ्युं जे "हे महाराज ! मृत्युलोकमां देह छे ते तो पंचभूतनुं छे अने वैकुंठादिकमां तो भगवानना पार्षद छे ते अति समर्थ छे ते अहिंना देहने त्यांना देह बरोबर केम होय ?" त्यारे महाराज बोल्या जे, आंहीं असमर्थ छे अने त्यां घणा समर्थ छे माटे देहाभिमानीने क्यांय सुख नथी अने जेने देहाभिमान नथी ते तो गौलोक, वैकुंठमां होय तोय सुखी छे ने पृथ्वि उपर होय तो पण सुखी

छे माटे जे आत्मारुपे करीने भगवाननी भक्ति करे छे तेनीज भक्ति साची छे अने ते भक्त आत्मारुपे वर्ते छे अने देह पोतानुं रुप नथी मानतो तेने तो आंही छे तोपण ब्रह्ममोहोल तुल्य छे. ॥५॥

मानकुवामां श्रीजीमहाराज साधु प्रत्ये बोल्या जे, जीव जेते सुक्ष्म थकी पण सुक्ष्म छे अने मोटा थको पण मोटो छे ते पचास कोटी योजन पृथ्वी छे अने तेथी दशगणुं अधिक ने दशगणुं सुक्ष्म जळ छे अने ते थकी दशगणुं अधिक ने दशगणुं सुक्ष्म तेज छे ने ते थकी दशगणो अधिक ने दशगणो सुक्ष्म वायु छे एवी रीते प्रकृति पर्यंत सर्वे छे ने प्रकृति थकी अधिक सुक्ष्म ने मोटो जीवात्मा छे तेनी उपर उष्णीकनुं द्रष्टांत दीधुं. ॥६॥

"भगवाननो निश्चय समजवानी रीत"

उत्तम सविकल्प निश्चयवाळो भक्त भगवानने एम समजे छे जे, भगवानने कोइ दोष अडतो नथी केम जे भगवान तो सर्वेना कारण छे ते जे जे क्रियामां प्रवर्ते छे ते भगवाननी अंतर्यामीपणे प्रेरणाए करीने प्रवर्ते छे पण ते विना तो जीव कांइ करवाने के भोगववाने समर्थ नथी माटे उत्तम सविकल्प निश्चय एवो भेद पडयो केम जे अंतर्यामीपणे सर्वे क्रियाने भगवान

करे छे एम ए समजे छे तेमां आ बे दोष आवे छे जे सर्वे जीव प्राणी मात्रने विषे अंतर्यामीपणे तो महा-पुरुष छे ते जेवा पुरुषोत्तमने जाण्या. । भगवान जेते सर्वेने विषे अंतर्यामीपणे रह्या थका सर्वे जीव प्राणी मात्रना जे विषय छे तेने अंतर्यामीपणे रह्या थका सर्वेना भोगने भोगवे छे पण भगवान तो अति समर्थ छे तेने कोइ दोष अडतो नथी पण भगवानने ए विषयने भोगव्या विना चालतुं नथी एम भगवानने जाणे । पण एम न जाणे जे भगवान तो जे जे कांइ पदार्थने ग्रहण करे छे ते तो जीवना कल्याणने अर्थे छे एम न जाणे. ॥७॥

कनिष्ट निर्विकल्प निश्चयवाळो भगवानने आकाश जेवा समजे छे जेम आकाशने चार भूतनी क्रिया अडती नथी तेम भगवानने कोइ दोष अडतो नथी एम समजे पण देशकाळे करीने कोइक समे वैराजपुरुषनी तथा संकर्षणनी मोटप के ऐश्वर्यने जोइने तथा शास्त्रमांथी सांभळीने एने कोइक समे एवो घाट थाय जे भगवान आगळ ए पण छे तथा तेना विषयमां कोइक समे राग जेवुं जणाय पछी ते संकल्पने टाळीने खोटो करी नाखे ने वळी कोइक समे पाछो एवो घाट थाय ते माटे कनिष्ट निर्विकल्प निश्चय एवो भेद पडयो. ॥८॥

मध्यम निर्विकल्प निश्चयवाळो भगवानने ब्रह्मरुप समजे ने भगवान तो कोइने प्रवृत्तिने विषे जोडता नथी अने वैराज–पुरुष तथा महाविष्णु आदिक जे कोटान कोटी मायाने विषे जोडाणा छे ते तो पोताने रागे करीने जोडाणा छे पण भगवान तो कोइने मायाने विषे तथा विषयने विषे जोडता नथी एम समजे माटे एने कोइने विषे भार न आवे पण महापुरुषनि मोटप जोइने तथा सांभळीने तथा तेना ऐश्वर्य जोइने कोइक समे एवो संकल्प थाय जे भगवानने पण आवी विभूतिओ छे तथा तेना विषयने विषे राग जेवुं जणाय तथा ते विषयमां सारप्य मनाय पछी वळी ते संकल्पने खोटा करीने एम समजे जे महापुरुष तथा बीजा जे जे मायाने विषे जोडाया छे तथा निवृत्ति धर्मने विषे जोडाया छे ते पोताने मोटपनो राग छे ते माटे जोडाया छे पण भगवान तो कोइने कोइ संघाथे तथा मोटपमां तथा कोइ विषयमां जोडता नथी ने जे जोडाय छे ते पोत पोताने रागे करीने जोडाय छे एम समजीने ते संकल्पने खोटा करी नाखे ते माटे एने मध्यम निर्विकल्प निश्चय एवो भेद पडयो. ॥९॥

उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळो भगवानने

एम समजे जे महाराज तो कोइने क्यांइ जोडता नथी महाराज तो अक्षरधामने विषे पोताना एकांतिक जे भक्त तेने निरंतर दर्शन आपे छे पण पोताने बीजा कोइनी पासे कांइ कराववुं नथी अने महा पुरुषादिक जे जे प्रवृत्ति तथा निवृत्तिने विषे जोडाया छे ते तो पोताने रागे करीने जोडाया छे तेने अक्षर द्वारे करीने जोडे छे पण पोते तो कोइने प्रवृत्तिने विषे जोडता नथी ते उपर मराराजे वात करी हती जे प्रथम सृष्टि करवानो समय थयो त्यारे भगवाने अक्षर सामुं जोयुं त्यारे अक्षरे अनंतकोटी मुक्त बेठा हता ते सामुं जोयुं तेमांथी जेने सत्–आशय हतो एवो जे पुरुष ते आगळ आवीने उभो रह्यो त्यारे अक्षरे वृत्तिए करीने तेने मायाने विषे जोडयो त्यारे माया थकी अनंत कोटी महाविष्णु थया पछी एक एक महा-विष्णु थकी एक एक ब्रह्मांड उत्पन्न थयुं एवी रीते अनंत कोटी ब्रह्मांड उत्पन्न थातां हवां त्यारे केटलाके एम जाण्युं जे एने राग हतो ते जोडाणो ने केटलाके तो एम जाण्युं जे एने राग पण हतो अने महाराजे आज्ञा करी एटले माया साथे जोडाणो अने केटलाके तो एम जाण्युं जे एने जोडावुं नहोतुं पण महाराजे आज्ञा करी तेथी माया साथे जोडाणो माटे ए बेय

पाछळथी कह्या तेमणे ए काचप टाळी जोइए एम जे समजे तेने उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळो कहीए. ॥१०॥

व्याससुत्रमां एम वात छे जे बीजा अवतार थाय छे ते ज्यांथी आवे छे त्यां पाछा जाय छे पण अक्षरधामने कोइ पामता नथी अने ज्यारे पुरुषोत्तम पोते अक्षरधाममांथी आवे छे त्यारे ते भेळा बीजा अवतार तथा मूळपुरुष तथा प्रधानपुरुष तथा विराटपुरुष तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इंद्र, वरुण, कुबेर, सूर्य, चंद्रमा, यमराजा इत्यादिक अवतार तथा ऐश्वर्यार्थी ते सर्वे पुरुषोतम पधारे त्यारे सर्वे पृथ्वी उपर देह धारे छे अने ए सर्वे पुरुषोत्तमना भक्त थाय छे त्यारे ए जेने उपदेश करे ने जे सत्संगी थाय तथा त्यागी थाय त्यारे जो एने महाराजनी साथे हेत थाय तथा धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये सहित जो भक्ति करे तो ते सर्वे अक्षरधामने पामे पण ए अवतारादिक अहिंयांज साधु तथा सत्संगी तथा ब्रह्मचारीरुपे पुरुषोतमना आश्रित थया होय अने पोता साथे जे जोडाणा होय तो तेने तेओ पोताने त्यां लइ जाय छे ने ए अवतारादिक ते तो ज्यांथी आव्या होय त्यां पाछा जाय छे ते अहिंयां आवे छे त्यारे कांतो एक देहने त्यां मेलीने बीजे

देहे करीने आवे छे अथवा बीजाने पोतानी गादी सोंपीने आवे छे पछी अहिंयां आवीने पुरुषोत्तमनी उपासना द्रढ करीने पोतानी खोटने टाळीने पछी पोते ज्यांथी आव्या होय त्यां पाछा जाय छे अने पछी पोतानी आवरदामां जेटलां वर्ष बाकी रह्यां होय तेने पुरां करीने पछी त्यांथी अक्षरधाममां जाय छे पण ते आवरदाने भोगव्या विना पाधरा अहिंथी अक्षर-धाममां जवाय नहि ते माटे जे मुमुक्षु होय तेने भग-वानना जेवुं हेत कोइ मुक्त के साधुने विषे न करवुं. अने जो तेवुं हेत तेमने विषे करे तो तेने पण पोताने विषे जोडे माटे विचारीने हेत करवुं आ वात अवश्य समजवानी छे. ॥११॥

जेम समुद्रने विषे जीव रहे छे ते जे थकी मोटो होय ते ते थकी बळे करीने अधिक होय तेम मुक्त पण जे जे थकी मोटा होय ते ते थकी सामर्थ्य, बळ, तथा ऐश्वर्ये करीने अधिक होय ने दीवा थकी महातेज पर्यंत जे भेद कह्या छे ते सर्वे मुक्तना भेद कह्या छे तेमां जे विजळीना जेवा मुक्त छे ते तो विषयरूपी मेघमां रहे तो पण विषय एने लोपी शके नहि पण देशकाळे करीने धन तथा

स्त्री तेने विषे एने लोभ जेवुं जणाय तथा अहंममत्व जेवुं जणाय पण मुके त्यारे न सांभरे. ॥१२॥

चंद्रमा जेवा मुक्त छे ते तो जेम चंद्रमा उगे त्यारे रात्रीनुं अंधारुं न रहे पण वादळां आडां आवे त्यारे तेनो प्रकाश ढंकाइ जाय पण सुझे खरुं तेम चंद्रमा जेवा मुक्त छे तेने गमे तेवा विषय प्राप्त थाय तो पण तेमां लोभाय नहि पण देशकाळे करीने कोइक समे राग जेवुं जणाय छे परंतु पाछळथी तेनी तेने तुच्छता जणाइ जाय छे. ॥१३॥

सूर्यना जेवा मुक्त छे ते तो जेम सूर्य उगे त्यारे रात्री न रहे पण वादळां आडां आवे त्यारे प्रकाश ढंकाइ जाय पण रात्री न कहेवाय तेम जे सूर्य जेवा मुक्त छे तेने तो सुजे तेवा विषय प्राप्त थाय तथा गमे तेटली मोटप मळे तो पण तेमां राग न थाय तथा बंधाय नहि पण कोइक देशकाळे करीने सारप्य जेवुं जणाय ने पछे असत्य थइ जाय. ॥१४॥

प्रलयकाळना अग्नि जेवा मुक्त छे ते तो जेम प्रलयकाळे पंचभूत तथा देहधारी मात्रनो नाश करी नाखे छे अने एक पोते अग्नि तथा वायु तथा आकाश ए त्रण रहे छे पण बीजुं कांइ नथी रहेतुं तेम जे प्रलयकाळना अग्नि जेवा मुक्त छे तेने तो एक

पोतानो आत्मा तथा अक्षर, तथा पुरुषोत्तम ए त्रण विना बीजुं कांइ पंच विषय तथा लोक भोग ने सुख ते कांइ टकी शके नहि. ॥१५॥

महातेज जेवा जे मुक्त छे तेने तो कांइ टकी शके नहि केम जे प्रलय काळनो अग्नि छे तेने विषे तो राख पण रहे छे अने महातेजने विषे तो कांइ टकी शके नहि. तेम प्रलयकाळना अग्नि जेवा जे मुक्त छे तेने तो कांइक विषयमां आभास जेवुं जणाय छे पण जे महातेज जेवा मुकत छे तेने तो जेम महातेजना प्रकाशमां जीव, माया, ने ऐश्वर्यार्थी ए सर्व लीन थइ जाय छे तेम तेनी दृष्टिमां मायानुं आवरण कांइ न रहे अने पुरुषोतम तथा अक्षर ने अक्षरना मुक्त ते विना बीजुं कांइ तेनी दृष्टिमां न आवे तेमां सूर्य जेवा तो बद्रिकाश्रमना मुक्त छे अने प्रलयकाळना अग्नि जेवा तो श्वेतद्विपना मुक्त छे अने महातेज जेवा तो अक्षरना मुक्त छे ए जे त्रण प्रकारना मुक्तना भेद कह्या ते आपणा सत्संगमां छे अने बीजा मुक्तना भेद कह्या ते पण सत्संगमां छे एम जाणवुं एवी रीते मुक्तनो तारतम्यता छे ते आ वातने पोते विचारे तो पोते जेवो होय तेम मालम पडे. ॥ १६ ॥

चोक्खी उपासना करवी तेमां लोचो पोचो न राखवो अने जे उपासनामां भेद पडे छे ते पक्षपाते करीने पडे छे केम जे पोतानो पक्ष राख्या सारुं पोताना जे सेवक होय तेने कहे जे "लक्ष्मी-नारायण छे तथा नरनारायण छे तेज महाराज छे" एम समजावे ने पोते तो जेम समजता होय तेम समजे माटे आपणे ता कोइ अवतारने विषे मोटप न समजवी अने महाराज सर्व अवतारना अवतारी पोते एकज छे अने अवतार मात्रना स्वामी छे ने बीजा सर्वे अवतार महाराजना भक्त छे. एम समजवुं अने बीजाने एम समजाववुं ते केम जाणीए तो, एकवार अमने महाराजनां ने श्रीकृष्ण भगवाननां दर्शन थयां त्यारे श्रीकृष्ण महाराजनी सेवामां देखाणा तथा रामचंद्रजीनां तथा महाराजनां दर्शन थयां त्यारे पण रामचंद्रजी महाराजनी सेवामां देखाणा ने नरनारा-यणनां तथा महाराजनां दर्शन थयां त्यारे पण नर-नारायण महाराजनी सेवामां देखाणा ने महाराजे व्यापकानंदस्वामीने पण पोताना स्वरुपने विषे चोविस अवतार लीन करी देखाडया अने पर्वतभाइ पण चोविस अवतारने महाराजनी स्तुति करता निरं-तर देखता अने वळी एक भक्तने समाधि थइ त्यारे

तेमणे एम कह्युं जे " हुं ब्रह्ममहोलने दरवाजे गयो त्यारे मांहीथी महाराजे कह्युं जे नरनारायणने कहीए जे एने आंही आववा द्यो." तथा एक वखत विज्ञान-दासजी अमारे दर्शने आव्या हता पछी तेणे कह्युं जे " मारे नरनारायणनां दर्शन करवा जावुं छे." त्यारे अमे कह्युं जे समाधि करीने महाराज पासे जाओ त्यारे ते समाधि करीने अक्षरधाममां गया ते समे त्यां नरनारायण महाराजनां दर्शन करवा आव्या हता पछे महाराजे तेमने आज्ञा करी जे " तमे बद्रिकाश्रममां जाओ " त्यारे नरनारायण त्यांथी चाली निकळ्या अने पोताने स्थानके गया. एवा एवा हजारोवार चमत्कार महाराजे जणाव्या छे तथा हमणां पण जणाय छे ते आपणे बीजा अवतार जेवा महाराजने केम समजीए ? माटे आपणे तो चोख्खी उपासना समजवी जे बीजा अवतार तथा अक्षरना मुक्त तथा अक्षर अने पूर्वे जे जे अवतार थई गया छे तथा आगळ थाशे ए सर्वेना अवतारी श्रीजीमहाराज छे अने ए सर्वे अवतार महाराजना भक्त छे एम समजवुं. अने ए सर्वेने नियममां राखनारा पोते एकज छे पण ए विना बीजो कोइ नथी ए मोटा संतनो सिद्धांत छे. ॥ १७ ॥

कळवुं, कहेवुं, ने रहेवुं ते कळवुं एटले भगवानने कळवा ते केवी रीते तो महाराजनो चमत्कार जोवो ने श्रीकृष्णनी सामर्थी जोवी अने रामचंद्रजीनी सामर्थी जोवी अने ऋषभदेवनी सामर्थी जोवी अने कपिलजी तथा दत्तात्रेयनी सामर्थी जोवी अने पछी पूर्वापर विचारीने जुवे त्यारे बीजा अवतार करतां श्रीकृष्ण भगवाननी सामर्थीमां फेर छे ते ज्यारे तपासीने जुवे त्यारे खबर पडे केम जे श्रीकृष्ण भगवाने पोताने विषे चोविस अवतारने पृथक्क पृथक देखाडया ते जोतां एम जणाय छे जे बीजा अवतारना अवतारी श्रीकृष्ण भगवान छे अने महाराजनी अने श्रीकृष्णनी सामर्थी जोइए त्यारे श्रीकृष्णना अवतारी श्रीजीमहाराज छे एम पोतानी बुद्धिमां तपास करीने ते सर्वे अवतारना अवतारी श्रीजीमहाराज छे एम जे जाणवुं तेने कळवुं कहीए.———एवा जे श्रीजीमहाराज तेना जे एकांतिक मोटा साधु होय तेने ओळखवा अने ते साथे हेत करवुं तेने कहेवुं कहीए. एवाजे मोटा साधु तेनी अनुवृत्ति राखवी तथा तेमनी सेवा करवी ने भगवाननी आज्ञामां फेर न पाडवो अने माथा साटे सत्संगनो पक्ष राखवो ए आदिक जे जे एकांतिक साधु कहे तेम करवुं तेने रहेवुं कहीए. ॥१८॥

श्रीजीमहाराज अने साधु तेडवा आवे त्यारे केना भेगुं जावुं? केम जे महाराज एम कहे जे "तमारे आ साधु साथे हेत छे अने अमे आम फरीने आवीए छीए ते तमारी नजरमां आवे तो अमारा भेळा आवो के ते साधु भेळा जाओ" त्यारे केना भेगा जावुं? ते वास्ते महाराजना जेवुं हेत कोइ मुक्तने विषे न राखवुं अने जेने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति होय तेने तो एक भगवानने विषेज प्रीति राखवी पण बीजा कोइ मुक्तने विषे न राखवी. अने जेने धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति ते अति द्रढ न होय तेणे तो कोइक मोटा एकांतिक साधु होय ते साथे हेत करवुं अने सत्संगीनी सभा बेठी होय त्यारे तो पर्वतभाइ जेवा पासे बेसवुं अने सत्संगी तथा साधुनी सभा बेठी होय त्यारे तो गोपाळानंदस्वामी तथा मुक्तानंदस्वामी जेवा संत पासे बेसवुं तथा हेत पण महाराज साथे राखवुं पण बीजा कोइने विषे संग तथा हेत ते महाराजना जेवुं न राखवुं अने मुक्तानंद स्वामी तथा गोपाळानंदस्वामी ए बे बेठा होय तेमां पण जे सरस होय तेमनी पासे बेसवुं एवी रीते सत्संग करवामां विवेक राखवो पण ए वात भूलवी नहि.॥१९॥

जेने आत्मा तथा परमात्मा अखंड देखाय तेमणे पण शब्दादिक पंच विषयमां न लोभावुं अने जे पुरुषनी इंद्रियो शब्दादिक विषयमां आशक्त होय ते पुरुष भगवानना सुखने क्यारेय पण पामे नहि.॥२०॥

रसनादिक सर्वे इंद्रियोने नियममां राखे अने रसे रहित तथा मापे जुक्त जमे कहेतां बे भाग अन्ने करीने पुरे अने एक भाग जळे करीने पुरे अने एक भाग खाली राखे एवी रीते सर्वे इंद्रियोने नियममां राखे एवो जे पुरुष होय ते कामे करीने क्यारेय पण पडे नहि. ॥ २१ ॥

जे पुरुषमां बे वानां होय तेमां एक तो जाणीने विर्यपात करे तथा बीजुं धन राखे एवो जे साधु पुरुष ते सतसंगमांथी जरुर पडी जाय. ॥ २२ ॥

त्यागी थइने धन राखे ते पुरुषने दिवस दिवस प्रत्ये हजार गायो मार्यानुं पाप थाय एम सनातन जुनी श्रुतिमां कह्युं छे. ॥ २३ ॥

स्वभाव टाळवो ते सर्वथी कठण छे ते तो अति कल्याणनो खप होय तथा द्रढ श्रद्धावाळो होय तथा अति शुरविर होय तथा कोइक कहेनार होय तथा पोते पण निरंतर खटको राखे तथा निरंतर जाणपणामां रहे तो आ कथा ए उपाय करतां करतां

जो अतिशे खपवाळो होय. तो सात आठ वर्षे करीने स्वभावने टाळे, नहि तो बे त्रण जन्मे करीने टळे ते माटे जेन पोतानो स्वभाव टाळवो होय तेने प्रथम तो मोटा साधु संगाथे अतिशे हेत करवुं ने ते साधु निरंतर कठण वचन कहेता रहे तथा पोते पण निरंतर ते स्वभाव उपर खटको राखे तथा निरंतर जाणपणामां रहे तो धीरे धीरे स्वभाव टळे, नहि तो टळे नहि ते उपर बिलाडीनुं द्रष्टांत दीधु. ॥ २४ ॥

मानी होय तेने कोइक वखाणे त्यारे फुलाइ जाय अने पोताने बरोबरिया जे साधु होय तेनी कोइ पुजा करे तथा वस्त्र ओढाडे इत्यादिक सन्मान करे अने पोतानुं न करे त्यारे ते लजामणीना झाडनी पेठे करमाइ जाय अने मुवा जेवो थइ जाय माटे व्रत, तप, त्याग, ज्ञान, कथा, वार्ता, ध्यान, भक्ति इत्यादिक जे जे साधन करे छे ते मान वधे ते वास्ते करे छे पण भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करे नहि ते मान टळवुं सहुथी अति कठण छे. ॥२५॥

मान तथा काम ए बे दोष तो जीवमां रह्या छे ते टळवा महा कठण छे ए बे दोष तो त्यारे टळे ज्यारे देह, इंद्रियो, अंतःकरण, देवता, पंचभूत, अने पंचविषय ए सर्वेनो वारंवार निषेध करे ने निरं-

तर आत्मसत्तारुपे वर्ते त्यारे टळे ते विना बीजा कोटी उपाय करे तोय मान अने काम ए बे दोष टळे नहि. ॥ २६ ॥

विषयमां राग छे ते त्यारे टळे ज्यारे इंद्रियो अंतःकरण ए सर्वेनो निषेध करीने आत्मसतारुपे थइने जीवमां भगवाननी मूर्तिने धारे तो धीरे धीरे ए राग टळी जाय पण ते विना टळे नहि ते उपर विज्ञानदासजीने वात करी जे तमे बहार मूर्तिनुं ध्यान करता त्यारे विषयमां राग हतो अने ज्यारे जीवमां ध्यान करवा मांडयुं त्यारे राग मात्र टळी गया. ॥२७॥

जगत ते शुं तो शब्द, स्पर्श, रुप, रस ने गंध ए जे पंचविषय ते जगत छे तेमां पण मान, स्त्री ने धन ए त्रण तो विशेष जगत छे. माटे त्यागीने तो बाळकनी पेठे कोइ मान करे तथा अपमान करे तथा पूजा करे तथा धूळ नाखे ए बेयने विषे सम-भाव रहे तो जगतमां न लेवाणो अने हर्षशोकने पामे तो जगतमां लेवाणो तेमज त्यागीने धन ने स्त्री ए बे तो न होय पण जो कोइक भक्त भगवानना मंदिरने विषे धूळ नाखीने खाडा पुरे तथा पाणा फेरवे तथा मंदिरमां गारच्य करे तथा संतनी सेवा करे अने कोइक तो रजोगुणी मनुष्यने सत्संग करावीने तेने उपदेश

करीने बे त्रण तथा चार हजार रुपिया लावे त्यारें ए बेयनी उपर समभाव राखवो अने जो एम न करे ने अधिक न्युन भाव रहे तो जाणवुं जे ए जगतमां लेवाणो. ॥ २८ ॥

मावे भक्ते कह्युं जे "त्यागीने स्त्री ने धन ए बे नथी जणातां पण देहने स्वभाव ए बे तो जणाय" त्यारे स्वामीए कह्युं जे देहमां धन रह्युं छे अने स्वभावमां स्त्री रही छे ते केम छे तो उपरथी त्याग करीने बेठो छे पण जो देशकाळे करीने स्त्रीनो जोग थाय त्यारे तेने भोगववानी आशक्ति थाय अने भोगवे ते माटे स्त्री ते स्वभावमां रही छे. ने देहमां धनतो एम छे जे देहमां मंदवाड थाय तथा कोइक जातनो स्वभाव पडे तथा वस्त्रादिक पदार्थ जोइए त्यारें धनमां आशक्ति थाय ते माटे धन ते देहमां छे ने स्वभावमां स्त्री तो एम रही छे जे च्यवनऋषि बीजाना देहनी नाडीयुं ने बंध करे एवा समर्थ हता तो पण स्त्री परण्या अने सौभरी ऋषिए पण साठहजार वर्ष तप कर्युं हतुं तो पण स्त्री परण्या माटे स्त्री तो स्वभावमां रही छे अने आपणे आंही स्त्रीनो संकल्प थाय तो उपवास करे त्यारे दोष टळे अने जो देहे करीने स्त्रीनो संग थाय तो सत्संगमां रखाय नहि पण संक-

रूपे करीने सत्संगमांथी कढाय नहि अने बद्रिकाश्रममां संकल्प थाय तो त्यांथी पाछो देवलोकमां मुके अने त्यां स्त्री भोगवीने पछी ते स्त्रीनो त्याग करीने स्त्रीनो पोताना जीवमांथी राग टाळीने त्यां जाय त्यारे राखे अने श्वेतद्विपमां तो स्त्रीनो अव्यक्त राग लगारेक थाय त्यारे त्यांथी बद्रिकाश्रममां काढी मुके. ते माटे बद्रिकाश्रमवाळाने श्वेतद्विपवाळा जेवुं थावुं छे अने श्वेतद्विपवाळाने अक्षरना मुक्त जेवुं थावुं छे अने श्वेतद्विपमां भगवान पांच वखत दर्शन दे छे ने त्यांथी अक्षर धाममां जावुं होय तो जाय अने त्यां दर्शन करीने पाछा श्वेतद्विपमां आवे पण त्यां रहेवाय नहि. अने श्वेतद्विपवाळाने वैराटनी मोटप जोइने तथा महाविष्णुनी मोटप जोइने तेमां मोह न थाय अने महापुरुषनी मोटपने तथा तेना विषयने जोइने तथा पोताने ते विषय प्राप्त थाय त्यारे देशकाळे करीने कोइकसमे राग जेवुं जणाय अने पछी ते संकल्पने खोटो करी नाखे अने अक्षरना मुक्तने तो मुजे तेटलो स्त्रीनो प्रसंग थाय तथा कोइक महापुरुषना जेवो अधिकार आवे तथा देशकाळ विषम थाय तो पण महाराजनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते अने तेमां बंधाय नहि अने ते विषय एने कांइ बाध न करे अने आज्ञा प्रमाणे करीने

रहेवा दे माटे जे अक्षरभावने पाम्यो होय तेने सुजे तेटलो विषयनो जोग थाय तथा मान थाय ने पोते सुजे तेटली प्रवृतिमां जोडाणो होय तो पण तेमां बंधाय नहि तथा तेमां हर्ष शोक न पामे ते माटे जे साधु अक्षरभावने पाम्यो होय ते पुरुषोतमनी सेवानो अधिकारी थयो ने भगवान जेम पोते काळ, कर्म, ने मायाने आवरणे रहित छे तेवो तेने पण करे छे अने अखंड पोतानी सेवामां राखे छे ते माटे एवा साधु थावुं ते सौथी अति कठण छे अने जे एवो साधु थयो तेने अने भगवानने अंतराय नथी रहेतो ते ज्यारे साधुनी सभा थइ त्यारे सनकादिकनुं प्रमाण न थयुं केम जे तेने क्रोध थयो त्यां तो नरनारायण ऋषिनुं प्रमाण थयुं केम जे तेने क्रोध न उपज्यो तो काम तो क्यांथीज उपजे ते उपर इंद्रनुं द्रष्टांत कही देखाडयुं ते माटे एवा साधु थावुं ने स्वभाव मात्रने टाळीने ज्यारे शुद्ध अक्षरभावने पामे त्यारे भगवाननी सेवामां रहेवाय ने जो आंही लगारेक वचन लोप्युं होय तो त्यां बहु अपमान थाय ते उपर शाहुकारनी शाहुकारीनुं द्रष्टांत दीधुं. ॥ २९ ॥

ज्ञाननी पक्वता न होय तो पोताने बंधन थाय तथा पोताना आश्रितने बंधन थाय, तेनी आगळ

खबर पडे ने ज्ञाननी पक्वता काळे करीने धीरे धीरे थाय छे. ॥ ३० ॥

अतिशय दीन थाय तो पण देह भाव रहे छे ने अतिशय आकराइ करे तोय पण देह भाव रहे छे ते माटे ए बेयने मुकीने केवळ सत्तारुपे वर्ते तो तेमां कोइ रीते खोट न रहे. ॥ ३१ ॥

महाराज आज्ञा करे जे "तमारी नजरमां आवे त्यां अवतार धरीने जीवोना कल्याण करी आवो" त्यारे एवे ठेकाणे देह धारवो जे गरिब ब्राह्मण होय ने मागीने पेट भरतो होय ने कन्या पण न मळती होय ने वेदनो भणेलो ने धर्मवाळो होय तेने घेर देह धरवो के तरत घरनो त्याग करीने त्यागी थवाय अने जो भारे धनाढय गृहस्थने घेर जन्म धरे तो नानो होय त्यांथी एवा मार्गमां चडावी दे जे मान, मोटप, स्त्री, धन, ने लोकनी आबरु तथा पोताना संबंधी तेमां स्नेह थाय पछी ते मुकीने नीकळाय नहि ते माटे देह धरवो पडे तो एम समजी विचारी तपास करीने देह धरवो ए वात अवश्य समजवानी छे. ॥ ३२ ॥

गुणातितानंदस्वामीए पुछयुं जे "देशकाळादिके करीने एक निरधार रहे एम जणातुं नथी माटे

केम करे तो मति न फरे?" त्यारे कह्युं जे ए तो एक भगवानने विषेज मोटप समजे पण बीजा कोइनो भार न आवे ने सत्संगनो वधारो थाय तथा घटी जाय तो पण एम समजे जे भगवान मळ्या छे ते तो कांइ जता रहे तेम नथी तथा कोइक ले एम पण नथी अने जो सत्संगनो वधारो थाशे ने लोक बहु मानसे तो सामो भगवानने भजतां अंतराय थाशे अने रजोगुणी मनुष्य सत्संगी थाशे ने बहु मानसे तो सामा आपणने पण रजोगुणी करशे माटे एम चोक्खु समजे जे भगवान करता हशे ते ठीकज करता हशे एम समजे तो कोइ रीते मति न फरे. ॥ ३३ ॥

पंच इंद्रियोए करीने जे जे क्रिया करे ते कर्मयोग कहेवाय ने भगवान संबंधी जे जे क्रिया करे ते भक्तियोग कहेवाय ने आत्मामां तथा परमात्मामां मन अखंड रहे त्यारे सांख्ययोग कहेवाय. ॥ ३४ ॥

मावे भक्ते पुछयुं जे "करी रह्या ते केम जणाय?" त्यारे कह्युं जे आत्मामां परमात्माने अखंड जोइ रहे त्यारे कांइ करवुं न रह्युं एम जाणवुं. ॥ ३५ ॥

गुणनी प्रवृत्ति तो रजोगुण, तमोगुण ने सत्वगुणे करीने छे ते ज्यारे सत्वगुण वर्ते त्यारे तो शम दमादिक धर्मसर्ग वर्ते ने रजोगुण वर्ते त्यारे अ-

नेक प्रकारना संकल्प थाय ने तमोगुण वर्ते त्यारे तेमां चार दोष वर्ते एक तो प्रमाद बीजो मोह त्रीजु आळस चोथी निद्रा हवे तेने जीतवाना उपाय (१) प्रमाद तो शुद्ध ज्ञान थाय तो टळे (२) मोहतो ज्यारे शुद्ध ज्ञान ने जाणपणुं निरंतर रहे तो टळे (३) ज्यारे आळस आवे त्यारे भगवाननुं माहात्म्य जाणीने भगवाननी नव प्रकारनी भक्ति करे तो टळे. (४) ज्यारे निद्रा आवे त्यारे उभा थावुं तथा किर्तन गाववां, कथा वांचवी, तथा सांभळवी ए आदिक क्रिया करे त्यारे निद्रा जीताय एम ए चार उपायने सिद्ध करे त्यारे तमोगुण जीताय अने मलिन सत्वगुणे करीने रजोगुण जीताय अने शुद्ध सत्वगुणे करीने मलिन सत्वगुणने जीताय अने शुद्ध सत्वगुणने तो भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान ने उपशम तेणे करीने जीते त्यारे सिद्ध थयो कहेवाय. ॥ ३६ ॥

भगवाननो अखंड संबंध थयो ते केम जाणवो ? भगवाननो संबंध तो तेने कहीए जे तेमां कांइ अंतराय न रहे अने भगवानने सर्वोपरी समजे ने भगवान जे जे वचन कहे तेने सत्य माने अने ज्यां मुके त्यां राजी थको जाय पण मुंझाय नहि तथा ते कोइ विषयने विषे बंधाय नहि ने ते विषयने विषे

राग पण न थाय ने निरंतर दोषने देखे एम वर्ते त्यारे जाणीए जे तेने भगवाननो संबंध अखंड थयो. ॥३७॥

एक तो त्यागी थइने त्यागीनो धर्म दृढ पाळवो ने ग्रहस्थने ग्रहस्थनो धर्म दृढ पाळवो अने श्वेततेजने विषे भगवान सदाय मूर्तिमान बिराजमान छे एम जाणीने ते भगवाननी भक्ति करतो होय ने पोताने ने अक्षरने एक करीने माने ने भगवान विना बीजे एक अणुं मात्र पण प्रीति न होय एवी रीतनो पोते थयो होय तो पण भगवाननुं माहात्म्य जाणवाने अर्थे एकांतिक साधुनो समागम मन, कर्म, वचने करीने निरंतर राखवो. ॥ ३८ ॥

देह ते स्त्री छे अने संकल्प थाय छे ते दीकरा थाय छे ते ज्यारे देहने सांख्य विचारे करीने खोटो करीने तेथी नोखो सत्तारुपे वर्ते त्यारे स्त्रीनो त्याग कर्यो कहेवाय ने संकल्पने खोटा करे ने अखंड भगवाननी मूर्तिने संभारे त्यारे दीकरानो त्याग कर्यो कहेवाय, नहि तो स्त्रीने दिकरा रुपे करीने देह ने संकल्प छे एम जाणवुं. ते माटे देहाभिमाननो ने संकल्पनो त्याग करे ने केवळ सत्तारुपे निरंतर वर्ते त्यारे स्त्रीनो ने दिकरानो त्याग कर्यो कहेवाय आ वात अवश्य समजवानी छे ते समजीने एम वर्तवुं. ॥३९॥

भगवाननुं ध्यान करे ते देखाडयाने अर्थे करे तथा भक्ति करे ते पण देखाडयाने अर्थे करे ने ज्ञान करे ते पण देखाडयाने अर्थे करे ने वैराग्य राखे ते पण देखाडयाने अर्थे राखे ने धर्म पाळे ते पण देखाडयाने अर्थे पाळे ने सेवा करे ते पण देखाडयाने अर्थे करे ने कथा वार्ता जे जे क्रिया करे छे ते लोक जाणे तथा पोतानी मोटप वधे तेने अर्थे तथा मान वध्याने अर्थे तथा देखाडयाने अर्थे उपरथी करे तेने कनिष्ट पुरुष जाणवो. अने जे पुरुष देखाडयाने अर्थे ने भगवान प्रसन्न थाय ते बेयने अर्थे करे तेने मध्यम पुरुष जाणवो. अने जे पुरुष धर्मपाळे, तप करे, त्याग करे, ज्ञान करे. वैराग्य राखे, भक्ति करे, भगवानमां हेत करे, सेवा करे, ध्यान करे, ने कथा, वार्ता, किर्तन जे जे करे ते केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करे ने भगवानने अर्पण करे पण लोक वखाणे ते सारुं न करे ने कोइ मान आपे, अपमान करे, तथा तिरस्कार करे तो पण हर्ष, शोकने न पामे ने मान आपे तेमां राजी न थाय ने तिरस्कार करे तेमां शोक न करे पण राजी रहे ने जे जे करे ते भगवानने अर्पण करे एवो जे पुरुष होय ते उत्तम पुरुष जाणवो. ते सारुं जे जे करवुं ते भगवानने राजी कर्याने अर्थे

करवुं पण कोइक वखाणे ते सारुं न करवुं. ॥ ४० ॥

योगी एवो जे पुरुष तेने काम जेते भयानक छे कहेतां दावानळ अग्निनी पेठे बाळे छे ते काम ते शुं ? "तो शब्द, स्पर्श, रुप, रसने गंध ए जे पंचविषय तेनी जे इच्छा वर्ते ते काम छे" ते जीतवो अति दुर्जय छे ते जो देहने बळहीन करे तो इंद्रियोमां राग रहे ने देह तथा इंद्रियोने बळहीन करे तो मनमां राग रहे छे अने मनना संकल्प बंध करे तो बुद्धिमां राग रहे छे ते माटे काम तो बुद्धिथकी पर एवो जे जीव ते जीव जेते अनादि अज्ञानरुप जे कारण शरीर तेणे युक्त छे ते माटे काम तो बुद्धिथकी पर एवो जे जीव तेने विषे छे माटे काम जीतवो अतिदुर्जय छे. ॥ ४१ ॥

प्रकृतिए युक्त एवो जे पुरुष ते जेते कर्मयोग करे ते कर्मयोग ते शुं? तो "भगवाननी श्रवण कीर्तनादिक जे भगवानने अर्थे क्रिया करवी ते" अने ते क्रिया करतां जे सुखदुःख आवे तेनुं सहन करवुं ते रुप ज्ञानयोग, अने ते ज्ञानयोगे भळपो एवो जे कर्मयोग तेने प्रकृतियुक्त एवो जे पुरुष ते जेते करे. अने एवो जे कर्मयोग ते तो ज्ञानयोगनो अधिकारी होय तेने पण करवो तो कर्मयोगना अधिकारीए तो

जरुर करवो ने जे आत्माने ने परमात्माने साक्षात्कार देखतो होय ते न करे तो बाध नहि अने तेने पण कर्मयोग तो करवो जोइए. केम जे ते जो कर्मयोगने करे तो तेने देखीने बीजा पण भक्तियोगमां प्रवर्ते. ॥४२॥

जे नववानां राखे तेने कल्याणना मार्गमां कोइ रीते विघ्न न आवे.

(१) भगवाननी दृढ उपासना करवी ते कोइ रीते फरे नहि.

(२) जे जे भगवानना नियम छे तेमां दृढपणे रहेवुं पण कोइ नियमनो भंग न करवो.

(३) शुभ देश सेववो पण अशुभ देशने न सेववो.

(४) शुभकाळ सेववो पण भूंडो काळ न सेववो.

(५) सत्पुरुषनो संग मन, कर्म, वचने करवो पण ते सत्पुरुषनो संग करतां जो कोइ स्वभाव आडो आवे तो ते स्वभावनो त्याग करवो पण सत्पुरुषना संगनो त्याग न करवो.

(६) पोतानी उत्तम श्रद्धा राखवी पण तेमां प्रमाद न राखवो.

(७) साधुनो तथा ब्रह्मचारीनो तथा पाळानो तथा सत्संगीनो इत्यादिक कोइ भगवानना भक्तनो अवगुण न लेवो.

(८) देहाभिमाननो त्याग करवो.

(९) कोइ मंडळना तथा मंदिरना थइने रहेवुं पण अधरिआ न रहेवुं.

आ नव वातनामां जो एक न होय तो तेना सत्संगमां जरुर विघ्न पडे ते माटे जेने पोतानो सत्संग निर्विघ्न राखवो होय तेने आ नववातां अति दृढ करीने राखवां. ॥ ४३ ॥

जीवमां पंचविषयरुपी राग रह्या छे ते क्यारे टळे तो ज्यारे आत्मसत्तारुप थइने वारमवार प्रतिलोम दृष्टि करे तथा भगवाननी मूर्तिने वारमवार धारे ते केम धारे तो जाणीए भगवान आगळ चाल्या आवे छे ते भगवाननी मूर्तिने त्वचाए करीने स्पर्श करते करते देहने सांख्य विचारे करीने खोटो करतो जाय अने भगवाननी मूर्तिने जीवमां धारे पछी एमने एम धारते धारते ज्यारे देहना भाव खोटा थइने केवळ जीवमां भगवाननी मूर्ति रहे. त्यारे वळी ते मूर्तिने बहार लावे पछी जाणीए भगवान भारे भारे शणगार पहेरीने आगळ सामा चाल्या आवे छे पछी ते भगवानने नेत्रे करीने दर्शन करते करते मूर्तिने प्रतिलोमपणे करीने जीवमां उतारते जावुं अने देहना तथा इंद्रियोना भावने खोटा करते जावुं पछी ज्यारे

केवळ जीवमां भगवाननी मूर्तिज रहे पण बीजो कोइ आकार न रहे. त्यारे वळी ते मूर्तिने बहारे लावे पछी जाणीए भगवान गाता गाता चाल्या आवे छे पछी श्रवण इंद्रियनी वृत्तिद्वारे मूर्ति जीवमां उतारता जावुं अने देह इंद्रियोना भावने खोटा करते करते ज्यारे जीवमां भगवानी मूर्तिज रहे. त्यारे वळी ते मूर्तिने बाहेर लावे पछी जाणीए भारे अत्तर, चंद-दनादिकनी सुगंधीए युक्त थका चाल्या आवे छे पछी नाशिका इंद्रियद्वाराए भगवाननो सुगंध लेते जावुं ने देह इंद्रियोना भावने खोटा करते जावुं पछी ज्यारे मायाना भाव मात्र टळो जाय अने सत्तामात्र जे जीव तेमां भगवाननी मूर्ति रहे त्यारे इंद्रयोने खोटा करते करते केवळ सत्तामात्र जीवात्मा तेमां भगवाननी मूर्तिज रहे पण बीजो कोइ पंचविषय संबंधी घाट न थाय पण बीजो कोइ एवो उपाय नथी त्यारे ते जे केवळ जीवात्मा तेमां भगवाननी मूर्तिने जोइ रहेवुं. पछी एम मानवुं जे मारो जीवात्मा छे तेज अक्षरब्रह्म छे. केमजे अक्षरमां पुरुषोत्तम भगवान रह्या छे तेना तेज मारा जीवात्माने विषे रह्या छे एमने एम पंच-इंद्रियो तथा चार अंतःकरण संबंधी जे भाव तेने खोटा करता जावुं. एम वारमवार लोम प्रतिलोमपणे करीने

जीवमां भगवानना मूर्तिने धारे त्यारे जीवमां राग रह्या छे ते टळे पण ते विना बीजा कोटी उपाय करे तोय पण जीवमां राग छे ते न टळे. ते समाधिनिष्ठ होय तथा ज्ञानी होय तथा विचारवान होय तोय पण जीवमांथी राग न टळे जीवमांथी तो ज्यारे पूर्वे कह्युं तेवी रीते वारमवार लोम प्रतिलोमपणे करीने जीवमां भगवानना मूर्तिने जोइ रहे तो जीवमां पंचविषयनी वासना छे ते टळे ने जो ध्याननो उपाय कह्यो एम न करे तो जीवमांथी राग न टळे माटे लिंग देहने टाळवानो एज उपाय छे. ॥ ४४ ॥

आत्मनिष्ठानी एम रीत छे जे आपणामां जे खरेखरा त्यागी छे ते आत्मनिष्ठाए करीने देह ने देह संबंधी पदार्थ तथा देहना संबंधी ए सर्वेने नाशवंत जाणीने एनो अतिशय निषेध करीने तथा दोष दुःख ने नाशवंतपणुं जाणीने मनने विषे एनो अतिशय निषेध करी नाख्यो छे. ते माटे ए पूर्वे देहादिक कह्या तेनो कोइक अतिशय निषेध करे तथा पोताने वसमां लागे एवां वचन कहे तथा पोताना संबंधीने कोइक खोदे तो पण एने एनो अवगुण न आवे शा माटे जे एने तो आगळथीज एवो निर्धार करी राख्यो छे जे आ देह ने देहना संबंधी ते तो जेवां पूर्व जन्मनां छे तेवां

आ पण छे. माटे तेणे करीने मनमां हर्ष शोक न करे तथा मनमां पण वसमुं न लागे पण देहे करीने गृहस्थनी पेठे टाढ, तडको, श्रम, भूख, तरस ते खमाय नहि. शा माटे तो एनो देहे करीने अभ्यास नथी कर्यो अने ग्रहस्थे तो देहे करीने तेनो अभ्यास करी राख्यो छे. माटे देहना कष्टने खमे छे पण जो कोइ देह ने देहना संबंधी ने खोदे तो मुक्ताथी पण वसमुं लागे. ॥ ४५ ॥

एकांतिक धर्मने विषे वर्ताववुं ते तो पंडे भगवान होय तो वर्तावे तथा ते भगवानना एकांतिक साधु धर्म, ज्ञान, वैराग्य, तथा माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्तिए युक्त होय तथा भगवाननी मरजीने जाणीने ते भगवाननी मरजी प्रमाणे वर्तता होय तथा पोते ऐश्वर्ये करीने सर्वने दाबे एवा समर्थ होय ते पण एकांतिक धर्मने विषे वर्तावे. ॥ ४६ ॥

सात प्रकारना मुक्तनां लक्षण तथा तेने ओळखवानी रीत कहीए छीए.

(१) आ लोकनो मुक्त होय तेने एम ओळखवो जे तेने आ लोकमां विख्याति करवी तथा आ लोकमां मान वधे एवी क्रिया करवी तथा तप करीने धर्म पाळवो तथा ज्ञान शीखवुं तथा वैराग्य शीखवो तथा

सत्संग करावो तथा वार्ता करवी इत्यादिक जे जे क्रिया करे ते आ लोकमां विख्याति थाय तथा आ लोकमां कीर्ति थाय, तथा पोतानी मोटप वधार्याने अर्थे करे, पण भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे न करे. जे " हुं आवी रीते धर्मादिकने दृढपण पाळीश तो भगवाननो मारी उपर राजीपो थाशे. " इत्यादिक भगवत्प्रसन्नता विना बीजां जे जे साधन करे ते केवळ आ लोकनो विख्यातिने अर्थे करे, आवी रीतनां लक्षण जेने विषे जणाय ते प्रकट भगवाननो उपासक होय तो पण तेने एम जाणवो जे आ लोकनो मुक्त छे.

(२) देवलोकना मुक्तने एम ओळखवो जे, देवलोकनो मुक्त होय तेने एवी क्रिया गमे जे सारां सारां रमणीक पदार्थने भोगववां तथा वाजींत्र वजाडीने गावणुं शीखवुं तथा गाववुं तथा गवरावीने सांभळवुं, तथा भारे भारे काव्यो बांधवी तथा भारे रागवाळा श्लोक बोलवा तथा सुक्ष्म वस्त्र राखवां तथा छोकरानी सोबत राखवी तथा बरोबरीयानी सोबत राखवी तथा रजोगुणी मनुष्य साथे हेत करवुं तथा रजोगुणी मनुष्यमां माग करीने हेत करवुं इत्यादिक जे जे क्रिया कही ते ते क्रियानुं मुख्यपणुं होय ने भगवाननुं गौण-

पणुं होय एवी रीतनां लक्षण जेने विषे जणाय त्यारे एम जाणवुं जे, आ देवलोकनो मुक्त छे.

(३) वैकुंठना मुक्तने एम ओळखवो जे, वैकुंठना मुक्तने केवळ धर्म पाळवो ते उपरज तेनी दृष्टि होय. अने ए भक्तने जो भगवान एम कहेजे तमे ए धर्मने मोळो पाडीने अमे कहीए छीए एम वर्तो त्यारे जो पोताना अंगमां मळतुं आवे एवुं वचन होय तो माने अने जो धर्मथी विरुद्ध वचन होय, तो ते वचननो त्याग करे पण धर्मने मोळो पाडीने भगवाननुं वचन मनाय नहि. एवी रीतनां लक्षण जेने विषे जणाय त्यारे एम जाणवुं जे आ वैकुंठनो मुक्त छे.

(४) बद्रिकाश्रमनो मुक्त होय तेने एम ओळखवो जे, तेने केवळ तप करवुं तेने विषे रुचि होय. पण जो ते तपने घसारो आवे एवी कोइक क्रिया होय ने जो ते तपने मोळुं पाडीने पंडे भगवान कहे जे, " आ प्रवृ-तिनी क्रिया करो " त्यारे ते भगवाननुं वचन पण ' पोताना अंगमां मळतुं आवे एवुं होय तो माने, अने जो पोताना अंगने घसारो आवे तो पोतानुं तपनुं अंग होय ते राखे पण भगवाननुं वचन मनाय नहि ' एवी रीतनां लक्षण जेने विषे जणाय त्यारे एम जाणवुं, जे, आ बद्रिकाश्रमनो मुक्त छे.

(५) श्वेतद्विपना मुक्तने एम ओळखवा जे, श्वेतद्विपना मुक्तने देह, इंद्रियो तथा अंतःकरण ते थकी प्रतिलोमपणे वरतवुं. तथा मनमां कोइ विषयनो घाट तथा संकल्प तथा कोइ मायिक पदार्थनो मनमां घाट थाय इत्यादिकनो मनमां संकल्प थवा न देवो. तथा मनमां संकल्प थाय छे ते संकल्पने जीतवा सारु निरंतर जाणपणामां वृत्ति राखे ने जो ते पोतानुं अंग मुकावीने भगवान कहे जे आ प्रवृत्तिनी क्रिया करो त्यारे तेमां पोताना अंगमां मळतुं आवे एवुं वचन होय तो माने अने जो पोताना अंगने घसारो आवतो होय तो ते वचन मुके पण पोताना अंगने मोळुं न पाडे, एवी रीतनां लक्षण जेने विषे जणाय त्यारे एम जाणवुं जे, आ श्वेतद्विपनो मुक्त छे.

(६) गोलोकना मुक्तने एम ओळखवो जे, तेने एवी जातनी इच्छा होय जे भगवाननी भक्ति करवी तथा भगवानने थाळ धरवा तथा भगवानने अर्थे भारे भारे वस्त्र तथा घरेणां तथा भगवाननां मंदिर कराववां तथा भगवानने अर्थे भारे भारे बाग बगीचा करावવા तथा फरीने गाववुं. इत्यादिक क्रियाए करीने भगवाननी भक्ति करे. अने जो तेनुं भगवान खंडन करीने एम कहे जे तमारे हवे ए क्रिया न करवी

अने आ अमे कहीए छीए एम करो. त्यारे ते भगवान वचन कहे तो पण मनाय नहि अने ते भगवानना वचननो त्याग करे पण पोताना अंगने घसारो न लगाडे, एवां लक्षण जेने विषे जणाय त्यारे एम जाणवुं जे, आ गोलोकनो मुक्त छे.

(७) अक्षरना मुक्तने एम ओळखवो जे, तेने साधारणपणे तो पोताने विषे अति दृढ धर्म होय तथा भगवानना माहात्म्ये सहित अति परिपक्व ज्ञान होय तथा अति दृढ वैराग्य होय तथा भगवानना माहात्म्ये सहित एकांतिक भक्ति पोते करतो होय. अने जो प्रकट भगवान एम आज्ञा करे जे, तमे धर्मने तथा ज्ञानने तथा वैराग्यने तथा भक्ति इत्यादिक जे साधन तेने मोळां पाडीने आ अमे कहीए छीए एम करो. त्यारे ते जेम भगवान आज्ञा करे तेमज वर्ते. अने वळी एम कहे जे हे महाराज! जेम तमे कहेशो तेम हुं करीश. एम कहीने ते भगवानना वचनने उत्साहे सहित थको पाळे पण तेमां संशय लेश मात्र पण न करे. अने ज्यारे भगवाननुं परोक्षपणुं होय त्यारे तो भगवाने जेम आज्ञा करी होय तथा जेम भगवाने मर्यादा बांधी होय ते धर्ममर्यादा प्रमाणे पोते वर्ते पण तेने मुकीने लगारे पण आडो

अवळो चाले नहि ते नियम प्रमाणेज वर्ते. आवी रीतनां लक्षण जणाय, त्यारे एम जाणवुं जे, आ अक्षर धामनो मुक्त छे. आजे सात प्रकारना मुक्तनां लक्षण कह्यां ते प्रकट भगवानना मळेला तेमां ए साते प्रकारना साधु होय, ते माटे मुमुक्षु होय तेने आ वातने विचारीने हेत करवुं. अने पूर्वे कह्या जे छो प्रकारना मुक्त तेमांथी जो कोइकनी साथे हेत थाय, तो जेम पोते संसाररुपी समुद्रने तरे छे. तेम जे पोता साथे जोडाणो तेने पण संसारने विषे तारे छे. पण पृथ्वीने द्रष्टांते जे भगवाननी मूर्ति तेने विषे चोटवा दे नहि. अने अक्षरना मुक्त साथे हेत कर्युं होय ते केम भगवानमां चोटाडे तो जेम हजारमणनो पाणो होय, ते भेळो मणनो पाणो बांध्यो होय ते तत्काळ पृथ्वीमां चोटाडे तेम अक्षरना मुक्त साथे जोडाणो होय तो गमे तेवुं आवरण होय तोपण तेने तोडीने भगवाननी मूर्तिमां जोडे छे. अने पूर्वे कह्या जे छो प्रकारना मुक्त तेनी साथे जोडाणो होय तो ते केवी रीते संसारमां तारे तो जेम हजार मणनुं लाकडुं होय ते भेळो मणनो पाणो बांध्यो होय ते पाणाने घणोय बुडवानो स्वभाव छे तो पण लाकडुं पाणाने तारे छे. तेम तेओ पण संसाररुपी समुद्रने विषे

तारे छे, पण भगवाननी मूर्तिने विषे चोटवा दे नहि. ते माटे मुमुक्षुने आ वातने विचारीने हेत करवुं. ॥४७॥

" शास्त्रमां महापुरुषादिकना अवतार कह्या होय तेने पण अक्षर पर पुरुषोत्तम कह्या होय ए केम समजवुं ए वात समजाती नथी ते कहो ? " त्यारे कह्युं जे, ए वात यथार्थ समजाय तेम कहीए तेने सांभळो जे ज्यारे "अक्षरनो अवतार" पृथ्वी उपर थयो होय, त्यारे अक्षरने पुरुषोत्तम कह्या होय ते अक्षर ते महापुरुषने समजवा ते जेम जेम उतरता ते अक्षरने समजवा अने तेथी पर पुरुषोत्तम समजवा. ते इंद्र जे ते अक्षर ने ब्रह्मा पुरुषोत्तम ने ब्रह्मा अक्षर ने वैराट पुरुषोत्तम ने वैराट अक्षर ने प्रधानपुरुष पुरुषोत्तम अने प्रधानपुरुष अक्षर ने तेथी पर महापुरुष पुरुषोत्तम ने महापुरुष अक्षर ने तेथी पर अक्षरातित पुरुषोत्तम जे छे ते आज "श्रीजोमहाराज" आपणने दया करीने मळ्या एम अक्षर अने पुरुषोत्तम ते ज्यां जेनुं प्रकरण होय त्यां तेने कह्या होय ते वात समज्या विना मति भरमाय छे. अने इंद्रनो पृथ्वी उपर अवतार थयो होय अने तेने पुरुषोत्तम कह्या होय पण पोतानुं ऐश्वर्य होय तेटलुंज देखाडे पण तेथी अधिक न देखाडाय. ते इंद्रथी लइने ब्रह्मा,

वैराट, प्रधानपुरुष, प्रकृतिपुरुष ने अक्षर पर्यंत ते सर्वे पोत पोतानुं सामर्थ्य देखाडे पण तेथी अधिक न देखाडाय. अने पुरुषोत्तम तो अक्षर ने तेथी उतरता इंद्र आदिक सर्वेनुं सामर्थ्य लोक, भोग ने ऐश्वर्य ते पंडे देखाडे तथा भक्तद्वारे तथा पोताना संबंधने पाम्यां जे पदार्थ तेनां दर्शन तथा स्पर्शथी पण भक्तने देखाइ आवे त्यारे पुरुषोत्तम सर्वे अवतारना अवतारी एज छे एम जाणवुं. ने आ वात पंडे पुरुषोत्तम थकी तथा तेना एकांतिक साधु थकी समजाय छे ते विना शास्त्र भणे सांभळे तो पण समजाय नहि. ॥४८॥

इंद्रथी लइने महापुरुष पर्यंत अवतार थाय छे तेना भक्तना ऐश्वर्यना भेद कहीए छीए जे, इंद्रनो अवतार पृथ्वीने विषे थयो होय तेने जो पुरुषात्तम जाणीने उपासना करी होय तो ए बहु मोटो थाय तो देवता जेवो थाय. अने ब्रह्मानो अवतार थयो होय तेने जो पुरुषोत्तम जाणीने उपासना करी होय तो पण बहु मोटो थाय तो इंद्र जेवो थाय. अने वैराटनो अवतार थयो होय अने तेने जो पुरुषोत्तम जाणीने उपासना करी होय तो पण एनो भक्त बहु मोटो थाय तो ब्रह्मा जेवो थाय. अने महाविष्णुनो अवतार थयो ने

तेने जो पुरुषोत्तम जाणीने उपासना करी होय तो पण तेनो भक्त बहु मोटो थाय तो वैराट जेवो थाय. पण एथी मोटो न थाय. अने महापुरुषनो अवतार थयो होय अने तेना भक्त तेने पुरुषोत्तम जाणीने जो उपासना करी होय तो पण तेनो भक्त बहु मोटो थाय तो महाविष्णु जेवो थाय छे अने पुरुषोत्तम पंडे पधार्या होय त्यारे ते पुरुषोत्तमनो आश्रय मात्र कर्यो होय अने तेने विषयने विषे राग होय अने ते मरे त्यारे महापुरुष जेवो तो ते पण थाय. अने ए पुरुषोत्तम भगवानना खरेखरा भक्त होय ते तो देहनो त्याग करीने अर्चि मार्गे करीने अक्षरधामने पामे छे, अने अक्षरना साधर्म्यपणाने पामे छे, अने अखंड भगवानना सेवामां रहे छे. ते पुरुषोत्तमने केम ओळखवा? तो महापुरुषादिक अवतार धारीने आव्या होय त्यारे पोतानुं ऐश्वर्य होय तेटलुंज देखाडे पण अधिक न देखाडे केम तो जेटलुं पोतानुं ऐश्वर्य होय तेटलुंज देखाडे पण तेओ वधु क्यांथी देखाडे अने पुरुषोत्तम पधार्या होय त्यारे तो अक्षरधाम, तथा अनंतकोटी बीजां धामो तथा अनंत जे पोतानां ऐश्वर्य छे ते सर्वे सत्संगी तथा कुसंगी तथा जेने जेने पोतानी मूर्तिनो संबंध थयो होय ते सर्वेने देखाडे छे पण पात्र कुपात्रने गणे नहि. ॥४९॥

हवे ए पुरुषोतमने मळेला जे भक्त तेने भज्यानी रीत कहिए छीए जे, एक भक्त भगवानने भजे पण ऐश्वर्यने पामवानी इच्छा होय. अने बीजाने एम जे प्रथम आत्माने जोइए, अने ते पछी आत्माने विषे भगवाननी मूर्तिने जोवानी इच्छा होय. अने त्रीजाने एम वर्ते जे, भगवाननी मूर्तिने विषे हेत करवुं, तथा ध्यान करवुं, तथा स्पर्श करवो, तेने विषे त्वरा वर्ते. अने भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करतां करतां आत्मा देखाय तो भले पण केवळ आत्माने जोवाने न इच्छे तेमां जेने ऐश्वर्यनी इच्छा होय ते तो महापुरुषादिकना ऐश्वर्यमां जोडाइ जाय. अने जेने आत्माने जोवानी इच्छा होय तेने तो अक्षर लीन करी नाखे अने भगवन्निष्ठ तो अक्षरनो लीन कर्यो पण लीन थाय नहि, ते तो भगवाननी सेवामां रहे छे. तेमां कोइक भक्त तो ढोलीओ तथा तळाइ तथा तकीओ, चमर, झारी, विंझणो, चाखडीयुं तथा घोडो तथा पलाण तथा छत्र ते ते पदार्थरुपे पण मुक्त थाय छे. अने भगवान ज्यारे चाले छे त्यारे मुक्त छे ते आगळथी रस्ताने बेकोरे वृक्ष थइने पुष्प तथा फळे सहित भगवान उपर छाया करे छे. अने भमवान ज्यारे आगळ चाल्या जाय त्यारे पाछळथी उठीने आगळ छाया करे

छे. अने त्यां तापादिकतो नथी पण ते भगवाननी जेवे जेवे रुपे करीने पोताने सेवा थाय अने प्रसन्नता थाय तवे तेवे रुपे मुक्त थइने सेवे छे. ॥५०॥

हवे मुक्तना सुखनु तारतम्यपणुं कहीए छीए. ते चार प्रकारना मुक्त छे तेमां एक तो भगवाननां दर्शन करे, अने बीजा मुक्त छे तेनां पण दर्शन करे, अने बीजा जे मुक्त छे ते भगवानने मेषोन्मेष जोइ रहे. अने सन्मुख बेठा जे मुक्त तेने पण देखे. तेमां प्रथम कह्या तेथी बीजाने अनंत गणुं सुख आवे छे. अने त्रीजा जे मुक्त छे ते तो केवळ भगवाननेज देखे पण बीजा कोइ मुक्तने न देखे पण पोताना देहनी स्मृति रहे अने तेने भगवाननुं सुख बीजा मुक्तना करतां कोटि-गणुं अधिक आवे. अने चोथा जे अति उत्कृष्ट स्थिति वाळा मुक्त छे तेने तो केवळ भगवाननी मूर्तिं विना कोइ मुक्तनी तथा पोताना देहनी स्मृति न रहे, अने तेने भगवाननुं सुख केवुं आवे तो जेम भगवानने पोतानी मूर्तिनु पोताने सुख आवे छे तेवुं भगवाननुं सुख मुक्तने आवे छे. ते माटे तेना सुखनुं वर्णन करवुं जे आवुं सुख एने आवे छे ते तो शेषजी पर्यंत कोइ कहेवा समर्थ थाय एवो नथी. ॥ ५१ ॥

ए अक्षरधामने क्यारे पमाय तो ज्यारे पुरुषोत्तम भग-

वान एवो संकल्प धारीने आंही पधारे जे,"मारी मूर्तिनो संबंध थइने जेने मारा स्वरूपनो निश्चय थाय ते सर्वेने मारे अक्षरधाममां लाववा छे." एवो संकल्प धारीने ज्यारे आंही पधारीने जेने पोते लइ जाय तेथीज अक्षरधाममां जवाय छे. पण बीजा अवतारथी अक्षर धाममां न लइ जवाय तो साधने करीने तो क्यांथी पामे ? ॥ ५२ ॥

अक्षरधाममां स्त्री, पुरुष एवो भेद नथी केम जे स्त्रीना देहमां योनि आदिक चिह्न रहित स्त्रीनो देह छे. अने पुरुषना देहमां शिष्नु आदिक चिन्हे रहित अक्षरधाममां पुरुषनो देह छे. अने ए अक्षर-धामने विषे योनि, शिष्नु ने गुदा ए त्रण अंगे रहित देह छे अने बीजा धाममां चार चरणारविंदनी उपासना छे. ते माटे पुरुष पण मुक्त होय ने तेने जो स्त्रीनी इच्छा होय तो ते अक्षरधामने स्वप्नमां पण न देखे तो बीजो तो क्यांथी देखे अने स्त्री पण मुक्त होय तेने पुरुषने विषे भोग बुद्धि रही होय तो ते पण अक्षरधामने स्वप्नमां पण न देखे तो बीजो तो क्यांथी देखे ते माटे आपणे पण जो स्त्री तथा धननी जो वासना रही होय तो अक्षरधामने न पमाय ते माटे स्त्री ने धन ए बेनो राग देहथकी पर इंद्रियो ने

इंद्रियो थकी पर मन ने मन थकी पर बुद्धि ने बुद्धि थकी पर जे कारण शरीरे सहित जीव छे ते जीवमां स्त्री ने धननो राग छे ते वारमवार धर्म, ज्ञान, वैराग्य तेना डंक लगाडोने स्त्री, धनना मूळ उखाडी नाखवां अने वारमवार देह, इंद्रियो, अंतःकरण तेनो निषेध करीने आत्मसत्तारुप थइने जीवमां भगवाननी मूर्तिने धारे तो धीरे धीरे स्त्री, धननो, राग छे ते नाश पामे अने ते राग ज्यारे टाळे छे त्यारे अक्षरधाममां रहेवाय छे. अने तेनां मूळ उखाडीने सतारुप थयो होय तो पण गाफलपणुं न राखे तथा उतरतानो संग तथा पंच विषय तथा विषम देशकाळ तथा सुक्ष्म वस्त्र तथा छोकरासंघाथे भाइ बंधाइ तेमनाथी ता हरणनी पेठे बीतो रहे अने संगतो पोताथी उत्कृष्ट अंगवाळो होय तेनोज करवो आ वात जेवा तेवा आगळ न करवी. ॥५३॥

(१) मुक्त, मुमुक्षु, विषयी अने पामर तेना लक्षणने जाणवां पामरनुं लक्षण तो ए छे जे, पामर ते विषयने मुढपणे भोगवे पण सार असारने न जाणे तथा पाप पुण्यने न जाणे तथा सत्य, असत्य, तथा धर्म, अधर्म तथा न्याय, अन्यायने न जाणे. तथा आम करीश तो मारुं सारुं थासे अने आम करीश तो मारुं भूंडुं थाशे इत्यादिक कोइ जातनो विवेक न होय. अने

केवळ विषयने भोगव्याने विषेज आशक्त होय एवी रीतनां लक्षण जेने विषे जणाय त्यारे जाणवुं जे आ पामर छे ने मूढ छे.

(२) विषयीने एम जाणवो जे, शास्त्रमां जेवी रीते विषयने भोगववानुं कह्युं छे तेवी रीते लोकमां विहित एवा पंच विषयने भोगवे अने वळी एम जाणे जे आम शास्त्र प्रमाणे वर्तशुं तो पर लोकमां स्त्री आदिक पंच विषयने पामशुं एवी रीतना लक्षण जणाय त्यारे एम जाणवुं जे आ विषयी छे.

(३) मुमुक्षुने एम वर्ते जे, धर्म पाळवो, तथा ज्ञान शीखवुं तथा वैराग्य शीखीने संसार थकी मुकाय अने पोताना आत्माने तथा भगवानने पामवानी मनने विषे त्वरा वर्ते तथा आत्माने पाम्याना साधन कह्यां होय तेने शीखे तथा भगवानने पाम्याना जे साधन छे तेने शीखीने पछी ते भगवानने पामीने पछी भगवानने राजी करवानी मनमां तीव्र श्रद्धा वर्त्या करे तथा भगवाननी एकांतिक माहात्म्ये सहित जे भक्ति तेने कर्यानां जे साधन तेने शीख्यानी तथा ते भक्ति पोताने कर्यानी मनमां तीव्र श्रद्धा वर्त्या करे आवी रीते वर्ते तेने एम जाणीए जे आ मुमुक्षु छे.

(४) अने मुक्तने एम जाणवा के जे पुरुष पंच

विषयने तथा देह इंद्रियादिकने तथा त्रण गुण तथा त्रण अवस्था, त्रण देह ए सर्वेनी क्रियाने पोते दबावीने वर्ते पण ए एकेने विषे दबाय नहि. अने ए एकेना पेचमां न आवे अने ए सर्वेने दबावीने अति विरक्तपणे वर्ते अने कोइ देहनो कुसंग तथा सत्संगनो कुसंग तथा बहारनो कुसंग ए सर्वेने दबावीने पंडे वर्ते पण तेने कोइ दबावी शके नहि तथा कोइनी महोबतमां लेवाय नहि तथा कोइना पेचमां आवे नहि एवी रीते जे वर्ततो होय त्यारे जाणीए जे आ मुक्त छे. ॥ ५४ ॥

बीजा अवतार करतां ऋषभदेवजी बहु गमे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे तेनो शो हेतु छे? तो ऋषभदेवजी भगवान तो वासुदेव भगवान संघाथे एकत्वपणाने पाम्या हता तोय पण बीजा त्यागीने शिक्षाने अर्थे ते सिद्धियुंने न ग्रहण करता हवा. एवी रीते असंगीपणुं छे तथा जे जीव जेवो होय तेने तेवी रीते धीरे रहीने समजाववुं एवी रीते दयाळु स्वभाव छे, ते हेतु माटे गमे छे. अने कपिलदेव तथा दत्तात्रेय तो त्यागी छे तथा एमने विषे असंगीपणुं छे ए माटे एथी उतरता गमे छे. अने एथी कोटीगणुं श्रीकृष्णने विषे हेत छे तेनुं शुं कारण छे? तो ए श्रीकृष्णने

विषे जे जे भावे करीने जोडाणा ते सर्व जीवनो मोक्ष कर्यो ते माटे एवी रीते महाराजे पोतानी रुचि कही तेमांथी आपणे एम समजवुं जे श्रीकृष्ण भगवाने तो पोतानी मूर्तिनो संबंध जेने थयो ते स्नेहभाव तथा भयभाव तथा द्वेषभाव इत्यादिके करीने पोताना संबंधने पाम्या तेनुं कल्याण कर्युं जेम पारसमणीने लोढुं अडे त्यारे सोनुं थाय तेम आ कह्यो जे अवतार तेना उपयोगमां आवे तेनुं कल्याण थाय. तथा व्रजवासीए एम कह्युं जे तमे भगवान छो माटे अमने तमारूं धाम देखाडो त्यारे एकवार पोतानुं धाम देखाडयुं अने श्रीजीमहाराजे तो पोतानुं कीर्तन गायुं तेनुं तथा कोइ सत्संगीनो गुण लीधो तेनुं तथा जे जे संतना उपयोगमां आव्या ते सर्वेनुं महाराजे कल्याण कर्युं तो पोताना संबंधने पाम्या तेना मोक्षमां शुं कहेवुं? तथा साधु द्वारे, सत्संगी द्वारे, सोटी द्वारे लाकडीद्वारे करीने समाधि करावी तो पोताने जोइने समाधि थाय तेमां शी मोटी वात कहेवाय? एवी रीते महाराजनी सामर्थी जोइने विचारीए तो ए पूर्वना अवतार करतां लाखगणुं हेत श्रीजीमहाराजने विषे कर्युं जोइए तथा पोताने दर्शने करीने हजारु, लाखुं, सत्संगी तथा कुसंगी ते सर्वेने समाधि थइ अने ब्रह्म-

પુરાદિક ધામ દેખાડયાં તે તો જેમ ચિંતામણિ હોય તેને વિષે જે જે ચિંતવે તે તે મળે તેમ મહારાજનો જેને સંબંધ થયો તથા સત્સંગીનો સંબંધ જેને થયો તે સર્વેનું કલ્યાણ શ્રીજીમહારાજે કર્યું તે એવું સામર્થ્ય-પણું તો પુરુષોત્તમ વિના બીજા અવતારમાં ન હોય અને શ્વેત તેજને વિષે ભગવાનની મૂર્તિ છે તે તેજમાં ભગ-વાનની મૂર્તિને જોઇને આનંદ પામવો પણ તે મૂર્તિ વિના અક્ષરનું તેજ દેખાય તો પણ તે ભગવાનની મૂર્તિ વિના તે તેજે કરીને શાન્તિ પામવું નહિ, અતિ તપી જાવું. ॥ ૯૯ ॥

ભગવાનને વિષે અતિશય હેત કરવું તે હેત કરતાં કાંઇક વિકાર થાય તો એનો એમ વિચાર કરવો જે મારે વિકાર ઇંદ્રિયોમાં થયો તે રાગે કરીને થયો કે સહેજે થયો અને તે સહેજે રાગ થયો તે કેમ જાણીએ તો પૂર્વે જે જે વિષય ભોગવ્યા હોય તેની સ્મૃતિ થાય પણ ભોગ બુદ્ધિ ન થાય ત્યારે એમ જાણવું જે અમથા એ વિષય સ્ફુરિ આવ્યા છે પણ મારે તો એનો રાગ નથી અને તે વિષયના સંકલ્પરુપ સ્મૃતિ થાય છે તે ક્યારે ટળે તો જ્યારે ભગવાને ગીતામાં જ્ઞાનીને ક્રિયા-યોગ કહ્યો છે તેવી રીતે ક્રિયાયોગ કરે તો એ વિષ-યમાં સ્મૃતિરુપ રાગ છે તે ટળે ને તે રાગ ટળ્યા વિના

ज्ञानीने पण विषयने विषे सहज स्मृतिरुप राग रहे. अने जेने विषयने विषे भोग बुद्धि थाय त्यारे एम जाणवुं जे मारे विषयने विषे राग छे ते केम टाळवो? तो एम विचार करवो जे स्त्री आदिक पंचविषयने विषे दोष रह्या छे ते विचारीने तेना दोषने मोटा संत पासेथी शीखे ने पछी ते दोषनी सेरच्य इंद्रियोमां उतरे अने पछी अंतःकरणमां उतरे पछी अंतःकरण थकी पर जे बुद्धि तेमां उतरे पछी तेथी पर जे जीव ते जीवमां उतरे एम लोम प्रतिलोम दृष्टि करीने टाळ्यानो अभ्यास निरंतर राखे तो धीरे धीरे ते राग टळे ते पण तीव्र श्रद्धा राखीने कर्या करे त्यारे राग निवृत्ति पामे, नहि तो न पामे. ॥ ५६ ॥

चार प्रकारनुं चैतन्य कहेवाय तेनी विगती एम छे, चार प्रकारनुं जड कहेवाय तेनी पण एम विगत छे.

(१) पुर्ण पुरुषोत्तम भगवान चैतन्य छे, पंचविषय ते जड छे.

(२) अक्षरधाम ते चैतन्य छे, आ लोक ते जड छे.

(३) भगवानना अक्षरधाममां रह्या जे सेवक ते चैतन्य छे, आ देहना संबंधी ते जड छे.

(४) जीवकोटी, इश्वरकोटीना जे जीव ते चैतन्य

छे, ने देह ते जड छे. अने ते विना बीजुं जड के चैतन्य न कहेवाय. ॥ ५७ ॥

मनने विषे संकल्प विकल्पनो वेग वर्ततो होय त्यारे आत्मा अनात्मानो जे विचार अने ते संबंधी जे संकल्प ते करवा तथा भगवानना माहात्म्यना विचार संबंधी संकल्प करवा अने ज्यारे मनमां उदासीपणुं होय त्यारे तो चार प्रकारना प्रलयनो विचार करीने वैराग्य संबंधी संकल्प करीने पदार्थनी तुच्छता जाणवी. अने मनमां आनंद वर्ततो होय त्यारे उपशम करीने भगवानना स्वरुपनुं ध्यान करवुं अने मनमां राग वर्ते त्यारे भगवाननां किर्तन गाववां. अने इंद्रियोनी क्रियामां मन वर्ते त्यारे भगवाननी भक्ति सेवा करवी. एवी रीते ए पांचे समयने विषे ए पांच वानां करे तो तत्काळ सिद्ध थाय. अने एम न करे तो तत्काळ सिद्ध न थाय. ॥ ५८ ॥

"एक वेग राखीये तो सर्वे वेग रहे एवो कयो वेग छे ?" तो भगवानना माहात्म्य ज्ञाने सहित जे भगवानने विषे प्रीतिनो वेग ते निरंतर राखवो. अने ए वेगना विरुद्धने करवा वाळा जे बीजा संकल्प ते टाळवा केम जे वैराग्य, धर्म अने आत्मज्ञानादिक संबंधी विचार करवा ने तेणे करीने प्रथमना वेगने पुष्ट करवो. ॥ ५९ ॥

भगवत् ज्ञान संबंधी शास्त्रे करीने श्रीहरिजीना माहात्म्यनी वृद्धि थाय अने भगवानना गुण, स्वभाव, स्वरुप, विभूति, सुख, ऐश्वर्य तेने जाणीने जे प्रीति थाय छे, ते अचळ छे. अने ते विना केवळ बोलाववे के लीधे दीधे जे प्रीति थाय, तेनो निर्धार नहि. केम जे विषम देशकाळ आवे त्यारे ए प्रीति टके नहि. अने प्रथमनी जे प्रीति ते कोइ प्रकारे जाय नहि.॥६०॥

सत्पुरुषने सत्शास्त्रना वचन विना पोताना मनने जाणे जीव जे जे करवानुं धारे तेने देहाभिमान कहेवाय. अने तेने कोइ टाळवानुं करे त्यारे तेने बहु दुःख थाय. ॥ ६१ ॥

जे मनुष्यने कोइक जातनो अयोग्य स्वभाव होय ने तेमांथी तेना जीवनुं भुंडुं थाय एवुं होय, तेने भगवान के साधु टोके त्यारे ते सवळुं न लेवाय ने अवळुं लेवाय अने तेनी आंटी बंधाय एवो जे होय तेना सत्संगनो निर्धार न जाणवो ए तो ज्यारे त्यारे जरुर विमुखज थाय. अने जो कोइ एने नभावनारो होय अने एना स्वभाव प्रमाणे कोइक वर्तवा दे तो मांडमांड सत्संगमां नभे अने एवो नभावनारो न होय तो ए जरुर सत्संगमांथी पडी जाय, माटे स्वभावने टाळवा सारुं मोटा पुरुष वचन कहे तेमने हितकारी

मानीने ते प्रमाणे वर्तवुं पण आंटी न बांधवी. ॥६२॥

इंद्रियोनी वृत्तिने अंतर सन्मुख राखे त्यारे ते वृत्तिओ सुक्ष्मभावने पामीने एमां यथार्थ ज्ञान थाय, अने पछी शास्त्रनो अर्थ पण एने यथार्थ सुझे अने विषयनी वासना ते धीरेधीरे टळती जाय माटे ज्ञान, वैराग्यनो विचार राखीने इंद्रियोनी वृत्तिने आत्मा सन्मुख राखवानो अभ्यास राखवो. अने तेमां भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं. अने एम न करे अने वृत्तिओने बाहेरज प्रवर्तवादे तो तेमां स्थुलभाव आवी जाय, अने ए गुणदोष यथार्थ सुझे नहि. ॥६३॥

भगवाननुं माहात्म्य जाणतो होय, तो पण जो वैराग्यनो विचार एने न आवडतो होय तो ए माहात्म्य टके नहि. अने वैराग्यना विचार करीने मायिक सर्वे पदार्थनी तुच्छता ने नाशवंतपणुं जाण्युं होय तो एनुं मन कोइ पदार्थमां अटके नहि. अने एने माहात्म्य, ज्ञान दृढ थाय. माटे चार प्रकारना प्रलये करीने वैराग्यनी दृढता करवी. ॥ ६४ ॥

भक्ति ते हेतने कहीए. अने अनुवृत्ति ते भगवानना गमता प्रमाणे करवुं तेने कहेवाय. अने गमता प्रमाणे थोडुं भजन करे तो भगवान बहु माने अने भगवानना गमता प्रमाणे न करे अने पोताना मन-

गमता प्रमाणे करे तो तेने थोडुं माने अने भगवानना भक्तना त्रण प्रकारना भेद छे.—

(१) निष्कामपणे भगवानना गमता प्रमाणेज करे.

(२) निष्कामपणे करे पण पोताना मनगमता प्रमाणे करे.

(३) सकामपणे करे अने पोताना मनगमता प्रमाणे करे. अने ए भगवानने सर्वे देवथकी समर्थ जाणे. अने सर्वथी श्रेष्ठ मोटा भोग आपवाने विषे महा समर्थ माने माटे भगवानने भजे पछे ते भोगने भगवानथी पामे अने भज्या करे. ॥ ६५ ।

मुक्तानंद स्वामीए अन्तकाळ समे पोताना साधुने शिक्षा कही जे " धन, स्त्रीनो प्रसंग ते कोइ रीते न करवो तथा शहेरमां न जावुं तथा सत्संग मेलीने परदेशमां जावुं नहि. तथा गोपालानंदस्वामी जेवा साधुनो संग राखवो. अने एनो विश्वास मन, कर्म, वचने राखवो " एवी रीते परमहंसने शिक्षानां वचन कह्यां. ॥ ६६ ॥

कोइक हरिभक्तनो अवगुण आवे तेमां आ त्रण विचार करवा जे,

(१) एनो मने अवगुण आवे छे ते एनी उपर मारे इर्षा छे तेणे करीने आवे छे ?

(२) के ए मारा स्वभाव उपर टोके छे तेणे करीने मने अवगुण आवे छे?

(३) के ए दोष एमां छेज तेथी अवगुण आवे छे? एम विचारीने इर्षा तथा टोकवे करीने जो अवगुण आवतो होय तो न लेवो अने ए दोष एमां खरेखरो होय तो लेवो पण आवी रीते विचार्या विना कोइनो अवगुण न लेवो. ॥ ६७ ॥

महाराज पधार्या पछी सांप्रत आटलुं कार्य अवश्य विचारीने करवानुं छे ते केवी रीते तो महाराज विराजता हता त्यारे आपणी वते कोइ अवळी क्रिया थइ जाय त्यारे महाराज कोइ प्रकरण फेरवे एटले ते सर्वे मटी जाय अने पाछुं सवळे मार्गे चलाय तथा महाराज ठपको दइने आपणने सवळे मार्गे चलावे अने हमणां तो सत्संगनुं कामकाज आचार्यनी आज्ञाए अथवा मोटा साधुनी आज्ञाए करवुं पण तेमां पोताने स्त्री, धनादिक विषयनो संबंध थइ जाय अने वचननुं उल्लंघन थइ जाय अने अंते कोइ पदार्थमां आशक्त थइ जवाय एवुं वचन न मानवुं, एटलो तो पोताने जाणे विचार करवो. पण तेमां मोटेराओ विश्वास न राखवो कारण के मोटेरातो पोताना काम कराववाना स्वार्थ परायण होय पण आ जीव आवो छे ते एने

आनो समागम थाय तो घटी जाय ने आनो समागम थाय तो वृद्धि पामे एवी रीते सर्वे प्रकारे जीवनुं परलोकमां हित थाय एम करतां आवडे एवा मोटेरा होय के न होय माटे आटलो पोतानेज विचार राखवो. ॥ ६८ ॥

श्रीजीमहाराजना वचन प्रमाणेज जे संतने पोताना आत्मानुं हित करतां आवडे अने ते वचन प्रमाणे रहीने महाराजनी प्रसन्नता करवी. तेनो खटको होय अने ते वचन प्रमाणे वर्तता होय अने सर्वे प्रकारे बुद्धि पहोंचती होय अने बीजाना जीवने पण जाणता होय अने तेना जीवनु परलोक संबंधी हित सर्वे प्रकारे करतां आवडतुं होय एवा जे संत पोताने जणाय तेना वचनमां विश्वास राखीने ते कहे ते प्रमाणे वर्ते तो पण ठीक छे अने ए विना जे बीजो मार्ग ते तो पडवानो छे. ॥६९॥

देशकाळादिक आठ छे तेमां सर्व करतां संगनुं बळ अति अधिक छे केमजे सत्पुरुषनो संग होय तो देशकाळादिक साराज थाय छे अने असत्पुरुषनो संग थाय तो देशकाळादिक असत् थाय छे माटे जे पुरुष रुडा सत्पुरुषनो निरंतर संग करे तो ए सारोने सारोज रहे अने देहाभिमानी एवा असत्पुरुषनो संग करे तो

वगडी जाय छे त्यारे एक संते पूछयुं जे, "ए पुरुषने क्यां सुधी सत्संग करवो ?" उत्तर जे ए पुरुषने सत्संग करते करते एवो स्वभाव थइ जाय जे सारूं खावुं, सारां वस्त्र, सारी पथारी, मान इत्यादिक जे पंचविषय संबंधी सारां पदार्थनो जे योग तेनो सहज स्वभावे अरुचिनो स्वभाव थइ जाय माटे ए सारा पदार्थनो योग थाय, तो पण तेनो त्याग करवो गमे, पण तेनो भोग तो गमेज नहि. अने जेवे तेवे अन्न वस्त्रादिकने भोगे करीने देहनिर्वाह करे एवो स्वभाव थइ जाय त्यारे जाणीए जे ए सत्संग करीने पक्व थयो. अने ज्यांसुधी एवो नथी थयो त्यां सुधी तो एनो एने भय छे अने तेने जो सत्संगनो जोग रहे तो ए सारो रहे अने सत्संग न करे अने पोते पोताने जाणे जे "हुं तो हवे सारो थइ गयो माटे मारे हवे शो भय छे ?" एम प्रमाद राखे तो एनुं ठेकाणुं न रहे. अने जो ए पक्व थयो होय तो ए ज्यां जाय त्यां एने एवुं बळ होय जे ज्ञान, वैराग्य, त्याग, धर्म, भक्ति ते संबंधी वात करीने केटलाक पुरुषनो पोताना जेवो स्वभाव करे पण पोते कोइ विषयने चाळे चडी जाय नहि. आ वार्ता निश्चित छे पण एमां संशय नथी. ॥७०॥

एकवार पोताना जीवने शुद्ध करीने पछी भक्ति

करवी, बीजाने सत्संग करावबो तथा सत्संगनो ममत्व राखवो इत्यादिक जे जे करवुं ते सर्वे पछी करवुं ते शुध्ध केम करवो तो स्त्री अने धन ए बेमां कोइ रीते जीव भळी जाय नहि तेवो दृढ विचार करवो तथा आत्मनिष्ठा अने वैराग्यनी रीत सारी पेठे जाणवी तथा भगवानना स्वरुपने यथार्थपणे जाणवुं अने तेनुं माहात्म्य जाणीने भक्ति करवानी रीत जाणवी. एटलाए करीने जीव शुध्ध करवो अने एम शुध्ध न करे अने कदाचित जो स्त्री आदिकमां आशक्त थइ जवाय तो ते भगवानने गमे नहि. जेम अपवित्र थको श्री हरिने अर्थे थाळ लइ आवे तो ते श्रीहरिने गमे नहि, तेम ते भक्ति पण गमे नहि. माटे एकली भक्तिमां कांइक कहेवत छे अने जीवने शुध्ध करीने थोडीक भक्ति करी होय तो जेटली करी होय तेटली जाय नहि. ॥ ७१ ॥

पोतामां कांइक दोष होय ते पोतामांने पोतामां राखे ते मोटेरानी उपर श्रीहरिनो बहु कुराजीपो थाय नहि अने ते दोष बीजामां प्रवर्तावे तो ते घणा जीवनुं भुंडुं थाय तेनुं पाप एने लागे अने दोषनुं फळ ते ए मरीने मुक्त थाय तो पण एना बहु भुंडाने करे. ॥७२॥

हरिभक्तने आ त्रण वार्तो अतिशे सिद्ध करवी.

(१) भगवाननुं स्वरुप यथार्थ माहात्म्य ज्ञान पूर्वक जाणीने ते श्रीहरिजीमां अने श्रीहरिजाना खरेखरा भक्तमां हेत करवुं अथवा ते श्रीहरिजी अने हरिभक्त भेळा रहेवे, लोधे, दीधे, बोलावे, चलावे सहेजे हेत करवुं.

(२) पोताना जीवने शोधवो कहेतां काम, लोभ, मान, क्रोध, दंभ, इर्षा, मत्सर स्नेहादिक जे आसुरी संपत्तिरुप अधर्मनो सर्ग तेणे करीने तथा कोइ मायिक भावे करीने जीव पराभव न पामे अने दोषे रहित थको अने केवळ सत्तापणे रह्यो थको ब्रह्मरुप थइने भगवाननी सेवामां रहे अने एवो ब्रह्मरुप थाय त्यारे हरिजीने वरणिय थाय माटे आ तो अवश्यपणे निरंतर अनुसंधान राखीने अने सत्शास्त्र थकी ज्ञान, वैराग्यनो विचार पामीने तथा सत्संग करीने ए वात दृढ करवी.

(३) कोइ उपर दया करीने तेना जीवनुं परलोक संबंधी हीत करवुं अने तेनो जीव अन्य वासनाए रहित थइने भगवानने पामे एवी दया करे तो एनी उपर भगवाननी प्रसन्नता थाय केम जे पोताना धामथी श्रीहरिजी अहिंया आवे छे अने जीवनी उपर दयाये करीने तेमना कल्याण करवाने माटे आवे छे. ते भगवानना संकल्प भेळी एनी क्रिया भळी माटे

भगवान प्रसन्न थाय तथा हरिमंदिर श्रीजीमहाराजे पोते कराव्यां छे ते बीजा जीव उपर दया करीने तेना कल्याणने अर्थे कराव्यां छे एम धारीने श्रीहरिजीनी प्रसन्नताने अर्थे मंदिरनो पक्ष राखीने ते संबंधी काम-काज करवुं. अने कोइ जीव उपर दया करीने कल्याणनी वात करवी पण तेना गुण दोषमां पोताना जीवने बाध पामवा देवो नहि. वात करीने छेटे रहेवुं पण दयायेकरीने तेभेळुं तेना डोळमां भळवुं नहि ए त्रण वात सिद्ध करवी. ॥ ७३ ॥

ज्ञान, वैराग्य, धर्म अने माहात्म्य ज्ञान युक्त भक्ति ए चार गुणवाळा जे उत्तम पुरुष साधु ते एक प्रकृतिवाळा ज्यारे एकांतमां भेळा थया होय त्यारे अतिशे श्रेष्ठ जे भगवद् वार्ता तथा तेना जे गुण दोष होय तेने नाम निर्देशे कही देखाडी अने यथार्थ वार्ता थाय, केम जे एकांतमां जेम होय तेम यथार्थ कहेवाय केम जे कोइने अवगुण आवे एम न होय अने ते श्रेष्ठ प्रकृतिवाळा ज्यारे सभामां वार्ता करे त्यारे ते सभामां घणी जातना मनुष्यो होय तेमांथी कोइकने अवळी लागे माटे यथार्थ वार्ता न थाय अने मध्यम अने कनिष्ठ पुरुष ते सभामां तो श्रेष्ठ वार्ता करे अने ज्यारे एक प्रकृतिवाळा भेळा थइने एकांतमां बेसे

त्यारे तो ते मध्यमथी मध्यम अने कनिष्ठथी कनिष्ठ एवी वार्ता करे तेने जाणवी. ॥ ७४ ॥

खरेखरा साधु होय तेने कोइ जातनो स्वार्थ न होय अने पोताथी जेनी श्रेष्ठ प्रकृत्ति होय तेनी पासे पोतानो शिष्य जाय त्यारे राजी थाय केमजे तेने तो तेना जीवनुं हित करवुं होय अने उतरती प्रकृत्तिवाळा पासे जाय तो कुराजी थाय केमजे एनो जीव बगडी जाशे एम जाणे अने निःस्वार्थी साधु होय तेने तो तेना जीवनुं भगवानमां हेत करावववानुं होय अने स्वार्थी होय तेने तो पोतानी उपर तेनुं हेत करावववानुं होय माटे स्वार्थी साधु होय तेने तो इंद्र, ब्रह्मादिक देव जेवो भगवद्भक्त जाणवो अने जे स्वार्थे रहित होय तेने नारद, सनकादिक, शुकदेव अने जड भरतादिक जेवो साधु जाणवो. ॥ ७५ ॥

श्रीहरिजीना ध्यान करतां पण ज्ञान ते अधिक छे. ते ज्ञान ते शुं जे, भगवान जेम छे तेम यथार्थ जाणवा. अने भगवानने अर्थे जे जे करवानुं छे तेने जाणवुं. तथा जीव, इश्वर, प्रकृति–पुरुष, अक्षर, एमना स्वरुपने अने धर्म, वैराग्यना स्वरुपने जाणवुं. तथा भगवानना भक्त जेवा जेवा होय जे आने तो सर्वथी भगवान ज अधिकपणे छे अने जे भगवानना गमता

प्रमाणे ज वर्ततो होय तथा वर्तवानुं होय अने पोतानुं गमतुं करवानो स्वभाव न होय अने ते होय तो तेने टाळवानो आग्रह होय अने जेने भगवानमां पण प्रीति होय अने कांइक पोतानुं मनगमतुं करवानुं पण होय एवो होय तेने पण जाणवो, इत्यादिक ज्ञान कहेवाय. एवुं ज्ञान होय तो एमां सहेजे भगवाननुं ध्यान थाशे माटे ते सर्व वार्ताने जाणवी. अने तेज वार्ता मुखे करीने कहेवी ते तो जेटली योग्य होय तेटली कहेवी अथवा न कहेवी तेमां पण देशकाळनो अनुसार जाणवो अने जो ए सर्व वात न जाणे तो भगवाननो श्रेष्ठ भक्त होय तेने मध्यम अने कनिष्ठ जेवो जाणे अने ए भक्त वृद्धिने न पामे. केम जे ए ओळखे नहि माटे जेवा तेवानो संग करे पण श्रेष्ठनो संग न करे अने पोते सारो होय पण उतरताने संगे उतरतो थइ जाय छे. अने उतरताने हेते करीने तेनो पक्ष लइने मोटानो अभाव ले अने तेनी महोबतमां दबाइ रहे एवी रीते जाणवा न जाणवामां गुण अने दोष छे. ॥ ७६ ॥

विषय छे तेना दोषने वारमवार विचार्या करे अने ते विषयनो त्याग करवो अने एवी वार्ता करवा तथा सांभळवानो अभ्यास राखवो तो ए विषय जी-

वमां पेसी न जाय अने एम न करे तो जरुर विषय जीवमां पेसी जाय. अने एना जीवने बाध पमाडी दे एवा ए विषय भुंडा छे एम जाणवुं. अने एम विचार करतां करतां ज्यारे एने आम खचित जणाइ जाय जे स्त्री, धन, मान, स्वार्थ, काम, क्रोध अने लोभादिक जे जे आलोक परलोक संबंधी पंचविषयनुं मायिक सुख छे तेने विषे सहज स्वभावे लाखो क्लेश जणाया करे अने दोष, दुःख अने भय जणाया करे अने एमां सुख छे, एवो तो मनमां संकल्प क्यारेय न थाय. अने केवळ आत्मारुप थइने परमात्मानु चिंतवन करवु तेमांज एक सुख छे एवो तो मनमां संकल्प क्यारेय न थाय. अने केवळ आत्मारुप थइने परमात्मानुं चिंतवन करवुं तेमांज एक सुख जणाय. एवी रीते ए भक्तनो सहज स्वभाव थइ जाय त्यारे जाणीए जे. ए भक्तने जे करवानु हतु ते सिद्ध थयुं अने ए संतनो ज्यारे एवो स्वभाव थइ जाय त्यारे कोइ विषय सुख पामवानुं जतन करेज नहि अने सहेजे मळे एवा अन्न वस्त्रादिके करीने ए देह निर्वाह करे. ॥ ७७ ॥

संतने मनगमतुं करवामां भेद छे. ते कइ रीते जे, एक तो भगवाननी आज्ञा प्रमाणे त्याग, वैराग्य राखे तथा रुडा साधुनो संग राखे तथा आत्मनिष्ठा

अने भगवाननुं माहात्म्य अने पंच वर्तमानना नियम प्रमाणे वर्तवुं अने नव प्रकारे भक्ति करवी, इत्यादिक भगवाननी आज्ञा प्रमाणे मनगमतुं करवुं. अने बीजा कोइ तेने मुकावे तो मुकेज नहि. एवुं ए पण मनगमतुं कहेवाय. पण ए मनगमतुं ठीक छे एमां बाध नथी अने एवा मनगमताने मोटा संत कोइ रीते मुकेज नहिं. अने एने कोइक स्वार्थने अर्थे मुकावे तो तेने स्वार्थी जाणीने मुके नहिं. अने तेने दुःख न लागे एवी कळा करवी अने जेम पोताने दुःख न थाय तेम वर्तवुं पण ए मनगमताने मुकवुं नहिं. अने बीजुं गमतुं जे भगवाननी आज्ञा प्रमाणे तो अतिशे न होय अने पोताना स्वभाव प्रमाणे वर्तवुं अने तेवानो संग करवो अने तेवे ठेकाणे रहेवुं तेवी क्रिया करवी. इत्यादिक मनगमतुं ते खोटुं छे अने ए बेने समान जाणे छे ते मूर्ख छे. ॥ ७८ ॥

क्रोध पण बे प्रकारनो छेः—

(१) कोइक बीजो पोताने विषयनो संबंध करावना आवे तो तेनी उपर क्रोध करे तथा कोइक अवळे मार्गे चालतो होय तो तेने सवळे मार्गे चलाववाने अर्थे क्रोध करीने तेने शिक्षानां वचन कहे तथा कोइक पोताने भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्तवाथकी कांइक

निषेध करे त्यारे तेनी उपर रीस करीने तेने कठण वचन कहे. ने एने विषे क्रोध करीने न कहे तो ते माने नहि अने एनी आगळ नरम थइ जाय अने आकरप न राखे तो त्याग, वैराग्यादिक प्रमाणे वर्ताय नहि अने कोइनी महोबतमां लेवाइ जाय तो मुळगो उतरता स्वभावनो थइ जाय तो तेमां शो सार छे.

(२) पोताने मनगमता विषय न मळे तथा मनगमतुं खान, पान, वस्त्र, शिष्यादिक न मळे तेने अर्थे क्रोध करे त्यारे ए क्रोध ते भुंडो छे अने ए बे प्रकारना क्रोधने विषे समानपणुं जाणे छे ते विवेके रहित छे अने मूर्ख छे माटे विभाग समजवानो विवेक शीखवो. ॥ ७९ ॥

जेने कोइ पदार्थनी इच्छा होय नहि ते श्रीहरिजीनो एकांतिक भक्त थयो तेने पण श्रीहरिजीने तेमना भक्तनी सेवा तो करवी केम जे एतो सर्वेथी श्रेष्ठ छे अने बीजां सर्वे साधन तो एने अर्थे छे. तथा एवाने पण भगवानना खरेखरा भक्तनो संग राखवो. ॥८०॥

जे बाळकपणामांथी त्यागी थयो छे तेणे तो स्त्री आदिक विषय भोगव्या नथी अने तेने जे ते विषय भोगनी वासनाउदे थाय छे ते शाणे करीने थाय छे

तो बीजा त विषयने भोगवता होय तेने देखे ते जातनी वार्ता सांभळे तेणे करीने तेना मनमां ते विषयने विषे सुखनी भावना थइ आवे छे माटे ते विषयनो त्याग राखे तो ठीक ने विषयनो जोग करे तो तेने मुकी शके नहि. अने जे विषयने अभावे सहित सेवतो होय ते विषयनो त्याग करे तो थोडा दिवस सुधी तो ते विषय सांभरे पण पछी तेनी विस्मृति थइ जाय अने ज्ञान, वैराग्य अने श्रीहरिजीना माहात्म्य तेनो निरंतर आग्रहपुर्वक दृढ अभ्यास करीने ते विषयने विषे क्लेश, दुःख अने दोषनीज दृढ भावना थइ जाय अने कोइ काळे एमां सुखनी भावना तो थायज नहि अने एने अतितुच्छता जणाइ जाय जेम कोइ पदार्थ होय तेमां माल जेवो छे तेवो जाण्यो पछी तेमां एवो भाव थाय जे आ पदार्थ ते आवुं छे एनी शी वारम-वार तथ्या करवी तथा जेम पोताना भूडानो करनारो माणस होय अथवा शत्रु होय तेने देखीए अथवा तेनी भेळे रहीये पण तेना स्वभावनी मनमां भावना छे तेणे करीने तेनी उपर हेत थायज नहि तेम विष-यनो अभाव थयो होय जे ए विषय तो दुःखरुपज छे अने एमां कांइक सुखनी भावना रही जाय छे ते एवा अभ्यासनी दृढता विना रही जाय छे माटे निरं-

तर आग्रह राखीने दृढ अभ्यास करवो. ॥ ८१ ॥

जेम थोडी बुद्धिवाळो पुरुष होय पण जो ते विद्या भण्यानो अभ्यास अतिशे मन, कर्म, वचने वेगे सहित करे तो तेने विद्या आवडे अने जे भणे ते आवडे अने बुद्धिवान् होय पण अभ्यास न करे तो कोइ विद्या न आवडे तेम जो ए विषयना अभाव कर्यानो दृढ अभ्यास राखे तो तेने जरुर अभाव थाय अने जे एवो अभ्यास नथी थातो ते एने एनो सुधो खपज नथी. जो खप थाय तो जरुर् अभ्यास करे केम जे जगतमां देखाय छे जे जेने स्त्री, धन, राज्य, मान, स्वाद तेनो खप छे तो तेनो अभ्यास करीने तेने सिद्ध करे छे अने तेमां दैहिक दुःख थाय छे तेने गणता नथी अने रात दिवस तेनाज मनसुबा करे छे तेम अभ्यास राखवो अने एवो अभ्यास ता नथी कर्यो अने जे सहज स्वभावे सात्विकपणानी प्रकृति थकी अथवा थोडुंक श्रीहरिजीनुं माहात्म्य जाणीने नियममां रहीने जे विषयना त्यागी जणाय छे ते जो विषयनो त्यागज राखे अने तेनो संबंध न थवा दे तो तो ए पार पडे अने जो विषयनो संबंध एने विषम देश, काळ, संगे करीने थइ जाय तो ते विषयने मुकी शके नहि. केमजे आवो अभ्यास करीने एणे विष-

यनी तुच्छता जाणी नथी अने जेणे अभ्यासे करीने विषयनी तुच्छता जाणी छे ते तो विषयने ग्रहण करे अने मुकवा घटे त्यारे मुकी दे अने तेना ग्रहण त्यागने विषे स्वतंत्र थाय पण बंधाइ रहे नहि माटे एने एनो भय नथी. ने जेणे आवो अभ्यास नथी कर्यो तेने भय छे माटे निरंतर विषयना दुःखपणानी भावनानो अभ्यास राखवो. ॥ ८२ ॥

कामादिक दोष छे ते भगवान साथे अंतराय राखे छे तेमज ए दोष न होय तो पण जो एवे भगवाननी मरजी प्रमाणे वर्तता एवा जे एकांतिक भक्त तेनो समागम न होय तो भगवान साथे अंतराय रही जाय केम जे जे एकांतिक न होय तेने भगवाननी मरजी प्रमाणे वर्तवानी रीत यथार्थ आवडती न होय त्यारे एना संगना करवावाळाने ते रीत क्यांथी शीखवे ? माटे एने भगवान साथे अंतराय रही जाय छे माटे जेने अंतराय न राखवो होय तेने एकांतिक भक्त साथे हेत अने संग राखवो.

ज्ञानी अने विश्वासी भक्तनां केवां लक्षण होय ?

(१) ज्ञानी भक्तने ज्ञानांशनी यथार्थ दृढता होय तेमां कोइ जातनी कसर रहेती नथी.

(२) विश्वासी भक्तने भगवान अने भगवानना खरे-

खरा एकांतिक भक्तनो दृढ विश्वास होय तेणे करीने जेम ए कहे तेमज ए मन, कर्म, वचने वर्ते तो तेमां पण कोइ जातनी कसर न रहे अने प्रथम जे ज्ञानी कह्यो तेनो संग करे तो तेने पोता जेवो करे ने बीजो विश्वासी भक्त छे ते तो पोताना जीवात्मानुंज रुडुं करे पण बीजाने समजावी शके नहि. एटलो ए बेमां भेद छे. ॥ ८४ ॥

श्रीजीमहाराजे पोतानी रुचि लोयाना १४ ना वचनामृतमां पोताने मुखवचने करीने पोते कही छे ते रुचीने यथार्थ जाणीने ते प्रमाणेज जे भक्ते पोतानी रुची करी होय तेनेज शास्त्रनो अर्थ यथार्थ समजाय छे अने जे एवो न होय तेने पोतानी रुची प्रमाणे शास्त्रनो अर्थ समजाय छे. ॥ ८५ ॥

कोइक भक्त थोडुं करे छे अने तेनी उपर भगवान राजी थाय छे अने कोइक भक्त झाझुं करे छे तेनी उपर पण भगवान राजी नथी थाता तेनुं शुं कारण ? जे भक्त थोडुं करे छे पण ते भगवाननी मरजी प्रमाणे करे छे माटे राजी थाय छे अने झाझुं करे छे पण ते पोताना मनगमता प्रमाणे करे छे माटे तेनी उपर भगवान राजी थाता नथी. ॥ ८६ ॥

भगवानना भक्तने आ त्रण वानां निरंतर करवानां छेः—

(१) भगवान अने भगवानना खरेखरा भक्त होय तेनी उपर एवुं हेत करवुं जे एथी कोइ अधिक न रहे एवुं नक्की हेत करवुं.

(२) काम, लोभादिक शत्रु तथा देहाभिमान तेने टाळी नाखीने धर्म वैराग्ये सहित आत्मनिष्ठा खचित सिद्ध करवी.

(३) कोइक जीवने एना मोक्षनी वात खरेखरी समजाववी एवी दया राखवी पण तेमां पोताने कोइ जातनु बंधन न थाय एवी कळा राखवी ए त्रण वार्ता तो खटको राखीने निरंतर करवी. ॥ ८७ ॥

भगवानना भक्तने आत्मनिष्ठा अने भगवानने विषे प्रीति ए बेनुं श्रवण, मनन अने निदिध्यास ते कर्या करवो पण ए निष्ठा ज्यांसुधी सिद्ध न थाय त्यां सुधी संतोषने पामवुं नहि ते आत्मनिष्ठा केवी सिद्ध करवी तो एक आत्माने विषेज सुखपणानी भावना रहे अने ते आत्मा विना बीजा मायिक आकार मात्र तेने विषे केवळ दुःखज जणाया करे अने चार प्रकारना प्रलयमां जे जे आकारनो विनाश थाय छे तेने विषे केवळ दुःखनीज भावना जणाया करे अने प्रीति

तो बे प्रकारे सिद्ध करवी जे "कामार्ततस्करनटव्यसनि-द्विषंतः स्वस्वार्थसिद्धिमिवचेतसि नित्यमेव ॥ नारायणं परमयैव मुदा स्मरंत॥त्वां" ए श्लोकमां जेम कह्युं छे तेम अन्तःकरणे करीने प्रीति सिद्ध करवी तथा "साध्वी चकोरशलभास्तिमिकालकंठकोका निजेष्टविषयेषु यथैव लग्नाः॥ मूर्त्तौ तथा भगवतोऽत्र मुदातिलग्नं ॥त्वां" एमां कह्युं छे तेम देहे करीने भगवानमां प्रीति करवी. एवी रीते ए बे प्रकारनी निष्टाने श्रवण, मनन अने निदिध्यासे करीने सिद्ध करवी. ॥ ८८ ॥

उपासक, उपास्य अने धाम ए त्रणनी जे शुद्धि तेने यथार्थ जाणीने भगवानने भजे तो तेने कोइ वातनी कसर न रहे.

(१) उपासक जे भगवाननी उपासनानो करनारो

१ अर्थः--कामार्त्त पुरुष, चोर, नट, व्यसनी अने शत्रु एटलाजनो पोताना स्वार्थनी सिद्धिने जेम नित्य चित्तमां संभारे छे. तेम परमस्नेहे करीने नारायण भगवानने संभारता एवा भक्ति धर्मना पुत्र अने भक्तनी रक्षा करनारा तमने हुं पाम्यो छुं. ।

२ अर्थः—पतिव्रतास्त्री, चकोरपक्षी, शलभ, मच्छ, बपैयो अने कोकपक्षी एटला जेम पोताना प्रिय विषयोमां जोडाय छे. तेमज भगवाननी मूर्तिने विषे हर्षे करीने अत्यंत जोडाता एवा. ।

जीवात्मा तेने विषे अक्षर भावनानी दृढता करवी अने अक्षर विना जे प्रकृतिपुरुषादिक भाव ते कोइमां एनुं मन स्थिरताने पामे नहि अने एक अक्षरभावने विषे स्थिर पामे ए उपासकनी शुद्धि कहेवाय.

(२) उपास्य मूर्ति जे श्रीहरिजी तेमनुं जे स्वरुप, स्वभाव, गुण, वैभव अने ऐश्वर्यादिक छे तेवुं अक्षरादिक कोइने विषे नथी अने भगवानना स्वरुपादिकतो अपरिमित छे अने अक्षरादिक सर्वथी विलक्षण छे. एवी रीते श्रीहरिजी जे उपास्य तेनी शुद्धि जाणवी.

(३) श्रीहरिजीनुं धाम ते अक्षर छे. पोते पोताने अनुरुप ते अक्षरधाम मान्युं छे अने बीजां जे धाम तेमां पोते देखाय छे ते तो ते धामना निवासी भक्त तेमने सुख देवाने अर्थे ते भक्तनी रुचि अनुसारे देखाय छे. जेम पृथ्वीने विषे भगवान देखाय छे ते मनुष्यरुप भक्तने सुख देवाने अर्थे तेने रुचि अनुसारे देखाय छे. एवी रीते धामनी शुद्धि जाणवी. ॥८९॥

उपासक, उपास्य, अने धाम ए त्रण प्रकारने जाणतो जे भक्त तेणे केवा भक्तने विषे प्रीति राखवी? तो जे भक्त पोते अक्षरभावने पामीने अक्षरधामने विषे सदाय रह्या एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेने विषे आत्यंतिकपणे जोडायो होय अने तेथी जे ओरा भाव

छे ते कोइने विषे न जोडाय अने बीजा धामोमां जे भगवाननी मूर्तियो रही छे तथा सुख, ऐश्वर्य रह्यां छे ते कोइने विषे आनंद न माने एवी रीतनो जे होय तेनी साथेज गुरुभावने मित्रभाव राखवो अने जे भक्त एवो न होय तेने विषे शिष्य भाव राखवो अने तेने तो एम जाणवो जे जे जे रीते जे जे भक्त भगवानने भजे छे ते रुडा छे अने धीरेधीरे काळे करीने प्रथमना जेवा सर्वोत्कृष्ट भावने पामशे माटे ए पण ठीक छे अने नमस्कार करवा योग्य छे एम समजवुं. ॥ ९० ॥

भगवानना भक्तने विषे कोइ जातनो दोष केम रही जाय छे ? तो ए दोष होय तो मोटो, पण तेने विषे एने अल्पपणुं जणाय छे. तथा ए दोषने विषे कोइक जातनो गुणभाव रहे छे तेणे करीने ए दोष रहे छे अने ए दोषने विषे अल्पपणुं अने गुणभाव रहे छे तेना चार हेतु छे (१) अज्ञान (२) मोह (३) प्रमाद (४) आळस ए चार दोष जाय तो अल्पपणुं अने गुणभाव ए बेवानां जाय एम समजवुं. ॥९१॥

विषय छे ते बे प्रकारना छेः—

(१) स्थुल (२) सुक्ष्म ए बन्नेनां लक्षणः—

(१) जेनी उपर पोताने अतिशे भाव न होय

अने सहेजे न जोइता होय ते आवे तो तेनी उपर पोताने अति भाव पण न थाय अने अभाव पण न थाय. एवा जे विषय तेने स्थुल कहेवाय. ए स्थुल विषयने त्याग करवा अतिशे कठण नथी.

(२) जेनी उपर पोताना मनने अतिशे रुचि होय अने पोताना मनने अतिशे गमता होय ते विषय त्याग करवा घणा कठण छे अने एमने टाळयानो तो ए मोटो उपाय छे जे स्त्री, धन, मान, स्वाद आदिक जे जे उपर पोताना मनने रुचि होय ते विषयने विषे दोष बुद्धिनो अतिशे विचार थवा लागे ने मनगमता विषयनो त्याग करे अने दोष बुद्धिनी ग्रंथि पाडे त्यारे टळे अने केवळ उपरथी त्याग कर्यो होय अने विषयनो जोग न होय तो त्याग रहे अने ज्यारे एवो जोग थाय त्यारे तेमां बंधाय, पण जो दोष बुद्धिनी दृढता करी होय तो ज्यारे ए विषय सांभरे ते भेळे दोष बुद्धिनी पण स्मृति थइ आवे माटे ए विषयमां जोडायज नहि. अने एमां एम दोष दृष्टि करवी जे ए स्त्री धनादिकने विषे अनेक प्रकारना दुःख, क्लेश, प्रयाश, शोक, मोहादिक रह्या छे अने एमां त्रिकाळे सुखनो तो गंध पण नथी अने पोताने आत्मारुप मानीने भगवाननुं ध्यान करवुं तथा कथा, किर्तन, गुणवर्णन

करवां तेमांज परम सुख रह्युं छे ए आदिक भगवाननुं माहात्म्य विचारीने बीजा जेटला मायिक सुख, लोक, भोग, देह तेमां दुःखना समूह नजरे आवे त्यारे ए सुक्ष्म विषय ते टळी जाय छे. ॥ ९२ ॥

"विषयाशक्ति तथा देहाभिमान तथा काम, क्रोध, मानादिक, दुष्ट स्वभाव ते केना टळे ?" तो जे भक्त ज्ञान, वैराग्य तथा भगवत् माहात्म्यादिक साधनने अभ्यासे करीने धीरेधीरे ते स्वभावने टाळतो जाय अने थोडो थोडो टाळवानो आग्रह राखे अने ते उपर नजर होय तो ते सर्वे धीरे धीरे काळे करीने टळी जाय जेम घटगामीनो तिथि छे ते धीरे धीरे घटती घटती क्षयने पामी जाय छे तेम ते दोष मूळमांथी उखडी जाय. "अने ते दोष केना न टळे ?" तो जे दोषने घटाडे तो नहि अने मूळगो वधारतो जाय अने ते दोष जेम जेम वधे तेवां स्थान, पदार्थ अने संग तेनुं सेवन करतो जाय तेना तो ते दोष वधता जाय अने अंते ते सत्संगमांथी विमुख पण थाय जेम वृद्धिगामीनी तिथि छे ते थोडी थोडी वधती वधती वधीने साठ घडीनी थाय तेम ते दोष वधता जाय छे माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने ते दोष वधे एवुं आचरण न करवुं अने जेवी रीते ते दोष घटे एवी रीतना विचारमां रहेवु तथा तेवुं आचरण करवुं. ॥ ९३ ॥

जगतमां मोटा मोटा माणसने तथा राजाने सत्संग थाय तथा घणा माणसने सत्संग थाय अने मंदिरमां अने आचार्यना घरमां घणी उपज वधे तथा मोटी आबरु थाय पण जो पोतानो कोइक स्वभाव वधी जाय अने सत्संगमांथी पाछुं पडी जवाय तो ते सर्वे आपणा जीवना कल्याणने अर्थे शा प्रयोजनमां आव्यां? एणे करीने पोतानुं कल्याणरुप कार्य सिद्ध न थयुं जेम कोइक मांदो पडयो होय. तेने सारां सारां भोजन, दुध, साकर, घी होय ते शा काममां आवे? तेमांथी लगार पण खवाय नहि. तेम ते सर्वे तेना काममां आवे नहि ते माटे प्रथम तो पोतानो सत्संगमां अचळ पायो थाय अने देशकाळादिक विषम थाय तो पण कोइ रीते पाछुं पडाय नहि. एवो पोतानो जीव साधने करीने सिद्ध करवो अने पोतानो कोइ अयोग्य स्वभाव होय तेनी उपर दोष दृष्टि राखीने तेने टाळवानो निरंतर आग्रह राखवो अने घणो खटको तो एनो राखवो अने ए करतां करतां सत्संग कराववो अने सत्संगनो ममत्व राखवो अने उत्कर्ष पण यथाशक्ति करवो पण स्वभावनी उपर तो दोष दृष्टि नहि अने केवळ सत्संग कराववा उपर तथा वधारवा उपर नजर राखवी ए ठीक नहि. आटली

वात एम समजे त्यारे जाणीए जे एने सत्संगना नोरनी समजण आवी छे. ॥ ९४ ॥

"सत्संग संबंधी तथा मंदिर संबंधी जे जे क्रिया करवी तथा ध्यान, ज्ञान अने व्रतादिक जे जे रुडी क्रिया करवी ते भेळुं देहाभिमान पण वधतुं जाय छे एवो जीवनो स्वभाव छे ते केम समजे तो न थाय?" तो जेने शास्त्रमां बुद्धि पुगती होय तथा मोटा साधुनो जेने विश्वास होय तेने देहाभिमान न आवे. ॥९५॥

"विद्या, बुद्धि, कळा, चातुरी, गाववुं ए आदिक जे जे व्यवहारिक गुण छे ते केने पोताना कल्याणना अर्थे थाय छे?" तो जेने केवळ पोतानुं कल्याण करवुं होय अने पोताना दोष टाळीने भगवानना एकांतिक भक्त थावुं होय एवो जेने सत् आशय होय ते तो ए पोताना गुणने सत्संगना काममां वावरे एटले एने ए पोताना गुण कल्याणने अर्थे थाय छे. अने जेने पंचविषयना सुखने देहे करीने अने मने करीने पामवानी इच्छा होय एवा असत् आशयवाळाने ए गुण विषय सुख पाम्याने अर्थेज थाय छे अने पोताना कल्याणने अर्थे थाता नथी. ॥ ९६ ॥

चार अन्तःकरण जीतवाना उपाय कहीए छीए.

(१) बुद्धिने एम जीतवी जे बुद्धिने विषे मायिक

पदार्थमात्रना आकारना निश्चय थाय छे ते सर्वे पदार्थने विषे चार प्रकारना प्रलये करीने नाशवंतपणानो निश्चय थाय अने पोतानो आत्मा तथा भगवान अने भगवाननुं धाम अने ते धामना मुक्त एमना अविनाशीपणानो निश्चय थाय एवी रीते ज्यारे बुद्धिमां ए बे प्रकारना निश्चयनी दृढता थाय त्यारे बुद्धि जीताइ जाणवी.

(२) जे मन छे ते मायिक पदार्थना संकल्पने करे एवो मननो स्वभाव छे ते मनने ते पदार्थना संकल्पो न करवा देवा अने ते संकल्पथी पाछुं वाळीने अने ते संकल्पने मुकी दइने भगवाननी मूर्तिना संकल्प करवा तथा भगवाननी लिला चरित्रना संकल्प करवा एवी रीते मन जीताय.

(३) जे चित्तने विषे मायिक पदार्थना आकार ते चिंतवने करीने स्फुरी आवे छे ते चित्तनो आत्माकारपणे करीने उपशम थाय त्यारे ते आकारनी विस्मृति थाय अने ते पछी एक भगवानना आकारनुं चिंतवन करवुं एवी रीते चित्त जीताय.

(४) अहंकार छे ते वर्ण, आश्रम, जाती, कुळ, रुप, गुण तेने विषे अहंपणुं धरे छे अने पोताने तेवा आकारे माने छे ते अहंपणाने मुकीने आत्माने विषे

अहंपणुं मानवुं जे हुं तो जाणपणे युक्त एवो जे आत्मा ते छुं पण वर्णाश्रमादिक धर्मवाळो जे ते हुं नहि. एवो निरंतर अभ्यास करवो त्यारे अहंकार जीताय. ॥ ९७ ॥

इंद्रियो छे तेतो शास्त्रमां कह्या जे पोत पोताना नियम तेणे करीने जीताय छे एम जाणवुं ते नियम कीया तो श्रवणे करीने भगवानना यश सांभळवा तथा त्वचाए करीने भगवाननो स्पर्श करवो अने नेत्रे करीने भगवाननां अने संतनां दर्शन करवां अने नाशिकाये करीने भगवाननां अने संतनां प्रसादी एवां जे पुष्प, चंदन तेनो सुगंध लेवो तथा वाणीए करीने भगवाननां चरित्र तथा यश कहेवा. तथा रसनाए करीने भगवाननो प्रसाद लेवो तथा हाथे करीने भगवाननी तथा संतनी तथा मंदिरनी सेवा परिचर्या करवी तथा पगे करीने भगवान संबंधी सेवाने विषे चालवुं पण आडा अवळा फरवुं नहि. एवी रीते दशे इंद्रियोने नियममां राखे तो जीताय छे एम जाणवुं. ॥ ९८ ॥

पुर्वे अवतार थया छे तेनो महाराजे पोताने विषे भाव देखाडयो. ते वात करीए जे प्रथम महाराज प्रगट थया त्यारे एवुं प्रकरण चलाव्युं हतुं जे भजनमां

बेसे अने संकल्प थाय तथा शरिर हाले तो उठाडी मुकता ए पोताने विषे श्वेतद्विपपति वासुदेवनो भाव देखाडयो तथा वळी खटरसना वर्तमाननुं नियम आप्युं तथा पाशेरज अन्न एक वखत खावुं तथा एक कौपीन, एक हजुरीओ राखवो. तथा एक गोदडी राखवी तथा एक एक जणने एक बीजानो शब्द न संभळाय एम रहेवुं ए आदिक साधुने महाकठण तप कराव्युं ए पोताने विषे नरनारायणनो भाव जणाव्यो तथा ओगणोतेरामां महाराज हाथमां तरवार लइ एम बोल्या जे आ मारी तरवार छे ते कुसंगीनुं लोही पीए छे अने सत्संगीनी रक्षा करे छे तथा आ तरवारे मोटा मोटा लश्कर, तथा मोटी मोटी जमातो तथा दैत्य ए सर्वेने कापी नाख्या. तथा आ तरवारे मोटा मोटा गढ पाडी नाख्या, तथा पोते घोडा उपर बेठा तथा घरेणां पहेर्यां तथा भारे भारे वस्त्र पहेर्यां तथा रंगे रम्या तथा नाना प्रकारनी लीलाए करीने पोताना एकांतिक भक्तने सुख आप्युं ते कृष्णावतारनो भाव पोताने विषे देखाडयो तथा वळी पोते धर्मनी व्यवस्था बांधी ते पोताने विषे रामचंद्रजीनो भाव जणाव्यो तथा पोते ज्ञान, वैराग्य अने सांख्य, योग प्रवर्ताव्यो ए पोताने विषे दत्तात्रेय तथा कपिल देवजीनो

भाव जणाव्यो तथा पोते पोताना आश्रित जनने शिक्षा करी ए पोताने विषे ऋषभदेव भगवाननो भाव जणाव्यो अने पोते धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा माहात्म्ये सहित जे एकांतिक भक्ति करवी तेनी रीत देखाडी तथा प्रेमलक्षणा भक्तिनी रीत देखाडी अने जेम गंगाजी जेते पर्वत तथा जे जे बीजां कांइ आडां आवे छे. तेने तोडीने समुद्रने विषे भळे छे तेम ते भक्त पण भगवानना स्वरूपमां जे जे पदार्थ तथा पोताना संबंधी अंतराय करे तेनो त्याग करीने भगवानने विषे हेते करीने जोडाया. तथा समाधियो करावीने जेवो तेवो होय तेने पण अष्टावर्णपार जे अक्षरधाम ते देखाड्युं तथा ते समाधिने विषे पोताना अवतार देखाडीने पोताने विषे लीन कर्या तथा भक्तने विषे लीन करी देखाड्या तथा पुष्प तथा सोटीने स्पर्श करीने पोतानां धाम देखाड्यां ए सर्वे पोताना विषे पुरुषोत्तमपणुं देखाड्युं एवी रीते महाराजे पूर्वे जे जे अवतारे करीने जे जे कार्य कर्युं छे ते पोते सहज लीलाए करीने कर्युं आवी रीते आ वातने विचारीने पछी एम निर्धार करवो जे ज्यारे सर्वे अवतारनो भाव महाराजे पोताने विषे देखाड्यो. ते माटे सर्वे अवतारना अवतारी ते आ प्रगट भक्ति धर्मना पुत्र एवा

श्रीहरिकृष्ण महाराज छे अने बीजा अवतारतो एमना आज्ञाकारी छे एम महाराजना स्वरुपने समजवुं ते आ वातने पण जे बुद्धिवाळो होय अने शुद्ध संप्रदाय थकी ज्ञानने पाम्यो होय ते आ वातने शुद्ध संप्रदाय थकी समजे. त्यारे आ वात समजाय पण ते विना समजाय नहि ते माटे आ वातने समजी राखवी. ।९९।

निर्विकल्प निश्चयवाळाने पंचविषयने विषे पण एने त्रणे अवस्थामां देश काळे पण राग न थाय तथा काम, क्रोध, लोभ, मान, मत्सर, इर्षा, असूया अने रसास्वाद, अहंममत्व आदिक कोइ अधर्मना सर्गमां लेवाय नहि अने ते कोइ देशकाळे पण एने विषे न लेवाय केम जे ए भूंडा देश काळादिकने सेवेज नहि अने पंचविषयमां तथा कामादिक अधर्मना सर्गमां जो लगारेक पण लेवाय तो एम जाणवुं जे एने विषे एटलुं सविकल्पपणुं छे ते जेम ब्रह्मा, विष्णु, शिव, विराट, प्रधानपुरुष, मूळ प्रकृतिपुरुष ए सर्वे सविकल्प निश्चयवाळा छे तो ए विषयनो त्याग करवा जाय तो पण विषयमां एक रस थइ जाय छे. पण ऐश्वर्यनो त्याग करीने सत्तारुप थइने ए उपाधिनो त्याग नथी थातो. अने जो अक्षरना मुक्त उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळा छे तो एक पुरुषोतम

एवा जे श्रीजीमहाराज तेनी मूर्तिमांज सुख पामे छे पण ते मूर्ति विना अक्षरना सुखे तथा आत्माना सुखे करीने पण अकळाइ जाय छे पण ते मूर्ति विना रही शकता नथी अने वळी एम समजे जे महाराजने तो कोइने निवृत्ति धर्मनी तथा प्रवृत्ति धर्मनी ए आदिक कोइ क्रिया कोइ पासे कराववी नथी एतो जेने जे क्रिया कर्यानो राग होय तेने ते क्रियाने विषे प्रेरे छे पण पोताने तो एक पोतानी मूर्त्तिमांज दर्शन कराववां छे. पण बीजुं कांइ कोइ पासे कराववुं नथी अने जे महापुरुषादिक ऐश्वर्यमां जोडाणा छे ते तो पोताने ए ऐश्वर्यने भोगववानी वासना छे. माटे जोडाणा छे एम जे समजतो होय तेने निर्विकल्प निश्चयवाळो जाणवो. ॥ १०० ॥

जीव जे जे करे छे ते एम करे छे जे मान, मोटपने विख्याति करवी तथा पोतानी मोटप जणाववी तेने अर्थे शास्त्र भणे छे तथा सारा अक्षर लखवा शीखे छे तथा सारी रसोइ शीखवी तथा गावणुं शीखवुं तथा किर्तन शीखवां तथा वातो शीखीने कोइने उपदेश करवो. ए आदिक क्रियाने भामे चडी जाय छे पण कोइ एवे भामे नथी चडतो जे आ जीवनो मोक्ष करवो तेमां अंतरायरुप एवो जे देहरुप जे रथ छे तेने

इंद्रियोरुप घोडा जोडया छे अने मनरुप रासडी छे तेने बुद्धिरुप जे सारथी ते रथनो हांकनारो छे अने रथी जे जीव ते बुद्धिरुप सारथीने नियममां करीने मनरुपी रासडी बते इंद्रियोरुप घोडाने वश करीने देहने भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्तावे अने धर्म, ज्ञान, वैराग्यने अति दृढ करीने मनना संकल्पने जीतिने अने अति उत्तम उपशमने सिद्ध करीने ते उपशम ने भगवाननुं ध्यान करीने, वासना जे अव्यक्त राग छे तेने टाळी नाखीने भगवान अने भगवानना भक्तने विषे जेवी देहने विषे आत्मबुद्धि वर्ते छे तेवी आत्मबुद्धि करीने महाराजनुं निरंतर ध्यान करवुं अने तेमां जे अंतराय करे तेनो त्याग करवो आ वातनो आग्रह कोइ नथी करता अने आटली वात करीए छीए पण कोइने चटकी चडती नथी. ॥ १०१ ॥

"विषयमां दोषबुद्धि ते क्यारे दृढ थाय?" तो ज्यारे भगवानना सुखमां दृष्टी पूगे त्यारे थाय जेम कोइक पुरुष होय ते कहेजे दिवस उग्या पहेलां जे आवे तेने बसें रुपिया आपीश त्यारे तेने लेवानी केवी चाडय थाय छे अने तेने कोइक कहेजे तुं आंही रहे तुंने पांच रुपीया आपीश अने जलेबी जमाडीश एम कहे त्यारे एने तेनो साचो अभाव आवे जे मने बसें रुपीया

मळे छे तेमां अंतराय करे छे ते माटे एज मारो शत्रु छे. तेम जेने एम जणाय जे आ लोकना पंच विषय छे ते भगवानना धाममां जातां अंतराय करे एवा छे एम जाणीने ते उपर अतिशे दोषबुद्धि करे ते उपर भारतमां एक वात छे जे व्यासजी चाल्या जाता हता त्यारे मार्गमां एक कीडो पडयो रहेल ते कीडो गाडां आवतां हतां तेने भये करीने मार्गमांथी बहार नीकळयो त्यारे व्यासजीए पुछयुं जे, "तुं अवळो केम चाल्यो ?" त्यारे ते बोल्यो जे, "गाडां आवे छे ते पीलाइ मरुं ते वास्ते बहार निसर्यो" त्यारे व्यासजीए कह्युं जे "मुवा, आंहि शुं सुख छे, आगळ तो बहु सुख छे" पछी ते बोल्यो जे, "महाराज, मने तो आ देहमां बहु सुख आवे छे" त्यारे व्यासजीए कह्युं जे, "तुं मारा सामुं जो" एम कहीने तेने देह मुकावीने कोइक राजा हतो तेनी राणीना गर्भमां मुक्यो अने पछी ते जन्म्यो. एम करते दश वीश वर्षनो थयो त्यारे ते मोटो थयो पछी नाना प्रकारना सुख भोगवीने मोज करे छे एवा समामां वळी व्यासजी बजारमां थइने निसर्या. त्यारे ते राजा गोख उपर बेठो हतो ते व्यासजीने जोइने बोल्यो जे, "एमने में दीठा छे" त्यारे तेने व्यासजीए

पूर्वनी स्मृत्ति करावीने कह्यु जे," ओ सुख केवुं हतुं ? " त्यारे तेणे कह्युं जे, " हे महाराज, ए ते शुं सुख हतुं ? आतो बहु सुख छे " त्यारे ते व्यासजीए कह्युं जे," आथी आगळ बहुं सुख छे त्यारे वळी तेने ते देह मुकावीने कोइक चक्रवर्ति राजानो कामदार हतो ते तेने घेर हजारो वहाणो करीने वाणोतर कमाणी करे एवा शेठने घेर जन्म धराव्यो. पछी वळी दश, विश वर्ष थयां त्यारे ते व्यासजी आव्या अने कह्युं जे " ओ सुख जेवुं आ सुख छे के नहि ? " त्यारे तेणे कह्युं जे, "आतो बहु सुख छे " त्यारे कह्यु जे, " आ सुखथी आगळ बहु सुख छे " एम करीने तेने देह मुकावी दीधो अने पछी भारे वेद, पुराण भणे भणावे अने ते शास्त्रना अर्थने जाणे अने हजारो रुपीयानुं वर्षासन चाल्युं आवे एवा ब्राह्मणने घेर जन्म धराव्यो. पछी तो ते बीजबळी छे ते थोडे दिवसे करीने विद्यामात्रने भणी गयो अने शास्त्रमां आ पुन्ये आवा सुखने पामे छे अने आ पापे आवा दुःखनी प्राप्ति थाय छे. ए सर्वे वातनी गम पडी त्यारे वळी ते व्यासजी आव्या त्यारे तो ते व्यासजीने पगे लागीने कह्युं जे, "हेमहाराज ! तमे तो मारा उपर बहुज अनुग्रह कर्यो त्यारे ते व्यासजीए कह्युं जे, " ओ सुख

केवुं हतुं ?" त्यारे तेणे कह्युं जे, "एमां शुं सुख हतुं? हवे तो सर्वे वातनी खबर पडी" त्यारे व्यासजीए तेने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये सहित भक्तिनो उपदेश करीने कह्युं जे, "ध्यान कर" पछी समाधि करावीने पछी भगवानना दर्शन कराव्यां तेने पछी देह मुकावीने गरीब ब्राह्मणने घेर देह धरावीने पछी तेने उपदेश करीने तेने घरनो त्याग करावीने पछी तेनी वासना टाळी नंखावी अने तेने भगवानना धाममां पहोंचाडयो तेम जीवने जेम आगळ अधिक सुख जणाय त्यारे ते विषयमांथी प्रीति मुके ते माटे जे बुद्धिवान होय तेणे भगवानना सुखमां दृष्टि पुगाडवी ते एम समजवुं जोइए जे वैराटना एक दिवसमां ब्रह्मा तो मरी जाय छे तेथी आगळ ज्यारे प्रधानपुरुषना सुखनो विचार करे त्यारे ते वैराटनुं सुख तुच्छ थइ जाय छे केमजे ते प्रधानपुरुषना एक मटकामां अनंत वैराट थाय छे अने पडी जाय छे अने तेनी आगळ ज्यारे महापुरुषना सुखनो विचार करे त्यारे ते प्रधान पुरुषना सुखनुं तुच्छपणुं थइ जाय छे. केम जे मूळ प्रकृतिने विषे प्रधान पुरुष ते केम छे तो जेम निमित्त पलयने विषे ध्रुना तारा सुधी जळ भराय छे पछी तेमां जेम अनंत बुदबुदा थाय छे अने मटी जाय छे तेम

महामायाने विषे अनंत प्रधानपुरुष थाय छे अने मटी जाय छे तेथी आगळ ज्यारे अक्षरना सुखनो विचार करे त्यारे ते महापुरुषना सुखनुं तुच्छपणुं थाय केमजे ज्यारे अक्षर ते महापुरुष सामुं जुए छे त्यारे ते महापुरुष मायाने प्रेरवा समर्थ थाय छे तेथी आगळ ज्यारे पुरुषोत्तम भगवान जे श्रीजीमहाराज तेनी मूर्तिना सुखनो ज्यारे विचार करे त्यारे ते अक्षरनुं सुख पण तुच्छ थइ जाय केमजे अक्षर ते अनंतकोटी मुक्तने धारवाने समर्थ छे ते पण पुरुषोत्तम महाराज तेमनी दृष्टिवडे करीने धारवाने समर्थ छे एवा जे पुरुषोत्तम ते आपणने प्रकट मल्या छे. तेमने मुकीने जे बीजा सुखने इच्छे छे तेने आवो महिमा समजाणो नथी अने ए मोटपने मेलीने मानने इच्छे छे, स्वादने इच्छे छे, स्पर्शने इच्छे छे, लोभने इच्छे छे. ते भगवानना सुखने मुकीने जे विषय भोगने भोगववाने इच्छे छे ते मूर्ख छे अने तेने ए वात समजाणी नथी. ॥ १०२ ॥

संबंधीमां हेत न राखवुं अने तेने बोलाववो नहि, रसना इंद्रियने जीतवी अने वस्त्र झीणां न राखवां अने बरोबरीयानो संग न करवो अने मनने सारुं लागे ते न आपवुं अने पोताने करवानुं शुं छे तेनो तपास

करवो अने टाढ, तडको, भूख, तरश, तेनुं सहन करवुं, खावानी तृष्णा न राखवी, अने कोइने कठण वचन न बोलवुं, साधुनां लक्षण वार्ता विवेकमां तथा हरिगीतामां कह्यां छे तेने शीखवां, अधर्मथी छेटे रहेवुं. अने जेनो संग करे न्युनता आवे तेनो संग न राखवो अने इंद्रियोने जीतवी अने अनुवृत्ति राखवी अने असत् वासना राखवी नहि. ॥ १०३ ॥

एक श्रीहरिजी तथा तेमना संत तथा हरिभक्त ए त्रणे ठेकाणे आ आठवानां न जोइए तेनां नाम—

(१) कपट (२) मान (३) लोभ (४) छळ (५) इर्षा (५) हांसो (७) निंदा (८) द्रोह. ॥१०४॥

आ चार प्रकारे हेत करवुं.—

(१) देहमांथी हेत तोडीने जीवमां हेत करवुं.

(२) संबंधीमांथी हेत तोडीने भगवानना एकांतिक भक्तमां हेत करवुं.

(३) आ लोकमांथी प्रीति तोडीने भगवानना धाममां प्रीति करवी.

(४) सर्व पदार्थमांथी प्रीति तोडीने भगवाननी मूर्तिमां प्रीति करवी. ॥ १०५ ॥

अंतःकरणने आत्मा ए बेना वच्चे जे विचार रहे छे. ते विचार केनो समजवो ? ए विचार छे ते अंतःकर-

णनो पण नथी अने जीवनो पण नथी. ए विचारतो सत्शास्त्र अने सत्पुरुषनो छे. ते ज्यारे मुमुक्षु प्रथम सत्पुरुषना मुख थकी सत्शास्त्रमांथी विचारीने शीखे छे. अने ते विचार इंद्रियोने अंतःकरणमां रहे छे. अने ते विचार देह ने देहना संबंधी ने मायिक पदार्थ ते सर्वेने खोटां करे छे. ॥ १०६ ॥

श्रीजीमहाराजे वचनामृतमां कह्युं छे जे "एकांतिक न होय. तेनो संकर्षणादिकमां प्रवेश थाय छे तेनुं केम समजवुं ?" ऊत्तर जे संकर्षणादिक तो बीजे नथी. ए तो सत्संगमां सर्वे छे ते ज्यारे पुरुषोत्तम प्रकट थाय छे त्यारे महापुरुष छे आदि अने इंद्र छे अंते एवा जे सर्वे-ऐश्वर्यार्थी ते सर्वे ज्यारे पुरुषोत्तम अहिंयां पधार्या होय. त्यारे ए सर्वे पोताना कल्याणने अर्थे देह धरीने अही आवे छे तथा बीजा जे अवतार ए सर्वे पुरुषोत्तम भेळा आव्या होय. त्यारे जे एकांतिक होय ते तो पुरुषोतमने साथेज हेत करे माटे ए तो ज्यारे देह मुके त्यारे पुरुषोतम एवा जे श्रीहरिकृष्णजी महाराज एमनी सेवामां अक्षरधाममां जइने रहे, अने जे एकांतिक साथे जोडाणो होय. तेने पण अक्षर धाममां लइ जाय छे. अने पूर्वे कह्या एवा जे ऐश्वर्यार्थी ते पण सत्संगमां मोटा गुरु थया होय त्यारे ए जेने

महाराजनी वात करीने तथा सत्संगनी वात करीने जेने जेने सत्संग करावे त्यारे जो तेने महाराजने विषेज हेत थयुं होय, तो तो ए अक्षरधाममां जाय अने पूर्वे कह्या तेनी साथे हेत थयुं होय. तो ए ज्यांथी आव्या होय त्यां लइ जाय अने एकांतिक साथे हेत न थवा दे ते वात विचारे तो खबर पडे केम जे महाराज कहेता जे, " जुनेगढ जाय तेने पांच वार मळीए तथा तेना अमे जमान छीए " त्यारे कोइक जावानुं कहे त्यारे तेना गुरु होय ते एम कहे जे " जो तुं जइश तो पथरामां अथडाइ अथडाइने मरी जइश. " एम कहीने तेने अळसावी नाखता तथा कोइकने महाराजनी सेवामां रहेवुं होय तो पण तेने तेना गुरु अळसावी नाखता. ॥ १०७ ॥

एक हरिभक्तने महाराजे कह्युं जे, "अक्षरधामम जइ आवो " पछी ते समाधि करीने सर्वे धाम जोइने अक्षरधाममां गयो. तेने महाराजे पूछयुं जे, 'कयाकय धाममां जइने आव्या ? " त्यारे तेणे कह्युं जे " हे महाराज ! आपणा केटलाक साधु, ब्रह्मचारी, पाळा सत्संगी, ते बद्रिकाश्रममां तथा श्वेतद्विपमां तथा वैकुंठमां तथा गोलोकमां ए सर्वे धाममां ते सर्वेने में दीठ ते अहिं केम न आव्या?"त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युंजे'

अमने ते ते धामना पति–जाण्या. ते माटे त्यां रह्या छे अने आ सर्वे छे तेमणे तो अमने सर्व अवतारना अवतारी जाणीने अने वळी सर्वे धाम थकी पर जे ब्रह्ममहोल तेना पति अमने जाण्या छे ते माटे एमने अमे अक्षर जेवा कर्या छे अने पूर्वे जे कह्या तेमणे तो अमने ते ते अवतार जेवा जाण्या. ते माटे एमने ते ते अवतारना जेटलुं ऐश्वर्य आप्युं छे अने ते ते धामना पति अमने जाणीने ते ते धाममां रह्या छे ते जो अमे पंडे जइने कहीए तो पण ते न माने अने एम कहे जे अमने तमे भरमावो छो. पण अमे एम तमारा स्वरुपमांथी पडीए एवा नथी एम कहीने ते ते धाममां रहे छे, ते वार्ता एकांतिक साधु विना समजाय नहि.''।१०८।

सत्पुरुष जे देवने पधरावे छे त्यारे ते देवमां दैवत आवे छे. तथा शास्त्रने साधुपणुं तथा तीर्थ ते ए साधुनुं कर्युं थाय छे. पण ए चारे करीने साधु नथी थाता. ॥ १०९ ॥

वळी पोते एम वार्ता करी जे एकतो एवो पुरुष होय जे पोते पण भगवानने संभारे अने बीजा जे जे पोताने आशरे आवे ते सर्वेने भगवान संभरावे अने बीजो तो एवो होय जे पोते पोतानी मेळे भगवानने संभारे अने त्रीजो तो बीजानी ओथे रहीने भगवानने

संभारे पण स्वतंत्रपणे पोते न संभारे अने चोथो तो ए जे पोते भगवानने न संभारे अने बीजो कोइ भगवानने संभारे तोय ठीक अने न संभारे तोय ठीक अने पांचमो ते एवो होय. जे पोते पण भगवानने न संभारे अने बीजाने पण भगवान न संभारवा दे, माटे आ पांच प्रकारना पुरुष ओळखीने सोबत करवी. ॥ ११० ॥

वासना अक्षरधाममां टळे के बीजे टळावे छे? ते कहो, त्यारे कह्युं जे "श्रीजीमहाराजना स्वरुपनो निश्चय होय अने श्रीजीमहाराजनी आज्ञा प्रमाणे तो रहेता होय पण जो जीवमां राग रह्यो होय तो ज्यारे देह मुके त्यारे तेने महाराज–अक्षरधाममां लइ जाय. अने पछी पोतानो अवतार कोइक ब्रह्मांडमां थयो होय. त्यां महाराज तेने देह धरावे. अने पछी ते संसार मुकीने ज्यां भगवान होय त्यां जाय. पछी ते भगवानना स्वरुपनो निश्चय करीने पछी साधन करे अने थोडेक काळे ते वासनाने टाळी नाखे केम जे पूर्वनुं बीज बळ होय माटे. ॥ १११ ॥

महाराजे वात करी हती जे आ विराट पुरुष छे. ते ज्यारे कोइक समे पुरुषोतमनो अवतार पृथ्वी उपर हतो त्यारे ते विराट पुरुषोतमना भक्त हता ते एने एटलो संकल्प रह्यो हतो जे आ ब्रह्मांडनुं काम केम

थातुं हशे ? एवो संकल्प लगीर कर्यो हतो तो पण केटलाक काळ त्यां[1] रह्या अने पछी ज्यारे सृष्टिनी ऊत्पत्ति थइ त्यारे महाराजने तेणे कह्युं जे हे महाराज! जो तमे कहो तो आ ब्रह्मांडमां समास छे ते हुं जाऊ त्यारे महाराजे आज्ञा आपी तेथी विराट थया छे. माटे वासना लिंग देहनो नाश थया विना अक्षरधाममां न रहेवाय. एतो पोतानी मेळेज माग दइ जवाय. ॥ ११२ ॥

जेने वासना होय तेने अक्षरधाममां लइ जाय छे. पण जो ते वासना भोगव्या विना तेने लइ जाय. तो तेणे त्यां न रहेवाय. ते माटे ज्यारे अहिं देह मुके छे त्यारे महाराज दर्शन देछे, पछी ते मूर्तिनी केडे चाल्यो जाय छे. पछी जेने अप्सराऊ तथा बीजा पंच विषयनी इच्छा होय तो ते देवलोकमां रहे, अने जेने अमृतपाननी इच्छा होय तो ते चंद्रलोकमां रहे अने जेने धनमां राग होय. तेने कुबेरनो देह आपे अने जेने कामभोगनी इच्छा होय तेने इलावृत खंडमां मेले अने जेने बहुरुपनी इच्छा होय तेने कामदेव करे अने जेने प्रजानी इच्छा होय तेने ब्रह्मा करे छे. अने जेने ब्रह्मांडने जोयानी इच्छा होय तेने विराट करे

---

१ अक्षरमां.

छे अने जेने ब्रह्मांड कर्यांनी इच्छा होय तेने प्रधान पुरुष करे छे अने जेने सर्वे नियंतापणुं तथा सर्वे जीवनुं अंतर्यामिपणुं तथा अनंत कोटी प्रधान पुरुष उपजाववा तथा ए सर्वेने नियममां राखवा अने नाना प्रकारनां विषय भोगने भोगववा ए आदिकनी जेने इच्छा होय. तेने महापुरुष करे छे. अने जेने प्रकट भगवाननी आज्ञा लोपीने धर्मनी इच्छा होय. तेने वैकुंठलोकमां मुके छे अने जेने सर्वे इंद्रियोने जीतीने तप करवानी इच्छा होय तेने बद्रिकाश्रममां मुके छे अने जेने निरन्नमुक्त थावानी इच्छा होय तेने श्वेतद्विपमां मुके छे अने जे प्रकट भगवाननी आज्ञा लोपीने नाना प्रकारनां वस्त्र तथा घरेणां रते तथा भगवानने थाळ धरवा तथा नाना प्रकारना हार करीने भगवानने चडाववा इत्यादीक पदार्थवते करीने भक्ति कर्यांनी इच्छा होय तेने गोलोकमां मुके छे अने जेने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्य युक्त–भक्ति अति दृढ करीने सर्वे इंद्रियोने नियममां करीने पछी सुक्ष्म देहनो नाश करीने पछी आत्यंतिक प्रलयनां उपशमने सीद्ध करीने पछी ते ऊपशम ने महाराजनी मूर्तिनुं ध्यान तेणे करीने कारण भावने टाळी नाख्यो होय अने महाराजनी सेवानीज एक इच्छा होय तेने पोतानी सेवामां राखे छे. ॥ ११३ ॥

पूर्वे कही जे दोषदृष्टि अने माहात्म्य ए बेने ज्यारे सिद्ध करे त्यारे मनमां विषयना संकल्प थाय छे ते बंध थाय छे अने ज्यारे संकल्प बंध थाय त्यारे सुक्ष्म देहनो नाश थाय अने ज्यारे सुक्ष्म देहनो नाश थाय तो पण लिंगदेह न गळे अने लिंगदेह केवुं छे तो मन थकी पर जे बुद्धि अने बुद्धि थकी पर जे कारण शरिरे युक्त अज्ञानमय एवो अनादि जीव छे. ते जीवमांथी अव्यक्त पंचविषयनो राग उठे छे अने पछी तेनो सुक्ष्मदेहमां संकल्प थाय छे. ते पंच विषयनो राग जेमांथी उठे छे तेने लिंग देह कहीए ते लिंगदेह तो टळवुं बहु कठण छे ते लिगदेह क्यारे गळे तो ज्यारे नित्य प्रलये करीने आ लोकनो निषेध करे अने प्राकृत प्रलये करीने अनंत कोटी ब्रह्मांडनो निषेध करे अने प्रकृतिनुं कार्य सर्वे प्रकृतिने विषे लीन करवुं अने आत्यंतिक प्रलयने विषे प्रकृतिने पुरुषने विषे लीन करवी अने महापुरुषने अक्षरने विषे लीन करवो एम आत्यंतिक प्रलयनुं उपशम करीने पछी ते अक्षर छे ते अक्षरनेज पोतानुं स्वरुप मानवुं अने अक्षररुप एवो जे पोतानो जीव ते जीवमां ज्यारे पुरुषोत्तम जे श्रीजीमहाराज तेनी मूर्तिनुं निरंतर ज्यारे ध्यान करे त्यारे वासनालिंग देहनो भंग थाय

ते विना बीजा कोटी उपाय करे तोय लिंग देहनो भंग न थाय. ॥ ११४ ॥

सवासनिक साथे हेत करे तो पोते जे लोकमां जाय त्यां तेने लइ जाय अने एम कहेजे आपणे हमणे मोजुं करीने धीरे धीरे जाशुं अने निर्वासनिक साथे हेत होय तो क्यांय न बंधावा दे अने धक्के मारीने अक्षरधाममां लइ जाय. ॥ ११५ ॥

जीवने मोक्षने मार्गे चालवुं कठण छे तेनी विगत जे संसारमांथी सत्संगी थावुं होय तो हजारो कारसा आवे अने सत्संग थाय तो पण शिक्षापत्रीनी आज्ञा प्रमाणे दसमो वीसमो भाग काढीने नक्की भक्त थावुं कठण छे अने एने साधु थावुं होय तो हजारो क्लेश थाय अने साधु थइने एकांतिक साधुने ओळखवा अने एमने संगे रहेवुं तेमां हजारो रोकनारा मळे अने ए पण थाय तो पण भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं घणुं कठण छे. ते पण थाय तो पण भगवाननी निरंतर स्मृति राखवी ए कठण छे अने ए करतां पण इंद्रियो अंतःकरणने जीतीने भगवाननुं जीवमां भजन करवुं ते कठण छे अने ते करतां पण चार प्रकारना प्रलये करीने प्रकृति पुरुष पर्यंत सर्वे नाशवंत जाणीने उपशम करीने पोताना आत्माने अक्षरब्रह्म साथे एक

करीने अने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनु ध्यान ए बेये करीने वासना लिंग देहनो भंग करवो. ए अति कठण छे अने ते सर्वे करतां पण जाणीने उत्तम निर्विकल्प निश्चय करीने ते महाराजनी मूर्तिमां अतिप्रेम लक्षणा भक्तिए करीने स्नेह करवो अने अक्षरना सुखमां न लेवाय अने मूर्तिने सुखे करीने गुलतान रहे एवा मुक्त थावुं सर्वेथी अति कठण छे. एवो मुक्त थयो त्यारे तेने साधन मात्रनो अंत आव्यो अने ते भक्तने भगवाननी मूर्तिनुं केवुं सुख आवे तो जेवुं भगवानने पोतानुं सुख आवे छे तेवुं ए भक्तने भगवाननी मूर्तिमांथी सुख आवे छे. ॥ ११६ ॥

निर्विकल्प निश्चय जेने होय ते विषयमां न लेवाय अने जेने सविकल्प निश्चय होय ते तो विषयनो त्याग करवा जाय तो पण विषयमां एक रस थइ जाय अने निर्विकल्प निश्चय जेने होय तेने देहने देह संबंधी पदार्थ अने देहनी सुश्रुषाने करनारो एटलाने विषे प्रीति न थाय अने अतिशे बीतो रहे अने जाग्रत स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्थामां ज्यारे देखे तो पण शत्रुभावज रहे अने ते विषयमां राग न थाय जेम एकतो रेती पलाळीने ईंटो चणी होय अने एक तो चुनामां ईंटो चणी होय तेम निर्विकल्प निश्चयने

सविकल्प निश्चयनी क्रियामां फेर छे. निर्विकल्प निश्चयवाळाने विषयमां राग न होय. ॥ ११७ ॥

आ जीवने विपरीत फळ थाय छे ते पण जाण्युं जोइए ते विपरीत फळ ते शुं ? तो विषयनो त्याग करवा आव्या ने विषय वळग्या ने संतमां हेत करवा आव्या ने कुहेत थयुं ने सर्व जीव मात्र छे ते पोत-पोतानी प्रकृतिने भजे छे ने जे मुमुक्षु छे ते पोतानी प्रकृतिनो त्याग करीने भगवाननी आज्ञामां रहे छे. ने देहना सुखमां लेवाता नथी अने जेने आ देहे करीने भगवानने राजी करवा होय तेने कोइना बरोबरीआ थावुं नहि ने कोइ संगाथे पितराइ दावो बांधवो नहि ने पोताना दोषने टाळवा ने धर्म पाळवो तेमां कोइनो वाद न लेवो ने भक्ति करवी तेमां कोइनो वाद न लेवो ने अनुवृत्तिमां रहेवुं ने गरीब थावुं ने जळ जंतु तो सर्वे कहेवाय पण माछलांने तो जळ तेज जीवन-प्राण छे. ॥ ११८ ॥

श्रीजीमहाराजे कह्युं जे जेवो हुं सत्संगे करीने वश थाउं छुं तेवो तप, दान, तीर्थ, अष्टांगयोग तेणे करीने नथी थातो एवो जे सत्संग ते तो मोटा संतना समागमथी समजाय छे ते हेतु माटे मन, कर्म, वचने करीने तेनो संग करवो. ॥ ११९ ॥

जेवो राजा होय तेवीज तेनी सभा होय, तेम जेवुं गुरुमां दैवत होय तेवुं शिष्यमां दैवत आवे छे ने पोते पोतानुं तळ तपास्युं न होय ने जो पोतानुं अपमान थाय अथवा सत्संगनुं अपमान थाय अथवा जेने भजतो होय तेज पाडवानु करे तो सत्संग न रहे माटे तळ तपासीने सत्संग करवो तो सत्संग न टळे ते उपर अमदावादना बे गरासीयानुं दृष्टांत कह्युं. ।१२०।

वाणीआने बे हजारनां लीटां ताणेला चोपडा होय तेमांथी एक बदाम आवे नहिं तेम विषयमांथी एक पैसानो माल निसरतो नथी. ॥ १२१ ॥

केटलाक मुमुक्षु छे ते तो सत्संगे करीने दिवसे दिवसे विषयनो अभाव करे छे ने केटलाक तो तेना आदर करे छे. ॥ १२२ ॥

श्रीजीमहाराज कहे जे सत्संग तो सर्वे करे छे पण सौ आधारे करीने सुखी रहे छे कोइ मान मोटाइने आधारे सुखी रहे छे ने कोइ सारा खाधाने आधारे ने कोइ सारां वस्त्रने आधारे ने कोइ चेलाने आधारे सुखी रहे छे अने जे श्रीहरिजीना दास छे तेने तो भगवाननी मूर्ति तेज आधार छे जेम दुबळा वाणीयाने अजमे हाथ होय तेम ते तो भगवान वतेज सुखी रहे छे. ॥ १२३ ॥

आपणने श्रीजीमहाराज मंदिर अधुरां रहेशे तो ठपको नहि दे ने हवेली अधुरी रहेशे तेनो नहि दे ने रुपियानो नहि दे आपणने तो जेटलो धर्म लोपाशे तेटलो ठपको देशे माटे धर्ममां खबरदार रहेवुं तो भगवान राजी थाशे. ॥ १२४ ॥

जेने विषे पोतानो स्वार्थ मान्यो होय तेमां लाख दोष होय पण तेने तेमां एके सुजे नहि ने पोतानो पण दोष सुजे नहि जुओने उपरिचरवसुने न सुज्यो तेणे करीने पडयो. ॥ १२५ ॥

मुमुक्षु होय ते तो एम जाणे जे आपणे तो आज्ञामां रहेवा आव्याछीए पण कोइने आज्ञामां राखवा नथी आव्या ने निर्लोभी निष्कामी निःस्वादी, निर्मानी ने निःस्नेही थावा आव्या छीए पण तेने वधारवा आव्या नथी. ॥ १२६ ॥

जेवो जीवने बीजो आदर छे तेवो जो भगवान भज्यानो आदर होय ने विषयने टाळवानो आदर होय तो विषयनो शो भार छे विषयनुं सुख तो लांपडाना ताप जेवुं छे माटे विषयने मार्गे चालवुं नहि ए सिद्धान्त वात छे. ॥ १२७ ॥

जीव मात्र मोटेरा वते सुखीआ ने मोटेरा वते

दुःखीआ ते मोटेराने विषे त्रण वानां जोइए धर्म, धीरज, ने ज्ञान तो शोभे. ॥ १२८ ॥

जीव मात्रने बे दुःख छे एक आधी अने बीजी व्याधी तेने जाणे ने बीजां त्रण दुःख छे एक अन्ननुं, बीजुं वस्त्रनुं ने त्रीजुं वचननुं तेने जाणीने वात करे तो सौ सुखी रहे. ॥ १२९ ॥

श्रीजीमहाराजे सर्वे संतने पुछयुं जे "तमने भूत वळगे छे के नथी वळगतुं" त्यारे कोइ न बोल्या त्यारे श्रीजीमहाराज पोते बोल्या जे अमने त्रणने न वळगे तेमां एक अमने, बीजा मुक्तानंदस्वामीने, त्रीजा गोपाळानंदस्वामीने ए शिवायना बीजाने तो क्रोधरुपी भूत वळगे छे ने मानरुपी भूत वळगे छे स्वादरुपी भूत वळगे छे कामरुपी भूत वळगे छे ने लोभरुपी भूत वळगे छे. ॥ १३० ॥

सिधु, पाणी ने इंधणां ए त्रण जो सारां होय तो रांधनारने दाखडो पडे नहि तेम संग, स्थान, ने श्रद्धा ए त्रण जो सारां होय तो मुमुक्षुने विषय जीत्यामां दाखडो न पडे दिनदिन प्रत्ये वृद्धिने पामे वेलो जेम झाडने योगे करीने वधे छे तेम अने जे पुरुष विषयनो प्रसंग राखीने पोतानुं श्रेय इच्छे ते मूर्ख छे.।१३१।

अने जे मुमुक्षु होय ते तो नित्ये पोतानां वर्तमान

तपासी जुवे ने पोताना शत्रुओने तपासे ने ते शत्रुने वश न वर्ते. ॥ १३२ ॥

श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे त्रण प्रकारना वायु वाय छे तेमां एक तो एवो वाय जे पांदडां खरे ने एक तो डाळां भांगे ने एक तो झाडने मुळमांथी उखेडी नाखे ते तो द्रष्टान्त छे तेम एक तो संकल्प थाय ने टळी जाय ने एक तो पंचवर्तमानमां फेर पडे तेनुं प्रायश्चित करीने सत्संगमां रहे ने एक तो सत्संगमांथी जातुं रहेवाय. ॥ १३३ ॥

मा बाप थकी जे देह पमाय छे ते तो अज्ञानमय छे ने गुरु थकी जे देह पमाय छे ते तो ज्ञाममय देह छे ने मोक्षनो हेतु छे ने ज्ञान, वैराग्य, धर्मने भक्तिनो पमाडनारो छे. ॥ १३४ ॥

जे त्यागी होय तेने विषयमां रुचि न राखवी रुचि तो धर्ममां राखवी ने ज्ञानमां राखवी ने तपमां राखवी ने वैराग्यमां राखवी पण पदार्थने वास्ते युक्ति कळा करवी नहि. ॥ १३५ ॥

पांच वृत्तिए करीने देहनी क्रिया करे ने एक वृति जो भगवानमां राखे तो बहु समास थाय. ।१३६।

वार्ताओ सांभळीने आवो विचार रात्री दिवस करीए छीए ने वासना नथी टळती तेनुं शुं कारण छे?

पछी तेनो उत्तर कर्यो जे विषयना अभावनो विचार करे छे ते देहमां तथा इंद्रियोमां करे छे पण ते विषयना दोषनो विचार जीवमां करवो जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह ने मान ए पांच प्रकारना दोष छे तेने पृथक पृथक्‌पणे विचारतां विचारतां देहमां दोष उतारवा पछी ते दोष इंद्रियोमां उतारवा पछी ते दोषने इंद्रियो थकी पर जे मन ते मनमां दोषने उतारवा पछी मन थकी पर जे बुद्धि ते बुद्धिमां ए दोषने उतारवा पछी बुद्धि थकीपर जे जीव ते जीवमां ए दोषना डंकने वारमवार लगाडवा ते ज्यारे जाग्रत, स्वप्न ने सुषुप्तिने विषे निरंतर ए दोष जाणपणामां रहे तेवीज रीत्ये पंचविषयना दोषने जीवमां उतारे, त्यारे जे राग रह्या छे ते धीरे धीरे टळे ने ते दोष जीवमां उतार्या विना कोटी साधने जीवमांथी ए राग टळे नहि तेवीज रीते भगवाननो निश्चय करवो ते पण श्रीजीमहाराज प्रथम आव्या त्यारे स्त्रीनो गंध आवे तो उलटी थइ जाती ने पंचविषयनो गंध न गमतो ने पछी जीवना कल्याणने अर्थे जे जे खानपान वस्त्र तथा घरेणां इत्यादिक जे जे सेवा करी तेने अंगिकार करी ने ज्यारे पाछा स्वधाम जावाना थया त्यारे पूर्वे कह्युं तेवी रीते विषयनो अभाव करीने स्वधाममां पधार्या ने वचमां

जे जे सेवा अंगिकार करी ते तो आपणा कल्याणने अर्थे करी तथा ध्यान, धारणा तथा परचा दीधा तथा अंतकाळे जन जन प्रत्ये तेडवा आवे छे तथा मंदिर कर्यां तथा यज्ञ कर्या तथा श्रीजीमहाराजे सर्व अवतारनो भाव पोताने विषे जणाव्यो एम समजीने जीवमां निश्चय करे तो निश्चय न टळे. ॥ १३७ ॥

आ बे प्रकारनुं सत्य जाणवुं.

(१) आ लोकमां पोतानुं ने पारकुं हित थाय एवुं सत्य वचन बोलवुं तेने लौकिक सत्य कहीए.

(२) आ लोक, देवलोक, ब्रह्मलोक, अनंतकोटी ब्रह्मांड, अनंत कोटी प्रधानपुरुष ए सर्वेने काळ नाश करी नाखे छे अने पछी मूळ प्रकृति पण पुरुषने विषे लीन थइ जाय छे अने पुरुष पण अक्षरने विषे लीन थइ जाय छे एवी रीते ए सर्वेने नाशवंत जाणीने ए प्रकृतिना कार्यने विषे प्रीति छे ते तोडीने भगवान सदाय अक्षरधामने विषे विराजमान छे तथा ते भगवानना धामने तथा भगवानना भक्तने सत्य जाणवा आवी रीते जाणवुं तेने अलौकिक सत्य कहेवाय।१३८।

शौच पण त्रण प्रकारनुं छे.

(१) देहे करीने पवित्र रहेवुं.

(२) अंतःकरणमां काम क्रोधादिकनो घाट न थवा देवो.

(३) ने जीवमां अव्यक्त राग छे तेने टाळवा ने ते जीवने विषे अव्यक्त राग छे ते टाळीने एक भगवान विना बीजी कोइ जातनी इच्छा न रहे त्यारे एम जाणवुं जे जीवनी शुद्धि थइ ते त्रीजा प्रकारनुं शौच कहेवाय. ॥ १३९ ॥

दया पण बे प्रकारनी छे.

(१) आ लोकमां देहे करीने सुखियो रहे एवी दया करे ते दयाए करीने तो ए जीवनुं परलोक बगडे ने एने बंधन थाय ए लौकिक दया कहेवाय.

(२) देह तथा देह संबंधी पदार्थ ने देहना संबंधी तथा आलोकथी आरंभीने प्रकृति पर्यंत क्यांय पण प्रीति न रहेवा दे ने ए सर्वेने विषेथी प्रीति तोडावीने एक भगवानने विषे प्रीति करावीने पछी भगवानना स्वरुपने विषे जोडे ते एवी दया तो भगवान तथा एकांतिक मोटा साधुने विषे होय एवी रीते दयामां पण फेर छे. ॥ १४० ॥

तप बे प्रकारनुं छे तेमां एकतो एम जे जुवान अवस्था होय तो व्रत उपवासादिके करीने देहने बळहिन करी नाखवो अने शरिरमां बळ न होय

त्यारे तो विहीत भोगनो संकोच करवो तथा शीत, उष्णादिकनुं सहन करवुं तेने पण तप कहीए अने बीजुं इंद्रियो तथा अंतःकरण तथा मन ए सर्वेने एकाग्र करीने भगवानने विषे अखंड वृत्ति राखवी तेने पण तप कहीए ते एवा तपने अति उत्कृष्ट कहेवाय.।१४१।

अहंममत्व पण बे प्रकारनो छे. देहनो ने भगवानना मंदिर संबंधी ममत्व तथा एकांतिक धर्म पाळवो ते संबंधी ममत्व करवो तेमां देहनो ममत्व भूंडुं करे एवो छे. भगवान संबंधी ममत्व छे ते तो पोतानो मोक्ष करे एवो छे. ॥ १४२ ॥

धर्म पण बे प्रकारनो छे (१) लौकिक जे वर्णाश्रमनो धर्म पाळवो ते वर्णाश्रमनो धर्म तो आ लोकमां जश विख्याति थाय तथा परलोकमां विषयने पमाडे. (२) एकांतिक धर्म ते धर्मे करीने तो भगवानना अक्षरधामने पामे छे एवी रीते धर्ममां बे प्रकारना भेद छे. ॥ १४३ ॥

भगवाननुं ध्यान करवुं तेना त्रण भेद छे.(१) बाह्य लीला चिंतवन करीने भगवाननुं ध्यान करे ते ध्याने करीने स्थुलदेहने धक्को लगाडे. (२) मननद्वारे भगवाननुं ध्यान करे ते ध्याने करीने सुक्ष्म अने स्थुळ ए बेने धक्को लगाडे. (३) इंद्रियो अंतःकरण तथा

मायिक भावे रहित केवळ सत्तारूप थइने जीवने अक्षर-रुप मानीने हृदयमां भगवानने प्रतिलोम वृत्तिये सन्मुख रहीने ध्यान करे तो पछी ए भक्तने पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिणनो भाव टळी जाय छे त्यारे कारण शरिरे सहित त्रण देहनो नाश थाय छे ए श्रेष्ठ ध्यान छे. ॥ १४४ ॥

भजनमां पण त्रण भेद छे. (१) जीव्हाए करीने भजन करे ते स्थुलने बाळे (२) कंठने विषे भजन करे ते सुक्ष्म तथा स्थुल देह ए बेने बाळे.(३) जीव्हा तथा कंठने न हलावे ने हृदयने विषे ज्यां श्वास उठे छे त्यां भजन करवुं ते भजन केवुं छे तो कारण शरिरे सहित त्रण देहनो नाश करे एवुं छे ते माटे बुद्धिवान होय ते आ वातने विचारीने जीवमां ध्यान तथा भजन करे तो तत्काळ थोडे काळे करीने कारण शरिरनो नाश थाय ने ते विना कोटी उपाय करे तो पण कारण शरिर न बळे. ॥ १४५ ॥

त्रण प्रकारनुं ब्रह्मचर्य कहीए छीए. (१) त्रणे अवस्थानी बाळ, जोबन ने वृद्ध ए त्रण प्रकारनी स्त्रीओने देखे पण मनमां राग न थाय ने स्वप्नमां पण वीर्यपात न थाय एवो जे होय तेने उत्तम ब्रह्म-चर्यवाळो पुरुष कहेवाय. (२) त्रणे अवस्थामां त्रण

प्रकारनी स्त्रीओने देखे पण राग तथा भोग बुद्धि तो क्यारेय पण न थाय पण क्यारेक रजोगुणने जोगे करीने स्वप्नने विषे युवान स्त्रीने देखे तो कोइ समे मनमां राग लगारेक थाय ने विर्यपात तो तेने त्रणे अवस्थामां न थाय एवो जे होय तेने मध्यम ब्रह्मचर्यवाळो पुरुष कहीए. (३) जाग्रतमां तो ए त्रणे प्रकारनी स्त्रीयुंने देखे पण राग न थाय पण स्वप्नने विषे ए त्रणे प्रकारनी स्त्रीयुंने देखीने राग थाय ने कोइक समे विर्यपात पण थाय. ने तेनुं तत्काळ प्रायश्चित करे तेने कनिष्ट ब्रह्मचर्यवाळो कहेवाय. एवी रीते आ वातने विचारीने पोताने उतम ब्रह्मचर्यमां कांइक कसर होय तो धीरे धीरे आग्रहे करीने उत्तम ब्रह्मचर्यव्रत अति दृढ करवुं. तोज पुरुषोतम भगवाननी सेवामां रहेवाय ने तेमां कांइक कसर होय तो सेवामां न रहेवाय ने उत्तम ब्रह्मचर्य आववुं ते हठयोग विना अति कठण छे तो पण आ कहीए छीए एवो उपाय अति दृढ करीने पाळे तो धीरे धीरे उत्तम ब्रह्मचर्य दृढ थाय तेनुं साधन आ प्रमाणे करवुं. (१) मनमां अखंड भगवाननी स्मृति राखवी ने मनमां स्त्रीनो संकल्प न थावा देवो ने जो स्त्रीनो मनमां संकल्प न थाय तो वीर्य पाणी थइने परसेवा द्वारे नीकळी जाय ने

धर्मामृतमां जे नियम कह्या छे ते दृढ पाळवा. (२) भगवाननो महिमा अति दृढ जाणवो. (३) आत्मनिष्ठा अति परिपक्व करवी. (४) इंद्रियो अंतःकरणने जीतीने पोताने वश करीने ते थकी अति विरक्त वर्तवुं, जेम पट्टानो रमनारो कोइना लागमां नथी आवतो तेम ते पण इंद्रियो अंतःकरणना पेचमां न आवे, आवी रीतनी योगनीतिने शीखे. (५) दिवसे सुवुं नहि, अने अर्धी रात गया पछी सुवुं, ते पण हरणनी पेठे फडको राखीने एक निंद्रा आवे ने पछी ज्यारे जगाय त्यार पछी फरीने सुवुं नहि. (६) बेसवुं त्यारे आसन वाळीने बेसवुं तथा एक ठेकाणे बेसवुं. (७) प्रयोजन विना ज्यां त्यां फरवुं नहि. (८) रसना इंद्रियने जीतवी तेनी विक्ति जे आहार करवो ते पण खावुं त्यारे त्रीजो भाग पाणीनो भाग राखवो ते पण एक वखत खावुं ते काचुं कोरुं कांइ खावुं नहि तथा मरचुं, अति मीठुं, आदु, खटाश तथा झाझो आहार. निंद्रा तथा गळ्युं. चीकणुं तथा रुप जोवुं तथा शब्द तथा गंध तथा स्पर्श तथा रस ए सर्वे कामनी उत्पतिना कारण छे ते माटे आ जे उपाय कह्या तेने दृढ करीने राखे ने एवी रीते दृढ नियमो पाळीने पछी मनने वश करवुं ने मन ने वश करीने अंतःकरणने वश करवुं पछी ए सर्वेनुं निषेध

करीने केवळ सत्तारुप थइने जीवात्माने विषे भगवाननी मूर्तिने धारे तो उत्तम ब्रह्मचर्य सिद्ध थाय. ने ज्यारे उतम ब्रह्मचर्य सिद्ध थाय त्यारे भगवाननी सेवामां रहेवाय ने तेमां कांइ काचप होय तो पुरुषोत्तमनी सेवामां न रहेवाय ते माटे जे मुमुक्षु होय तेणे आ वातने विचारीने पोताने विषे काचप होय ते टाळीने उत्तम ब्रह्मचर्यव्रत सिद्ध करवुं. ॥ १४६ ॥

वळी अक्षरधामनो मुक्त होय ने जो ते देह धारीने अही आव्यो होय ने जो ते शहेरने सेवे तथा रजोगुणी मनुष्यनी भाइबंधाई करीने तेनो संग करे तथा सारा सारा रस जमे तो एणे करीने ए विषयने विषे ए मुक्तने पण आसक्ति थाय ते मुक्या पण न मुकाय ने ते जो अति विचार करीने तेनो निषेध करीने मुके तो मांड मांड मुकाय पण बीजो मुक्त तो ते विषयने भोगवीने ते विषयने मुकवाने समर्थ न थाय तो बीजा जीवनी वातज शी कहेवी. ॥१४७॥

सत्ययुग तथा त्रेतायुग तथा द्वापरयुगने विषे भगवान पोताना भक्तनी रक्षाने अर्थे सुदर्शन चक्रने मोकलता अने ते चक्रे करीने भक्तनी रक्षा करता अने कळीयुगने विषे ते चक्र मुकीने केम भक्तनी रक्षा करता नथी ? शुं कलियुगना भक्त भगवानने व्हाला नथी? अने

हळाहळ कलिने विषे भगवाननुं भजन करे तेनी तो भगवानने विशेष रक्षा करवी जोइए माटे कलिने विषे भक्तनी रक्षाने अर्थे सुदर्शन चक्रने केम मोकलता नथी शुं कलियुगमां भगवाननी विषम दृष्टि थइ जे बीजा युगमां भक्तनी रक्षा करी ने कलियुगमां भक्तनी रक्षा नथी करता? उतर कर्यो जे भगवानना स्वरुपनुं ज्ञान तेज सुदर्शन चक्र छे ने ते चक्रने विषे दश हजार सूर्यनो प्रकाश छे एम शास्त्रमां कह्युं छे तो जुवोने ज्ञानने विषे पण एटलो प्रकाश छे केम जे जीवना हृदयमां अज्ञानरुपी अंधारुं छे ते चंद्रमा तथा सूर्य तथा प्रलयकाळनुं महातेज ते कोइ जीवना हृदयमां अज्ञानरुपी अंधाराने टाळवा समर्थ नथी ते अंधाराने ज्ञान टाळी नाखे छे ते जुओ दश हजार सूर्य करतां पण अधीक प्रकाश छे अने सुदर्शन चक्र सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुगने विषे भगवानना भक्तनी रक्षा करतुं ने आज कलियुगने विषे तेनुं तेज रक्षा करे छे त्यारे कहेशो जे कइ रीते रक्षा करे छे ते कहीए छीए ज्यारे प्रभुनो भक्त होय तेना हृदयमां काम, क्रोधादिक भुंडा घाट बंधाय छे त्यारे ते भक्तने एवो विचार थाय जे मने भगवान मळया ते हुं एवो लाभ मुकीने भगवानना वचनने लोपीने कुमार्गे केम चालुं एवो भग-

वानना निश्चय युक्त विचार थाय छे. त्यारे भूंडा घाट टळी जाय छे माटे भक्तजनना शत्रु तथा राक्षस तो काम क्रोधादिक छे ते थकी रक्षा पण ज्ञानरुपी सुदर्शन चक्र ते करे छे माटे कलियुगने विषे जो भगवान सुदर्शन चक्र मोकलीने अंबरीष राजानी पेठे रक्षा न करता होय तो एथी सत्संगना वर्तमान पण पळे नहि ने प्रभुनुं भजन पण थाय नहि केम जे काम क्रोधादिक तो एवा बळिआ छे ते शिव ब्रह्मादिकनी लाज लीधी छे तो जीवनो शो भार ? माटे भगवान पोताना भक्तनी ज्ञानरुपी सुदर्शन चक्रे करीने सर्वे काळने विषे रक्षा करता आवे छे ने आज पण ज्ञानरुपी सुदर्शन चक्रे करीने पोताना भक्तनी रक्षा करे छे माटे भगवाननना स्वरुपनो निश्चय तेज सुदर्शन चक्र छे. ॥१४८॥

एक शुकल ब्राह्मण सत्संगी हतो तेणे श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे "देहमांथी जीव ज्यारे बहार नीसरे छे तेनुं रुप केवुं हशे ? ने ए जीव क्यां जातो हशे ?" त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जीवनुं रुपतो सूक्ष्म छे ते चर्म दृष्टिये करीने देखाय एवुं नथी जेम दिपक अस्त पामे छे तेनो जे प्रकाश ते आकाशमां लीन थइ जाय छे अने अंधारानी घाटप होय ते प्रकाशने लीन करी नाखे छे जेम प्रयागराजनी गुफा

छे तेमां प्रयाग वडनुं झाड छे ते जे गया हशे तेणे देख्युं हशे ते प्रयाग वडना भोंयरामां अतिशय अंधारुं छे तेमां दिपक लइ जाय त्यारे थोडाकमां अजवाळुं थाय पण बधाय भोंयरामां एक दिपकथी अजवाळुं थाय नहि केम के अंधारानी घाटप छे ते प्रकाशने खाइ जाय छे वळी बीजुं द्रष्टांत जे जेम आकाशमां मोटां पक्षी उडे छे ते प्रथमतो भमरा जेवडां जणाय छे पछी देखातां नथी त्यारे ए पक्षी कांइ मरी गयां नथी के टळी गयां नथी ए तो आकाशना अंधारामां लीन थइ रह्यां छे ते जेने अज्ञानरुपी अंधारुं टळ्युं होय ते देखे छे ते अलौकिक द्दष्टि छे ते चर्म द्दष्टिथी नोखी छे जेम आपणे संतनी सभामां बेठा छीए तेमां-थी कोइकने निंद्रा आवी जाय ने स्वप्न आवे त्यारे ते एम देखे जे फोज आवे छे ते जेने स्वप्न आव्युं छे ते फोज देखे छे ते आ फळीयामां कंइ फोज आवी नथी पण स्वप्नवाळानी द्दष्टिमां देखाय छे तेम आत्मा जे जीव अथवा ब्रह्म तेने देखवानी पण द्दष्टि नोखी छे ते द्दष्टि भगवाननी मूर्तिने ध्याने करीने आवे छे ते विना कोटी साधन करे तेणे करीने पोताना जीवने देखवो अथवा ब्रह्मने देखवुं ते द्दष्टि आवती नथी माटे जे ए द्दष्टिने पाम्या होय ते हमणां कोइ वात

करे ते कांइ मान्यामां आवे नहि हमणां हुं कहुं जे ब्रह्म सर्वत्र छे ने पिंड ब्रह्मांड कांइ नथी त्यारे कहेशो जे अमारी आगळ वात करो छो त्यारे अमने देखताज हशो तो ? एवी शंका मनमां आवे पण ब्रह्मने देखवानी दृष्टि ते पण नोखी छे ने पृथक देखवानी दृष्टि पण नोखी छे एवी रीते ज्ञानीनां तो शास्त्रमां अनंत लोचन कह्यां छे माटे ए मर्मने अज्ञानी जीव जाणता नथी ने भगवाननी मूर्तिनुं जे अखंड ध्यान करे छे ते सर्वने देखे छे ने अलौकिक दृष्टि पामे छे. ॥ १४९ ॥

ते ध्यान कर्यानी रीत कहीए छीए जे भगवाननो भक्त होय ते दृष्टि आगळ मूर्ति धारे त्यारे प्रथम तो जेवी भगवाननी मूर्ति छे तेवीज देखाय छे ते जोते जोते ज्यारे मूर्तिने विषे वृत्ति ठेराय छे ते जेम सूर्यनी किरण जाळीए थईने घरमां पडे छे ने सूर्यनी किरण तेने सूर्यनी एकता देखाय छे तेम जे भक्तने अखंड भगवाननी मूर्तिमां वृत्ति बंधाय छे त्यारे एने मूर्ति अग्नि सरखी रक्त भासवा लागे पछी रातामांथी प्रकाश घणो प्रगटीने सूर्य जेवी मूर्ति भासे पछी चंद्रमा जेवुं शितळ ने मोटो तारो खरे तेना जेवुं उज्वळ तेज ते सरखी अत्यंत उजळी प्रकाशवान मूर्ति भासे पछी

एवी मूर्ति ज्यारे हृदयमां पाछी फरे छे त्यारे आंखो चक्रनी पेठे फरफर फरीने अंतर्दृष्टि थइ जाय छे त्यारे ए भक्तना हृदयमां मूर्ति देखाय छे पछी ते मूर्तिने जोतां जोतां तेना हृदयमां रुसनाइ जेवो अवकाश देखाय छे त्यारे पचाश करोड योजन पृथ्वीने लाख योजननो मेरु ने ते मेरुनी उपर ब्रह्मा, विष्णु, ने शिव तेनां धाम तथा साडाबार करोड योजन उंचो जे लोकालोक पर्वत ने माहेली कोर जे सात समुद्र तथा इंद्र, यम, वरुण, कुबेर तेनी पुरीयो ते सर्वे तथा पृथ्वी उपर स्थावर जंगम सर्वेने देखे छे जेम बहार सर्व पदार्थ त्याग करीने एक भगवाननी मूर्तिने विषे वृत्ति जोडी हती तेम ए समग्र खोटुं करीने एक भगवाननी मूर्तिनेज देखे छे ते भगवाननी मूर्ति केवी छे तो जेम कोइना हाथमां चिंतामणी होय ते ज्यारे जे मनोरथ धारे ते सर्वे साचुं थाय तेम भगवाननी मूर्ति साथे जेनी अखंड वृत्ति जोडाणी छे ते तो गोलोक, वैकुंठ तथा श्वेतद्विप तथा अक्षरधाम तथा अनंतकोटी मुक्त ते सर्वेने देखे छे ने एवो भगवाननो भक्त होय ते ज्यारे धारणा करे छे त्यारे पचाश कोटी योजन जे पृथ्वी, तेथी दशगणो आकाश तेथी दशगणो अहंकार तेथी दशगणुं महत्व तेथी अनंतगणी

प्रकृति तेथी अनंतगणो पुरुष ने ते प्रकृति पुरुषथी अनंतगणुं भगवाननुं धाम ते भगवानना धाममां आंखना मटकाना लाखना भागमां जइने आवे छे तेने एम जणाय छे जे ए धाममां हजार वर्ष रही आव्यो अथवा लाख वर्ष रही आव्यो अथवा ब्रह्माना कल्प पर्यंत रही आव्यो तेवुं जणाय छे ने ते अहि तो मटकानो लाखमो भाग थयो होय एवी अलौकिक वात छे ते भगवानना ध्यानवाळा जाणे छे एवी जातनी धारणा थाय छे तेनुं कारण ते भगवाननी मूर्तिमां अखंड वृत्ति राखवी ते छे माटे जेने भगवानमां अखंड वृत्ति रहेती होय अने ते संसारमां रहेतो होय तेने पण अलौकिक दृष्टि थाय छे अने भगवाननी मूर्तिने विषे जेनी वृत्ति न चोंटती होय ने ते ब्रह्मचर्य व्रत पाळतो होय ने देहने सुकवीने काष्ट जेवो करे तोय पण तेने अलौकिक दृष्टि आवती नथी अने जेनी भगवानना स्वरुपमां अखंड वृत्ति रहेती होय ने ते जो भगवानना भक्तनुं माहात्म्य जाणतो होय तो तेनी अलौकिक दृष्टि थाय छे ने तेने आत्मानुं दर्शन थाय छे माटे भगवाननुं ध्यान करतां जे जे अंतराय करे तेने शत्रुनी पेठे त्याग करवो अने कोइक अधर्मने मार्गे चालतो होय तो तेनो पण त्याग करवो

पण भगवानना ध्यानमां अंतराय पडवा देवो नहि. ॥ १५० ॥

" पुरुषोत्तम निरुपण "

श्रीजीमहाराजे वात करी जे अक्षरातित एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते अनंत अक्षर मुक्ते सेव्या थका पोताना अक्षरधामने विषे विराजमान छे तेमणे सृष्टि समे अक्षर सामुं जोयुं त्यारे अक्षरमांथी पुरुष निसर्यो ते पुरुष द्वारे माया सामु जोयुं तेमांथी अनंत प्रधान पुरुषादिक थया ने ते पुरुष अनेक रुपे करीने तेमां प्रवेश करे छे ने अनंतरुपे करीने ते सर्वनी रक्षा करे छे ने अनंत पार्षद शक्तिओने ऐश्वर्य तेणे सेव्यो थको पोताना धामने विषे रहे छे ने बीजे स्वरुपे पुरुषोत्तमनी सेवामां पण रहे छे ए प्रकारे एमने विषे अनेक कळाओ रही छे तनो मोटामोटा कवि पार पामता नथी ने आधुनिक समजणवाळानी तो तेटला सुधीज गति छे ने एवा जे अनंत मूळ पुरुष ते थकी पर जे अक्षर पुरुष तेमने ए साक्षात पुरुषोतमनी उपासना छे के तमारे छे पण बीजाने नथी एवी रीते सर्वोपरि प्रकट पुरुषोतमनी उपासना समजवी ए ज्ञानवान् एवाजे एकांतिक भक्त तेमनी समजण छे. ॥ १५१ ॥

श्रीजीमहाराजे वार्ता करी जे समग्र पृथ्वी जेवडी झालर होय ने मेरु पर्वत जेवडो डंको होय ने वैराज पुरुष जेवा अनंत वगाडनारा होय ने तेनो जेवो शब्द थाय तेवो अक्षरातित प्रकट पुरुषोतम श्री स्वामिनारायण तेमना जमणा चरणना अंगुठामांथी प्रणव निसरे छे तेनो घोष थाय छे. तेना जे परछंदा ते अक्षरादिक अनेक धाममां व्यापे छे ते जो ब्रह्मांडमां आवे तो अनंत ब्रह्मांडने फोडी नाखे एवो जे प्रणवनो शब्द ते पुरुषोतमना अंगुठामां पाछो लीन थइ जाय छे ने वळी उदयने पामे छे. एवा जे प्रकट पुरुषोतम 'श्री स्वामिनारायण'ते समग्र बीजा धामोमां रही जे मूर्तिओ तथा सर्वे अवतार तेना कारण छे ने अनंत अक्षरपुरुषना स्वामी छे ने अपरिमित सर्वोपरि निरंकुश ऐश्वर्यादिके करीने संपूर्ण छे. एवा जे प्रकट पुरुषोतम तेमनी जेम तमारे उपासना थइ छे तेम जेने उपासना थाय तेज पुरुषोतमने पामे ने बीजो पुरुष तो कोटी साधन करे तो पण न पामे एवी जे रहस्यवार्ता छे ते ज्ञानवान् एवा जे एकांतिक संत तेने प्रसंगे करीने समजाय छे. ने अक्षरादिक सर्वथकी पर ने अद्वितीय मूर्ति एवाजे प्रकट पुरुषोतम 'श्रीस्वामिनारायण' तेमने ए रीते सर्वोपरि जाणवा ए सर्व सत्पुरुष ने सर्व

सत्शास्त्र तेमनो परम रहस्य अभिप्राय छे. ने पुरुषोतमने विषे ने बीजा विभूति अवतारने विषे केम भेद छे तो जेम तीर ने तीरना नाखनारामां भेद छे ने जेम चक्रवर्ति राजा ने खंडीआ राजामां भेद छे ने जेम सुर्य ने सुर्यना मंडळमां भेद छे तेम पुरुषोतममां ने ए कह्या ते सर्वेमां भेद छे. ॥ १५२॥

श्रीजीमहाराजे समाधिवाळा मुळजी भक्तने कह्युं जे पुरुषोतमना बीजा अवतार थया ने थाशे ने बीजा धामोमां जे सर्वे मूर्तिओ ते समग्ररुपने तमे जुवो त्यारे तेमणे कह्युं जे केम करीने जोवुं त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे "बीजा सर्वे अवतार तेमनुं नाम लइने एम संकल्प करो जे ए सर्वेना कारण होय तो तेना प्रतापे करीने मने सर्वे रुपनां दर्शन थाओ" त्यारे ते भक्ते सर्वे बीजा अवतारनां नाम लइने संकल्प कर्यो पण दर्शन थयुं नहि त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे " ते सर्वेना कारण प्रकट पुरुषोतम श्रीजीमहाराज होय तो मने सर्वेनुं दर्शन थाओ एम संकल्प करो" त्यारे ते भक्ते एम संकल्प कर्यो के तत्काळ सर्वे रुपनां दर्शन थयां. एवी रीते पोतानो सर्वोपरि प्रताप देखाडीने पुरुषोतमपणानो दृढ निश्चय कराव्यो. ॥ १५३ ॥

अमदावादमां श्रीनरनारायणदेवनी प्रतिष्ठा ज्यारे करी ते समे श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे आ भरत खंडना राजा श्रीनरनारायण छे तेमनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा आपणे करी अने जे साक्षात मूर्तिमान श्रीनरनारायण बद्रिकाश्रम वाशी छे तथा श्रीलक्ष्मीनारायण आदिक सर्वे छे ते प्रकट पुरुषोतम द्विभुज मूर्ति एवा जे आ भगवान तेमनी उपासना करे छे. एम श्रीजीमहाराजे मर्मे करीने पोताना पुरुषोतमपणानी वार्ता करी तेने जे एकांतिक ज्ञानवान भक्त होय ते समजे छे. ॥१५४॥

दिव गामनो एक वाणियो संघ काढीने द्वारिकांनी यात्रा करवा जातो हतो तेने लोजमां श्रीरामनंदस्वामी मळ्या तेमणे कांइक चमत्कार देखाड्यो तेणे करीने भगवानपणानो निश्चय थयो पछी घणेक दिवसे श्रीजीमहाराजने दर्शने ते वाणियो आव्यो तेने श्रीजीमहाराजे कह्युं जे तमारे कांई संशय होय तो आ नाना बाळक समाधि वाळा छे तेने प्रश्न पुछो त्यारे तेणे जे जे प्रश्नो पुछ्या तेना उतर ते बाळके कर्या तेमां ते द्वाराए रामानंदस्वामीना जेवो श्रीजीमहाराजे चमत्कार जणाव्यो त्यारे ए भक्ते श्रीजीमहाराज प्रत्ये कह्युं जे "हे महाराज प्रथम हुं रामानंदस्वामीने भगवान जाणतो पण ते रामानंदस्वामीना जेवो मने आ

बाळकने विषे तमारे प्रतापे करीने चमत्कार जणायो त्यारे तमारा मोटा मोटा जे साधु ने सत्संगी तेनो प्रताप तो घणो हशे ने तमारी मूर्तिनो जे प्रताप ने महिमा तेतो बहुज अधिक हशे? एम हुं जाणुं छुं. माटे तमारा स्वरुपनुं जेम छे तेम यथार्थ मूने ज्ञान थाय तेम कृपा करीने कहो." त्यारे श्रीजीमहाराजे ते प्रत्ये कह्युं जे अंतरनी वार्ता जाणवे करीने भगवानपणानो निश्चय थाय तो अमारा मोटा मोटा साधु तथा सत्संगी ते अनंत जीवना देहमां प्रवेश करीने तेना अंतरनी वार्ता जाणे एवा छे माटे पूर्वे थया जे अवतार तेना जेवुं ऐश्वर्य तो अमारा मोटा मोटा साधु तथा सत्संगीमां जणाय छे. अने अमे तो सर्वे अवतारना अवतारी सर्वोपरि प्रकट पुरुषोतम नारायण छइए ते वार्ता सांभळीने ते भक्तने श्रीजीमहाराजना पुरुषोतमपणानो दृढ निश्चय थयो पछी ते भक्ते श्रीजीमहाराजना पुरुषोतमपणानी वार्ता करी ते सांभळीने बीजा रामानंदस्वामीना निश्चयवाळा जे जुना हरिभक्त हता तेमना मान्यामां न आवी त्यारे श्रीजीमहाराज पासे सर्वे मळीने आव्या त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे ध्यानमां बेसो ने जेम छे तेम ए वात तमने जणाशे त्यारे ते ध्यानमां बेठा तेमने श्रीजीमहाराजे समाधि

करावीने अक्षरधामने विषे अनंत पार्षदेयुक्त पोतानी दिव्य मूर्तिनुं दर्शन कराव्युं ने रामानंदस्वामी तथा सर्वे अवतार ते श्रीजीमहाराजनी सेवाने विषे दीठा ने सर्वे स्तुति करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे लीन थया एम दीठुं पछी ते भक्तोने श्रीजीमहाराजना पुरुषोतमपणानो दृढ निश्चय थयो पछी ते सर्वे भक्तोए समाधिमांथी निसरीने कह्युं जे "हे महाराज! तमे सर्वोपरि पुरुषोतम छो. माटे तमारा पुरुषोतमपणाना निश्चयमां संशय न थाय एवी कृपा करो" पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे आ पुरुषोतम तो आ ब्रह्मांडने विषे क्यारेय आव्या नथी ने आवशे पण नहिं माटे आ तो सर्वोपरि मूर्ति छे माटे आ जे निश्चय ते फरवा देवो नहि. ॥ १५५ ॥

श्रीजीमहाराजे नागडकाने विषे परमहंस आगळ वार्ता करी जे पूर्वे रामकृष्णादिक अवतार थइ गया ने आगळ बीजा थाशे तथा बीजा धामोने विषे जे मूर्तियो छे ते सर्वेना कारण ने सर्वेथकी पर आ प्रकट पुरुषोतम नारायण अमे छीए तेमां जो खोटुं कहेता होइए तो सर्वे परमहंसना सम छे. एवुं जे प्रकट पुरुषोतमना स्वरूपनुं ज्ञान तेमां जो खामी रही जाशे तो कोइ रीते वांधो नहिं भागे. अने जेम वैकुंठवासीने रहेवानुं वैकुंठ

धाम छे ने गोलोकवाशीने रहेवानुं गोलोक धाम छे तेम अमारे रहेवानुं अक्षरधाम छे ते अक्षरातित प्रकट पुरुषोतमनो जेने निश्चय थयो छे ने सर्वेना कारण जे अक्षरब्रह्म ते रुप पोताना आत्माने नथी मानतो तेने तो प्रकट पुरुषोतमनो यथार्थ निश्चय नथी ने जेने महिमाये सहित प्रकट पुरुषोतमनो यथार्थ निश्चय थयो छे ते तो मुळ पुरुषथी पर अक्षररुप पोताना आत्माने मानीने अक्षर जेवा अनंत कोटी मुक्ते सेव्या जे अक्षरातित प्रकट पुरुषोतम तेमनी उपासना भक्ति करतो थको पोताने पूर्णकाम माने छे ते आ वार्ता यथार्थ एकांतिक भगवानना भक्त होय तेने प्रसंगे करीने समजाय छे पण पोतानी बुद्धिबळे करीने तथा शास्त्रे करीने पण पोतानी मेळे समजाती नथी. ॥१५६॥

वळी महापुरुषथी पर जे अक्षरब्रह्म ते केवा छे ते कहीए छीए जे महापुरुषना रुवाडाना छिद्रने विषे एक एक थकी दश दश गणां अधिक जे अष्ट आवरण तेणे विंटाणां एवां अनेक कोटी विराटरुप जे ब्रह्मांड ते उडया करे छे अने ते अनेक कोटी ब्रह्मांडना कारण एवा जे अनेक कोटी महापुरुष ते अक्षरना रुंवाडाना छिद्रने विषे रह्युं जे तेज ते तेजने विषे अक्षरनी सामर्थीए करीने अनंत कोटी उपजे छे ने

अनंतकोटी लीन थाय छे. एवुं सनातन अखंड, निर्गुण सच्चिदानंद, परमपद, अनंत जे अक्षरब्रह्म तेने विषे काळ, मायाने, पुरुष ते लीन थाय छे एवुं हरिकृष्ण पुरुषोतमने रहेवानुं धाम छे. ने तेने विषे असंख्य ब्रह्मरुप मुक्त छे. ते जेते अति हेते करीने ए पुरुषोतम नारायणना चरणारविंदनी उपासना करे छे ते हरिकृष्ण पुरुषोतमनुं स्वरुप द्रष्टांते करीने कहीए छीए जे समग्र पृथ्वी छे तेने मध्ये पर्वत, वृक्ष, मनुष्य सर्वे स्थावर जंगमे सहित बिलोरी काचनी भूमि होय ने ते उपर आकाशने विषे रह्या जे तारा तेटला सुर्य एक काळे तपे एवी रीतनी शोभाये युक्त जे प्रकाश ते जेते अक्षरधामना जे मुक्त तेना एक रोमना प्रकाशमां ए समग्र प्रकाश लीन थइ जाय ने एवा अनंत मुक्त तेना सर्व प्रकाशने लीन करी नाखे एवो प्रकाश अक्षरब्रह्मना एक एक रोमने विषे छे ने एवा जे अक्षरब्रह्म ते अनंत अक्षरब्रह्मना प्रकाशने लीन करी नाखे एवो प्रकाश अनादि सनातन दिव्य मूर्ति हरिकृष्ण पुरुषोतम तेना एक एक रोममां छे एवा जे साक्षात हरिकृष्ण पुरुषोतम तेनो महिमाए सहि दृढ आशरो करवो जेम बपैयाने स्वांतना जळनो आश्रय छे ने चकोरने चंद्रमानो छे तेवो आश्रय करवो ए अवश्य करवानुं छे. ॥ १५७ ॥

अनंत दिव्य चक्षुए करीने ने अनंत प्रकारनी ज्ञान गोष्टिए करीने प्रत्यक्ष हरिकृष्ण पुरुषोतमनो महिमा नित्य प्रत्ये नवो नवो अनुभवीने सर्ववासना छेदीने एक पुरुषोतममां लोभावुं ए ज्ञानीनुं लक्षण छे. ॥ १५८ ॥

अक्षर व्यतिरेकपणे करीने तो हरिकृष्ण पुरुषोततम अने ब्रह्मस्वरुप थयेला पुरुषोतमना अनंत कोटी मुक्तोने धरी रह्या छे अने अन्वयपणे करीने तो जगतनी उत्पत्ति अने स्थितिना कारण एवा जे इश्वरकोटि तेने तथा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अने उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय ए बेयने विषे जीव, इश्वरना देहने तथा सुषुप्तिना साक्षीपणे करीने तो अनंत कोटि ब्रह्मांडाभिमानी इश्वरने अने अनेक कोटी पिंडाभिमानी जीवने धरि रह्या छे. ने पोते तो प्रत्यक्ष हरिकृष्ण पुरुषोतमनी उपासनाने विषे तत्पर छे. ॥ १५९ ॥

अनंत एवुं जे अक्षरधाम अने अनंत कोटी अक्षर रुप मुक्त ने अक्षरधामनी अनंत दिव्य समृद्धि ने अनंत बिभूतियुं ने अनंत माया सबलित ब्रह्म ए सर्वे पुरुषोतमनुं शरिर छे एवा जे प्रकट हरिकृष्ण पुरुषोतम जे श्रीसहजानंदस्वामी तेमणे पोतानुं पुरुषोतमपणुं कह्युं के जेवो हुं प्रकट मूर्तिमान छुं तेवो अक्षरादिक सर्वने

विषे अखंड रह्यो छुं ने आ सभाने विषे पण प्रत्यक्ष छुं एम हुं अखंड देखुं छुं ने अक्षरधामना मुक्त अने सत्संगमां जे योग समाधिवाळा मोटा संत ते पण देखे छे एवी रीते पोताना एकांतिक मोटा साधु बेठा हता त्यां श्रीजीमहाराजे वार्ता करी. ॥ १६० ॥

भुजनो एक जमादार सत्संगी समाधिवाळो हतो तेनी वात महाराजे करी जे आ जमादार छे ते सर्वे पेगंबर अमारी स्तुति करे छे एवा अमने अक्षरधामने विषे अखंड देखे छे अने ज्यां ज्यां प्रकट पुरुषोतम-पणानी वात आवे छे त्यां त्यां सर्वेनी बुद्धि भ्रमी जाय छे पण सर्व ठेकाणे प्रत्यक्ष हरिकृष्ण पुरुषोतमने लइने बीजाने पुरुषोतम कह्या छे. ॥ १६१ ॥

श्रीजीमहाराजे वडतालमां सात दिवस सुधीप्रकट पुरुषोतमपणानी वात करीने पछी कह्युं जे मारी वातनुं रहस्य तो आ साधु " नित्यानंद स्वामी " समजे छे पछी सर्व संतोए कह्युं जे ए केम समजे छे. त्यारे श्रीजीमहाराजे ए सर्वेने आ प्रश्न पुछयुं पछी ए सर्वेए उतर कर्यो त्यारे ए साधुए कह्युं जे तमे पुरुषो-तम कह्या तेतो महापुरुष छे ने पुरुषोतम तो अक्षर थकी पर प्रत्यक्ष प्रमाण आ श्रीजीमहाराज छे. ।१६२।

सत्संगीजीवनमां उपासनानो प्रसंग निसर्यो

त्यारे आठ दिवस सुधी वादविवाद थयो पछी कोइके कह्युं जे बीजा अवतार जेवा महाराजने कह्यो त्यारे ए साधुए कह्युं जे बीजा अवतार जेवा महाराजने केम कहेवाय ने बीजा अवतारे पोताने विषे क्यारे चोविश अवतार ने लीन कर्या छे? अने महाराजे तो पोताने विषे चोविसे अवतार तथा भूमापुरुषादिक अनंत अनंतने लीन करी देखाडया छे. तथा ए सर्वेने पोतानी पुजा करतां देखाडया तथा पोताना भक्तद्वारे एवां घणांय ऐश्वर्य जणाव्यां ए आदि अनंत आश्चर्य कारी चमत्कार देखाडयो एवा जे अक्षरातित श्री सहजानंदजी महाराज तेता रामकृष्णादिक सर्व अवतारना अवतारी छे तेमने बीजा अवतार जेवा केम कहेवाय ? अने ते अनंत जे महा अद्‌भूत अद्‌भुत श्रीजीमहाराजनां ऐश्वर्य ते खोटां पडे ? पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे ए ठीक कहे छे. ने ठीक समजे छे ने जे उपासक होय ते तो आवा होय ने तमे सर्वे अमारा भेळा फरी गया पण अमे तो केम कहेता हशुं ने केम जाणता हशुं एम कहीने ए साधुने हार आप्यो ने पछी श्रीजी महाराज बोल्या जे एणे आ वात मारी मानी नहि तो बीजानी तो मानेज केम? ॥ १६३ ॥

एक साधुने श्रीजीमहाराजना स्वरुपनो सर्वो-

परि निश्चय नहोतो थातो पछी तेने समाधिमां अक्षर धामने विषे अनंत अनंत महा आश्चर्य अने मुक्ते सहित महाराजे दर्शन दीधां तो पण पुरुषोतमपणानो निश्चय थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराजे ए साधुने कह्यु जे "आ अनंत मुक्तो" नी पुजा एक काळावच्छिन्न करो ने पछी तमारे विषे लीन करो त्यारे ए साधुए कह्यु जे एम केम थाय महाराज ? त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे चोविस अवतारनां नोखां नोखां नाम लइने संकल्प करो जे "ए पुरुषोतम होय तो तेनी सामर्थिए करीने एटला रुपे हुं थाउं." पछी ए सर्वेनां नाम लइने कह्यु पण अनंत रुपे न थवाणुं पछी श्रीजीमहाराजे कह्यु जे अमारुं श्रीसहजानंद नाम लइने संकल्प करो जे "श्री सहजानंद सर्व अवतारना अवतारी सर्वोत्कृष्ट पुरुषोतम होय तो हुं अनंत रुपे थाउं" पछी श्रीजी महाराजनुं नाम लीधुं त्यारे अनंतरुपे थवाणुं पछी सर्वे मुक्तोनी एक कालावच्छिन्न पुजा करी ने सर्वेने पोताने विषे एक कालावच्छिन्न लीन कर्या. पछी समाधिमांथी आव्या त्यारे वात विस्तारीने करी जे श्री सहजानंदस्वामी सर्वे अवतारना अवतारी सर्वो-तम पुरुषोतम छे. ॥ १६४ ॥

महामायाने विषे अनंत कोटी प्रधानपुरुष ने

अनंत कोटी वैराजपुरुष लीन थाय छे अने पाछा उत्पन्न थाय छे. अने कैवल्यार्थी जे अनंत मुक्त ते जेम अक्षरमां लीन थाय छे ने पाछा उपजे छे. अने जेम ऐश्वर्यार्थी अनेक महापुरुषादिकमां लीन थाय छे अने पाछा उत्पन्न थाय छे. तेम अनेक कोटी सामान्य हेत माहात्म्ये युक्त जे मुक्त ते तो अक्षरना सुखने भोगवे छे. तथा भगवानना सुखने पण भोगवे छे. ने अनंत कोटी चित्र विचित्र महा आश्चर्यरूप ने अत्यंत स्नेह माहात्म्ये युक्त जे एकांतिक मुक्त ते तो ब्रह्मरुप थका प्रत्यक्ष श्री सहजानंद पुरुषोतम तेनी उपासना करे छे. अने राजा अने राजाना चाकरमां भेद छे अने सूर्य अने पतंगीआमां भेद छे ने जेम चंद्रमा ने तारामां भेद छे. तेम प्रत्यक्ष हरिकृष्ण पुरुषोतमने लइने ए अक्षरादिकने भगवान, पुरुषोतम, कारण, अवतारी कह्या होय ते तो आ द्रष्टांत दीधां तेम जाणवुं. अने सर्व अवतारना अवतारी ने सर्व कारणना कारण प्रकट हरिकृष्ण पुरुषोतम छे एम सर्वे मोटा संतनो अने श्रीजीमहाराजनो सिद्धान्त छे. ॥ १६५ ॥

दलुजीए संतदासजीने पुछयुं जे "श्रीजीमहाराज

शुं करे छे? ने आ अवतार श्रीजीमहाराजनो केवो जाणो छो?" त्यारे संतदासजीए कह्युं जे आ अवतार नहि आतो सर्वोपरि अवतारी छे ते सर्वोपरि कल्याण जीवनुं करे छे, ने आवा तो कोई थया नथी ने थाशे पण नहि एवा तो ए एकज छे ने हुं पण सर्व धामो प्रत्ये जाउं छुं त्यारे सर्वे ते धामना वासी एमज कहे छे जे श्रीसहजानंद हरिकृष्ण तो सर्वे अवतारना अवतारी सर्वोपरि पुर्णपुरुषोतम छे पछी दलुजी बोल्या जे आतो अवतारी सर्वोत्कृष्ट पुर्णपुरुषोतम छे एम हुं पण जाणुं छुं. ॥ १६६ ॥

एक हरिभक्ते स्वरुपानंदस्वामीने पूछयुं जे "आ श्रीजीमहाराजनो अवतार केवो जाणवो?" त्यारे स्वरुपानंदस्वामीए कह्युं जे आ अवतार नहि आ तो रामकृष्णादिक सर्वे अवतारना अवतारी प्रकट पुरुषोतम छे. ने बीजा अवतारना जेवी कळाओ तो पोताना भक्तमां छे. ॥१६७॥

एक साधु कहे मारे तो बधुय ब्रह्मांड देखाय छे त्यारे व्यापकानंदस्वामी बोल्या जे तमारे तो एक ब्रह्मांड देखाय छे. ने मारे तो अनंत आश्चर्य ने अनंत कोटी ब्रह्मांड ने गोलोकादिक धाम ते हस्तामळ

देखाय छे ए तो रामकृष्णादिक सर्वे अवतारना अवतारी श्रीसहजानंद पुरुषोतम तेनी मूर्तिना ध्यानननो प्रताप छे. ॥ १६८ ॥

रामानंदस्वामीए पोतानी धर्मधुरंधरपणानी श्री सहजानंदस्वामीने सोंपणी करी त्यारे कोइने संशय थयो जे मोटा साधु छे. तेने सोंपणी केम न करी त्यारे रामानंदस्वामीए कह्युं जे निलकंठ ब्रह्मचारी तो मोटा मोटा राम, कृष्ण, वासुदेव ने अक्षरादिक सर्वेने प्रार्थना करवा योग्य पुजवा सेववा योग्य छे ने अमे पण एमना मुखया आव्या छीए अने आतो अनेक जीवोनां कल्याण करता करता आवे छे ने आतो सर्वोपरि रामकृष्णादिक अवतारना अवतारो छे ते हरिप्रसाद नामे विप्रने घेर प्रकट थया छे माटे एतो सर्वेने मानवा, भजवा, पामवा योग्य छे अने जेम पृथ्वीने विषे शब्द, स्पर्श, रुप, रस अने गंध ते चित्र विचित्र अनंत अनंत प्रकारना छे. तेम सर्वे अवतारने सर्वे विभूति थकी ने सर्वे शक्ति थकी ने अक्षरना मुक्त ने अक्षरधाम ए सर्वे थकी अति सर्वोत्कृष्ट अक्षरातित सर्व सुखमय ने सर्व आनंदमय ने सर्व सुंदरतानुं ने सर्व लावण्यतानुं ने सर्वे सुखनुं भाजन छे. एवा जे

श्रीसहजानंद पुरुषोतम ते सर्वोपास्य राजाधिराज ने सर्वे अवतारना अवतारी छे. ॥ १६९ ॥

श्रीजीमहाराजे वात करी जे सर्वे जीव, इश्वर, विभूतियो, धाम, शक्तियो, ऐश्वर्य ने मुक्त ए सर्वेनुं स्वरुप, स्वभाव एमने सहज स्वभावे अखंड अमे जाणीए देखीए छीए ने ए सर्वे मारी मूर्तिनो महिमा जेम छे तेम कोइ देखवा जाणवा समर्थ नथी ने हुं पण प्रकट प्रमाण सर्व अवतारनो अवतारी ने तमारो सर्वेनो उपास्य, गुरु, इष्टदेव ने अक्षरपर एवो जे हुं ते पण मारी मूर्तिना महिमानो अंत नथी पामतो ने ए सर्वे जे कह्या ते सर्वेनी सामर्थी मारी मूर्तिना एक रोमना कोटी कोटीमा भागनी बरोबर नथी आवती एवी अनवधिकातिशय ने महा आश्चर्यमय आ मूर्ति छे एमां किंचितमात्र संशय नथी एम मारो सिद्धांत छे.॥१७०॥

श्रीजीमहाराज गुजरातमां हता पछी असुरे आवीने संतने कष्ट दीधुं त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे मारा परमहंसोनी सर्वे मोटा मोटा देव तथा अक्षरादिक मुक्त ने सर्वे अवतार ते प्रार्थना करे छे ने दर्शनने इच्छे छे ने एक कीडी जेवा जीवने पण दुबे नहि एवा जे संत तेने दुष्टे दुःख दीधुं पछी एम कहीने उत्तर मुखे

उदासी थइने बेठा तेटलाकमां ब्रह्मादिक देवोए जाण्युं जे आज तो सर्वे ब्रह्मांडनो नाश थाशे एटलामां महाकाळ, संकर्षण, शिवादिक आवीने प्रार्थना करवा लाग्या जे हे महाराज ! तमे जे आज्ञा करो ते अमे करीए ने अमे तमारा सेवक छीए ते तमारा संतने कष्ट देनारो कोण छे तेनो क्षण मात्रमां नाश करीए पछी दिव्य चक्षुवाळा संत "रामदासभाइ" हता तेमणे कह्युं जे हे स्वामीन्! आज तमे आत्यंतिक कल्याण करवाने अर्थे पधार्या छो ने साधुनुं तो कोइ मान अपमान करे ते सहन करवुं ते संतनो धर्म छे पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे सर्वे आपणुं कर्युं थाय छे जुवोने सर्वे अवतार अमारे विषे लीन थाय छे ने आ सर्वे सभाने अमे अक्षरधामने विषे देखीए छीए अने जे आपणी वात माने छे तेनु कल्याण थाय छे अने जे नथी मानता ते नरकमां पडे छे अने अमारा शरीरमां कांइ कसर जेवुं थयुं त्यारे जगतमां अनेक जीवोनो नाश थइ गयो ने ज्यारे आपणे खटरसने वस्त्र त्याग कर्या ने टाट पहेर्या त्यारे जगतमां अन्न वस्त्र मल्युं नहि. ने हेरान थइ गया माटे सर्वे आपणुंज कर्युं थाय छे. बीजा कोइनुं कर्युं थातुं नथी ने तमारा शरीरमांथी कोटी कोटी सूर्यना प्रकाशथी अधिक प्रकाश नीकळे

छे एवा सामर्थ्ये युक्त तमे छो. एम हुं देखुं छुं. पछी ते संत बोल्या जे हे महाराज ! तमे तो सर्वे अवतारना अवतारी पुरुषोतम छो. माटे तमे देखो तेमां शुं कहेवुं ? तमे तो दिव्य एवा जे गुण, विभूति, ऐश्वर्य, पार्षद, ने शक्तिओ तेणे युक्त एवा अनादि नित्य सिद्ध सर्वोत्कृष्ट परिपूर्ण ने अनवधिकातिशय कल्याणकारी गुणे युक्त थका एकांतिक भक्तने सुख देवाने अर्थे कृपा करीने हरिप्रसादने घेर प्रगट थया छो. अने तमारी उपासना थकी अमे पण परावर अने हस्तामळ देखीए छीए ने धर्म, ज्ञान, आदिक अनंतगुणे युक्त थया छीए माटे कोइ मान अपमान करे तेनो भार गणता नथी ने तमारी मरजीने राजीपो जेम हशे तेम करशुं अने अमारे आलोक परलोकमां तमारा विना बीजुं कांइ वहालुं नथी अने तमे तो अमारा जीवन प्राण छो अने तमने प्रसन्न करवाने तो अनंत जन्म धरीने मायिक सुखने भूंडा स्वभाव तेनो त्याग करी दइए. ॥ १७१ ॥

कोटी सूर्यना तेजथी कोटी गणुं तेज ते वैकुंठना मुक्तमां छे अने तेथी कोटीगणुं तेज ते गोलोकना मुक्तमां छे अने तेथी अनंत कोटी गणुं तेज ते अक्षर

धामना मुक्तना रोमने विषे छे ने ते सर्वे मुक्तोनुं तेज ते अक्षरधामना एक देशने विषे समाइ जाय छे एवो अनंत अपार जे अक्षरधामनो प्रकाश ते सर्वे भेळो करीए तो सर्वे अवतारना अवतारी जे श्रीहरिकृष्ण पुर्णपुरुषोतमना एक रोमना कोटीमा भागनी पाशंगना बरोबर नथी आवतो एवा पुरुषोतम छे ते दिव्य, तेज, ऐश्वर्य, प्रताप, बळ, किर्ति, स्वराट, सत्य-संकल्प एवा अनेक दिव्यगुणे युक्त ए मूर्ति छे ने अनवधिकातिशय अनेक निरंकुश दिव्य एवां ऐश्वर्य तेणे युक्त थका ने श्रीधर्मदेवने भक्ति थकी छे जन्म जेमनो एवा जे "श्रीस्वामिनारायण" तेज अक्षरातित सर्वोपरि पुरुषोतम भगवान छे तेमांथी सर्वे अवतार प्रकट थाय छे ने पाछा तेमने विषे लीन थाय छे ते जेम तारा चंद्रमाने विषे लीन थाय छे अने जेम चंद्रमा, सूर्यने विषे लीन थाय छे तेम लीनता छे. पण जेम जळमां जळ मळे छे ने अग्निमां अग्नि मळे छे. तेम नथी अवतारने अवतारीमां तो घणो भेद छे. एम जाणवुं ते माटे दिवसे दिवसे श्रद्धा, ज्ञान, माहात्म्य विश्वास, प्रीति, आश्रय, अने अनुवृत्ति ते अधिक अधिक समजाय तेवो शान्तपणे उपाय करवो ने तेवा संगने तेवां शास्त्रोनो जोग राखवो ए सर्वे मोटा सं-

तोनो ने श्रीजीमहाराजनो परम रहस्य अभिप्राय छे. ॥ १७२ ॥

एवा जे प्रत्यक्ष श्रीसहजानंदस्वामी परब्रह्म परम कारुणिक तेमनो मूर्तिना बे चरणारविंदथी लइने मस्तक पर्यंत सर्वे अंगने प्रथक प्रथक धारीने एकांत स्थळने विषे बेसीने इंद्रियो, मन, प्राण, तेमनो प्रत्याहार करीने पूर्वापर रात्रीने विषे अतिदृढ मतिए करीने अतिदृढ चित्ते करीने अतिशय स्थिर थइने योगी तेणे श्रीहरिजीनुं ध्यान करवुं अने साध्वी, चकोर, शलभ, मच्छ, चकवा, चकवी ने बपैया ए जेम पोताना विषयमां निमग्न छे तेम योगी जेते श्रीहरिनी मूर्तिमां अतिशय आनंद थको निमग्न रहे ने जेम समुद्र मंथन करवाने समये देव दानव दृढ मनमां विश्वास राखीने मंडया हता तेम योगी तेणे दृढ मनमां विश्वास राखीने भगवाननी मुर्तिने धारवानो नित्ये नवो नवो अध्यास राखवो ने रसास्वाद निद्रा, हिंसा ने विक्षेप ए ध्यानना विरोधी छे माटे एनो त्याग करे त्यारे ध्यान थाय, नहि तो न थाय. अने जाति, वर्ण, आश्रम, ने गुण तेनुं मान तेनो त्याग करीने समग्र साधु सत्संगी तेना दासानुदास थइने रहे छे तेनेज श्रीहरिजीनुं ध्यान थाय छे. ॥ १७३ ॥

श्रीहरिनुं समग्रपणे माहात्म्य जाण्या विना बीजा कोटी साधन करे पण सर्व क्रियाने विषे अखंड नाम रटणने मूर्तिनी स्मृति रहे नहि. अने स्वस्तिक आसने करीने नासिकाग्र वृत्ति राखीने देहने सम राखीने पछी नेत्रने मींचीने प्रतिलोम वृत्तिये अंतरमां मूर्तिने सन्मुख रहीने ध्यान करवुं अने युक्त छे आहारविहार आदिक जेने एवो थको शुद्ध जीवरुप थइने अतिशय रोमांचिते करीने अतिशय गद्‌गद् कंठे करीने अतिशय हर्षायमान थको अने अतिशय त्वराए करीने अतिशय दान्त थको ने अतिशय शान्त थको ने अतिशय समाहित थको प्रत्यक्ष मूर्ति जे श्रीहरिजी तेमना स्वरुपनो अतिशय महिमा समजे जे अनंत अपार धामरुप जे अक्षरब्रह्म तेनुं समग्र सुख भेळुं करीए तो श्रीहरिजीना एक रोमना सुखनी बरोबर न आवे एवो दृढ ज्ञानी छे तेनेज श्रीहरिजीनुं ध्यान थाय छे. ॥ १७४ ॥

"आ लोक ने परलोकने विषे दुर्लभमां दुर्लभ शुं छे?"तो श्रीहरिजीना स्वरुपनुं ज्ञान, उपासना, आश्रय, विश्वास, अनुवृत्ति ने प्रीति ए अचळ थाय एज दुर्लभमां दुर्लभ छे ने सारमां सार छे. ॥ १७५ ॥

अने सत्शास्त्रनो ने धर्मनो अधिकारी होय अने सिद्धिने अर्थे यत्नने करतो होय तेने मध्ये भगवानने अर्थे प्रयत्नने करतो होय ने ते मध्ये भगवानने जाणीने यत्न करतो होय एवा हजारो हजार भेगा करीए तो ते मध्ये कोइक ज्ञानी भगवाननुं स्वरुप, स्वभाव, गुण, ऐश्वर्य ते अंते रहित छे तो पण तेने तत्वे करीने यथार्थ पोताना ज्ञाननी विशाळताने अनुसारे कोइक जाणे छे पण जेम छे तेम तो अंतने नथी पामतो, ने भगवान पोते पण पोताना महिमाना अंतने नथी पामता तो बीजा तो पामेज केम ? एवा सर्वोत्कृष्ट हरिकष्ण पुरुषोत्तम तेमणे अनेक कोटी ब्रह्मांडनां ने ब्रह्मपुरादिक धामनां जे समग्र ऐश्वर्य ते पोतानी मूर्तिने आधीन छे ते समाधिए करीने देखाडीने तथा सहुसहुना इष्टदेवरुपे पोते पोतानुं दर्शन दइने अनंत जीवने पोतानो सर्वोपरि महिमाए सहित निश्चय कराव्यो एवी रीते सर्वोपरि ने स्वराट् थका पोते वर्ते छे एम प्रत्यक्ष मूर्ति जे श्रीहरिजी तेमनो महिमा समझे छे तेनेज श्रीहरिजीनुं ध्यान थाय छे देह अने देह संबंधी पदार्थ तेने काकविष्टा तुल्य जाणे ने कोइना गुणदोषमां न भळे ने निंदा स्तुतिनो त्याग करे अने नेत्र, श्रोत्र अने वाणी तेने

जीते अने ठेकडि, मश्करी, आळस, प्रमाद तेने टाळे अने यथार्थ निर्बीज सांख्य ने निर्बीज योगने जाणे अने सबीज सांख्य ने सबीज योग तेने शुद्ध संप्रदाये करीने एकांतिक संत थकी जे समजे छे तेने मूर्तिनुं ध्यान थाय छे. ॥ १७६ ॥

इतिश्री पुरुषोतम निरुपण वार्ता संपूर्णम्. ।

आ वार्तासारसंग्रह नामे ग्रंथ ते दुर्गपतनने विषे रहीने में मारे हाथे लखेलो छे ने शुकमुनीने हाथे शोधेलो छे.

इतिश्री सहजानंदस्वामी शिष्य श्री गोपालानंद मुनि विरचित वार्तासारसंग्रह समाप्तः ॥

प्रथम प्रकरणं समाप्तम् ॥

श्रीहरि.

श्रीस्वामिनारायणो विजयते तराम् ।

प्रकरण बीजुं.

सद्गुरु परम भागवत परमहंस श्री गोपाळानंद मुनिए कृपा करी भमवाननी वार्ताओ करी छे ते तथा संतो तथा हरिभक्तोए जे जे प्रश्नो पुछ्या तेना उत्तर स्वामीए कर्या छे ते वार्ताओ सद्गुरु परमहंस चैतन्यानंद स्वामीए पोतानी स्मृतिने अर्थे लखेल छे ते.

स्वामीए श्रीहरिना महिमानी वात करी जे जेम सोना महोर मुकी होय ने तेने बे पडखे बे कांकरा मुक्या होय ते एक धोळो होय ने एक काळो होय तेमां सोना महोरने मुकीने बे कांकराने विषे मन लोभाय नहि. तेम श्रीहरिजीनो महिमा सत्पुरुषने योगे करीने यथार्थ समजाणो होय. तथा आत्मारुपे वर्ततो होय तो मायिक भावने विषे सुख बुद्धिए करीने बंधाय नहि, ने नाशवंत ने दुःख रुपज जणाया करे. ॥ १ ॥

लोभ, काम, रसास्वाद ए आदिक जे पोताने विषे दोष होय तेने ओळखीने मुकी दे तोज ए दोष टळे, ने वार्ताए करीने प्रकृति फरे छे. पण जेम पाणी

पीवरावीए ने ते बीजमां जेवो गुण होय तेवो फळमां गुण आवे छे. ॥ २ ॥

जेने पुरुषोतम भगवान मळ्या होय तेने कोइक स्वभाव टाळवाने अर्थे जन्म धरवो पडे तो पण एना जीवमांथी ते ज्ञान जाय नहि. ने कोइक उपरथी त्यागी जेवो जणाय पण अंतरमां बळीओ न होय ने कोइक उपरथी न जणाय पण अंतरमां बहु बळीओ होय ते जेम जेम सत्पुरुषनो संग करतो जाय तेम तेम वधतो जाय. ॥ ३ ॥

ज्यां सुधी पंच विषयमां प्रीति छे त्यां सुधी रुपिया, देह तथा सेवक आदिकमांथी प्रीति टळे नहि. ॥ ४ ॥

स्त्री थकी काळी नागणीनी पेठे बीवुं ने मिष्ट भोजनथी देहाभिमानी जनना संगनी पेठे बीवुं ने दुर्जननी सभामां प्रीतिये रहित रहेवुं तथा पुरंजनीनो विस्तार संकेलवो. ॥ ५ ॥

पंच विषय छे ते जीवने मुक्त थवा देता नथी ने बद्धने बद्ध राखे छे. माटे तेमने जीत्या विना मुक्त थवाय नहिं. ॥ ६ ॥

आत्मज्ञान तथा वैराग्यादिक सर्वे साधन छे ते माहात्म्ये सहित जे भक्ति तेने अर्थे छे. ने त्याग तो

तेनुं नाम जे इंद्रलोकने पामीने पण बंधाय नहि ने पाछो नीसरी आवे तेने कहीए अने शुभ कर्मने अर्थे यत्न करे पण न बनी आवे तो हर्ष, शोक पामे नहि. ॥ ७ ॥

पुर्ण पुरुषोतम भगवानने अवतार जीवना कल्याणने अर्थे दयाये करोने पृथ्वी उपर थाय छे त्यारे तेमनुं सामर्थ्य, वार्ता, तथा भक्त इत्यादिक सर्वे ते बीजा जे आविर्भाव ते थकी विलक्षण होय छे ते उत्तम मुमुक्षुना जाणवामां आवे छे. ॥ ८ ॥

श्रीहरिनो महिमा एम समजवो जे जेनी बीके करीने सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, वायु, इंद्र, समुद्रने काळादिक सर्वे थर थर कंप्या करे छे. एवा श्रीहरिना ए संत छे एवो महिमा अंतःकरणमां सदाय वर्त्यां करे तो मान न आवे तथा जडभरत, नारद, शुकादिक संतना मार्गमां रह्या छीए एम समजे तो पण मान न आवे अने लोभ कामादिक स्वार्थने अर्थे पण सर्वे मनुष्य मान मुकी दे छे तो कल्याणने अर्थे मान मुकवुं तेमां शुं कहेवुं ? ॥ ९ ॥

"जतभरतने ज्ञान रह्युं ने जय विजयने केम न रह्युं ?" उत्तर जे जय विजयनी मति शापित हती ने

जड भरतनी न होती माटे तेने ज्ञान जन्मांतरने विषे पण रह्युं. ॥ १० ॥

विषयने असत्य जाणीए छीए पण तेनुं तुच्छपणुं केम थातुं नथी ? " उत्तर जे सांभळीने कही देखाडे छे ने पछी भूली जाय छे पण तेनुं श्रवण, मनन, निदिध्यास करीने साक्षात्कार करतो नथी ने सांक्षात्कार करे तो विषय तुच्छ थइ जाय ते साक्षात्कार तो एम थाय जे जो नित्य प्रलयादिकने वारमवार श्रद्धाये सोता मन दइने कहे ने सांभळे ने विचारे तो थाय छे. ॥ ११ ॥

गोलोक, वैकुंठ, ने ब्रह्मपुरने विषे जेवा ऐश्वर्य पार्षद ने शक्तिए युक्त श्रीजीमहाराज छे, तेवाने तेवाज पृथ्वीने विषे छे. ने जेवा पृथ्वीने विषे छे, तेवाने तेवाज ब्रह्मपुरने विषे छे, एवी रीते मनुष्य भावनो ने दिव्य भावनो महिमा विश्वासे सहित यथार्थ पणे सत्पुरुषने प्रसंगे करीने शीखवो. ने पोताना जीवात्माने अक्षरब्रह्म संगाथे एकता समजवी केमके, जो पायो काचो होय तो ते उपर इमारत थाय नहि ने जेटली समजवामां काचप रहेशे तेटली देह मुक्या पछी पण नडशे ते वात सत्य छे. ॥ १२ ॥

जेम औषध लढी लढीने अतिशे झीणुं कर्युं होय ते आंखमां नाखे तो खटके नहिं तेम सत्पुरुषना संगे करीने धर्मज्ञानादिक शिखीने सत्संगनी समजण पक्व करी होय तो देश काळादिके करीने पण मति फरे नहि. ॥ १३ ॥

मुक्त बुद्धि शिखवी जे बुद्धिए करीने पंच विषयने विषे कोइ रीते बंधावाय नहि तेने मुक्त बुद्धि कहीए. ॥ १४ ॥

"वैराग्य उपज्यानो शो उपाय छे ?" उत्तर जे श्री हरिनो महिमा, ने आत्मनिष्ठा ए बेनी पक्वतामांथी जे वैराग्य उपजे छे तेने ज्ञानांश थकी उपज्यो कहेवाय छे. ने तेनो असत् देश काळादिके करीने पण नाश थातो नथी. ॥ १५ ॥

"कसर मात्र टाळयानो एवो एक जबरो उपाय कयो छे?" उत्तर जे महत्पुरुषनो सर्व प्रकारे विश्वास राखीने समागम करवो ए एकज उपाय अतिशे बळवान छे ते भागवतमां पण कह्युं छे जे "[1]नैषामतिस्ताव

---

१ अर्थः—ज्यांसुधी निष्परिग्रह, मोटा सत्पुरुषोनी चरणरजने पोताना मस्तक पर नथी चडावता, त्यांसुधी अनर्थने दूर करनारां भगवानना चरणने विषे तेओनी मति निश्चल नथी थती. ।

(भा. स. अ. ५–३२)

दुरुक्रमांघ्रिं स्पृशत्यनर्थापगमोयदर्थः ॥ महीयसां पाद-रजोभिषेकं निष्किनानां न वृणीत यावत् ॥ १६ ॥

श्रीहरि महाराजनी प्राप्ति थइ ए तो बहु मोटुं काम थयुं छे. पण लोभ कामादिक अंतरशत्रु ज्यांसुधी रह्या छे त्यांसुधी श्रीहरिने विषे पण दोष परठे छे. माटे सत्पुरुषनो समागम करीने देहाभिमान रुप दोष टाळीने ने धर्मज्ञानादिक गुणने शिखीने एकांतिक भक्त थावुं. ॥ १७ ॥

लोयाना १७ ना वचनामृतमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, मुक्तानंद स्वामी जेवा जो पंच विषयनी आसक्तिने खोदवा मांडे तो जेने विषयने विषे आसक्ति होय ते तो माथुं कापवाने तैयार थाय. माटे अंतर-शत्रुने टाळ्यानो उपाय शीखवो. ॥ १८ ॥

शास्त्रमां एम कह्युं छे जे सत्पुरुषना संगे करीने जीव सुखियो थइ जाय छे. माटे सत्पुरुषनां लक्षणोने शास्त्रमांथी समजीने तेमनी मोटप वचनामृत आदिक शास्त्रमांथी जाणीने ने विचारीने ने तेमनी अनुवृत्तिमां मन, कर्म वचने करीने वर्तवुं. ते कह्युं छे जे; "[1]उत्त-मानेव सेवेत प्राप्तकाले तु मध्यमान्" एवी रीते श्रेष्ठ

---

१ अर्थः—उत्तमनोज समागम करे, ते न मळे तो मध्यमनो करे

थावानी इच्छा राखवी ने शास्त्रनो सिद्धांत ने महत्पुरुषनो सिद्धांत ए बेने मेळववा जो एक सिद्धांत थाय तो ए महत्पुरुषनो विश्वास पूर्वक संग करवो ने वेगवान थावुं नहि पण शान्त थावुं केमजे वेगवानने सत्शास्त्र समजातां नथी. ॥ १९ ॥

उपासनाए करीने कल्याण तो थाय छे पण त्रण अंगनी द्रढता विना निर्वासनीक थइने श्रीहरिना एकांतिक भक्त थवातुं नथी ए त्रण अंगनां नाम आत्मनिष्ठा, दासपणुं, ने पतिव्रतापणुं ए त्रण अंगने पक्व करे तो आत्यंतिक कल्याण थाय छे. ने तृष्णा रुपी टबी नाश पामे छे. नहिं तो गोरखरुप जे जीव तेनी तृष्णा रुपी जे टबी ते कोइ काळे भरायज नहि. ॥२०॥

मच्छर, गरुडजी, पतंगीया ने महा तेज पर्यंत मुक्तोना भेद कह्या छे ते वालखिल्य रुषि जेवा मुक्त तो पृथ्व्यादिक अनेक स्थानकने विषे बंधाइ रह्या छे ए पण मुक्तना भेद छे. ॥ २१ ॥

इंद्रियो, अंतःकरण ने जीव ए त्रणमां निश्चयनी वार्ता करी. अने इंद्रियो अंतःकरण ने जीव ए त्रणमां ज्ञाननी वार्ता करी. अने चार प्रकारनी माया जीत्यानी वार्ता करी. तेनी विगत जे, जीवनी, इश्वरनी,

प्रधानपुरुषनी ने मूळ पुरुषनी माया जीते तो आ बे श्लोकमां जेवा मुक्त कह्या छे तेवा समर्थ थाय छे तेनां नाम "[1]देहेंद्रियासुहीनानां वैकुण्ठपुरवासिनाम् । देह संबंधसंबंद्धमेतदाख्यातुमर्हसि ॥ त्वमकरणः स्वराडखिलकारकशक्तिधर स्तवबलिमुद्वहन्ति समदंत्यजयानिमिषाः ॥ वर्षभुजोऽखिलक्षितिपतेरिव विश्वसृजो विदधति यत्र ये त्वधिकृताभवतश्चकिताः॥ ए बे श्लोकनो अर्थ तो सत्पुरुष यथार्थ जाणे छे. ॥ २२ ॥

ध्यान करनारा योगीने कइ अवस्था प्रथम लोपाय

---

१ अर्थः—देह, इन्द्रिय ने प्राणरहित अने वैकुंठ धामने विषे रहेनाराने देहनो संबंध केवी रीते थयो तेने कहेवाने योग्य छो.

(भा. पं. अ. १ ३४)

तमे मायिक इन्द्रियोथी रहित, स्वतंत्र अने समग्र इन्द्रियोनी शक्तिने धारण करनारा छो. तमोए जेने जे प्रमाणे आज्ञा आपी छे ते प्रमाणे सर्व प्रधान पुरुषादिक इश्वरो तथा इन्द्रादिक देवताओ तमाराथी भय पामता थका ते ते अधिकारने यथार्थ रीते पालन करे छे अने जेम खंडीआ राजाओ पोतानी प्रजाए आपेला करने स्वीकारीने चक्रवर्ति राजाने आपे छे, तेम ते प्रधान पुरुषादिको पोताना भक्तोए आपेला बलिदानने ग्रहण करे छे अने ते तमोने बलिदान आपे छे. (भा. द. अ. ८७-२८)

छे ? " उत्तर जे जो स्थुळ देहने विषे श्रीहरिजीनुं ध्यान करे तो प्रथम स्थुलदेहनो नाश थाय छे ने पछी सुक्ष्मदेहने कारण देहनो नाश थाय छे एवी रीते सुक्ष्मने कारणनुं समजवुं त्यां द्रष्टांत छे जे जेम वृक्षनां डाळां पांदडां वारमवार काप्या करे तो मध्यभाग ने थडीयुं हळवे हळवे सुकाइ जाय छे ने वचमांथी कापी नाखे तो थड ने डाळां सुकाइ जाय छे ने मूळमांथी कापी नाखे तो मध्यभाग ने डाळां सुकाइ जाय छे तेम अवस्थानुं जाणवुं. ॥ २३ ॥

श्रीहरिनी कथा वार्तानुं श्रवण करीने तेनो मनन ने निदिध्यास कर्यानो अभ्यास अतिशे राखवो. ने गमे तेवी मोटपने पाम्या होय तो पण अधिक अधिक समज्यानी द्रष्टि होय तो ते कोइ ऐश्वर्यमां बंधाय ज नहि ने मोटाइ बहु आवे. ॥ २४ ॥

जीवन मुक्त, विदेहीमुक्त ने कैवल्य मुक्त ए सर्वे मुक्तना भेद कह्या छे ते मध्ये एक कैवल्य मुक्तनी स्थितिने कहीए छीए जे जेम प्रथ्वी जळमां रही छे ने बाहेर जणाय छे तो पण जळमांज छे तेम कैवल्य मुक्त तो सदा परमेश्वरमांज वर्ते छे ते श्रुतिमां कह्युं छे जे अक्षरमस्य शरीरं ॥ २५ ॥

---

१ अर्थः—अक्षर, आ परमात्मानुं शरीर छे.

इंद्रियो अंतःकरणनी क्रिया थकी जो जीवनी क्रियाने प्रथक् समजतां आवडे तो सर्पनी कांचळीनी पेठे देहादिक भाव थकी जीव जेते अल्प काळमां जुदो पडी जाय छे ने तेने श्रीहरिजी महाराजनी मरजी पण जाण्यामां आवे छे जेम साबरमति नदीमां समुद्रनी वेळ आवे छे त्यारे ते नदी खारी थइ जाय छे ने वेळ ज्यारे पाछी उतरे त्यारे मीठी रहे छे तेम हरिभक्तने विषे धर्म ने अधर्म सर्ग रहे छे ते जेम तलने फुलमां वसावीने घाणीमां पीले छे ते फुलेलज थाय छे पण तेल थातुं नथी तेम लोभ कामादिक अधर्म सर्गने धर्मामृत प्रमाणे वर्तिने जीते तो शुद्ध एकांतिक भक्त थाय छे. ॥ २६ ॥

इंद्रियो, अंतःकरण, देवता ने जीव ए सर्वे जेते जेम नेत्रमां सूर्यनी आव्या गयानी गतिने जाणता नथी तेम अक्षरादिक सर्वे मुक्तो पुरुषोतमनी गतिने जाणता नथी जेम चंद्रमा राहुए गळ्यो थको उगे छे ने आथमे छे तेम हरिभक्त पण श्रीहरिजीनी कथानुं श्रवण मननादिक जे सर्वे क्रिया करे छे ते देहाभिमान रुप राहुए गळ्या थका करे छे माटे ए सर्वे क्रियाने विवेके करीने करवी. ते विवेक अमदावादना बीजा वचनामृतमां कह्यो छे जे नाही धोइने पुजा करवी. ॥ २७ ॥

वरुणदेवना पूत्रे वरुणने पुछयुं जे "हे पिताजी ! ब्रह्म कहो" त्यारे ते बोल्या जे "पृथ्वी ब्रह्म" त्यारे पूत्र जे ते पृथ्वीना अंतने पामीने फरी पुछतो हवो जे "हे पिताजी ! ब्रह्म कहो" त्यारे ते बोल्या जे "जळ ब्रह्म" एवी रीते आगळ आगळ तेना तेना अंतने पामीने पुत्र जेम जेम पुछतो गयो तेम तेम पिता पण ब्रह्म कहेता गया जे तेज, अग्नि, वायु, आकाश, अहंकार, महतत्व, प्रधान पुरुष, प्रकृति, ने मूळपुरुष सुधी ब्रह्म कह्या तो पण फरीने तेणे पुछयुं जे "पिताजी ! ब्रह्म कहो" त्यारे वरुणदेवे कह्युं जे अति प्रश्न पुछीश. तो तारुं माथुं उडी जाशे माटे पुरुषोतम श्रीहरिजी ज्यारे दयाये करीने मनुष्यभावनुं ग्रहण करे छे त्यारे ज मुमुक्षुने पुरुषोत्तमना स्वरुपनुं ज्ञान तथा सर्वे रहस्य वार्ता जाण्यामां आवे छे ए वात मर्म प्रश्नोत्तरमां छे. ॥ २८ ॥

श्रीहरिजी महाराज बोल्या जे आ सच्चिदानंद स्वामी जेवा भक्त सारुं ब्रह्मांडनो नाश थइ जाय तो पण परमेश्वरने खटके नहि ते उपर द्रष्टांत दइने वार्ता करी जे श्रीकृष्ण भगवान अर्जुन साथे सुधन्वाने जीतवा गया हता ने ए दिग्विजयमां जीताणो नहोतो ने यादव मायलो पण नहतो अने ए सुधन्वा पण हरि-

भक्त बहु भारे हतो पछी अर्जुनने ने सुधन्वाने परस्पर युद्ध थवा लाग्युं त्यारे सुधन्वा कहे जे " जे दिवसथी श्रीकृष्ण भगवान मने मळया छे ते दिवसथी जो बीजा देव मात्रनी प्रतिती मारा अंतरमां न थइ होय तो आ बाणे करीने अर्जुननुं मस्तक पडी जाओ " त्यारे श्रीकृष्ण भगवान कहे जे " में रामावतार धरीने जे जे पुण्य कर्युं छे तेणे करीने अर्जुननुं बाण एना बाणने कापी नाखो " त्यारे फरीने पाछुं सुधन्वाए कह्युं जे " जे दिवसथी श्रीकृष्ण भगवान मळया छे ते दिवसथी जो कोइ मंत्र, जंत्र, कामण, टुमण, जडी, बुटी, रिद्धि, सिद्धि, ए आदिकनी प्रतिती लेश मात्र न थइ होय तो आ बाण अर्जुननुं मस्तक कापी नाखो" त्यारे श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं जे " में वाराहादिक अवतार धरीने जे पुण्य कर्यां छे तेणे करीने अर्जुननुं बाण एना बाणने कापी नाखो " त्यारे फरीने सुधन्वाए कह्युं जे " जे दिवसथी श्रीकृष्ण भगवान मळया छे ते दिवसथी जो स्त्री मात्रने भोगववानो संकल्प न थयो होय तो मारां बाण अर्जुनना मस्तकने कापी नाखो" त्यारे श्रीकृष्ण भगवान बोल्या जे "में गोपीयो संगाथे रासक्रिडा करीने जो उर्ध्वरेता नैष्ठिक ब्रह्मचर्य राख्युं होय तो अर्जुननुं बाण सुधन्वानां बाणने कापीने

एनुं मस्तक कापी नाखो त्यारे ते बाणे तेमज कर्युं ने ज्यारे ए बाण एनुं मस्तक गंगाजीमां पधराववा लइ जतुं हतुं त्यारे आकाश मार्गने विषे धड रहित जे ए मस्तक ते कृष्ण कृष्ण करतुं जातुं हतुं एवुं आश्चर्य जोइने शिवजीए ए बाणनी स्तुति करीने ते मस्तकने मागी लीधुं एवो ए सुधन्वा हरिभक्त हतो तो पण अर्जुन जेवो न थयो एवी रीते हरिभक्तने विषे सरस नरस पणुं छे. ॥ २९ ॥

श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अनवधिकातिशय, निरवद्य, निरंजन ने निर्विकारी एवुं भगवाननुं स्वरुप जाणवाने अर्थे " [1]मायामयाकृतितमोऽशुभवासनानां कर्तुं निषेधमुरुधा भगवत्स्वरूपे ॥ निर्बिजसांख्यमत-योगगयुक्तिभाजं त्वां भक्तिधर्मतनयं शरणं प्रपद्ये " ए श्लोकना अर्थने समजीने पोतानी बुद्धि अतिशय शुद्ध करवी अने जे भागवति तनु छे तेतो शुद्ध

१ अर्थः--भगवानना स्वरुपने विषे मायिक आकार, अज्ञान अने अशुभ वासनाओनो अनेक प्रकारे निषेध करवाने माटे निर्बिज सांख्य अने योगना मार्गनी सारी युक्तिओने कहेनारा भक्ति धर्मना पुत्र, एवा आपना शरणने पामुं छुं. स. जी. पं. प्र. अ. ६६-१६.।

सत्वमय छे ने ते संकल्पनो देह छे ते स्थुळ देहनी पेठे पडयो न रहे ने जे ब्रह्ममय तनु छे तेतो निर्गुण छे ने चैतन्यनुं बंधाय छे. ॥ ३० ॥

दामोदरनुं प्रश्न जे, वार्ता करतां बहु डाह्या जणाय छे ने क्यारेक तो जाणीए छीए जे कोइ समजता नथी ए केम हशे ? उत्तर जे ए प्रकृति जीत्या नथी माटे प्रकृतिने जीतवी अने प्रकृति जीत्या होय तेथी जेम तेम बोलाय नहि ने जेणे प्रकृति जीती न होय ते बीजाने बहु सारी वार्ता करे पण ज्यारे पोता उपर ए वात आवे त्यारे कांइ ठा रहे नहि ने मानी प्रकृति ने जोगे करीने तो पोता थकी धर्मादिके करीने श्रेष्ठ होय तेनी आगळ पण नम्र भावे वर्ताय नहि. ॥३१॥

आ देहमां उत्तम रुचि पक्व करे तो हवे जे देह आवशे तेमां ऐश्वर्य, सामर्थी, ने तेज बहु आवशे ते उत्तम रुचिनी विगत जे जीवथी लइने पुरुषोतम पर्यंत यथाथ समजीने उत्तम रुचि राखवी ते केम समजवुं ? उत्तर जे जीवतो मलीन रज तम, ने सत्व गुण तेणे करीने युक्त वर्ते छे ने कर्म वश छे ने जे जे योनीमां जाय छे त्यां तेवोज थइ जाय छे ने इश्वर छे ते तो शुद्ध सत्वमय जे दृढ ग्रंथी तेणे युक्त वर्ते छे ने जे मूळ-पुरुष छे. ते तो सत्वगुणथी क्यारेक जुदा वर्ते छे ने

क्यारेक मिश्रित भावे वर्ते छे पण चोक्खुं जुदुं वर्ततुं नथी ने जे माया छे ते जड चैतन्यमय छे ने जे अक्षरधामना मुक्त छे तेतो गुणातित वर्ते छे ते गीतामां कह्युं छे जे " प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ ! मनोगतान्॥ आत्मन्येवात्मनातुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते" अने जे पुरुषोतम भगवान छे ते तो अक्षरादिक सर्वेना नियंता छे ने प्रकाशक छे ने ए सर्वेने विषे शक्तिए करीने अन्वय पणे रह्या छे ने पोते तो पोताना धामने विषे स्वतंत्र पणे रह्या छे. ॥ ३२ ॥

एक भक्त तो त्रण गुणने विषे ने अहंममत्वने विषे ने पंच विषयने विषे आसक्तिये रहित वर्ते छे अने बीजो भक्त डाह्यो होय ते ए वार्ताने समजे ने कहे पण खरो ने ते प्रमाणे वर्तवुं तो बहु कठण छे माटे ए बे केम जणाय ? उत्तर जे, जे भक्त वर्ते छे तेने मुमुक्षुने समजावतां आवडे छे ने बीजाने न आवडे ने वर्तवुं ते तो पेट कटारी नाख्या जेवुं कठण छे तथा खडगे करीने माथुं काप्या जेवुं पण कठण छे. ॥ ३३ ॥

---

१ अर्थः—हे अर्जुन, अनवधिकातिशयानंदरुप परमात्माने विषेज अनन्याश्रयपणे निमग्न रह्यो थको ते सिवाय बीजी वासनाओनो सर्वथा त्याग करे छे, त्यारे ते सर्वोत्तम स्थितप्रज्ञ कहेवाय छे.।

देहने विषे, पंच विषयने विषे ने भगवानने विषे जेवो अभिनिवेश छे तेवो संत ने विषे नथी ने संत तो एना करावनारा छे त्यारे स्वामी कहे जे श्रीहरिजीने विषे अभिनिवेश नथी. ते महाराज साथे व्यवहार पडे त्यारे जणाय ते कह्युं छे जे "[1]व्यवहारेण साधुः" ते आनी कोर तो एवो कोइ नथी ने एनी कोर होय तो कोण जाणे एनी कोर पण कोइ नथी ने श्रीजीमहाराजना महिमानो ने आत्मनिष्ठानो ठराव नित्य प्रलयादिके करीने वारमवार आग्रह राखीने कर्या करे तो अभिनिवेश थाय छे, ते हरिभक्तना द्रष्टांते करीने आग्रहनी वार्ता बहु करी ते अभिनिवेश थयो केम जणाय? तो श्रीजीमहाराज तथा सत्पुरुष हजारोना व्यवहार धूळमां भेळवी दे तो पण राजी ने राजी रहेवाय ने लगारे पण भाव फरे नहि त्यारे दृढ अभिनिवेश थयो कहेवाय अने रजोगुण, तमोगुण ने सत्वगुणने निर्गुण व्यवहार समजे तो अभिनिवेश अति पक्व थाय ते वार्ता सांभळे छे तो खरा पण वर्तवाने विषे घटाडतां आवडतुं नथी जेम प्रथम शास्त्र भण्या होय छे तो पण बीजे ठेकाणे घटाडतां आवडतुं नथी तेम छे एम वार्ता विस्तारथी करी. ॥ ३४ ॥

---

१ अर्थः--वहेवारे करी साधु जणाय।

टेव पडयानी वार्ता करी जे मांदा तथा वृद्ध संतनां आचरणने जोइने जवान अवस्थावाळा होय ते पण झीणां वस्त्र तथा पथारी करवी तथा खानपानादिकनी टेव पाडे छे ए सारुं नथी केमजे टेवमांथी तो सत्संगथी बहार जातुं रहेवाय छे माटे टेव मात्र न शीखवी एम कहीने उंदरना द्रष्टांते करीने सुखीआ रह्यानी वार्ता बहु करी ने पाटीदारना द्रष्टांते करीने दुःखीआ थवानी वार्ता बहु करी. ॥ ३५ ॥

वक्तापणानुं ने समजुपणानुं मान तो बहु होय छे पण जेम समजवुं घटे तेम समजे नहि ते केम हशे? उत्तर जे ते तो आत्माना स्वरुपना श्रवण मननादिके करीने मानने घटाडया करे तो जेम समजवुं घटे तेम समजाय. ॥ ३६ ॥

जाणपणा रुपे वर्त्यानो ने धर्ममां दृढपणे रह्यानो ने श्रीहरिजीनां महिमा समज्यानो अतिशे आग्रह राखवो ने शुद्ध ब्रह्मरुप थइने श्रीजीमहाराजने भजवा पण खरडेलपणे न भजवा ते श्रीजीमहाराजे आ श्लोकमां कह्युं छे जे "धर्मस्थितैरुपगतैर्बृहता सहैक्यं सेव्यो

---

१ अर्थः—शब्दादिक विषय रागे रहित, पोताना वर्णाश्रमधर्ममां सदावर्तता, अने अक्षरब्रह्म साथे आत्मस्वरुपना साधर्म्यप्रणाने विचारता, अ-

हरिः सितमहः स्थितदिव्यमूर्तिः । शब्दाद्यरागिभिरिति स्वमतं वदंतं त्वां भक्ति" अने जे सत्तारुप थइने ध्यान करे छे तेने ज्ञान वृद्धि पामे छे ने जे देहरुप थइने ध्यान करे छे तेने तो इद्रियोनु ज्ञान वृद्धि पामे छे ने यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, ने समाधी. ए जेम कठण छे तेम धर्मादिक साधन पण अति कठण छे. ॥ ६७ ॥

प्रथम सत्संगमां आवे त्यारे देहनुं मान होय पछी भक्तिनुं मान आवे छे ने पछी आत्मज्ञाननु मान आवे छे ने ते पछी उपशमे करीने ए सर्वेनुं मान टाळे छे ने जो असत्य संकल्प थाय तो तेने "त्यजधर्मधर्मंच उभेसत्यानृतेत्यज" ए श्लोके करीने सत्तारुप थइने टाळे ने नियम विचारने उपशम तेणे करीने

र्थात् हु अक्षरब्रह्मरुप छुं, एवी भावना करता जनोए अक्षरब्रह्मना तेजः पुंज मध्ये नित्य बिराजमान, दिव्य मूर्ति जेमनी छे एवा भगवान सदा उपास्य छे. आवा पोताना सिद्धांतने कहेनारा, भक्तिधर्मना पुत्र ! आपना शरणने पामु छु. स. जी. प्र. ५, अ. ६६–२१. ।

२ अर्थः—नारदजी–हे शुकजी ! धर्मरुप तथा अधर्मरुप, सत्यरुप तथा असत्यरुप संकल्पोनो त्याग करो. भा. मोक्षधर्म अ. ३३० श्लोक ४० ।

स्थुल आदिकना संकल्पने टाळे ने जवान अवस्था वाळाने तो युक्त भोजन करवुं ने नवधा भक्ति आळश मेलीने करवी ने उपशमनो अभ्यास प्रमाद मेलीने कर्या करवो ने सत्पुरुषनो संग राखवो ने मांदाने ने वृद्धने तो युक्त अहार ने उपशम ने सत्पुरुषनो समागम करवो. ॥ ३८ ॥

उत्तम मुमुक्षुनुं लक्षण ए छे जे स्त्री, द्रव्य, रसास्वाद ने मान एनो त्यागज कर्या करे ने मोटा संत स्वभाव मुकाव्याने अर्थे दुःख लगाडीने कहे तो पण कोइ रीते मुंझाय नहि. ॥ ३९ ॥

श्रीजीमहाराजे छे. प्र. २१ ना वचनामृतमां वार्ता करी छे जे प्रवृत्ति धर्मने निवृत्ति धर्म छे ते भगवानना संबंधे रहित पण छे ने भगवानना संबंधे सहितपण छे. तेमां जे भगवानने संबंधे सहित धर्म छे तेज भागवत धर्म छे ने भागवत धर्म ने भक्ति ए बेय एकज छे अने भागवत धर्मना स्थापन करवाने अर्थे श्रीहरिजी महाराजनुं पृथ्विने विषे जयकारी प्रवर्तवापणुं छे ते भागवत धर्मने श्रीजीमहाराजे शिक्षापत्री, वचनामृत आदिक ग्रंथने विषे यथार्थपणे कह्या छे ते प्रमाणे वर्तवुं ॥ ४० ॥

स्वभाव टाळीने सत्तारुपे वर्तवुं एम वर्तवे करीने कारण आदिक शरीरनो नाश थइ जाय छे ने एम न वर्ते तो वृद्धपणामां ठा. रहे नहि. ॥ ४१ ॥

वैराग्यवानने तो सहेजे नियम रहे छे ने मंद वैराग्यवाळाने तो नियम द्रढपणे राखवा ने इंद्रियोनी जे वृतियुं छे ते तो घोडा जेवी बळवान छे ते जेम घोडाने रोज फेरव्या करे तो वश रहे ने यथार्थ तो चाबक, अस्वार वश करे तेम धर्ममां रहेवे करीने इंद्रियो वश थाय छे ने यथार्थ तो उपशमे करीने वश थाय छे ते तो जाणे जे नवरा रहीए तो शीखवानो अभ्यास करीए पण कांइ थातुं नथी मूळगी आळस पेसे छे माटे श्रीहरिजीनी नवधा भक्ति करतां करतां जे अभ्यास थाय छे तेज खरो छे ते उपर पाणियारीना ने अस्वारना द्रष्टांते करीने वार्ता करी. ॥४२॥

जवान, रोगी, तथा वृद्धने वत्यीनी विगतनां लक्षण कहे छे जे चार प्रकारनां भोजन मनुष्यो नित्ये जम्या करे ते तो पण नवुंज रहे छे ने नित्ये तेनुं तेज जमीए छीए तो पण एम थाय छे जे आज तो रोटली थइ छे तेवी कोइ दिवस थइज नथी ने शाक पण आजना जेवुं थयुंज नथी तथा वस्त्रनुं पण एमज

रहे छे एनुं नाम भेद छे ने तेथी पंचविषय सबंधीज क्लेश थाय छे ने ते त्रिषयनी आसक्ति टळी जाय तो क्लेश मात्रनी निवृत्ति थइ जाय छे. ॥ ४३ ॥

श्रीहरिजीना माहात्म्यनी वार्ता घोडाना तबेला तथा जातवंत घोडाना द्रष्टांते करीने बहु करी ने लोभ, काम, रसास्वाद, ने मान ए आदिक जेवो स्वभाव पोतामां होय तेवो परमेश्वरने विषे तथा मोटा संतने विषे परठे छे माटे स्वभाव टाळीने शुद्ध ब्रह्मरुप थइने वर्ते तो न परठाय ने प्रियव्रतादिक अवतार न कहेवाय ने नारद सनकादिक अवतार कहेवाय. ।४४।

श्रीहरिजी महाराजने राजी करवानो शो उपाय छे? उत्तर जे धर्मामृत शिक्षापत्री ने निष्काम शुद्धि प्रमाणे वर्ते तो राजी थाय ने श्रीजीमहाराजने क्यां परोक्षपणुं छे ए तो सदा प्रत्यक्ष ज छे ने उपास्य उपासक ने स्थानकनो शुद्धताए करीने अति उत्तम भक्त थवाय छे तेमां उपास्यनुं लक्षण जे "[1]यो वेत्ति युगपत् सर्वं प्रत्यक्षेण सदा स्वतः" एम जाणवुं. ॥ ४५ ॥

विशल्य करणीना छेल्ला वचनामृतमां अहंममत्व

---

१ अर्थः—जे भगवान हमेशां पोतानी मेळेज एक कालावच्छिन्न, प्रत्यक्षपणे सर्वेने जाणे छे. ।

टाळ्यानी वार्ता आवी त्यारे ते केम टळे? उत्तर जे जेम देहने विषे आत्मबुद्धि छे ने अतिशे हेत छे तेम श्रीहरिजीने विषे तथा मोटा संतने विषे थाय तो टळे माटे आत्म विचारनो तथा श्रीजीमहाराजना महिमाना विचारनो वेग जीवने विषे अति बळवान लगाडी देवो जेम मंदवाड हाडमां पेशी जाय छे ने जेम वैरीनो वेग पेशी जाय छे तेवी रीतनो वेग जीवमां लगाडी देवो. ॥ ४६ ॥

व्यासादिक निर्गुण अवतार छे ने पर्शुराम तथा संकर्षणादिक सगुण अवतार छे एम रामानुज आचार्ये श्रीभाष्यमां कह्युं छे. ॥ ४७ ॥

उपशम ज्यारे रहेवा मांडे त्यारे वैराटायादिकनी सामर्थी देखाइ आवे छे तेने ग्रहण करे नहि ने तेनो तिरस्कार करीने उपशमने विषे वर्तता थका श्रीहरिजीनुं भजन कर्या करे तो एकांतिक भक्त थाय छे. ॥ ४८ ॥

अने अवतार मात्रनी ए रीत छे जे स्त्री द्रव्यनो त्याग करावववो ने गरीबनी रक्षा करावववी ने विद्या वैराग्य, भक्तिने बळे करीने कोइक गरीबनो तिरस्कार करतो होय तो तेने देखीने खमी शके नहि एवो सहज स्वभाव छे. ॥ ४९ ॥

निर्बळ तथा बळवान केम जणाय? उत्तर जे इंद्रियो, मन, बुद्धि ने जीव ए चारेने श्रीजीमहाराजना भक्तरुपे वर्तवुं ते एक एकथी बळीओ कहेवाय छे तेनी विगत जे कोइक परदेशमां जाय छे ने त्यांज वळगी रहे छे ने कोइक घेर आवे छे ने कोइक तो बुद्धिये करीने निश्चय करे त्यार पछी ते क्रियाने करे छे तेम कोइक तो सत्तारुपे वर्ते छे ने कोइक तो नित्य प्रलयादिके करीने सर्वे पदार्थने नाशवंत तुच्छ ने असार जाणीने तथा वैराग्यनुं ग्रहण करीने श्रीहरिजीने विषे दृढ प्रीति करे छे ते एक एकथी बळीआ छे. ॥ ५० ॥

जे आधुनिक मुक्त छे ते अनादि मुक्त जेवा थाय छे के नथी थाता? उत्तर जे सत्पुरुषने संगे करीने जो धर्मज्ञानादिक साधननी अतिशे पक्वता जे करे ते अनादि मुक्त जेवोज थाय छे. ॥ ५१ ॥

धारणा, ध्यान ने समाधी ए सविकल्प तो होय ने निर्विकल्प तो इश्वरनी इच्छाए करीने थाय छे ने सविकल्प समाधी करवी ने सत्तारुपे वर्तवुं एतो जीवना हाथमां छे ने जो "अर्थं साधयामि देहं पातयामि" एवी रीते साचो थइने मंडे तो थाय. ॥ ५२ ॥

---

१ अर्थः–देह छो पडी जतो, पण मोक्षरुपी अर्थने सिद्ध करु.।

अमदावादमां नट रमाडया त्यारे महाराज कहे जे अमे तमासाने अर्थे नथी रमाडता एतो एम देखाडीए छीए जे पेटने अर्थे अतिशे पुरुष-प्रयत्न जेम करे छे तेम ईश्वरने अर्थे करे तो शुं न थाय ? जे करे ते सर्वे साधन सिद्ध थाय छे जो जीव ए जेवो साचो थाय तो. ॥ ५३ ॥

शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा अने समाधान ए छो मलीने एक साधन कहेवाय छे ने वैराग्य, विवेक, ने मुमुक्षुता ए त्रण साधन मळीने चतुष्ठय साधन कहेवाय छे. ॥ ५४ ॥

चार प्रकारे निष्कामी रहेवाय छे तेनी विगत जे एकतो धर्मामृत प्रमाणे वर्तवे करीने, अष्टांग योगे करीने, सत्तारुपे वर्तवे करीने तथा लाजे करीने पण रहेवाय छे. ॥ ५५ ॥

ज्ञान केम समजवुं ? उत्तर जे पुरुषोतमनुं, अक्षरनुं, मूळ पुरुषनुं मुळ मायानुं, प्रधान पुरुषनुं, वैराज पुरुषनु ने जीवना स्वरुपने प्रथक प्रथक रीते समजे एनुं नाम ज्ञान कहेवाय छे ते श्लोकमां कह्युं छे "[1]क्षेत्रा-

१ अर्थः—देह, जीवात्माओ, प्रधानपुरुष, माया, काळ, अक्षरब्रह्म, अने परब्रह्मना स्वरुपने जुदां जुदां लक्षणोए करीने जाणवुं ते ज्ञान कहेवाय छे. वासु. अ. २४-७४. ।

णां च क्षेत्रविदां, प्रधानपुरुषस्य च। मायायाः कालश-क्तेश्चाक्षरस्य च परस्य च पृथक् पृथग्लक्षणैर्यज्ज्ञानं त-ज्ज्ञानमुच्यते" ॥ ५६ ॥

वचनामृतमां निर्भय रह्यानुं कह्युं छे तेने केम समजवुं? उत्तर जे एक तो आत्मनिष्ठा पक्व होय ने श्रीहरिजीनुं माहात्म्य सहित यथार्थ ज्ञान होय तो श्रीजीमहाराज जेम कहे तेम प्रतिति आवे ने मार्गमां सिंह के सर्प मळ्यो होय तथा ओगणोतेरा जेवो काळ पडयो होय ने तेवा समामां महाराज कहे जे निर्भय रहेजे कोइ फीकर करीश मा ए वचननी जेने यथार्थ प्रतिति आवे तेने तो भय लेश मात्र रहेज नहि पण जीवने प्राकृत पदार्थनी प्रतिति तरत आवी जाय छे जेम सिंहनी बीक लागती होय अने त्यां बे कोरे बे शुरा रक्षा करता जता होय ने काळ पडयो होय ते समे कोइक हजार बे हजार रुपिआ आपे तो जेवो निर्भय ने आनंदे युक्त थाय छे तेवो श्रीहरिजीना वचनने विषे निर्भय ने आनंदे युक्त थातो नथी ते सारुं सत्पुरुषनो समागम करीने कसर मात्र टाळीने साधु थावुं एथी कोइ अधिक प्राप्ति नथी. ॥ ५७ ॥

रामदास वैद्यने महाराजे कह्युं जे "बीक बहु

जणाय छे" त्यारे तेणे कह्युं जे "हा महाराज" ते वार्ता करी जे परमेश्वर तो सर्वना नियंता ने अंतर्यामि छे ने सर्वना प्रेरक छे ने सर्वना नाडीप्राण एमना हाथमां छे एम कहीने चकलां ने समाधि करावी. ॥ ५८ ॥

महाभारतने विषे ब्राह्मणी गीता छे तेमां अश्वमेध यज्ञ कह्यो छे तेनी रीत एम छे जे जीवरूप राजा छे ने मनरूप घोडो छे ने इंद्रियो रूप पूर्व, पश्चिम, उत्तर ने दक्षिण ए आदिक दिशाओ छे ते जीव जे ते मनरूप घोडाने इंद्रियोरूप दिशाओ प्रत्ये मुके छे ने ते मनरूप घोडाने ज्यारे कोइ इंद्रियो पोत पोताना विषयने विषे बांधी शके नहि त्यारे जाणीए जे सर्व देश जीताणा त्यारे श्रीहरिजी महाराज सबंधी जप यज्ञ, तपयज्ञ ने योगयज्ञादिक सर्व यज्ञ संपूर्ण थया कहेवाय एवी रीते गोमेधादिक सर्वे यज्ञनी रीत जाणवी. ॥ ५९ ॥

लिंग शरीर केम नाश पामे ? उत्तर जे सत्तारूप थइने प्रतिलोमपणे श्रीजीमहाराजनुं ध्यान कर्या करे तो काळे करीने लिंग शरीर नाश पामी जाय छे. ॥ ६० ॥

जेवो जेने अभ्यास कर्यामां आग्रह छे तेवी तेने सिद्धि वहेली थाय छे अने रजोगुणी बुद्धि–वालो तो उत्थान भेळीज क्रीया करवा मांडे छे ने तमोगुणी तो अंध धंध जेवी क्रिया करे छे ने सत्वगुणी तो विचार्या विना करेज नहि. ॥ ६१ ॥

सर्वे समान छे एम कहे छे तेनी विगत जे जेम चिंतामणी आगळ पारसमणि आदिक सर्वे समान छे ने पारसमणि आगळ हिरा, झवेर, मोती आदिक सर्वे समान छे तेम पुरुषोतम भगवान आगळ सर्वे अक्षरादिक समान छे ने ते अक्षर ने तेमां रह्या जे मुक्तो तेनो आगळ मूळ पुरुषादिक ने तेनी आगळ प्रधान पुरुषादिक ने तेनी आगळ वैराज पुरुषादिक ने तेनी आगळ ब्रह्मादिक एम एक एक ने आगळ बीजा सर्वे समान छे. ॥ ६२ ॥

उत्तम मुमुक्षुनां लक्षण ए छे जे सत्पुरुषने ओळखी काढे ने तेने मन सोंपी दे ने तेमना समागमने अर्थे सर्वे प्रकारनुं भिषण खमे ने कोइक उत्तम विषयने विषे लोभाववानुं करे तो पण न लोभाय. ने धर्मज्ञानादिक साधन ने देश काळादिकना विषमपणाए करीने पण चुके नहि ने आत्मा अनात्मानो विचार

कर्या करेने सर्व शास्त्रनो एज सिद्धांत छे जे सत्तारुप थइने श्रीहरिजीनुं ध्यान करवुं ने एमने एम अनेक जन्म सुधी कर्या करे त्यारे कारण शरीर नाश पामे छे. ॥ ६३ ॥

श्रीहरिजीनुं भजन स्मरण केम करवुं ? उत्तर जे अक्षरने अक्षरना मुक्त छे ते तो अक्षररुप थइने भजन करे छे ने श्वेतद्विपना मुक्त छे ते तो सत्तारुपे रहीने कारण शरीरना भावने टाळता थका भजन करे छे ने बद्रिकाश्रमना मुक्त तो सत्तारुप रहोने स्थुल सुक्ष्मना भावने टाळता थका भजन करे छे ने आपण सर्व तो स्थुलभावे वर्तता थका भजन करोए छीए तेमां पण केटलाक तो अक्षरभावे वर्ते छे ने केटलाक तो सत्ताभावे वर्ते छे ने सर्व करतां अनुवृतिमां रहेवुं ए कठण जणाय छे केम जे बीजाना मन गमता प्रमाणे वर्तवुं माटे स्वरुपमां रहेवा करतां पण ए कठण छे. ॥ ६४ ॥

बुद्धिवानने एकांतिक धर्म समजाय तो खरो पण पोतानां जे नाना प्रकारनां जे विघ्नां छे तेने मुको शके नहि ने सत्पुरुषनी अनुवृतिमां पण रहो शके नहि ए खोट बुद्धिवानने विषे जणाय छे ने मुढ भक्तने

विषे श्रद्धा तो होय पण समजी शके नहि ए खोट छे. ॥ ६५ ॥

श्रीहरिजीना स्वरुपने सर्व स्थानकने विषे प्रकाशमान जोवुं ने क्यारेक विज्ञानदासजीने श्रीजीमहाराजे समाधिमां कह्युं जे तमारे तो कुंठीत वासना छे त्यारे गोपाळानंद स्वामीए कह्युं जे मारुं पूछो ? त्यारे तेणे पूछयुं त्यारे श्रीजीए कह्युं जे एमने तो निर्मूळ वासना छे पछी फरीने पूछाव्युं त्यारे पण एमज कह्युं ॥६६॥

विशल्यकरणीना छेला वचनामृतनी वार्ता करता हता त्यारे पूछयुं जे अहंममत्व केम टळे ? उत्तर जे देहने विषे जेवी आत्मबुद्धि छे ने असाधारण हेत छे तेमज श्रीहरिजी महाराजने विषे ने सत्पुरुषने विषे आत्मबुद्धि ने असाधारण हेत थाय तो अहंममत्व टळी जाय. ॥ ६७ ॥

ज्ञानीने अज्ञानीनुं लक्षण संक्षेपे करीने कहीए छीए जे ज्ञानी भक्त प्रवृति मार्गमां श्रीजीनी आज्ञाए करीने प्रवर्तता होय पण श्रीहरिजीनी कथा, वार्ता, किर्तन, भक्ति तथा आत्मा अनात्मानो विवेक कर्या विना रही शके नहि ने जे अज्ञानी भक्त होय ते तो प्रवृति मार्गमां अतिशे जोडाइ जाय ने भजन स्मरण पण यथार्थ थाय नहि. ॥ ६८ ॥

त्रण प्रकारना प्रलयमां केम वर्ते तो न जोडाय? उत्तर जे एक तो श्रीहरिजी महाराजनुं ध्यान ने बीजुं तेमना जन्म कर्मनुं दिव्यपणुं यथार्थ जाणवुं ने त्रीजुं आत्मसत्तारुपे वर्तवुं ए त्रणनुं अनुसंधान निरंतर रह्या करे तो न जोडाय. ॥ ६९ ॥

कोइकने हेत होय ने विश्वास न होय ने कोइक ने विश्वास होय ने हेत न होय एम वार्ता करी त्यारे कोइके पूछ्युं जे ए बेनी समजणमां शी खोट हशे? उतर जे विश्वासीने ए खोट छे जे एने पंचविषयने विषे राग छे एटले हेत थातुं नथी ने हेतवाळाने ए खोट छे जे सत्पुरुषनी मोटप एणे यथार्थ जाणी नथी एटले विश्वास आवतो नथी. ॥ ७० ॥

देह ने देहना संबंधीने विषे जीवने अतिशय हेत रहे छे ने आ मनोहरदासने आपण सर्वे रांकनी पेठे तगडीने काढी मेलीए छीए पण जो आपणो संबंधी रांक थइने आव्यो होय तो ते उपर दया आवी जाय ने कोइक काढी मेले ने अन्न न दे तो ते संतनो पण अवगुण आवे ते उपर मांतिजना गोविंदरामने देह ने देहना संबंधीमां हेत हतुं तेने द्रष्टांते करीने बहु वार्ता करी. ॥ ७१ ॥

देहने देहना संबंधीमां एवुं दृढ द्वैत छे ते केम टळे? उत्तर जे वैराग्यसोतुं आत्मज्ञान नथी ने माहात्म्ये सहीत श्रीजीमहाराजनुं ज्ञान नथी माटे नात जातने विषे तथा देहने देहना संबंधीने विषे आसक्ति छे ने ते समुद्रनी पेठे अंतरमां भरी छे ने सत्संग तो समुद्रनी लहेरनी पेठे छे. माटे अंतःकरणने विषे श्रीजीमहाराजनो महिमा धारवो ने तेनी मरजी प्रमाणे वर्तवुं ने अतिशे दयाळुपणुं, अतिशे वात्सल्यपणुं, अनवधिकातिशय, ज्ञान, बळ, ऐश्वर्य, शक्ति, तेज ए आदिक असंख्यात कल्याणकारी गुण तथा निरवद्य, निरंजन, निर्विकारपणुं, अनवधिकातिशय, सौकुमार्य, लावण्य यौवनादि अनंतगुण गण ए सर्वे गुणनुं निधि एवुं जे भगवाननुं स्वरुप, स्वभाव, गुण ने विभुति ए सर्वेने अंतःकरणने विषे निरंतर धारवां ने मोटा पुरुषनी मरजी प्रमाणे वर्तवापणुं ने क्षेत्र क्षेत्रज्ञना विभागपणानी समजण ए सर्वे जीवने विषे अव्यक्तपणे नामरुपनी पेठे खुती रह्यां होय तो ज्यारे संभारे त्यारे तद्रुप थइ जवाय ने एवुं जो वर्ततुं होय तो देह ने देहना संबंधीने विषे स्नेहरुप समुद्र नाश थइ जाय छे ने श्रीजीने विषे प्रीतिरुप समुद्र वृद्धि पामे छे. ।७२।

मुक्तानंदस्वामीने महाराज क्यारेय वढीने प्रसा-

दीनो थाळ के वस्त्र आपता नहि ने सहेजे तो रोज प्रसादी आपता ने वस्त्र पण घणीवार आपता ने बीजाने तो वढे त्यारे प्रसादी तथा वस्त्र आप्या विना रहेज नहि ते शुं ? तो मुक्तानंदस्वामीने मुंझवण थाती नहि. ते केम समजता ? उत्तर जे पोताने त्रण गुण ने त्रण शरीर थकी जुदा समजता ने श्रीजीमहाराजनी मोटप जे माहात्म्य ते अतिशेपणे समजता ने तेमज वर्तता ने हितकारी पण अतिशे जाणता तेणे करीने मुंझवण आवती नहि. ॥ ७३ ॥

श्रीहरिजीने पुरुषोतम समजीए छीए तेनो ठराव करवो ने स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य ने माहात्म्ये सहित भक्ति तेनो पण ठराव करवो ने सत्पुरुषने गुरु जेवा मानवा तेनो पण निर्धार करवो केम जे निर्धार कर्या विना देशकाळादिके करीने एक स्थिति रहेती नथी ने श्रीजीमहाराजना भक्तनी सेवा चाकरी, नमस्कार, ने पुजादिक जे जे करवुं तेनो पण ठराव करवो ने एम कर्या विना तो श्रीहरिजीने अर्थे यज्ञादिक करता होइए ते बीजा देवने अर्थे ने मुक्तने अर्थे पण थइ जाय ते सारुं दृढ ठराव करवो ने आ वार्तानो तलतुंबडीनी पेठे श्रद्धा सोता अतिशे श्रवण मननादिक कर्या करे तो साक्षात्कार थाय. ॥ ७४ ॥

एक हरिभक्त तो सत्संग संबंधी भिषण खमी शके छे ने एक नथी खमी शकतो ए बेमां शो गुण दोष हशे ? उत्तर जे भिषण खमतो नथी तेमां तो ए दोष छे जे ए श्रीजीमहाराजनो ने मोटा संतनो महिमा समजतो नथी ने श्रद्धा पण अल्प छे ने देहाभिमान पण बहु छे माटे सत्संग तेना जीवने विषे प्रवेश करतो नथी एटले वृद्धि पण पामतो नथी ने भिषण पण खमी शकतो नथी. ॥ ७५ ॥

स्थानक, देह, इंद्रियो ने अंतःकरण एमने विषे जीवने पंचविषय संबंधी राग रह्या छे ते रागने मुमुक्षुए ओळखवा जे मारे राग कये ठेकाणे रह्या छे ने ते रागने टाळ्या सारु मुमुक्षुने आत्मसत्तारूपे वर्तवुं ते वर्तवानी रीत जे त्रण गुणने त्रण अवस्था छे ते थकी हुं रहित छुं एम वर्तवुं ने इंद्रियोनी क्रिया ते जाग्रत अवस्थानी छे ने मननी क्रिया जे संकल्प विकल्प ते स्वप्न अवस्था संबंधी छे ने लय ते सुषुप्ति अवस्था संबंधी छे एम जाणीने ए सर्वेथी रहित सत्तारूपे वर्तवुं ते आत्मसत्तारूपे वर्तन कहेवाय. ॥ ७६ ॥

निर्गुणपणुं ने सगुणपणुं संतमां केम समजवुं ? उत्तर जे अक्षररूपे जे संत वर्तता होय ते वर्तन निर्गुण कहेवाय, ने एम न होय ते सगुण वर्तन कहेवाय.।७७।

जे सत्संगी धर्मने विषे दृढपणे वर्ततो होय ने श्रीहरिजिनी मरजीने जाणतो होय ने सत्पुरुषने ओळखतो होय ते पाको सत्संगी कहेवाय. ॥ ७८ ॥

चार प्रकारना मांदानी विगत जे एक तो देहे करीने मांदो ने बीजो मने करीने मांदो ने त्रीजो तो देहे तथा मने करीने मांदो ने चोथो साजो मांदो ए चार प्रकारे मांदानी वार्ता करी ने सोनाना वाटकाने ठेकाणे देहे मांदानी ने काचना वाटकाने ठेकाणे बीजा त्रण मांदा केमजे तेने जाळववा पडे तेमां जे देहेज केवळ मांदो छे ते तो साजा जेवोज गणाय ने बीजा त्रणने तो मंदवाड लांबो चाले खरो. ॥७९॥

चार प्रकारनी अनुवृत्तिए करीने अतिशय मोटा थवाय छे तेनी विगत जे प्रथम तो हरिभक्तनी अनुवृत्तिमां वर्ते तो सत्संगी थवाय ने पछी संतनी अनुवृत्तिमां वर्ते तो साधु थवाय ने पछी एकांतिकनी अनुवृत्तिमां वर्ते तो एकांतिक थवाय ने पछी श्रीजीमहाराजनी अनुवृत्तिमां वर्ते तो भगवद्‌भावने पामे छे ने एम न वर्ते तो असत् देशकाळादिके करीने जो मोटा पुरुषने विषे असत् बुद्धि थइ जाय तो आसुर भावने पामी जाय छे माटे ज्ञानांशनो अभ्यास प्रमाद मुकीने

करवो ने अतिशय बीक राखीने वर्तवुं पण निर्भय थावुं नहि. ॥ ८० ॥

नारायण ब्रह्मचारीए प्रश्न पुछयुं जे एकतो मुमुक्षु जेवो जणातो होय पण तेने मोटानो योग थातो नथी ने एक तो मोटानो योग कर्यामां बहु बीवे छे ए बेयनुं शुं कारण हशे ? उत्तर जे मुमुक्षुने मोटानो योग थातो नथी तेने तो पूर्व जन्मने विषे अथवा आ जन्मने विषे मोटानी क्रियामां अरुचि छे एज कारण जणाय छे अने जे मोटानो योग कर्यामां बीवे छे ते तो धर्ममां शिथिल वर्तेछे माटे बीवे छे. ॥ ८१ ॥

वाचकुटना प्रश्ननी विगत जे वाचकुट ते शुं? तो उपरथी अर्थ जणातो होय तेथी बीजी रीतनो अर्थ जेमां रह्यो होय एवुं वचन कहेवुं ते वाचकुट जाणवुं. ते उपर वात करी जे धर्मदेव जेते अधर्मसर्गने दोरडामां नाखीने ताणे छे ने कलंगीवाळा देव जेते चारे बाजुथी मारी मारीने अधर्मना लश्करने दोरीना गाळाने विषे बंधावे छे ने नारायणमुनीनां चक्र चारे बाजुथी वाळे छे तेने जोइने धर्मदेव अति दयाळु छे माटे एमने वळी दया आवे छे ए वाचकुट ? उत्तर जे धर्मदेवने ठेकाणे तो आचार्यजी महाराज छे ने अधर्मना

सर्गने ठेकाणे तो जे धर्मने विषे यथार्थ नथी वर्तता एवा त्यागी तथा ग्रहस्थ सत्संगी छे ने कलंगी वाळाने ठेकाणे तो श्रीहरिजीना भक्त धर्ममां यथार्थ वर्ते छे ने बहु बुद्धिवाळा छे ते छे ने नारायणमुनीनां चक्रने ठेकाणे तो तेमनां वचन जे शिक्षापत्री, धर्मामृत, वचनामृत, ने निष्कामशुद्धि ते छे ए चारे कोरेथी बाळे छे ते शुं तो जे धर्मने विषे मोळा वर्ते छे तेने सत्शास्त्र, श्रीजीमहाराज तथा सर्वे संतो ठपको दे छे एटले ते निरंतर बळ्या करे छे ने सुखीओ रहेतो नथी. ॥ ८२ ॥

काळना माननी वात करी जे आलोकने विषे तो सूर्ये करीने काळनुं मान छे ने ब्रह्मपुरने विषे तो श्रीजीमहाराजने शयने करीने रात्री कहेवाय छे. ॥८३॥

सनकादिक जेते त्यागी छे ने निष्कामादिक धर्मने विषे अति कुशळ छे तो पण वैराज भेगा केम लयने पामे छे ने फरी पाछा केम उपजे छे? उत्तर जे एमने वैराजपुरुषनी उपासना छे तेणे करीने वारमवार जन्म मृत्युने पामे छे ने मुमुक्षुना कल्याणने अर्थे प्रगट थया जे दत्त, कपीलजी, ते श्रेष्ठ जणाय छे ने एथी रुषभदेवजी श्रेष्ठ जणाय छे ने ते

करतां रामचंद्रजि श्रेष्ठ जणाय छे. ने ते करतां श्रीकृष्ण भगवान तो अतिशे श्रेष्ठ छे ने अति समर्थ छे ने ए संगाथे जे भावे करीने जे जोडाय छे तेनुं कल्याण थइ जाय छे ते कह्युं छे जे "[1]कामाद्भयात्स्नेहाद्वापि" ए रीते भागवतना श्लोकमां वात कही छे ने आज तो आश्रय मात्रे करीने कल्याण थइ जाय छे एवी अलौकिक वात छे पण एटले करीने पूर्ण न थावुं ने धर्मज्ञानादिक पुरुष प्रयत्ने करीने शीखीने श्रीजीना एकांतिक भक्त थावुं ने सत्संग कर्यानुं एज फळ छे. ॥ ८४ ॥

हरि मंदिर संबंधी कामकाज करतो होय तेनो ओथ लइने कांइक वधु ओछुं वर्ताय तो श्रीजीमहाराज रक्षा करे के न करे? केम जे आज्ञाए करीने करे छे माटे. उत्तर जे जो ए पुरुष प्रयत्ने करीने सावधान वर्ततो होय ने अजाणमां जो आडुं अवळुं थइ जाय तो रक्षा करे ने जाणी जाणीने प्रकृति वधारे तो रक्षा न करे ने तेनो दंड भोगववो पडे. ॥ ८५ ॥

प्रकृतिनी इच्छाए करीने पुरुषनुं रुप छे ने

---

१ अर्थः—कामथी भयथी तथा स्नेहथी जे भगवानने विषे जोडाया तेनुं कल्याण कर्युं.।

पुरुषनी इच्छाए करीने प्रकृति रुपवान थइ आवे छे पण ए बेयनुं मूळरुप केवुं छे ? उत्तर जे मूळ रुप तो ए बेयनां दिव्य छे त्यारे पूछयुं जे "अक्षरना मुक्त जेवां छे ?" त्यारे कह्युं के ना अक्षरना मुक्तो जेवां के बद्ध जीवोना जेवां नथी पण ए श्रीहरिजीनी शक्तियो छे माटे दिव्यरुप छे ने एमां जे नाना प्रकारना विकार जणाय छे ते तो श्रीहरिजीनी इच्छाए करीने छे. ॥ ८६ ॥

श्रीजीमहाराजनो महिमा एम समजवो जे जेम नवसो नवाणुं नदीयोनुं पूर भेळुं वहेतुं होय तो लाख मणना पाषाणादिक तणाइ जाय पण कांइ टकी शके नहि तेम पुरुषोतमनी मोटप सर्वे करतां अधिक जाणवी ते मोटप एम जाणवी जे ब्रह्मादिक सर्वे देव थकी तथा काळ मायादिक सर्वे थकी तथा अक्षरना साधर्म्यपणाने पाम्या जे अनंत कोटी मुक्त तथा अक्षर ए सर्वे थकी महाराज पर वर्ते छे ने सर्वेना प्रेरक, प्रवर्तक ने नियंता छे ने ज्ञान, ऐश्वर्य ने सेव्य छे ने सर्वेना स्वामी छे ने भजनीय छे एवी रीते श्रीजीमहाराजनो महिमा यथार्थपणे समजवो. ॥ ८७ ॥

जीवात्माने सत्पुरुषना संगे करीने त्रण देह, त्रण अवस्था, त्रण गुण, पंच प्राण, पंच भूत, पंच

विषय, चार अंतःकरण, दश इंद्रियो तथा चौद देवता ए सर्वे मायानुं टोळुं छे ते थकी अति विलक्षण ने प्रथक जाणीने जीव सत्ताने अक्षर साथे मनन द्वाराए करीने निरंतर जोडया करे तो संकल्प विकल्प कांइ टकी शके नहि ने सर्वे समाइ जाय एवी रीते बहु वार्ता करी. ॥ ८८ ॥

श्रीहरिजीनो क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति, ने ज्ञान शक्ति एमां कइ सरस छे? त्यारे संते कह्युं जे ज्ञान-शक्ति सरस छे त्यारे श्रीजीए कह्युं जे जे समयने विषे जे शक्ति काम आवे ते शक्ति सरस छे. ॥ ८९ ॥

मोटा संतने मंदवाड केम नडे छे? उत्तर जे एमने विषे कोइ जातनी खोट नथी पण लगारेक देहाभिमान होय ते मंदवाडे करीने टळी जाय ते सारु श्रीजीमहाराज मंदवाड आपे छे. ॥ ९० ॥

बे सरखा हरिभक्त होय तेमां एक तो पोतानुंज कार्य करे ने बीजो तो बहु मनुष्यने समास करे तेमां कोण सरस छे? उत्तर जे बहु मनुष्यने समास करे छे तेज सरस छे. ॥ ९१ ॥

संत जेते स्वभावने टाळवा सारु लागतां वेण दुःखवीने कहे तो पण हितकारीज मानवा ने संत भेळाज भळवुं ने स्वभाव भेळातो भळवुंज नहि.॥९२॥

मुमुक्षु होय तेने एम समजवुं जे हुं पोताने पापे करीने मांदो पडयो छुं ने वळी देहने अर्थे नाशवंत ने अति तुच्छ एवा जे पंच विषय ते सारु हरिभक्तनो तथा संतनो अवगुण लेवा रुप पाप करुं छुं तेने हुं क्यां छुटीश ? एम समजीने कोइनो अवगुण लेवो नहि. ॥ ९३ ॥

जीवतो मायाने विषेज सदा वर्ते छे ते मलीन सत्व, रज ने तम तेणे युक्त छे ने इच्छा सहित छे ने श्रीहरिजी महाराज तो प्रथम सतयुगने विषे जीवने सत्वगुणमय शरीरने आपे छे ते पछी जीव जेवा जेवा कर्म करतो जाय छे तेवा तेवा देहने पामतो जाय छे ने सत्संगे करीने श्रीजीमहाराजनी मोटप जेम जाणतो जाय तेम विश्वास पण आवतो जाय छे ने तेम तेम शुद्ध ने प्रकाशवान पण थतो जाय छे. ॥ ९४ ॥

पंच विषयने विषे दोष देखाडीने दुःखरूपपणानी तथा असत्यपणानी वार्ता करवी ते पण सत्पुरुषनी साख्य लावीने करवी. ॥ ९५ ॥

जेने श्रीहरिजीनो महिमा यथार्थ समजाय छे तेने तो आवी स्थिति थाय छे जेम वैकुंठनाथना माहात्म्ये करीने सनकादिकनुं चित्त क्षोभ पामी गयुं केतां अक्षर

स्थितिमांथी बाहेर निसरी गयुं एटले भगवाननी मूर्तिमां संलग्न थइ गयुं ने खबर रही नहि ने जेम रांकने इंद्र पदवी आवे ने तेने जेम आश्चर्य थाय छे एम वर्ताय त्यारे जाणीए जे श्रीहरिजीनो महिमा समजाणो छे. ॥ ९६ ॥

गुणातितानंदस्वामीए स्वभानी वार्ता करी जे श्रीजीमहाराजे एकांतिकमां भेद देखाडयो ने कह्युं जे एवातो आ समये एकज गोपाळानंदस्वामी छे बीजो कोइ ए जेवो नथी. ॥ ९७ ॥

समैयामां जइने सत्पुरुषनी सोबत करीने कमाणी करवी ने तेने वधारवी ते कोइक तो वधारे छे ने कोइक तो घटाडी पण दे छे ने केटलाक तो बरोबर पण राखे छे ते ए कमाणी शी ? तो "श्रीहरिजीने विषे माहात्म्ये युक्त ने धर्मादिक अंगे सहित जे भक्ति करवी" ते पण महत् पुरुषना संगे करीने शीखवी. ॥ ९८ ॥

विद्यार्थीना अभ्यासना द्रष्टांते करीने वार्ता करी जे सदूरुचिनो अभ्यास ने सत्पुरुषनो संग निरंतर राखे तो सदूवासना वृद्धि पामे छे ए रीते बहु वार्ता करी. ॥ ९९ ॥

दश वीश मनुष्ये मळीने जेम गायनो वाघ कर्यो ए द्रष्टांते करीने स्वभावना सत्यपणानी वात करी जे अतिनिर्बळ ने कायर ने इश्वरना बळ तथा पराक्रमने न जाणता एवा जे अज्ञानि मनुष्य तेमणे स्वभावनुं बळ वखाण्युं छे ने जे श्रीजीमहाराजना एकांतिक भक्त छे तेनी आगळ तो स्वभाव अति तुच्छ ने रांक छे ते उपर राजा परीक्षितना द्रष्टांते करीने कह्युं जे जेम राजा परीक्षितनी आगळ कलि जेते अति तुच्छ ने रांक छे ते भागवतमां कह्युं छे जे " [1]किं नु बालेषु शुरेण कलिना धीरभीरुणा ॥ अप्रमत्तः प्रमत्तेषु यो वृको नृषु वर्तते " ॥ १०० ॥

टिटोडीना द्रष्टांते करीने पुरुष प्रयत्ननी वार्ता करी जे जो टिटोडी मंडी तो गरुडे सहाय करी तेम जीव जो साचो थइने एकांतिक थावाने अर्थे साधन शीखे तो श्रीजी तथा तेमना संत जरुर सहाय करे. ॥ १०१ ॥

बे प्रकारनी बुद्धीनी वार्ता करी जे एक बुद्धी तो

१ अर्थः—अधीर अने गाफल पुरुषोना उपर शुरवीर थइने नाहारनो पेठे वर्तता, छतां धीर पुरुषोथी भय पामनारा कलीयुगथी शुं थवानुं छे ? भा. स्कं. १ अ. १८-८ ।

त्रांबादिकने सोनुं करी आपे ने बीजी बुद्धी तो सोनाने राख करी नाखे छे तेम बहु बुद्धिवान संतना समागमे करीने तो एकांतिक भक्त थाय छे ने अल्प बुद्धिवानना संगे करीने तो डोळिओ थइ जाय छे माटे सारा नरसा थयानुं कारण तो सत्संग अने कुसंग छे तेने ओळखीने संग करवो ए रीते बहु वार्ता करी. ॥ १०२ ॥

जीवने पंच विषय संबंधी सुख छे ते तो नवांने नवांज रहे छे ने परमेश्वरने विषे भक्ति जे करवी ने महिमा शीखवो तथा धर्मज्ञानादिक जे गुण शीखवा ते सर्वे जुनां थइ जाय छे एनुं कारण ए छे जे एने श्रीजीमहाराजनो ने एकांतिक साधुनो महिमा समजाणो नथी माटे श्रद्धा अति मंद रहे छे ते सारु सत्पुरुषनो संग अति दृढ श्रद्धा राखीने करवो. ॥ १०३ ॥

त्रण प्रकारना बुद्धिवाननी वार्ता करी जे एकनी बुद्धि तो हजारोना बंधनने कापी नाखे छे ने खान पानादिक सन्मानने विषे बंधायज नहि. ने बीजो घणांने समास करे पण पोतेज सन्मानादिके करीने बंधाइ जाय. ने त्रीजो तो पोतानो समास मांड मांड करे एवी रीते सत्व, रज, ने तमोगुणमय बुद्धिवानना भेद कह्या. ॥ १०४ ॥

क्षमा जेते समर्थने असमर्थ ए सर्वेने राखवी ते समर्थने शोभा छे ने असमर्थने सुखकारी छे ने एणे करीने निर्मानी वर्तमान दृढपणे पाळवानुं कह्युं.।१०५।

पांच प्रकारना मनुष्य संसारनो त्याग करे छे तेमां (१) निर्धन, (२) आळसु, (३) क्रोधी, (४) विचारवान, ने (५) बाळक तेमां बाळकने तो जेवो संग मळे तेवो थाय छ ने अल्प बुद्धिवान संतनो संग मळे तो डोळियो थइ जाय छे जेम बाळकने जेवी गळहुती पाय तेवो बळियो थाय छे तेम गळहुतीने ठेकाणे संग जाणवो ने विदुरनीतिमां कह्युं छे जे "[1]यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग् भवति पूरुषः" ॥१०६ ॥

स्वामीए चैतन्यानंद स्वामीने अतिशे दयाए करीने एम वार्ता करी जे अणु मात्र पण प्रीति मायिक पंच विषयने विषे राखशो मां ए प्रीति तो कल्याणना मार्गने विषे अतिशय विघ्न करनारी छे. ॥ १०७॥

वैराज पुरुष तथा प्रधान पुरुषादिक ए सर्वे श्रीजीमहाराजना महिमाने समजे छे तो पण माया

---

१ अर्थः—पुरुष, जेवा मनुष्योनी साथे बेसे छे, जेवानो संग करे छे, अने जेवो थवाने इच्छे छे तेवो थाय छे. (विदुरनीति. अ. ३६ श्लो. १५।

साथे केम जोडाय छे? उत्तर जे ए ऐश्वर्यार्थि भक्त छे ते सारु जोडाय छे ने ज्ञानी भक्त होय ते तो जोडाय नहि ते माटे ज्ञानीने ज गीतामां श्रीकृष्ण भगवाने श्रेष्ठ कह्यो छे ने ते भक्त जेम श्रीजीने भजे छे तेमज श्रीजी पण तेने भजे छे. ॥ १०८ ॥

भजन स्मरणने जे करतो होय तेने त्रण अवस्था ने तेना त्रण गुणने ओळखवा केमजे देहरूप थइने जो भजन स्मरण करे तो तत्काळ वासनामय देह नाश पामे नहि. ॥ १०९ ॥

धर्म बे प्रकारना होय ने ज्ञान वैराग्य पण होय तो पण भक्ति विना संपूर्ण भक्त कहेवाय नहि ने ए चारे होय तो पण श्रीजीमहाराजनी कृपा विना संपूर्ण भक्त थवाय नहि. ॥ ११० ॥

धर्मादिकमां जे गुण छे तेने पथक् पथक् कहे छे. तेमां धर्ममां ए गुण छे जे धर्मने विषे दृढपणे वर्तती होय तेनो पायो सत्संगने विषे अचळ थाय छे ने ज्ञानमां ए गुण छे जे आत्मा अनात्माना विवेकने यथार्थ समजतो होय तो मान अपमाने करीने तथा सुख दुःखादिके करीने दुःखियो थाय नहि ने वैराग्यमां ए गुण छे जे चार प्रकारना प्रलये करीने श्रीजी

महाराज तथा तेना संत वीना बीजे प्रकृति पुरुषथी लैने तृण पर्यंत क्यांय प्रीति रहे नहि ने महिमामां ए गुण छे जे पुरुषोतमनो महिमा सारी पेठे समजाणो होय तो अक्षरथी लैने वैराज पुरुष पर्यंत कोइनी मोटप मनमां मनायज नहि ने भक्तिमां ए गुण छे जे भक्तिने तो मूर्तिमां चोटवानो स्वभाव छे माटे साकार विना निराकारने विषे कोइ शास्त्रे करीने तथा कोइनी वार्ताए करीने पण कोइ काळे प्रतीति आवेज नहि. ॥ १११ ॥

परमेश्वर विना बीजो कोइ आकार मनमां धराइ जाय तो तेने टाळ्यानी युक्ति शास्त्रने विषे सत्पुरुषे कही होय ते शीखवी ते शुं ? तो भगवान विना जो क्यारेक बीजो आकार मनमां धार्यामां आव्यो होय तो श्रीजीमहाराजना ध्याने करीने तथा सभा सहित संतना ध्याने करीने ने जाणपणारुपे रहीने ए आकार मात्रने टाळी नाखवो ने नित्यप्रलयादिके करीने नाशवंत ने अतितुच्छ ने स्वप्न तुल्य सर्वे आकृतियोने जाणवी ते उपर कारवनाभुवाळानुं मध्यनुं ५५ मुं ने पांचवानानुं नित्ये अनुसंधान राखवानुं छेल्लानुं ३० मुं एम बे वचनामृत वंचाव्यां. ॥ ११२ ॥

एक भक्त तो परमेश्वरने ने जीवसत्ताने देखे छे ने एक तो तेने यथार्थ जाणे छे ए बेमां कयो सरस छे? उत्तर जे देखवा करतां तो यथार्थ जे जाणे छे ते बहु श्रेष्ठ छे ने ए बे गुण जेमां होय तेने कोइ वातनो वांधोज रहे नहि ने ज्ञानी भक्त होय ते एम समजे जे आत्मा तो सृष्टिने आद्ये जन्म्यो नथी ने अंते नाश पण नहि थाय ने मध्ये व्यभिचारने पण पामतो नथी ने देखे छे ने सांभळे छे इत्यादिक जे जे क्रियाओ करे छे ते जीवज करे छे एम द्रष्टा रुपे जे वर्ते छे तेने कोइक गधेडो के मीनडो कहे तो पण मान अपमान इत्यादिक पोताने विषे माने नहि ए ज्ञानी भक्त कहेवाय. ॥ ११३ ॥

आत्यंतिक प्रलयने अंते श्रीजीमहाराज अक्षरधामने विषे जेवा अलौकिक पार्षद, ऐश्वर्यने सामर्थीए युक्त रह्या छे एम यथार्थ जाणवा तेने ज्ञान कहीए ने एना ए भावे सोताज मनुष्यरुप थया छे पण तेमां जे कामादिक सर्वे भाव देखाय छे ते दिव्य छे एम यथार्थपणे समजवुं तेने विज्ञान कहीए त्यां गोपियुंना तथा बळिराजाना दृष्टांते करीने बहु वार्ता करी. ॥ ११४ ॥

भक्ति, वैराग्य, ज्ञान ने धर्म एमना हेतु, स्वरुप ने फळ जे छे तेने प्रथक् प्रथक् कहो? उत्तर जे भक्तिनां कारण तो सत्‌शास्त्रमां भक्ति उपज्यानां जे साधन कह्यां होय ते छे ने श्रीहरिकृष्णजी महाराजने विषे प्रीति छे ते स्वरुप छे ने श्रीजीमहाराज वश थाय ते फळ छे ने वैराग्यनो हेतु पदार्थ मात्रने विषे जे दोष द्रष्टि छे ते छे ने विषय मात्रने त्याग करवानी जे इच्छा छे ते स्वरुप छे ने ते विषयनो त्याग कर्यो होय ने वळी ते विषय मळे तो भोगव्याने विषे रांकपणुं थाय नहि तेने फळ कह्युं छे ने श्रीहरिजीनुं ने आत्मानुं जे ज्ञान छे तेने उपज्यानुं कारण तो सत्‌पुरुषनो ने सत्‌शास्त्रनो जे संग ते छे ने ए बेयनी जेम छे तेम स्थिति पोतानी बुद्धिने विषे निरंतर रह्या करे तेने स्वरुप कहे छे ने श्रीजीने विषे जे माहात्म्ये सहित प्रीति छे तेने फळ कहे छे ने धर्म उपज्यानुं कारण तो धर्मशास्त्रनुं अति आदर पूर्वक जे श्रवण करवुं ते छे ने जे नियम छे ते धर्मनुं स्वरुप छे ने ज्ञान वैराग्यादिकने धारी रहे ए फळ छे.॥११५॥

सत्संगमां तो अन्न वस्त्र यथायोग्य मळे छे तोपण मुंझवण रहे छे तेनुं शुं कारण छे? उत्तर जे मुंझवण तो पंचविषयनी आसक्तिए करीने रहे छे ने ते विष-

थनां बीवां तो अनेक प्रकारनां छे तेने विषे मुंझवण मात्र रही छे माटे पंच विषयनी आसक्ति टाळीने संत थावुं ने ते संतना लक्षण मुक्तानंदस्वामीए "संत-जन सोय सदा मोय भावे" ए चार कीर्तनमां कह्यां छे तेवा संत थवानी दृढ रुचि करवी त्यारे संते कह्युं जे ए चार कितंननो जे भाव होय ते कहो त्यारे "धर्मस्त्याज्यो न कैश्चित् स्वनिगमविहितो वासुदेवे च भक्ति-र्दिव्याकारे विधेया सितघनमहसि ब्रह्मणा स्वस्य चैक्यं ॥ निश्रित्यैवान्यवस्तुन्यणुमपि च रतिं संपरि-

१ अर्थः—कोइपण मारा आश्रितजनोए श्रुति, स्मृतिए कहेलो, पोतानो जे वर्णाश्रम धर्म ते त्याग नज करवो, अने परमात्मा सिवाय बीजी मायिक वस्तु ओमांथी लेश पण रागने छोडी दइ (समग्र वासनाओथी रहित थइ) पोताना आत्मानी अक्षर ब्रह्मनी साथे एकरुपताने विचारी (अर्थात्, हुं अक्षर ब्रह्म छुं, एवी भावना करीने) प्रकाशमान दिव्य श्वेत तेजना समूहरुप अक्षरब्रह्मनामे धाममां विराजमान, दिव्याकार वासुदेव भगवाननो पराभक्ति करवी अने अक्षरब्रह्मधामाधिपति भगवाननुं माहात्म्य जाणवा माटे तेमना एकांतिक संतोनी काया वाणी–मनथी सेवा करवी. ए रीते धर्मपुत्र नीलकंठ भगवाने पोताना भक्तजनो प्रत्ये कह्युं. स. जी. प्र. ५. अ. ५५–२८.।

त्यज्य सन्तस्तन्माहात्म्याय सेव्या इति वदति निजान् धार्मिको नीलकण्ठः'' ए श्लोकने विषे ए चार किर्तननुं रहस्य छे तेने कहीए छीए धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने माहात्म्ये सहित श्रीजीमहाराजनी भक्ति करवी ने तेनुं माहात्म्य जाणवाने अर्थे साचा संतने सेववा ए चार कीर्तननुं रहस्य छे ने जे विषयने विषे आसक्ति छे तेने कोढ जेवी जाणवी ने धर्म ज्ञानादिकने विषे जे आसक्ति उपजे तेने तो पुत्रादिकनी प्राप्ति जेटलो आनंद पामवो. ॥ ११६ ॥

एक दिवस एम वार्ता करी जे गुरु थावुं के शिष्य थावुं ए बेमांथी एक शीखवुं ने बीजे दिवसे सर्वेए पुछयुं के मुंझवण टाळवाने अर्थे एक बे संतने मन सोंप्युं छे के नथी सोंप्युं त्यारे जेणे जेणे जेने जेने मन सोंप्युं हतुं तेणे तेणे तेमनां नाम लइने कही देखाड्यां. ॥ ११७ ॥

त्रीजे दिवसे एम वार्ता करी जे जेनो सत्संगने विषे अचळ पायो होय ने ते कोइ विघ्ने करीने पण सत्संग मुकी शके नहि ते केवा लक्षणे युक्त होय? उत्तर जे एक तो श्रद्धा अतिशय होय ने स्वभाव टाळवाने विषे आग्रह पण घणो होय ने सत्संगनी

भिषण पण सर्वे प्रकारे खमतो होय ने कोइ रीते कचवाइ जाय नहि एवानो अचळ पायो जाणवो ने एवी जातनी समजण नक्कि करवी एज कल्याणनुं मूळ साधन छे. ॥ ११८ ॥

पुरुषोतम भगवान, अक्षर ने अक्षरना मुक्त, पुरुष, काळ, माया, जीव, इश्वर, धर्म, ज्ञान, वैराग्य, माहात्म्ये सहित श्रीजीनी भक्ति, तथा व्यवहार ए सर्वेनुं ज्ञान यथार्थ जाण्युं जोइए ने व्यवहारनुं ज्ञान न जाण्युं होय तो पण मुंझवण आवे छे ते उपर मावा भक्तने द्रष्टांते करीने वार्ता बहु करी. ॥ ११९ ॥

श्रीहरिकृष्णजीनो भक्त होय ने रजोगुणने विषे अति आसक्त वर्ततो होय तो अनिरुद्ध के ब्रह्मा जेवो थाय छे ने तमोगुणने विषे अति आसक्त मति होय तो संकर्षण के शीवजी जेवो थाय छे ने सत्वगुणने विषे अति दृढ आसक्त मति होय तो प्रद्युम्न, तथा विष्णु जेवो थाय छे ने जे एकांतिकना संगे करी भागवत भक्त थाय छे ते तो निर्गुण कहेवाय छे ने ए तो सर्वेने विषे श्रेष्ट कहेवाय छे ने एने विषे पण निर्बळने बळवान होय छे तेमां जे अति बळीआ एकांतिक भक्त होय छे तेतो श्रीजीमहाराजनी आज्ञाए

करीने पद्युम्नादिकने मान आव्युं होय तो तेना मानने उतारीने रुडी रीत्ये स्थित्यादिकने धर्म ज्ञानादिके सोता प्रवर्तावे ने निर्लेप थका पाछा आवीने सेवाने विषे पण तत्पर रहे छे ने जे हरिभक्तने सत्वगुण प्रधान वर्तता होय तेने मुंझवण तो आवे पण ते सत्संगनुं अवळुं करे नहि ने बीजा बे तो अवळुं करे ने बीवे पण नहि ते उपर भिष्म, शंकर, ने अक्रुरने द्रष्टांते करीने वार्ता करी. ॥ १२० ॥

जे विषयने विषे आसक्त छे ते तो भूत प्रेतादिकना अवतारने पामे छे ने जे हरिभक्तनो अवगुण ले छे ते तो आसुर भावने पामे छे. ॥ १२१ ॥

श्रीजीमहाराजने ने तेमना महिमाने ने तेमना धामने ने तेमना अवतारने तथा सत्पुरुषने तथा तेमना महिमाने जे यथार्थपणे जाणतो होय ते सत्संगमांथी कोइ रीते पडे नहि ने सर्वे प्रकारे भिषण पण स्वप्ने ने एवी जातना समजणवाळाना अंतरमां प्रकाश होय छे ने ते ज्यां जाय त्यां भगवानने मुकी शके नहि. ॥ १२२ ॥

जेने श्रीजीमहाराजने राजी करवा होय तेने एम वर्तवुं जे पंच विषयना सुखने अति दुःखदायक जाणीने

तथा देहाभिमाननी आसक्ति टाळीने निर्वासनीक थावुं ने गायन विद्या तथा शास्त्र विद्या आदिक गुणे करीने पोताने विषे गुणवानपणुं न मानवुं ते उपर "मारो मत कहुं ते सांभळो वृजवासीजी ॥ तजो साधननो उर आमळो वृजवासीजी" ए कितननी वार्ता बहु करी. ॥ १२३ ॥

मयाराम भट्टजीने पुछयुं जे उद्धवजी केम वार्ता करता त्यारे भट्टजी बोल्या जे रामानंदस्वामीए एम कह्युं जे आपणा सत्संगने विषे भागवतादिक शास्त्र विद्या ने व्याकरणादिक शास्त्रविद्या तथा गानविद्या ने वाजां ए सर्वे नथी एम वार्ता करता त्यारे संते कह्युं जे हमणां तो ए सर्वेनी प्रवृति जेते सत्संगने विषे श्रीजीमहाराजे अतिशे करावी छे ने गायक तथा पाठक द्वाराए करीने तथा मंदिर ने मूर्ति द्वाराए करीने अनंत रजोगुणी ने तमोगुणी जीवोनां कल्याण पण कर्यां छे. ॥ १२४ ॥

वक्तानी अशुद्धताए करीने शुद्ध शास्त्र पण अशुद्धिपणाने पामी जाय छे एवी रीते शास्त्रनी शुद्ध अशुद्धपणानी वार्ता करी. ॥ १२५ ॥

संत द्वाराए करीने पण अनेक जीवोनां कल्याण

कर्यां ने एकांतिक भक्तने विषे श्रीजीमहाराजनी मरजी ने वार्ता यथार्थ रही छे ते उपर "[1]कस्मै येन विभाषितो-ऽयमतुलो ज्ञानप्रदीपः पुरा तद्रूपेण च नारदाय मुनये कृष्णाय तद्रूपिणा॥ योगीन्द्राय तदात्मनाथ भगवद्राताय कारुण्यतस्तच्छुद्धं विमलं विशोकममृतं सत्यं परं धीमहि" आ श्लोकनी बहु वार्ता करी ने एवा शुद्ध भक्तने विषेज श्रीजीमहाराज निवास करीने रहे छे ते वात आ बे श्लोकमां कही छे "[2]न कामकर्मबीजानां यस्य चेतसि संभवः" तथा "वासुदेवैकनिलयः" ने बीजो भक्त तो पोताना स्वभाव भेळो भळी जाय छे,

१ अर्थः—जे परंब्रह्म परमात्माए कृपा करीने आ अपार ज्ञानना दीपकरुप श्रीमद्‌भागवतने प्रथम ब्रह्मा पासे प्रकट कर्युं, पछी ब्रह्मारुपे नारदमुनिनी आगळ दर्शाव्युं, नारदरुपे श्रीवेदव्यासजीनी आगळ प्रकट कर्युं अने व्यासजीरुपे योगीओमां श्रेष्ट एवा शुकदेवजी पासे प्रकट कर्युं. अने शुकदेवजी रुपे परिक्षित राजानी पासे प्रकट कर्युं ते शुद्ध-निर्मल, शोक रहित, सत्यमूर्ति, अने मोक्षस्वरुप परंब्रह्मनुं ध्यान करीए. (भा. द्वा. अ. १३-१९)

२ अर्थः—जेना चित्तने विषे सकाम कर्मोनी वासना उत्पन्न नथी थती तेने विषे भगवान हमेशां रहे छे एने एक वासुदेव भगवानने विषेज निमग्न रहेनारामां पण तेवीज रीते रहे छे.।

माटे स्वभाव प्रमाणे वर्ते छे ने वात पण तेज प्रमाणे करे छे. त्यारे संते प्रश्न पुछ्युं जे आ भक्त तो स्वभाव प्रमाणे वर्ते छे ने मरजि प्रमाणे वरते छे ते केम जणाय ? उत्तर जे जेनी बुद्धि देश काळादिके करीने फरी जाय तेनुं वर्तन ते स्वभाव प्रमाणे छे एम जाणवुं ने जेनी बुद्धि देश काळादिके करीने न फरे तेनुं वर्तन मरजी प्रमाणे छे एम जाणवुं ने जेणे रात दिवस अतिशय आग्रह राखीने श्रवण मननादिके करीने बुद्धिने विषे एकांतिक भक्तपणुं खचित कर्युं होय तेनी बुद्धि फरे नहि. ॥ १२६ ॥

स्वामी बोल्या जे मने महाराजे कह्युं जे आकार रहित वर्तवुं त्यारे तेमां शंका करी जे मूर्ति भूली जवाशे तो ? त्यारे ते सांभळीने महाराज बहु दिलगीर थइ गया ने नेत्रकमळ सजळ थइ गयां ने एम बोल्या जे "जेने राजी करवाने अर्थे प्रयत्न करे छे ते मूर्तिने केम भूली जवाशे" एम महाराज बोल्या ते दिवसथी मारा हृदयने विषे ए वचन अचळ खुंचि रह्युं छे ने तेमज वर्ताय छे ने श्रीजीमहाराजने एम वर्तवुं गमे छे माटे अनेक युक्तिए करीने ए वार्ता करीए छीए ने एवी स्थितिवाळाने तो अन्य संकल्प थायज नहि ने कदाचित् असत् देशकाळादिकने जोगे करीने जो थाय

तो जेम बीजा देहे करीने प्रायश्चित करीने संतोषने पामे छे तेम ए ज्ञानि न पामे ए तो उपरामरुप प्रायश्चिते करीनेज संतोष पामे छे ते वात " [1]यस्य ज्ञानमयं तपः " ए श्रुतिमां कही छे माटे सवासनिक ने निर्वासनिक हरिभक्तना प्रायश्चितने विषे बहु फेर छे. ॥ १२७ ॥

कोइकने तो भजन करवुं गमे ने कोइकने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रहेवुं गमे ने कोइकने नवधा भक्ति करवी गमे इत्यादिक श्रीजी सबंधी क्रिया जुदी जुदी गमे छे ने कोइकने तो ए सर्वे गमे छे ते केम हशे? उत्तर जे श्रीजीमहाराजने विषे ए भक्त जेवा जेवा भावे युक्त हमणां अथवा मोरे वरत्या होय तेवा गुण ए भक्तने विषे आवे छे ते उपर गुणातितानंदस्वामीना ने मुक्तानंदस्वामीना द्रष्टांते करीने वार्ता बहु करी. ॥ १२८ ॥

जेवा तेवा जीवने श्रीजीमहाराजनो योग थइ जाय छे ने मुमुक्षुने थातो नथी तेनुं शुं कारण हशे? उत्तर जे श्रीहरिजीने जे देशने विषे धर्मनुं स्थापन करवुं होय तथा जे देशने विषे मुमुक्षु बहु होय ते

१ अर्थः—जेनुं ज्ञानमय तप छे. ।

देशने विषे श्रीहरिजीने विचरवानुं थाय छे एटले मुमुक्षुना तथा बीजा सर्वेना पण मोक्ष सहेजे थइ जाय छे ने कोइक मुमुक्षु होय तेनो तो दुर देशने विषे जन्म होय तेथी ते रही जाय छे ने मुमुक्षुने कोइ देशनी वासना तथा नातजातनी पण वासना न राखवी ने प्रकृति पुरुषथी लइने सर्वे पदार्थने नाशवंत ने काखना मुवाळा जेवा ने अति तुच्छ ने स्वप्न तुल्य जाणवा ने श्रीजीमहाराज तथा तेमना मोटा संत तथा जीवात्मा ए त्रण विना बीजे क्यांय प्रीति न राखवी तेम महाराजनी सेवा विना श्वेतद्विपादिक धामने विषे पण वासना न राखवी ने श्रीजीमहाराज तो गमे त्यां राखीने पण कसर मात्र टाळी नाखवाने समर्थ छे माटे सत्तारुपे रहीने तेमना एकांतिक भक्तनो समागम अतिशे राखवो ने तेने अर्थे शीत, उष्ण, भूख, तरश, मान, अपमान, हर्ष, शोक ए सर्वनुं सहन करवुं ने एने विषे वैराग्य पामवो नहि ने पंचविषयने अर्थे जे उद्यम करवो तेमां वैराग्य पामवो ने आवी रुडी भगवद्वार्ता छे. ते पण केटलाकने गमती हशे ने केटलाकने गमती नहि होय. ॥ १२९ ॥

केम समजे तो सदा सुखिओ रहे? उत्तर जे सदा सुखिओ तो ते रहे जे. जेने कोइ पदार्थ जोइए

ज नहि ने जेवां तेवां वस्त्र ने जेवुं तेवुं अन्न ए तो सहजे मळी रहे छे माटे संतोष राखीने वर्ते तो सदाय सुखियुं रहेवाय छे ने विश्वास करवा योग्य तो डोडीआ पुंजा भक्त जेवा सत्पुरुषज छे ने बीजे तो दुःखीआ थावानुं छे. ॥ १३० ॥

ज्ञान तथा वैराग्य विना सुक्ष्मने कारण शरीर टळे नहि ने एकली भक्तिए करीने तो टळे पण खरा ने टळे पण नहि. ॥ १३१ ॥

सर्वे संतने धर्मामृत प्रमाणे वर्तवुं एम वार्ता करीने स्वामी बोल्या जे गृहस्थ हरिभक्तनो महिमा समजीने जो विश्वास करीए तो पोता सरखा करे जेम शृंगी ऋषिने करी नाख्या तेम. माटे आपणे एमनो अति विश्वास न करवो. ॥ १३२ ॥

लोभ, काम ने मान ए आदिक दोषे करीने श्रीजीनी आज्ञा लोपाय छे माटे केम समजे तो न लोपाय ? उत्तर जे "मद्भयाद्वातिवातोऽयं सूर्यस्तपति मद्भयात् । वर्षतींद्रोदहत्यग्निर्मृत्युश्चरति मद्भयात्"

---

१ अर्थः--समग्र जगतने सुख आपनार वायु मारा भयथी वाय छे,—सूर्य तपे छे, इन्द्र वर्षे छे, अग्नि बाळे छे अने मृत्यु मारा भयथी प्राणीओमां विचरे छे. । (भा. तृ. २५-४२)

॥ १ ॥ " यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद्यत्प्रह्वणाद्य-
त्स्मरणादपि क्वचित् । श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते
कथं पुनस्ते भगवन्नु दर्शनाद्" ॥२॥ ए बे श्लोकमां जेम
भगवाननो महिमा कह्यो छे तेवी रीते महिमा समजे
तो आज्ञा लोपाय नहि. ॥ १३३ ॥

एक हरिभक्ते पुछयुं जे जगत खोटुं केम जणाय?
त्यारे स्वामी बोल्या जे जेम बाळको रमत करे छे.
तेमां केटलाक तो सुर्य ने केटलाक तो चंद्र थइने आवे
छे. ने वळी धूडयना वरकन्या, ने धुडयना कंसार ते
मूत्रना घीमां पलाळे छे. ने धुडयना मग चोखा करे
छे. ए सर्वे जेम असत्य छे. तेम संसार व्यवहार पण
असत्य छे. पण तेने बाळकनी पेठे सत्य मान्यो छे.
माटे ए बाळक ज छे. एम कहीने भवायाना रमतना
द्रष्टांते करीने वार्ता करी. ॥ १३४ ॥

जीवनमुक्त विदेहीमुक्त ने कैवल्यमुक्त तेमनी
स्थितिने कहे छे जे जीवनमुक्त तो विषयने विषे

---

२ अर्थः—हे भगवन्! क्यारेक पण जे तमारा
नामनुं श्रवण कीर्त्तन, प्रणाम तथा स्मरणादि करवाथी
श्वपच पण तत्काळ यज्ञ करवाने माटे कल्पाय छे
एटले पवित्र थाय छे तो तमारां दर्शनथी पवित्र
थाय तेमां शुं कहेवुं. । (भा. तृ अ. ३३. ६)

बंधाइ जाय ने विदेही मुक्त छे ते पण असत देश-काळादिके करीने बंधाय ने कैवल्य मुक्त तो तेणे करीने पण बंधायज नहि. ॥ १३५ ॥

प्रथम संसार असत्य जणातो हतो ने श्रीजीमहाराजने विषे हेत पण जणातुं हतुं ने हवे एम केम जणातुं नथी ? उत्तर जे प्रथम ए भक्तनी इंद्रियुंनी वृत्ति विषय सुखने विषे प्रवेश नहोती करी गइ ने सत्संगनो वेग इंद्रियोने विषे लाग्यो हतो ने ते पछी उतरताने योगे करीने ज्यारे विषय सुखनो अनुभव थयो त्यारे सत्संगथी मोळो पडी गयो एज एनो उत्तर छे ने विषय भोगवीने न बंधाय एवातो एक नर-नारायण ऋषि विना बीजो कोइ नथी. ॥ १३६ ॥

विज्ञानदासजीने अवस्था लोपती नथी ने मुंझाता पण नथी ने सदा सुखिआ रहेतां आवडे छे. ने निर्मानीपणुं पण बहु छे. ने श्रीजीमहाराजनो ने सत्पुरुषनो विश्वास पण अतिशय छे. ने गुणातितानंदस्वामी तथा सिद्धानंदस्वामी ए बेयने तो अवस्था लोपाय छे ने मुंझवण पण आवे छे. ते जो पुरुष प्रयत्ने करीने अतिआग्रह करे तो एमने पण मुंझवण आवे नहि. ने कोइक ने तो वात चित करता थका सर्वे क्रियाने

विषे श्रीजीमहाराज देहनी पेठे निरंतर सांभर्या करे छे ने पृथ्वीनी पेठे आधारपणानो विश्वास पण सदा वर्ते छे. ॥ १३७ ॥

व्यापकानंदस्वामीने श्रीजीमहाराजने विषे पुरुषोत्तमपणानो निश्चय थातो नहोतो पछी श्रीजीमहाराजे एमने समाधि करावीने अक्षर धामने विषे अनंतकोटी मुक्त सोतुं पोतानुं दर्शन कराव्युं तो पण निश्चय थयो नहि. त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे आ सर्वे मुक्तोनां रुपने धरी धरीने अमारी पूजा आरती करो त्यारे ते कहेजे केम धारुं ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे "रामानंदस्वामी जो पुपषोत्तम भगवान होय तो मुने सर्वे मुक्तनां रुप धरतां आवडो एम संकल्प करो" त्यारे तेमणे तेम संकल्प कर्यो तो पण न धराणुं त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे "चोवीस अवतार जो पुरुषोत्तम भगवान होय तो एमनां रुपने धरतां आवडो एम कहो" त्यारे तेमणे तेम कह्युं तो पण न धराणुं त्यारे फरीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे "जो आ सहजानंदस्वामी पुरुषोत्तम भगवान होय तो मुने सर्वे मुक्तोनां रुपने धरतां आवडो एम कहो" त्यारे तेमणे तेम कह्युं त्यारे तेमने सर्वे मुक्तोनां रुपने धरतां आव-

डयुं पछी एमने पुरुषोत्तमपणानो निश्चय श्रीजीमहाराजने विषे यथार्थ थयो. ॥ १३८ ॥

एक दिवस श्रीजीमहाराजे व्यापकानंदस्वामीने कह्युं जे "तमे इंद्रलोकमां जाओ" त्यारे तेमणे कह्युं जे "जइ आव्यो" त्यारे फरीने आज्ञा करी जे "ब्रह्माना कमळना नाळनो पार लइ आवो" त्यारे ते कहे जे पार लइ आव्यो. त्यारे वळी आज्ञा करी जे "गोलोक वैकुंठ ने ब्रह्म धामने विषे जाओ" त्यारे ते कहे जे "जइ आव्यो" त्यारे वळी आज्ञा करी जे "भूमापुरुष पासे जाओ त्यारे ते कहे जे "त्यांतो हजार माथानो दैत्य मार्ग रोकीने रह्यो छे ते केम जवाय." त्यारे श्रीजीए कह्युं जे "तमे पण तेवा रुपने धरीने तेने जीतीने जाओ" त्यारे तेणे तेम कर्युं ने फरी तेणे कह्युं जे "बीजो दशहजार माथानो दैत्य आगळ मार्गमां छे ते केम जवाय" त्यारे श्रीजीमहाराज कहे "तमे पण तेथी मोटुं रुप धरीने ने तेने जीतीने जाओ" पछी ते तेम करीने भूमापुरुष पासे गया. त्यारे भूमापुरुषे कह्युं जे "पुरुषोत्तमनो प्रगटपणे पृथ्वीने विषे अवतार थयो?" त्यारे संत कहे "हा थयो." ए वार्ता सांभळीने भूमापुरुष जेते अतिशय गदगद कंठ थइने

राजी राजी थइ जाता हवा. ने ते संतने पोताना सिंहासन उपर बेसारीने अतिशे सुगंधीमान ने अति सरस पुष्प चंदनादिके करीने अतिशे भारे पुजा करता हवा. ने अतिशे आनंदे सोता श्रीजीमहाराजना समाचार पूछीने बोल्या जे मने ज्यारे आ स्थानकने विषे महाराजे मोकल्यो हतो त्यारे कह्युं हतुं जे अमो ब्रह्मांडने विषे पधारशुं त्यारे तमारी पासे संतने मोकलशुं ते वचन आज सत्य कर्युं. एवी रीते परस्पर बे जणे महाराजनी वार्ता सारी पेठे करी पछी ते संते ए लोकना चार भूजावाळा मुक्तोने श्रीहरिजीनी वार्ता करीने एमने पुरुषोत्तमपणानो निश्चय करावीने ब्रह्मपुरने विषे मोकली दीधा ने पछी श्रीजी पासे आवीने पोतानुं वृतांत जेम थयुं तेम कह्युं ते वात सांभळीने श्रीजीमहाराजे विचार कर्यो जे "ज्यारे बादशाह गादीए बेसे त्यारे बंदिवान मात्रने छोडी मुके छे तेम अमारे पण अनेक जीवोनां कल्याण करवां छे. एम विचारीने पोते स्वरुपानंदस्वामीने आज्ञा करी जे "सर्वे नर्ककुंडना जीव मात्रने चतुर्भुजरुप धरावीने भूमापुरुषना लोकमां मोकलो" त्यारे ते संते तेम कर्युं एवी रीते श्रीजीमहाराजे पोतानुं पुरुषोत्तम पणुं अतिशे प्रगट कर्युं छे. ॥ १३९ ॥

जीव मात्रने अतिशय बंधनकारी कयुं पदार्थ छे ? उत्तर जे कोइके तो स्नेहनुं कह्युं ने कोइके तो माननुं कह्युं ने कोइके तो स्त्री द्रव्यादिकना बंधननुं कह्युं एवी रीते घणे प्रकारे करीने कह्युं ने गोपाळानंदस्वामीए कह्युं जे अतिशय बंधनकारी तो देहाभिमान जणाय छे ने श्रीहरिजीए पण वचनामृतमां कह्युं छे जे, देहाभिमानने विषे सर्वे दोष रह्या छे. त्यां दृष्टांत छे जेम मोटुं फळीउं होय ने तेमां वच्चे मोटो खाडो होय ने ते वळी तरणे करीने ढंकाणो होय तेमां जेम सर्वे आवी आवीने पडे छे तेम देहाभिमानरुप खाडो छे ते पंच विषयरुप तरणे करीने ढंकाणो छे ने तेने विषे लोभ, काम, रसास्वाद, स्नेह, ने मान, आदिक सर्वे दोष आवी आवीने पडे छे माटे सत् असत्‌ना विवेके करीने देहाभिमानरुप खाडाने काढवाने अर्थे निरंतर सद्‌विचार कर्या करवो ने देहने वृक्षरुपे करीने पण कह्यो छे तेमांथी मनरुपी अंकुर थाय छे ने अहंममत्व रुपी मोटां मोटां बे डाळां थाय छे ने दश इंद्रियोरुप नानां डाळखां थाय छे ने संकल्प विकल्परुपी अति नानी डाळखीओ थाय छे ने तेणे करीने जीव जे कर्म करे छे ते रुप पांदडां थाय छे ने जेम पत्रे करीने वृक्ष वधे छे तेम कर्मे करीने अनंत देह आवे छे. ॥१४०॥

परोक्ष अवतारना भक्तमां ने प्रत्यक्ष अवतारना भक्तमां केटलो फेर छे? परोक्ष अवतारना भक्त तो रुपा जेवा छे. ने ब्रह्मादिक ने इंद्रादिक देवना भक्त तो पितळ ने कांसा जेवा छे ने मद्य मांसना खानारा जे तमोगुणी देव छे तेना भक्त तो कथीर अने लोढा जेवा छे ने प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमना जे एकांतिक भक्त छे तेतो कुंदन ने जांबुनद सुवर्ण ते जेवा छे अने तेमांतो भारे चमत्कार रह्यो छे तेनी विगत जे जोडीआ गाममां विश्राम सुतारे लाखो कीडिओनुं कीडिआरुं जोयुं त्यारे तेने दया आवी ने एम बोल्या जे आ बिचारा जीवोनुं केम कल्याण थाशे? एटलामां तो करोडो विमान आव्यां तेमां बेशीने ए सर्वे कीडिओना जीव चतुर्भूज रुप धारीने देवलोकमां गया एवी रीते प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवानना भक्तनो तो एवो मोटो महिमा छे. ॥ १४१ ॥

वळी रतना भक्तनी वार्ता करी जे एने भाणेजे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमना संतने बे रोटला आप्या हता तेनी प्राप्तिनी वार्ता करीने कह्युं जे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमना भक्त छे ते तो संतने रोटलानो लोट दे छे ने आभक्त तो सदाव्रत आपे छे तो पण ए करतां ते रोटलानो लोट अधिक थाय छे. ॥ १४२ ॥

मुक्तानंदस्वामीने निश्चय थातो नहोतो त्यारे रामानंदस्वामीए आवीने कह्युं जे श्री सहजानंदस्वामी पुरुषोत्तम भगवान छे ने अमे पण एमनाज दास छीए एवी रीते प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमना भक्तनी अतिशे मोटप छे ने लगारेक एमना संबंधे करीने अतिशे मोटुं काम थइ जाय छे. ॥ १४३ ॥

वक्ता जो मुमुक्षुने ओळखीने भगवद् वार्ता करे तो समास थाय छे केम जे कोइकने तो भक्तिनुं अंग होय ने कोइकने ज्ञाननुं अंग होय ने कोइकने वैराग्यनुं अंग होय ने कोइकने स्वरूप निष्ठानुं अंग होय ने कोइकने महिमानुं अंग होय एवी जातना अनेक प्रकारना अंग मुमुक्षुने होय छे ते माटे ते ते अंगनुं स्थापन करीने पछी जो ज्ञानादिक अंगनी वार्ता हळवे रहीने समजावे तो समजे ने बहु समास थाय. ।१४४।

तमोगुण केम टळे ? उतर जे लाज राखे तो टळे तेनी विगत जे पोता थकी जे मोटेरा होय तेनी तथा भाइ, बाप, काका, आदिकनी तथा साधुसंतनी तथा मोटेरा सत्संगीनी ए सर्वेनी लाज राखवी ने सांख्य विचारे करीने तो कोइकनेज तमोगुण टळतो हशे ने घणाकने तो लाजे करीने तमोगुण टळे छे ने व्यवहा-

रमां पण क्षत्रिय आदिक वर्णमां पण एमज देखाय छे. ॥ १४५ ॥

ज्यारे नटवानी डुगडुगी वागे छे त्यारे मनुष्य सर्वे घरमांथी बाहेर निसरी आवे छे एतो द्रष्टांत छे ने सिद्धांत तो एम छे जे ज्यारे पंच विषय संबंधी डुगडुगी वागे छे त्यारे आत्मा अनात्माना विचारने मुकी दे छे ने श्रीजीने तथा तेमनी कथा वार्ताने मुकी दइने लोभरुपे कामरुपे रसास्वादरुपे स्नेहरुपे मानरुपे ने देहाभिमानने योगे करीने अहं–ममत्वरुपे थइ जवाय छे. ने संकल्प विकल्पने योगे करीने पण देहरुपे थइ जवाय छे माटे सत्तारुपे थइने अति दृढाव करीने स्थिर बुद्धि राखवी. ॥ १४६ ॥

संसारमां रहीने विषय केम जीताय ? उत्तर जे नियम राखे तो जीताय छे तेनी विगत जे जेम जैनना मतवाळा छे ते आवी रीते नियम राखे छे जे मारे आ वर्षमां दश शेर रताळुं खावां छे. तेम सत्संगीने पण आ वर्षमां ने आ महिनामां मारे आवी रीते वर्तवुं छे एवी रीते नियम राखवां एम वर्तवाथी विषय जीताय छे. ने विषय सुखने विषे तो केवळ दुःखज रह्युं छे केम जे मोटा मोटा जे राजा छे तेमने खावा पिवाने विषे

ने सुवाने विषे स्त्री पुत्रादिकनो विश्वास आवेज नहि अने दिकरो होय ते बापने मार्यानो लाग जोतो होय ने बाप पण पूत्रने मार्यानो लाग जोतो होय ने मा दिकराने विषे ने धणी धणीआणीने विषे पण एमज छे माटे संसारनां सुख आवां छे तो पण जीव विषयने विषे अति आसक्त छे माटे ए मूर्ख छे ते सारुं नाशवंत ने स्वप्नतुल्य ने अतिशे तुच्छ जे विषय सुख तेने अर्थे अनेक प्रकारनां दुःखने सहन करे छे ते माटे जो सत्पुरुषना संगे करीने शुद्ध आत्मसत्तारुप रहीने श्रीजीमहाराजनुं भजन करे तो संसारमां सुखिओ रहे ने विषय पण जीताय. ॥ १४७ ॥

स्वभाव टाळवाने अर्थे पुरुष प्रयत्न करता नथी ने निष्फकर रहे छे माटे तेने स्वभाव हशे के नहि होय ? उत्तर जे स्वभावतो छे पण कोइक तो आश्रयनुं बळ राखे छे ने केटलाकने तो प्रमाद बहु छे ने केटलाकने तो स्वभाव ओळखातोज नथी ने केटलाक तो महत्पुरुषना संगे करीने स्वभाव टाळवाने अर्थे पुरुष प्रयत्न पण करे छे अने मान, क्रोध ने इर्षा ए कल्याणना मार्गने विषे विरोधि छे ने ए दोषे करीने संकर्षण ने वैराज पुरुष जेवा मोटा थाय छे पण एकांतिक भक्त जेवा तो थाताज नथी ने सत्पुरुषना प्रसंगे करीने

साचो थइने जो स्वभावने टाळे तो अल्पकाळमां टळी जाय. नहि तो अंत समे पण टळी जाय ने जो एम नहि करे तो बद्रिकाश्रमने विषे ने श्वेतद्विपने विषे जइने पण स्वभावने टाळवा पडशे. ने ए बे स्थानकने विषे कल्पजीवी सर्वे छे माटे त्यां सुधी पुरुष प्रयत्न करवो पडशे. ॥ १४८ ॥

दृढ उपासनानुं शुं रुप छे ? (१) स्थानकने ओळखे ते जे स्थानकने विषे श्रीजीमहाराजे पोतानुं करीने घणां वर्ष सुधी निवाश कर्यो होय तेनुं कोइ घसातुं बोले तो खमी शके नहि ने जेम छे तेम यथार्थ उत्तर करे ने आज्ञाए करीने बीजे ठेकाणे रहेतो होय तो पण त्यां हेत वधु राख्या करे ने तेनो यश गाया करे ने संभार्या करे (२) श्रीजीमहाराज छे ते तो सर्वना कर्ता छे ने सर्वना नियंता छे ने सर्वने सुखना आपनारा छे ने सर्वना अंतर्यामी छे एवा ए जे श्रीजी ते जेते सत्संगने विषे कोइक मोटो विक्षेप जो आवी पड्यो होय तो तेने टाळवाने अर्थे कोइक हरिभक्त द्वाराए वार्ता करीने तेने टळावी नाखे ने संप करावी दे तो तेने सत्य जाणवुं जेम शुकजी सर्वे वृक्ष रुपे बोल्या ते सत्य मनाय छे तेम मानवुं. (३) श्रीजी महाराज तो योगेश्वर छे ने सर्वे विद्याना ने सर्वे

कळाना निधि छे माटे एमनां ऐश्वर्यने विषे शंकाज नथी अने जे ऐश्वर्यवाळा शुकजी आदि योगी छे तेमनुं ध्यान थाय नहि ने ध्यान तो एक प्रत्यक्ष मूर्ति श्रीहरिजीनुंज थाय. एम श्रीजीमहाराजने महिमा सोता यथार्थ समजे ने तेमना एकांतिक भक्तने ओळखे ने एमनो विश्वास पुर्वक मन, वचन, कर्मे करीने समागम कर्या करे ए त्रण प्रकारनीं समजण ने अतिशय दृढता तेणे करीने उपासना पक्व थाय छे. ॥१४९॥

विश्वास केम थाय ? उत्तर जे श्रीहरिजी महाराजनी आज्ञा जेने होय जे तमे धर्मने विषे रहेजो ने बीजाने पण रखावजो ते माटे पोते धर्मने विषे यथार्थपणे वर्तता होय ने बीजा बहु मनुष्यने पण वर्तावता होय एवी जातना ऐश्वर्यने जोइने तेनो विश्वास करवो ने एवानो संग करीने निर्वासनिक थावुं ने एवा सत्पुरुषने मन सोंप्या विना तो ब्रह्मा तथा वैराज तथा संकर्षण जेवाने पण कसर रही जाय छे ने ए समर्थ तो बहु छे पण वासना टाळ्या विना सकाम भक्त कहेवाय छे. ॥ १५० ॥

आटली वार्ता कल्याणने अर्थे समजवानी छे जे जीव छे ते इंद्र ब्रह्मादिक देवने विषे तथा मनुष्य, पशु,

आदिक योनीने विषे अनेकवार जन्म मरणने पाम्यो छे तो पण पोते तो एवो ने एवो शुद्ध छे जेम आकाश चार भूतना संगे करीने रंच मात्र पण मेलो थतो नथी तेम ए आत्मा शुद्ध छे ने प्रकट भगवानना आश्रय थया पछी ए आत्माने अक्षर संगाथे मनन द्वाराए करीने एकता समजीने श्रीजीमहाराजनुं भजन करवुं ने पोताने प्रत्यक्ष मल्या एवा जे श्रीजीमहाराज तेमने सर्व अवतार थकी विलक्षण समजवा ने एमनुं जेवुं बोलवुं छे, ने एमनी जेवी चाल छे, ने जेवुं सुगंधीपणुं छे, ने जेवी लावण्यता छे, ने जेवी वात्सल्यता छे, ने जेवी दया छे, ने जेवुं ज्ञान छे, ने जेवुं तेज छे, ने जेवुं ऐश्वर्य छे, ने जेवुं बळ छे, ने जेवुं स्वरुप छे, ने जेवी शक्ति छे, ने जेवो स्वभाव छे, ने जेवो गुण छे, ने जेवी विभूति छे, ने जेवुं सुंदरपणुं छे, ने जेवुं सुकुमारपणुं छे, ने जेवुं सुशीलपणुं छे, ने जेवुं उदारपणुं छे, ने जेवुं उज्वळपणुं छे. इत्यादिक अनंत गुण गणमंडन रुप तो एकज श्रीजीमहाराज छे ए जेवा बीजा कोइ नथी. ने अक्षरथी लइने ब्रह्मादिक पर्यंत ए सर्वे जेते पुरुषोत्तम श्रीहरिजी महाराज तेमनी उपासना ने भजन स्मरण करे छे ने एवा ए श्रीजीमहाराज छे तेमनी प्रसन्नताने अर्थे नवधा भक्ति अतिशे हेते सहित करवी

ने ए वार्ता श्रवण मननादिके करीने अति दृढ करवी. ॥ १५१ ॥

जेने दश विस पचास के सो मनुष्य मानतां होय तेने गंडवा थाय छे तेना भेळा जे मनुष्य रहेता होय ते जो ते रोगने ओळखे नहि तो तेमने पण गंडवा थाय छे माटे ज्ञानांशनुं एवे ठेकाणे जरुर काम पडे छे. ने जेने ज्ञान होय ते तो ए रोगने ओळखी राखे ने ते मोट्यपमां लेवाय नहि ने जे आवा मोटा स्थानकने विषे रहेता होय तेने तो ज्ञानांशनी वार्ता जरुर समजवी जोइए केमजे कोइक कोठार जोग होय ने कोइक तो भंडार जोग होय ने कोइक तो मंदिरमां पुजा करवाने विषे जोग होय, एवा अनेक प्रकारना मनुष्यो होय छे. ते सर्वेने ओळखीने जेने ज्यां जेम घटे त्यां तेने तेम प्रवर्ताव्युं जोइए केम जे कोइक तो बेठाळु होय ते वातचित्ते करीने समास करतो होय ते पण जाण्युं जोइए माटे ज्ञाननुं काम तो बहु पडे छे ने माणस भेळा करवा ए तो कांइ कठणज नथी पण तेने रुडी बुद्धि आपीने हरिभक्त करवो ए कठण छे ए तो ज्ञानी भक्तने ज आवडे छे ने ते गंडवा तो मास बे मास के छ मास रहे ने वर्ष बे वर्ष ने दस विस वर्ष पण रहे ने कोइकने तो आवरदा पर्यंत

रहे छे ने तेतो लोभ, काम, रसास्वाद, स्नेह, मान इत्यादिक संबंधी होय छे तेने ज्ञानवान ओळखे छे ने बीजाने तो ओळखायज नहि ते उपर विवेकसारनी वार्ता करी देखाडी ने आचार्यनी रुचिना लोयाना १४ ना वचनामृतनी पण वार्ता करी देखाडी. ॥१५२॥

जे ज्ञानी भक्त होय ते अतिशे श्रेष्ठ होय ने तेनां वचन पण धर्म ज्ञानादिके युक्त होय तेथी बळवान बहु होय माटे तेना वचनने विश्वास पूर्वक त्वरात्रान थइने मुमुक्षु जो श्रवण करे तो तेने सत्य असत्यनी विक्ति तथा बहु बुद्धिवान तथा अल्प बुद्धिवान हरि-भक्तनी विक्ति जणाइ आवे छे ने श्रवण मननादिके करीने ज्यारे ज्ञानांश पक्वताने पामे छे त्यारे सर्वे वक्ताना वचननुं प्रमाण थइ आवे छे माटे गमे तेवो पंडित होय ने गमे तेवो डाह्यो होय ने गमे तेवो मोटेरो होय ने गमे तेवो वाचाळ होय ते सर्वेनी परिक्षा आवी जाय छे जे आ बहु बुद्धिवान भक्त छे ने आ नथी माटे मुमुक्षुने संग, सोबत, वातचित इत्यादिक सर्वे क्रिया सत्पुरुष-नीज गमे छे ने एमना वचनने विषे जे बळ छे तेने द्रष्टांते करीने कहे छे ने श्रीजीमहाराजनी मरजी प्रमाणे वर्तता धर्मवाळाने गरीब एवा जे सप्तर्षि तेना वचननो

उपरिचर वसुए जो अनादर कर्यो तो ए विमानमांथी पृथ्वी पर पडी गयो ने वळी पाताळमां पण पेशी गयो ने इंद्रे जो ए सप्तर्षिनुं अपमान कर्युं तो धान्यने ने दांतने हजारो वर्ष सुधी वैर रह्युं एवुं महत्पुरुषना वचनमां बळ छे ने श्री रामचंद्रजीए परशुरामजीने रांक ब्राह्मण करी मुकया एवुं मोटाना संकल्पमां पण अपार बळ रह्युं छे. ॥ १५२ ॥

त्यागी तथा ग्रहस्थ ए सर्वे सत्संग करे छे ते उपरछलो करे छे पण जीवने विषे प्रवेश करावतां आवडतो नथी ने सत्पुरुष पासेथी एवी युक्ति पण शीखता नथी त्यारे कहेशो जे सत्संग उपरछलो केम जाणवो तो त्यां कहीए छीए जे बाहेर दृष्टिए करीने श्रीजीमहाराजनी नवधा भक्ति करे छे पण पोतानी हाण वृद्धिनो तपास अंतरमां करता नथी एने उपरछलो सत्संग जाणवो तेनी विगत जे कोइकने तो प्राकृत ग्रंथ तथा संस्कृत ग्रंथ भणवाने विषे तथा ए ग्रंथने लखवाने विषे लग्नी छे ने कोइकने तो गान विद्यादिकने विषे लग्नी छे. ने कोइक ग्रहस्थने कथा वार्ता कीर्तन सांभळवाने विषे लग्नी छे ने कोइकने तो ग्रहस्थ हरिभक्त साथे भाइबंधाइ रुप सुवाणने विषे लग्नी छे तथा कोइकने धर्मशाळा, फुलवाडी, कुवा, वाव्य,

तीर्थ कराव्याने विषे लग्नी छे, ए सर्वे भक्ति तो खरी. पण पोताना मन गमती उपर छली कहेवाय छे कहेतां देहरूप थइने अहंममत्व सहित कराय छे माटे एवी भक्तिने विषे पण मोटानी आज्ञाए करीने जेम घटे तेम प्रवर्तवुं. ॥ १५४ ॥

मोक्षार्थीने करवानुं तो आटलुंज छे जे सत्पुरुषने संगे करीने धर्म, ज्ञानादिक जीवने विषे प्रवेश करावीने साधुता शीखवी ते साधुता तो तो शीखाय जो मनगमता विषयनी प्राप्तिए करीने मन टाढुं न थाय ने अप्राप्तिए करीने मन उनुं पण न थाय ए वार्ता श्रीजीमहाराजे प्र. प्र. २० ना वचनामृतमां कही छे जो जीव देहरूप थइने रूप, कुरूप, बाळ, यौवनादिक अनंत पदार्थ जुवे छे ने श्रोत्र, त्वक्, रसना, ने घ्राणे करीने पण विषय सुखने भोगवे छे ने जाणे छे पण पोते पोताना सुखने भोगवतो नथी ने पोते पोताना रूपने जाणतो पण नथी एज सर्वे अज्ञानीमां अतिशे अज्ञानी छे ने एज घेलामां अतिशे घेलो छे ने एज मूर्खमां अतिशे मूर्ख छे ने एज सर्वे निचमां अतिशे निच छे जे अंतर सन्मुख दृष्टिए करीने पोताना रूपने जोतो नथी ने सत्संग जीवमां प्रवेश करावतो नथी. ॥ १५५ ॥

वळी मळमुत्रना भर्यां थका पुजा न करवी ने नाही धोइने पुजा करवी एम श्रीजीमहाराजे अमदावादना बीजा वचनामृतमां कह्युं छे. माटे आत्मसत्ता रुपे थइने लोभ, काम, रसास्वाद, स्नेह, मान, क्रोध, इर्षा, कपट, हिंसा, मत्सर, इत्यादिक जे अधर्मसर्ग तेने काढीने ने धर्मसर्गना जे ज्ञान, वैराग्य, शम, दमादिक सद्गुण तेने जीवने विषे प्रवेश कराववा ने वारम-वार तपास कर्या करवो जे मारे विषे साधुताना गुण केटला आव्या छे ने केटला नथी आव्या. ने श्रीजीनो केटलो विश्वास छे ने नैष्ठिकने अहिंसा ने धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति तथा श्रीजीनुं माहात्म्ये सहित ज्ञान ने सत्पुरुषनो महिमा केटलो आव्यो छे ने केटलो नथी आव्यो एम तपास करीने पाको पायो करवो कहेतां असुर भावने अंतरमांथी काढीने जीवने विषे सत्संगनो वेग लगाडी देवो एम निरंतर विचार कर्या करवो ने एमां वैराग्य पामवो नहि ने एवी रीते तपास कर्या करवो ने एम तपासीने जो न वर्ते ने पोताना मन गमती भक्तिने विषे प्रवर्ते तो तेने कोइक कारसो आवे तो सत्संगने विषे एनो पग टके नहि ने एम कहे जे मारा उपर आणे कारसो कर्यो पण पोतानी भूल तो जुवेज नहि. ॥ १५६ ॥

भगवानने सर्व कर्ता थका अकर्ता केम समजवा? उतर जे, "[1]रामो न गच्छति न तिष्ठति" एम अकर्ता श्रीजीमहाराज नथी ए तो अक्षरधामने विषे जेवा अलौकिक ऐश्वर्य, पार्षद ने सामर्थी सोता विराजे छे तेवाने तेवाज मनुष्य भावने विषे पण वर्ते छे एवा थका अक्षरथी पर छे ने सर्वेना नियंता छे ने सर्वेना प्रकाशक छे ने सर्वना कर्ता छे एवा जे श्रीजीमहाराज तेमनी जे सर्वे क्रिया छे. ते जीवोना कल्याणने अर्थे छे ने ज्ञानाकार छे. ने पोताना सुखने अर्थे नथी माटे अकर्ता छे वळी जेम कोइके सो मनुष्य मारी नाख्यां होय ने बीजा सोने मारवाने अर्थे सोमलखार नंखावीने लाडुनुं जमण करावतो होय त्यारे ए ते मारे छे के जमाडे छे ए तो मारेज छे ने वळी जेम कोइक काम्य यज्ञ करे छे तेमां देवने आराधे छे त्यारे ए ते देवने अर्थे करे छे के स्वर्ग सुखने अर्थे करे छे? ए तो स्वर्ग सुखने अर्थेज करे छे. तेम परमेश्वर जेते उंच, निच, योग्य, अयोग्य, जे जे क्रिया करे छे ते सर्वे जीवोना कल्याणने अर्थेज करे छे पण पोताना स्वार्थने अर्थे लेश मात्र करता नथी माटे सर्वे क्रियाने

---

१ अर्थः—राम जतो नथी तेम उभो पण नथी रहेतो.।

कर्ता थका अकर्ता छे एम अज्ञानी जीव नथी समजता ने ते पोता जेवा जाणीने लोभ, कामादिक भाव इश्वरने विषे कल्पे छे ने शास्त्रने विषे जीवोना कल्याणने अर्थे जे नियम कह्या छे तेने पण खोटा कल्पे छे ने ए सत्पुरुषनो द्वेष करे छे माटे असुर भावने पामी जाय छे ने एना कल्याणने अर्थे पण ए नियम थाता नथी ने इश्वरनां चरित्र तो सर्वे दिव्य छे ने जीवना कल्याणनोज छे आग्रह जेमने विषे एवा छे• ने कोइकनुं पदार्थ कोइकने दइ देछे ने कोइनी वहु दीकरी होय तेने कोइने दइ देछे ने कोइनी बहेन स्त्री होय तेने कोइने दइ देछे एवां अनंत प्रकारनां जे चरित्र तेने दिव्य समजे ने एम जाणे जे एमनुं कल्याण एमज कर्ये थातुं हशे एम परमेश्वरना चरित्रने विषे अलौकिकपणुं समजे ने एम पण जाणे जे महाराजने तो कोइ पदार्थ जोइतुं नथी ने जे जे वस्तुनुं ग्रहण करे छे ते तो जीवना कल्याणने अर्थे केवळ दयाए करीनेज करेछे ने पोते तो अन्न, जळ, विना वायु भक्षण करीने रहेता माटे सर्वे क्रियाओने कर्ता थका पण अकर्ता छे ने एनी सर्वे क्रिया कल्याणरुपज छे ने दिव्य छे त्यां बे श्लोक छे " जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो

१ अर्थः—मारां जन्म अने चरित्र दिव्य छे,*

वेत्ति तत्त्वतः । त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ! " ॥ " न मां कर्माणि लिंपन्ति न मे कर्मफले स्पृहा ॥ इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते " ॥ १५७ ॥

जीवात्माने मनन द्वाराए करीने अक्षरना साधर्म्यपणाने पमाडयो होय ने सत्तारूपे वर्ततो होय ने जगतनी सर्वे क्रियाने स्वप्न तुल्य ने नाशवंत ने कागना मुवाळा जेवी अतितुच्छ समजतो होय ने तेने श्रीहरिजी कहे जे जगतना सर्वे वैभव असत्य छे ने अतिशे दुःखरुप छे ने असार छे तो ए वचन यथार्थपणे सत्य मनाइ जाय छे ने एवा ज्ञानी भक्त तो जीवात्माने पण निर्दोष ने अकर्ता माने छे ने श्रीहरिजीने पण अलौकिक ने अकर्ता सम्यक् प्रकारे समजीने जे भजन

*आ प्रमाणे जे यथार्थपणे जाणे छे ते पुरुष देहनो त्याग करीने फरीथी जन्मने नथी पामतो, परंतु मनेज पामे छे, (गी. ४-९ ।

१ अर्थः—कर्मो मने बंधनकारक थतां नथी तेमज कर्मना फलरुप भोगमां पण मने इच्छा नथी. आ प्रमाणे मने जे यथार्थपणे जाणे छे ते फलनी आसक्तिनां कारणरुप शुभा शुभ कर्मोथी बंधातो नथी. (गी. ४-१४)

સ્મરણ કરે છે તેને પણ કર્મ વળગતું નથી કેમજે જુઓને અર્જુન હતા તેમણે શ્રીકૃષ્ણનો યથાર્થ મહિમા જાણીને ને એમને વિષે અકર્તાપણાને સમજીને ને પોતાને આત્મ સત્તારૂપ માનીને અકર્તાપણે વર્ત્યા તો કર્મ વળગ્યું જ નહિ ત્યાં શ્લોક છે જે "ન કર્તૃત્વં ન કર્માણિ લોકસ્ય સૃજતિ પ્રભુઃ ॥ ન કર્મફલસંયોગં, સ્વભાવસ્તુ પ્રવર્ત્તતે" "યસ્ય નાહંકૃતો ભાવો બુદ્ધિર્યસ્ય ન લિપ્યતે ॥ હત્વાપિ સ ઇમાલ્લોકાન્ ન હંતિ ન નિબધ્યતે" "નૈવ કિંચિત્કરોમીતિ યુક્તો મન્યેત

---

૧ અર્થઃ—સમર્થ યોગી દેહના અહંભાવે કરીને પ્રવર્તતું કર્ત્તાપણું, આશ્રમના અભિમાન થકી મમતાએ કરીને પ્રવર્તતુ કર્મ, અને તે તે કર્મ થકી ઉપજતો દેવાદિક ફલનો સંયોગ તેને નથી ઉપજાવતો. પરંતુ પ્રાચીન શુભા શુભ કર્મથી ઉત્પન્ન થયેલી દેહેંન્દ્રિયાદિ રૂપ પ્રકૃતિજ પ્રારબ્ધ કર્માનુસારે પ્રવર્તે છે. (ગી. અ. ૫–૧૪)

૨ અર્થઃ—જે મુમુક્ષુને દેહાભિમાનથી થતા કર્મના કર્તાપણાનો સંકલ્પ નથી ઉપજતો, અને કર્મ સંબંધી મમતા તથા ફલને વિષે જેની બુદ્ધિ બંધાતી નથી. તે પુરૂષ સમગ્ર લોકને યુદ્ધને વિષે મારીને પણ નથી મારતો અને તે કર્મે કરીને બંધાતો પણ નથી. (ગી. અ. ૧૮–૧૭)

तत्त्ववित् ॥ पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन् स्वपन्श्वसन् ” “ प्रलपन् विसृजन् गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेषु, वर्तंत इति धारयन् ” एवी रीते ज्ञानी हरिभक्तनुं वर्तन कह्युं त्यारे परमेश्वरनुं तो ते करतां पण अतिशय अकर्तापणे करीने वर्तन सर्वे श्रुति, स्मृतिने विषे कह्युं छे जे कर्ता अकर्ता अन्यथा कर्ता परमेश्वरज छे. ॥ १५८ ॥

घरमां रहेता होइए त्यारे बहु महिमा जणाय छे ने भेगा रहे नथी जणातो ते केम हशे? उत्तर जे त्यागीने वेषे करीने सरखा थया ने वळी भेगा रहेवे करीने जेवुं जेनुं वर्तन होय ते जणाइ आवे छे माटे भार रहेतो नथी ने जे मोटा पुरुष होय तेतो शिक्षापत्री, धर्मामृत, ने निष्काम शुद्धि एमप्रमाणे वर्ते छे ने बीजाने पण एमज वर्तवानी वार्ता करे छे तेनो तो महिमा बीजाने सहजेज रहे छे ने जे सत् असत्ने

१ अर्थः—आ प्रमाणे आत्म तत्वने जाणनारो योगी पुरुष श्रोत्रादिक ज्ञानेन्द्रियो, वाक् आदिक कर्मेन्द्रियो, अंतःकरण ने प्राण तेथी ते ते क्रियाओने करतां छतां पण हुं कंइ नथी करतो पण सर्व इन्द्रियोज पोतपोताना विषयोमां प्रवर्ते छे एम माने.
(श्रीमद्‌भ. गी. अ. ५ श्लो. ८-९)

ओळखतो होय तेने तो गरबडीआनो भार रहे नहि. ॥ १५९ ॥

सुतार खीमा भक्ते श्रीजीमहाराजनी लीलानी बहु वार्ता करी तेने सांभळीने स्वामी कहे जे महाराजे तो सुख दीधामां कोइ रीते खामी राखी नथी पण आपणे महिमा समजता नथी ने केवळ खोटज खाइए छीए त्यारे ते भक्ते कह्युं जे महिमा समजे त्यारे केम वर्ताय ? उतर जे केवळ श्रीजीमहाराज सामुंज जोइ रहेवाय त्यारे कोइक संते कह्युं जे जोवे करीने बहु सुख जणातुं हशे ? त्यारे कह्युं जे जोवामां तो बहुज सुख रह्युं छे केम जे ए सुखनी प्राप्तिने अर्थे तो मोटा मोटा जेते अहंममत्वने मुकी दे छे ने तेने मुकवानो उपाय तो कर्मयोग, भक्तियोग ने ज्ञानयोग छे तेनी वार्ता विस्तारीने कही जे ज्ञानयोग जेने होय तेने एम वर्ते छे " कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ॥

१ अर्थः—भगवाननी आराधनारुप कर्मने विषे आत्मज्ञान रह्युं छे. एम जुए अने आत्मज्ञानने विषे कर्मने जुए. अर्थात् आत्मज्ञान साक्षात्कार थयुं होय तो पण भगवद् भजन स्मरण रुप कर्म अवश्य करवुं जोइए, ए प्रमाणे जाणे ते बुद्धिमान छे. (गी. अ. ४–१८)

स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्न कर्मकृत् "।१६०।

मावा भक्ते प्रश्न पुछयुं जे रामचंद्रजी भगवान जेते रावणने मारीने सीताजीने लाववा सारुं लंकामां ज्यारे गया हता त्यारे त्यां राक्षसे नाग पासे करीने रामचंद्रजी भगवानने बांध्या त्यारे त्यां गरुडजी आव्या त्यारे सर्वे नाग जेते रामचंद्रजीनो त्याग करीने भागी गया त्यारे गरुडजीने संशय थयो जे आ रामचंद्रजी तो भगवान छे ने आम केम हशे? एवी रीते गरुडजीने संशय केम थयो? उत्तर जे गरुडजी तो भगवानना पार्षद छे तो पण एमणे भगवानना दिव्य भावने तथा मनुष्यभावने नक्की समजीने दृढ ठेराव कर्यो नहोतो माटे एमने संशय थयो त्यारे ते भक्ते कह्युं जे ए बे भावनो दृढ ठेराव केम करवो? उत्तर जे मनुष्य भाव छे तेने तो आपण सर्वे देखीए छीए तेने विषे दिव्य भाव समजवो जे ए मनुष्यरुप मूर्तिने विषे केटलाकने तो प्रकाश जणाय छे ने केटलाकने तो महाराज काठीना अस्वार सोता हरिभक्तने तेडवा आवे छे एम जणाय छे माटे काठीने दिव्यरुप करी दीधा ने कोइक भक्तने विषे तो चोवीस अवतारने लीन करावीदे छे ने कोइक भक्त एवी इच्छा करे जे ए चोवीस अवतार केवा हशे तो तेने तत्काळ एमनां दर्शन

करावी दे छे ने जे अवतार छे ते तो जे पोताना दृढ भक्त होय तेने पण अक्षरधामनां दर्शन क्यारेक करावे छे ने जे अवतारी श्रीहरिजी महाराज छे तेतो जेवा तेवा हजारो प्राकृत मनुष्योने अक्षरधामनां दर्शन वारमवार करावे छे ने अंतकाळे पोताना भक्तने तेडवा आवे छे ने वळी यवन, तथा जैनादिकने पण एमना इष्टदेवनां दर्शन करावी दे छे ने तेमना इष्टदेव जेते पोत पोताना सेवकने एम वार्ता करे छे जे परमेश्वर तों आ स्वामीनारायण छे ने अमे सर्वे तो एमना सेवक छीए एवी अनेक प्रकारनी अलौकिक ने दिव्य सामर्थी सत्संगने विषे जोइने मनुष्य भावने दिव्य भाव ते एकज छे एवी रीते ठेराव अतिशय निश्चल करवो. ॥ १६१ ॥

जीवने शास्त्रने विषे शुद्ध कह्या छे तेने विषे कर्मने माया केम समजवी ? उत्तर जे जीवतो अनादिना मायात्मकज छे ने कर्मने माया तो भिन्न न कहेवाय ते कइ माया ? तो जे जीवने विषे पंच विषयनी इच्छारूपे रही छे ने वळी जेम बीजने विषे अंकुर छे तेम अव्यक्तपणे रही छे. ने जे स्त्रीने आकारे माया छे तेतो कर्म थकी जुदी छे माटे कर्मने माया जुदां छे ने अनादिथी भेगां पण छे ने सत् शास्त्रने

विषे जे जीवने शुद्ध कह्या छे तेवातो महत्पुरुषनी सेवाए करीने थाय छे ते वात पण मुक्त भेदना सारंगपुरना १७ ना वचनामृतने विषे श्रीजीमहाराजे कही छे. ॥ १६२ ॥

जीव माया ने परमेश्वर ए त्रणे अनादि छे तेमना मध्ये पुरुषोत्तमने विषे सर्व कारणपणुं ने सर्वनुं कर्ता-पणुं केम समजवुं ? उत्तर जे पुरुषोत्तम तो मायाने स्थुल सुक्ष्म भावने पमाडी दे छे ने जीवने ज्ञान शक्तिना विकाश संकोचे करीने स्थुल, सुक्ष्म, भावने पमाडी दे छे ने एने विषे जे जे क्रिया करवानुं साम-र्थ्यपणुं ने प्रकाशपणुं इत्यादिक अनेक प्रकारनी सामर्थी रही छे ते तो पुरुषोत्तमनी आपेल छे माटे श्रीहरिजीने विषे सर्वनुं कारणपणुं सर्वनुं नियंतापणुं ने सर्वनुं कर्तापणुं कहेवाय छे. ॥ १६३ ॥

"[1]विद्याविद्ये मम तनू विद्धयुद्धव शरीरिणां ॥

---

१ अर्थः—हे उद्धव ! विद्या अने अविद्या मारी शरीरभूत छे. अने मारी माया (संकल्प) थी निर्माण थयली ने आविर्भूत छे ते विद्या अने अविद्या शरी-रीओने बंध अने मोक्ष करनारी छे. विद्याशक्ति मोक्ष करनारी छे अने अविद्या शक्ति बंधन करनारी छे. । (भा. स्क. ११-३)

बन्धमोक्षकरी आद्ये मायया मे विनिर्मिते ” ए श्लोकने विषे विद्या अविद्या ए बेय शब्दे करीने बंध ने मोक्ष कह्या छे तेमां विद्या ते शुं ? ने अविद्या ते शुं ? उत्तर जे विद्या जेते धर्म सर्गने विषे वर्तवुं, ज्ञान शीखवुं वैराग्य शीखवो ने श्रीजीमहाराजनो ने मोटा संतनो महिमा शीखवो ने नव प्रकारनी भक्ति करवा शीखवी ने शम दमादिक साधन शीखवां इत्यादिक सर्वे विद्याशक्ति कहेवाय छे. ने पंचविषयने विषे राग राखवो ने देहाभिमाने सोता वर्तवुं इत्यादिक सर्वे अविद्याशक्ति कहेवाय छे. ने अज्ञानीमां जे अविद्याशक्ति रही छे ने तेने विद्या जणाय छे ते पण अविद्याज छे ने ते अविद्या पण अज्ञानी जीव मात्रने विषे ने ऐश्वर्यार्थीने विषे रही छे ने ते अज्ञानीमां जे विद्या जणाय छे ते शुं छे ? तो जे यज्ञ, दान, पुण्य, वेदाध्ययन ने तीर्थ व्रतादिक जे जे शुभ क्रिया करे छे ते सर्वे फळने पामवानी इच्छाए सहित करे छे माटे ए विद्या छे ते पण अविद्याज छे ने जे ऐश्वर्यार्थी हरिभक्त छे. तेने विषे जे विद्या जणाय छे. ते पण अविद्याज छे माटे ए सकाम भक्त छे ने ते ऐश्वर्यार्थी तो सनकादिकथी लइने प्रधान पुरुष पर्यंत कहेवाय छे माटे जे भक्तनी इंद्रियोनी वृत्तियुं आत्मा के परमात्मा

सन्मुख वर्ते छे ने विषयने विषे दोषना ध्याने युक्त वर्ते छे ते भक्त जेते विद्याशक्तिए युक्त कहेवाय छे ने जे भक्तनी इंद्रियुंनी वृतियुं बाहेर वर्ते छे ने विषयने विषे गुणना ध्याने युक्त वर्ते छे ते भक्त जेते अविद्या शक्ति ए युक्त कहेवाय छे. ने जे हरिभक्त एम नथी समजता ने निश्चयनुं के महिमानुं बळ लइने स्वभावने टाळता नथी ने जे हरिभक्त श्रीजीमहाराजनी ने सत्पुरुषनी बीक राखीने ने भगवानने अंतर्यामी जाणीने प्रकृतिने टाळे छे ने जे नथी टाळता ए बेने सरवाळे बहु फेर पडे छे ने हमणां तो सरखा जणाय छे जेम बे नाव समुद्रमां चाल्यां जातां होय तेमां एकना शुकानने ध्रु मांकडी सामी द्रष्टि राखीने लगार लगार मरड्या करे ने एकना सुकानने न मरडे तो ए बंने नावने आगळ जतां सो बसो गाउनो फेर पडी जाय छे तेम जे स्वभावने टाळतो होय ने जे न टाळतो होय तेमां पण एम फेर पडे छे ने केवळ विद्या शक्तिए युक्त तो श्वेतद्विपना तथा बद्रिकाश्रमना मुक्त वर्ते छे ने ते कर्ता कर्म ने फळना संगने विषे आसक्तिए रहित वर्ते छे ने जो कदाचित देश काळादिकना विषमपणाए करीने ए मुक्तोने पण पंच विषयने विषे सन्मुखपणुं ने एमने विषे गुणनुं ध्यानपणुं थइ जाय तो ते विद्याने

विषे पण अविद्या कहेवाय ने जे अक्षरधामना मुक्त छे तेतो गुणातित वर्ते छे माटे ए निर्गुण कहेवाय छे ने जे आ वार्तीने श्रवण मनन ने निदिध्यास तेणे करीने यथार्थ समज्यो होय ने ते जो थोडाक दिवसनो नवो हरिभक्त होय तो पण ते सत्संग तथा कुसंगने ओळखे छे ने तेमां लेवातो नथी. ॥ १६४ ॥

केम समजे तो निराकारनी वार्ता शंकराचार्य जेवा करे तो पण तेनो गंध अंतःकरणने विषे पेसेज नहि ? उत्तर जे आम समजे तो ए वातनो गंध पेसेज नहि ते समजवानी रीत्य जे श्रुति स्मृति सर्वेने विषे परमेश्वरने तथा परमेश्वरना जे गोलोक वैकुंठ ने ब्रह्मपुरादिक दिव्य धाम तथा नंद सुनंदादिक दिव्य पार्षद तथा लक्ष्मीजी ने राधिकाजी ए आदिक दिव्य शक्तियो ए सर्वेने साकारज कह्यां छे ने ते साकारपणाना निरुपण करनारां पण हजारो श्रुति तथा स्मृतिओ छे तेनां नाम जे " [1]नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां " " [2]सऐक्षत " " [3]सर्वेऽनिमेषा जज्ञिरे विद्युतःपुरुषात् "

१ अर्थः—नित्य, चैतन्य अने बहु जीवात्माओना मध्ये नित्य, चैतन्य अने एकज परमात्मा जीवात्माओना मनोरथोने पूर्ण करे छे. ।

२ तेणे जोयुं. ।

३ तेजोमय पुरुषाकार श्री भगवानथी सर्व देवो उत्पन्न थया. ।

"[1]यदा यदा हि धर्मस्य" "[2]जन्म कर्म च मे दिव्यं" "[3]न मे पार्थास्ति कर्त्तव्यं" इत्यादिक अनेक श्रुति स्मृतिना वचने करीने ए सर्वेना साकारपणानो दृढ ठराव कर्यो होय ने शुद्ध संप्रदाये करीने सत्पुरुषथी अध्यात्मज्ञान श्रवण कर्युं होय तो निराकार पणानी प्रतिति स्वप्नमां पण थाय नहि ने असत् संप्रदायना असत् पुरुष पासेथी ज्ञान पाम्यो होय तो तेने निराकारनी प्रतिति थाय छे माटे सत् असत्ना विवेकनुं मुख्य कारण तो सत् असत् पुरुषज छे. ॥ १६५ ॥

सत्पुरुषनो अवगुण केम समजे तो न आवे ? उत्तर जे जेने एमना ठराव सामी दृष्टि होय तेने एमनो अवगुण न आवे ते एमना ठेरावनी विगत जे जे महत्पुरुष होय तेमनुं वर्तन तो परलोकने अर्थे होय पण देहनी आबरूने अर्थे के आलोकना सुखने अर्थे न होय ने एमना संगी होय तेनुं पण परलोकने विषे सारुं थाय एमज इच्छे छे ने तेमज तेने वर्तावे छे ने आ लोकनां जे सुख छे ते तो चार प्रकारना प्रलये

---

१ ज्यारे ज्यारे धर्मनी ग्लानि थाय छे, त्यारे त्यारे हुं अवतरुं छुं. ।

२ मारां जन्म अने कर्म दिव्य छे. ।

३ हे अर्जुन ! मारे कंइपण करवा योग्य नथी.

करीने नाश थइ जाय एवां छे ने दुःखरूपने स्वप्न तुल्य छे एवी रीते अनंत युक्तिए करीने वार्ता करी ते कह्युं छे जे "[1]स त एवास्य छिदंति, मनो व्यासंग-मुक्तिभिः" ॥ १६६ ॥

लोभकामादिकनी इच्छा अल्प जेवी जणाय छे पण मुंबइ, काशी, ने अरबस्तान इत्यादिक अनेक देशने विषे लइ जाय छे ने ते देशने विषे अति दुःख भोगवावे छे पण ए जीव मूर्ख छे ने अज्ञानी छे ने संसारमां आसक्त छे एटले एने ए दुःख जणातुं नथी लोभादिकनी वासना तो अति मोटी छे माटे तेने टाळवाने अर्थे सत्पुरुषना संगे करीने धर्म, ज्ञानादिक गुणने सिद्ध करीने पायो अति पाको करवो अने धर्मादिकना अर्थे तो "[2]देहं पातयामि अर्थं साधयामि" एवी रीते मंडे तो थाय ते उपर हिरण्यकशिपुना द्रष्टांते करीने वार्ता करी जे हिरण्यकशिपुए उंधे माथे तप कर्युं ते शरिरमां वांसडा सोंसरा निसर्या तेम साचा शुरवीर थइने पुरुष प्रयत्न करवो. ॥ १६७ ॥

---

१ अर्थः—आ जीवोनी वासनाओने सत्पुरुषोज उपदेश वाक्योथी नाश करे छे. ।

२ अर्थः--देह छो पडी जतो, पण मोक्षरुपी अर्थने सिद्ध करुं.

धर्मादिकनी पक्वताए करीने भगवानना द्रढ भक्तने मायिक विषयनी इच्छा टळी जाय छे तेणे करीने एमने कचरो ने कंचन ए बे सरखां जणाय छे केम जे ए बेनुं प्रयोजन ए ज्ञानी भक्तने रहेतुं नथी माटे सरखां जणाय छे ने जे सुखदुःख छे ते तो जीवनी समजणमांज रह्यां छे केमजे आ वस्तु तो सुखदायक छे ने आ वस्तु तो दुःखदायक छे एवी अंतरमां जे द्दढ समजणनी गांठ पडी छे तेमां सुख दुःख रह्यां छे ने जुओने आ लोकमां पुरुष जेते पोताना पूत्रने परणाववा जाय छे त्यां पोताने "मोची घांचीनारे सइ सुतारनारे" एवी रीते अनेक जातनी गाळो दे छे पण ते साकर जेवी गळी लागे छे त्यारे सुखदुःख ते समजणमांज रह्यां छे ते माटे अंतरमां सत् असत्‌नो विवेक करीने आ लोकनां सुखदुःखने खोटां समजे तो बाहेरथी ते खोटां थइ जाय छे. ॥ १६८ ॥

नृसिंहानंदस्वामिए पूछ्युं जे आस्तिक केने कहीए? उतर जे जेने श्रीहरिकृष्णजी महाराज तथा तेमना अवतार तथा वेदादिक सच्छास्त्र तथा तेमनां धाम तथा तेमना एकांतिक साधु ए सर्वेनो सत्यपणानो जेने विश्वास होय तेने आस्तिक मतिवालो भक्त कहीए. ॥ १६९ ॥

अने जगत आद्ये न होतुं ने अंते पण नहि रहे ने मध्ये झांझवाना जळनी पेठे जणाय छे ते कह्युं छे जे ॥ "१ न यदिदमग्र आस" तथा "२ अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ! ॥ अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ १७० ॥

स्वभाव केम टळे ? उतर जे जेम विषयने विषे जीवने सहज लग्नी छे ने वली "३ साध्वीचकोरशलभास्तिमिकालकण्ठः कोका निजेष्टविषयेषु यथैव लग्नाः" ए श्लोकने विषे जेम पतिव्रता स्त्री आदिक पांचने पोतपोताना विषयमां सहज लग्नी करी छे तेम श्रीहरिजी महाराजनी माहात्म्ये सहित जे नव प्रकारनी

---

१ अर्थः—जे आ जगत छे ते आथी पहेलां न हतुं. ।

२ अर्थः—हे भारत ! आ देव मनुष्यादिक भुत प्राणीमात्रना पूर्वावस्था, तेमज अंत अवस्था ते स्पष्ट जणाय तेवी नथी. मात्र मध्य अवस्थाज स्पष्ट जणाय छे तो ते माटे दुःख निमित्त शोक शा माटे करवो, । (गी. अ. २–२८)

३ अर्थः—पतिव्रता, चकोर, पतंग, मत्स्य, मयुर अने चक्रवाक विगेरे जेम पति आदिक पोतपोताना इष्ट विषयोमां संलग्न थाय छे. ।

(स. जी. पं. अ. ६६–१९)

भक्ति तेने विषे लग्नी जोइए ने वली जेम काळमींढ पर्वत खोदीने तेमां नाना प्रकारनी रचना करवी पडे तेमां वार बहु लागे तेम स्वभाव टाळवाने अर्थे पुरुष प्रयत्न करवो पडे तेमां उतावळा थावुं नहि. एवी रीते पुरुष प्रयत्ने करीने सहज प्रकृति टळे छे ने ते विना तो टळे नहि ने सहज प्रकृति टाळवानी युक्ति श्रीजी महाराजे वचनामृतमां कही छे तेने शीखीने ते प्रमाणे वर्त्यानो आग्रह राखवो. ॥ १७१ ॥

सत्व, रज, अने तम ए त्रणे गुणमांथी जे गुण जीवने विषे अज्ञानकाळे सरस वर्ततो होय तेज गुण सत्संगने विषे आव्या पछी पण वृद्धिने पामे छे ते सारुं सत्पुरुषने सेवीने पुरुष प्रयत्ने करीने ते गुणने काढे तोज निकळे नहि तो निकळे नहि ने धर्म ज्ञानादिक जे गुण अज्ञानकाळे जीवमां मुख्यपणे होय छे तेज सत्संगमां आव्या पछी वृद्धिने पामे छे माटे मोटा पुरुषने सेवीने जो ए गुणने वधारे तो वृद्धिने पामे छे माटे समागम कर्यानुं एज फळ छे. ॥ १७२ ॥

स्वामीए एम कह्युं जे अमे तो एकली साकरज खाइए छीए ने जो तेमां धूळ्य आवे तो तेने अलग करी नाखीए छीए त्यारे कहेशो जे ए ते शुं कह्युं ?

तो एम कह्युं जे आत्म सत्तारुप थइने जाणपणारुप दरवाजे उभा रह्या थका पुरुषोत्तम महाराजना दर्शन करीए छीए ने तेमां जे जे लोभकामादिक पेसवा आवे तो तेनो नाश करी नाखीए छीए. एवी रीते श्रीजी महाराजनी चाकरीमां सावधान थका रह्या छीए. ॥ १७३ ॥

लोभ कामादिक जे अंतर शत्रु छे तेने आत्म सत्तारुप थइने टाळे तो श्रीजीमहाराजनुं भजन स्मरण सुखे थाय ने ते शत्रुने टाळवाने अर्थे मोटा पुरुषनी अनुवृत्तिने विषे वर्तवुं. ॥ १७४ ॥

नृसिंहानंद स्वामीए पुछयुं जे पंच विषयने केम भोगववा? उत्तर जे, जेम कोइक वैरी मनुष्य होय ने ते पोताने घेर महेमान (परोणो) थयो होय तो तेने साकरनां सीधां आपवां पडे छे पण अभावसोतां आपे छे एम विषय भोगववाने विषे देहने प्रवर्तावबो. ॥ १७५ ॥

रजोगुणी बुद्धि जेते मोक्ष मार्गने विषे चाली शके नहि त्यांतो सत्पुरुषनी आपेल बुद्धि पूगे छे ते कइ बुद्धि तो महत्पुरुषनां वचनने विषे जे विश्वासरुप बुद्धि ते पुगे छे. ॥ १७६ ॥

अयोग्य संकल्प टाळवानो शो उपाय छे ? उतर जे श्रीजीमहाराजनो महिमा तथा आत्मनिष्ठा तथा वैराग्य तेनो वारंवार अतिशे विचार करवो ने तेनो अंतरमां वेग लगाडी देवो एटला उपाये करीने ए अयोग्य संकल्प टळे. ॥ १७७ ॥

पंचविषयनी रुचि अंतःकरणमां ज्यांसुधी वर्ते छे त्यां पर्यंत श्रीजीमहाराज के धर्म ज्ञानादिक गुण ते अंतःकरणमां निवास करीने रहे नहि जेम जे कुवामां मोटी शिला निसरे तेमां कोश बे कोशनुं जळ थाय नहि. ॥ १७८ ॥

अने धर्मज्ञानादिक गुणने विषे ज्यांसुधी रुचि नथी त्यांसुधी पाको सत्संगी न कहेवाय माटे सत्पुरुषने संगे करीने ए गुणने विषे पक्व रुचि करवी. ॥ १७९ ॥

उत्तम विषय छे ते अति कनिष्ठ केम थइ जाय ? उतर जे (१) श्रीजीमहाराजनो महिमा अतिशे समजे ने (२) आत्मनिष्ठा पण अतिशे दृढ करे तो जे उत्तम विषय होय ते पण भगवानना भक्तने अतिशे कनिष्ठ थइ जाय छे. ॥ १८० ॥

उत्तम ने मध्यम एवा जे भक्त तेमनुं वर्तन केवुं

होय ? उतर जे उतम भक्तने तो जाग्रतने विषे सुषुप्तिनी पेठे विषयनो अभाव वर्ते ने जे मध्यम भक्त छे ते तो जाग्रतने विषे स्वप्ननी पेठे विषयने भोगवे छे. ॥ १८१ ॥

त्रण गुणनो वेग तथा विषयनो वेग ते केम टळे? उतर जे श्रीजीमहाराजना महिमाने सारी पेठे समजीने जाणपणारुप थइने धीरे धीरे टाळे तो ए बेयनो वेग टळी जाय ते उपर हनुमानजीने द्रष्टांते करीने वात करी जे लंका जोइने विचार कर्यो त्यारे कोइ रुपादिकना मनमां क्षोभ न थयो ए रीते पूर्वे कह्युं तेनो वेग समाववो. ॥ १८२ ॥

अन्न ने वस्त्र ए बे विना न चाले ने बीजा सर्वे विना चाल्युं जाय छे माटे श्रीजीमहाराज प्रसन्न थाय ते सारुं धर्म ज्ञानादिक गुणने सिद्ध करवाने अर्थे पुरुष प्रयत्न प्रमाद मेलीने करवो, ने ए बे वानां तो सहजेज मळी रहे छे ते सारुं देहरुप थइने श्रीजीमहाराजने विसारी देवा नहि. ॥ १८३ ॥

अहं वृत्ति ते शुं ? ते उपर वार्ता करी जे लींबु, वघार, पुस्तक अने वस्त्रने द्रष्टांते करीने कह्युं जे जेम लींबुनो रस लगारेक होय छे ते जेमां नाखे ते सर्वे

वस्तुमां व्यापी जाय छे. तेमज वघारने पण जाणवुं ने वस्त्र अने पुस्तकने जोइने आगे आगे ने पाने पाने वृत्ति थइ जाय छे तेम अहंवृति पण देहने विषे नखथी लइने शिखा पर्यंत व्यापी रहे छे. ॥ १८४ ॥

विषयमांथी प्रीति केम टळे ? उतर जे चार प्रकारना प्रलयनी वार्ताने सारी पेठे समजे तथा देहादिकने विषे वैर बुद्धि सदा राख्या करे तथा श्रीजोमहाराजनो महिमा समजे आटला उपाये करीने विषयमांथी प्रीति टळी जाय छे. ॥ १८५ ॥

उपशमे करीने भक्तने ऐश्वर्य जणाय छे ते जेम जेम उपशममां अतिशय रहेवा मांडे तेम तेम अधिक अधिक ऐश्वर्य देखातां जाय छे तेनी विगत जे प्रथम तो इंद्रादिकनां ऐश्वर्य जणाय छे ते पछी ब्रह्मादिकनां ऐश्वर्य जणाय छे ते पछी वैराज पुरुषनां ऐश्वर्य जणाय छे ते पछी प्रधान पुरुषनां ऐश्वर्य जणाय छे ते पछी मूळ पुरुषनां ऐश्वर्य देखाय छे पण ए ऐश्वर्यने विघ्नरुपने नाशवंत जाणीने श्रीजीमहाराजना महिमाने समजीने उपशममां रह्या थका भजन कर्या करे तो एकांतिक भक्त थाय छे त्यारे कहेशो जे उपशम ते शुं तो कहीए छीए जे पोतानी इंद्रियोने अंतःकरण

एमनी वृतियोने भगवानना स्वरूपने विषे अखंड जोडी राखवी पण क्यारेय पंच विषयने विषे तणावा दे नहि एनुं नाम ते उपशम कहेवाय. ॥ १८६ ॥

श्रीजीमहाराजने संभारवा ते तो अलौकिक ऐश्वर्यने अलोकिक महिमा ते सोता वारमवार संभारवा ने अति प्रकाशमान जोया करवा ने त्रण गुणना तथा पंचविषयना जे वेग आवे तेने टाळीने जाणपणारुपे वर्तवुं एज अक्षरनो भाव कहेवाय छे ने आंटी, अभाव, ने उपशम ए त्रणे करीने वैराग्य उपजे छे तेमां उपशमे करीने जे वैराग्य उपजे छे ते श्रेष्ठ छे ने बीजा बे तो मध्यम ने कनिष्ठ छे. ॥ १८७ ॥

मान केम टळे ? उतर जे मान टाळयानो ए उपाय छे जे, सर्वे वस्तुने विषे दोष बुद्धि राखे तथा सर्व क्रियाने काखना मुवाळा जेवी जाणे तथा ठाला कुवामां जेम पाणी सिंचे ने तेमांथी कोइ काळे पाणी मळेज नहि ए वार्ता ने यथार्थ समजे तो मान टळी जाय ने वळी श्रीजीमहाराजने मान गमतुं नथी माटे परमेश्वरना भक्तने मान न राखवुं ने मान तो क्रोध, मत्सर, इर्षा, द्रोह, ने कपट तेनो आधार छे ने कल्याणना मार्गमांथी पाडनारुं छे. माटे मुमुक्षुए शत्रुनी पेठे तेनो त्याग करवो. ॥ १८८ ॥

आ चार वानां जीवनां कल्याणना हेतु छे (१) श्रीजीमहाराज (२) एमना एकांतिक साधु (३) मंदिरमां पधरावेली एवी जे भगवाननी मूर्तिओ ने (४) सत्शास्त्र, तेमां प्रथमना ने बीजा ए बे श्रेष्ठ छे ने त्रीजा तथा चोथा ते एथी लगारेक न्युन छे. ।१८९।

इंद्रियोनी वृत्तिने विषय थकी पाछी वाळवी तेनी विगत जे जाणपणा रुपे रहीने शब्दादिक विषय सन्मुख जाती एवी जे इंद्रियोनी वृत्ति तेने आत्माने विषे के परमात्माने विषे होम्या करे तो वासना मात्र नाश थइ जाय छे. ॥ १९० ॥

श्रीजीमहाराजना भक्तने बीजा अवतारना भक्त तेमां केटलो फेर छे? उतर जे, श्रीजीमहाराजना भक्त जेवा तेवा ऐश्वर्यार्थी होय ते जेवा तो बीजा अवतारना एकांतिक भक्त पण न थाय ने आज सत्संगने विषे तो ऋषभदेव, दत् ने कपिलदेव जेवा संत वर्ते छे माटे आजनी मोटपनी शी वार्ता कहीए? आ समे तो श्रीजीमहाराज अढळक ढळ्या छे. ॥ १९१ ॥

सर्वे मनुष्यमां तथा हरिभक्तमां तथा एकांतिक भक्तमां श्रीहरिजी केम रह्या छे? उतर जे जेम पृथ्वीने विषे डोळायल जळ तथा शुद्ध निर्मळ जळ एमने विषे

सूर्यादिक भासे छे तेवा प्रकाश मूर्तिमान ने अलौकिक सामर्थ्य सोता पात्रना तारतम्यपणे रह्या छे ते वात वेद स्तुतिना गद्यमां कहेल छे जे "तेरतमतश्चकास्यन लवत्स्वकृतानुकृतिः" एम श्रीजीमहाराज सर्वने विषे रह्या छे. ॥ १९२ ॥

जीवने एटलुंज करवा योग्य छे जे, सर्वे इंद्रियोनी वृत्तिओनुं पिंडीकरण करवुं कहेतां पंचविषयमांथी पाछी वाळीने भगवानना स्वरूपने विषे होमवी. ॥ १९३ ॥

निष्कुळानंदस्वामीए पुछयुं जे, सर्वनुं कल्याण सरखुं थाय छे के नहि ? उतर जे, जे सर्वे श्रीजीमहाराजना नोरमां चाल्या जाय छे तेमां पण जे अधिक भजन स्मरण करता हशे ते मुक्तानंदस्वामी तथा पर्वतभाइ जेवा थाय छे. ॥ १९४ ॥

कोइक हरिभक्ते कह्युं जे "हे महाराज ! हेत राखजो." ते उपर वार्ता करी जे, देवलोकने विषे बहु सुख छे ने तेथी बृहस्पति आदिकना लोकने विषे बहु सुख छे ने तेथी प्रधान पुरुषना लोकने विषे बहु

१ अर्थः—पुरुषोत्तम भगवाने पोते करेली नाना प्रकारनी योनीओने विषे कारण पणे अंतर्यामीरूपे प्रवेश करीने अग्निनी पेठे न्युनाधिक भावे प्रकाश करे छे. । (भा. अ. ७-१९)

सुख छे ने तेथी मूळ प्रकृतिना लोकने विषे बहु सुख छे एवी रीते ते सर्वेना लोकने विषे अधिक अधिक सुख छे ने ए सर्व करतां अक्षरधामने विषे अतिशय अधिक सुख छे ने ए थकी पण श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे तो अतिशय अधिक सुख रह्युं छे. पण ए सर्व सुखना आपनार श्रीजीमहाराज छे एवी रीते मोटप समजे तो सहजेज हेत रहे छे ने एम समजण विना जे हेत छे ते तो प्राकृत छे ने सुवाण्य छे ते अंते रहे नहि. ॥ १९५ ॥

शिखर चढीने मंदिर संपूर्ण क्यारे थाय ? उतर जे, धर्म ज्ञानादिक गुणने पुरुष प्रयत्ने करीने ज्यारे अति पक्व करे ने तेणे करीने वासना निर्मुळ थइ जाय त्यारे शिखर चढे ने मंदिर पुरुं थयुं कहेवाय ने ते विना तो अधुरुंज कहेवाय. ॥ १९६ ॥

मोटा पुरुषनुं शुं लक्षण छे ? उत्तर जे, पोते अक्षर रूपे वर्ते ने मुमुक्षुने पण अक्षररूप स्थिति करी आपे ने सत् असत्‌ना विवेकनो उपदेश करीने श्रीजीमहाजनो ने सत्पुरुषनो संग मुमुक्षुने अति आसक्तिए सहित करावे ते मोटा पुरुषनुं लक्षण छे ते उपर अफीणियाना ने जार स्त्रीना द्रष्टांते करीने वार्ता करी. ॥ १९७ ॥

केटलाक ज्ञानावार्ता समजे छे ने वर्तता नथी ने केटलाक तो समजता नथी ने देहे करीने वर्ते छे ने केटलाकने विषे ए बेय वात छे ने केटलाकने विषे तो ए बेय नथी. ॥ १९८ ॥

श्रीजीमहाराजे कह्युं जे अमे तो ज्ञान वैराग्यादिक जे अमारी सर्वे संपत्ति ते सर्वे साधुने ने सत्संगीने सोंपी छे ने अमे तो सर्वेनां दुःख लीधां छे माटे तमे सर्वे सुखे करीने प्रभुने भजो एवा कर्या छे. ।१९९।

पुरुषोत्तम भगवाननुं स्वरुप ने एमना स्वभाव गुण ने विभूति जे छे ते जेते सर्व अवतार करतां विलक्षण छे. ॥ २०० ॥

गमतुं, दासपणुं, उपासना ए त्रणेने विषे केटलो फेर छे? उत्तर जे उपासना छे ते तो अंगी छे ने बीजां बे तो अंग छे माटे उपसना जो दृढपणे न होय तो गमतुं ने दासपणुं तो बीजानुं करवा मांडे माटे उपासना तो अति श्रेष्ठ जोइए ने श्रीजीमहाराजनुं गमतुं जो यथार्थ–पणे जे करे ते तो बहु मोटयपने पामे छे अने जानकीजीने ए प्रमाणे वर्तवाथी भक्त-पणामां कोइ जातनी कसर रही नहि. ॥ २०१ ॥

अज्ञान ने राग ए बे एक छे के नहि ? उत्तर जे

अज्ञान तो आत्मा अने परमात्माना विवेक सोती यथार्थ समजण न होय तेने कहिये ने राग तो पंच विषयने विषे जे प्रीति छे तेने कहिये पण ए बे कांइ एक नथी ए बेमां तो बहु भिन्नपणुं छे. ॥ २०२ ॥

श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, पुरुष प्रयत्न करे तो आत्मा जणाय छे ने तेने विषे परमात्मा पण जणाइ आवे छे त्यारे ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे तमारी कृपा होय तो जणाय ? ते पछे श्रीजीमहाराज कहे जे, जुओने आ ब्रह्मांड छे ते पण अक्षरने विषे अणुं जेटलुं जणाय छे माटे ब्रह्मांड तो अक्षरनी गणतिमांज नथी ने एवां अनंत कोटी ब्रह्मांड जेना एक एक रोमना छिद्रने विषे उडतां फरे छे एवुं महतपणुं अक्षरनुं छे ने हुं तो ए थकी पर छुं माटे मारी आगळ तो ए ब्रह्मांड अने ब्रह्मांडने विषे रह्या जे जीव ते शी गणतिमां छे. कांइ गणतिमां नथी एवो हुं अतिशे मोटो छुं. ते तमारी पासे वात करुं छुं. ने भाइबंधाइ करु छुं. ने दररोज दर्शन दउं छुं ने जमाडुं छुं ने नाम लइने बोलावुं छुं इत्यादिक अनेक प्रकारे तमारा साथे प्रीति करुं छुं ने ओळखाण करुं छुं ने कांइक आडुं अवळुं थातुं हशे तेनुं पण संबंधीनी पेठे सहन करुं छुं एवी रीते तमारा

साथे वर्तुं छुं तो पण तमे कहो छो जे कृपा करो ते हवे केटली कृपा करुं. ॥ २०३ ॥

आत्मा देहथी जुदो छे तो पण एक केम जणाय छे? उतर जे धनने पुरुष जुदां छे ने स्त्री ने पुरुष जुदां छे तो पण जे अति लोभी ने अति कामी छे ते तो ए बेने नाशे करीने नाश थइ जाय छे माटे जुदां नथी ते एक राजा हतो ते छ महिना सुधी समाधि करतो पण त्यां रह्यो थको राज्य, स्त्री, धनने संभार्या करतो पछी ज्यारे तेने संतदासजी साधु मळ्या त्यारे जुदां पाड्यां माटे एकांतिक भक्तना संगे करीने जो अभ्यास करे तो आत्मा ने देह ते जुदां जणाय छे माटे सर्वे काळने विषे त्रण शरीर थकी पोताने प्रथक वर्तवुं. ॥ २०४ ॥

जयानंदस्वामीए कह्युं जे, क्रोधज न करवो एवी आंटी ज्यारे पाडीए त्यारे क्रोध न थाय. त्यारे गोपालानंदस्वामी बोल्या जे जोव तो सत्संगे करीने बहु समर्थ थाय छे माटे लोभकामादिक संबंधी संकल्प न ज करवो एवी आंटी जो दृढ पाडे तो तेने संकल्प नज थाय एतो एवो बळिओ छे ते जेम धारे तेम करे जो साचो थाय तो. त्यारे ते संते कह्युं

जे संत तो सर्वे सरखा जणाय छे त्यारे मोटा संते कह्युं जे "जे विवेकी होय ते जो महत्पुरुषनो संग करे तो तेने सरस नरस जणाय छे" त्यारे पूछ्युं जे साधने करीने ने महत्पुरुषना संगे करीने जेणे पंच वर्तमान दृढ कर्यां होय ते सरस के जेणे पंच वर्तमान दृढ होय ते सरस छे केम जे एवां जे पंच वर्तमान छे तेतो असत् देश काळादिके करीने पण नाश न थाय ने जेने एवां दृढ वर्तमान नथी तेनो तो धर्म छिन्न भिन्न थइ जाय छे. ॥ २०५ ॥

श्रीजीमहाराजे कह्युं जे भगवाननी कथा वार्तानुं श्रवण मनन ने निदिध्यासे करीने एनो जो साक्षात्कार कर्यो होय तो ते जीवने बहु सहाय करे छे. ॥ २०६ ॥

सत्संगमां सर्व प्रकारे भिषणने खमे ने नवधा भक्ति कर्याने विषे झडपुं भरे ने पोतानो भक्तिभाव देखाडे ते अमने गमे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. ॥ २०७ ॥

शिष्य वाहनादिके करीने तथा भोजन छादनादिके करीने जे आनंद पामवुं एतो बाहेरलुं सुख छे ने नाशवंत ने निरानंद छे ते कह्युं छे जे "[1]योऽन्तः

---

१ अर्थः—जे पुरुष आत्मसुखना अनुभववाळो,*

सुखोंऽतरारामस्तथांतर्ज्योतिरेव यः ॥ स योगी ब्रह्म-निर्वाणं ब्रह्म भूतोऽधिगच्छति " ते वास्ते अंतरदृष्टिए करीने आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा श्रीहरिजी महाराज तेमने जोवा ने तेमना ध्यानना सुखे करीने सुखीआ थावुं ने पंच विषयने विषे जेवी प्रीति ने जेवी तृष्णा छे तेवीज श्रीजीमहाराजना महिमाने विषे तथा आत्मनिष्ठाने विषे प्रीति ने तृष्णा राखवी ने पंचविषयमांथी तो जरुर उखेडवी ने मायाने विषे तो एवुं विचित्रपणुं रह्युं छे जे तेमां देव मनुष्यादिक पण सर्वे लोभाइ रह्यां छे पण अंते जातां तो ते गोडीआनी बाजीजेवुंज छे एमां संशय नथी. ॥२०८॥

जीव कल्याणना मार्गमां चाले छे तो खरो पण तेने ठेसुं बहु वागे छे तेणे करीने आडो अवळो पडी जाय छे जेम आंधळो मार्ग भूलीने कुमार्गे चाले छे ने तेने जेम ठेसुं वागे छे ने ते पडी जाय छे तेम. विचार अने विवेक विना सत् असत् संगने ओळखतो नथी माटे सत्पुरुषने ओळखीने ने तेमनो समागम

*ध्यान करवा योग्य आत्म स्वरुपमां आराम करनार, आत्मध्याने करी प्रकाशवान तेमज ज्ञानयोगमां निष्ठावालो छे ते ब्रह्मरुप थको अक्षरब्रह्म संबंधी सुखने अनुभवे छे. ॥ (गी. अ. ५-२४)

करीने पंच विषय संबंधी संकल्प विकल्प रूप जे ठेसुं छे ने देहाभिमान सबंधी जे भारे ठेसुं छे ने प्राणने क्षुधा, पिपासादिक, जे ठेसुं छे ते सर्वे सत्संगने प्रतापे करी काढी नाखीने अतिशुद्ध थावुं जेम खेडु छे ते खेतरने समार दइने चोक्खुं करे छे तेम जीवने चोक्खो करवो ने धर्मने विषे अति दृढपणे वर्तवे करीने सुखी थवाय छे ने कर्मने विषे आसक्ति राखवे करीने देवता थवाय छे ने विषयमां आसक्तिए करीने भूत, प्रेत के स्थावरादिक थवाय छे ने सत्पुरुषना विश्वासे करीने तो बहु मोटा थवाय छे. ॥ २०९ ॥

जीव जेते जेवो धर्म अर्थ अने कामने अर्थे पुरुष प्रयत्न करे छे तेवो मोक्षने अर्थे पुरुष प्रयत्न करतो नथी एनुंज नाम मोह छे ने वळी प्रत्यक्ष भगवान तथा प्रत्यक्ष संत ने मेलीने बीजे ठेकाणे अज्ञानीने पामर जेवा जे जीव तेमनो जे विश्वास करवो ए पण मोहज छे. ॥ २१० ॥

मोटा संते निर्गुण सगुणनी वार्ता करी जे आचार्यजी महाराज ने संत ए जेते कल्याणरूप दिग्विजय करवाने अर्थे ब्रह्मांडमां विचरे छे तेमनी जे सर्वे क्रिया ते निर्गुणज छे केमजे ते क्रियाने जे जे जीव

देखे सांभळे ने चिंतवन करे ने वळी जे एमना कोइक उपयोगमां आवे ते सर्वेनुं कल्याण थइ जाय छे माटे ए निर्गुणज छे ने सगुणपणुं तो जे अहं ममत्वरूप माया परस्पर हरिजनमां रही छे ते छे माटे एकांतिक साधुना संगे करीने ए मायाने टाळीने एकांतिक थावुं एज सत्संग कर्यानुं फळ छे. ॥ २११ ॥

जे हरिभक्तने विषे सांख्य अने अष्टांगयोग ए बे होय तेने कांइ वांधोज रहे नहि ते सांख्य ते शुं तो पंच विषयने विषे बुद्धि राखवी ने ते बुद्धि दिवसे दिवसे वृद्धि पामे तेने अर्थे वारमवार पुरुष प्रयत्न करीने नित्य प्रलयादिकनो विचार कर्या करवो ते छे. अने योग ते शुं तो पुरुषोत्तम भगवानने पूर्ण काम समजीने तेमनी नवधा भक्ति करवी ने तेमनो महिमा समजवो जे श्रीहरिकृष्णजी महाराज दयाए करीने जे जे पदार्थने अंगीकार करे छे ते तो जीवना कल्याणना अर्थेज करे छे पण पोताना स्वार्थने अर्थे लेशमात्र करता नथी ने ए श्रीजीमहाराजनी सुक्ष्मता आगळ अक्षर तो अतिशे स्थुळ जणाय छे ने ए तो एमने रह्यानुं पृथ्वीरूप स्थानक छे. ॥ २१२ ॥

उपास्य उपासक अने स्थानक ए त्रणेनी शुद्ध-

पणाए करीने उपासक जेते उत्तम भक्त थाय छे ने सनकादिकने उपास्य स्वरुप सरस नथी एटले ते सरस थाता नथी ने पर्वतभाइने रहेवानुं स्थानक सारुं न हतुं माटे आग्रहे करीने सत्पुरुषने सहाय राखीने जो उपास्य स्वरुपने समजवा मंडया तो वैराज पुरुषथी लइने पुरुषोत्तम भगवान पर्यंत जेम छे तेम यथार्थ समज्या खरा ते उपर माछलां जेम अभ्यासे करीने जळमां सामे पुरे चाले छे ते द्रष्टांते करीने पुरुष प्रयत्ननी वार्ता करी. ॥ २१३ ॥

विषय जीताय त्यारे श्रीजीमहाराजनुं ध्यान थाय के ध्यान थाय त्यारे विषय जीताय? उतर जे, विषय जीताय त्यारे ज ध्यान थाय छे ने ते विना तो कोइक ध्यान करे छे ने कोइक पुरुषोत्तमनुं निरुपण करे छे ने कोइक वैराग्यनुं निरुपण करे छे ने कोइक ज्ञाननुं निरुपण करे छे ने कोइक भक्तिनुं निरुपण करे छे, पण सर्वे अहंवृत्तिए सोता करे छे. एम कहीने स्वामीए अहंवृत्तिनी वार्ता कीडीथी लइने पुरुषोत्तम भगवान पर्यंत वर्णन करी देखाडी ते अहंवृत्ति बे प्रकारनी छे. एक निर्गुण छे ने एक सगुण छे तेमां पण केटलीक सवळी छे ने केटलीक अवळी छे ने जीवने यथार्थ तो महाराज ओळखता ने जीव जेवो शुद्ध के अशुद्ध

होय तेवो गंध पोताने जणाइ आवतो ने सत्पुरुष पण ओळखे खरा. ॥ २१४ ॥

सत्संग सहेजे मळ्यो होय ते पुरुष प्रयत्न कर्या विना वृद्धि पामे के नहि? उतर जे, पोताने जोया करे जे मारामां धर्म ज्ञान वैराग्यने श्रीजीमहाराजनी माहात्म्ये सहित भक्ति एमांथी कया गुण आव्या छे ने कया नथी आव्या ने आस्तिकपणुं केटलुं छे ने केटलुं नथी ने लोभ कामादिक जे दोष ते केटला ओछा थया छे ने केटला नथी थया एम तपास अहोनिश कर्या करे ने पुरुष प्रयत्ने करीने ध्रो तथा बोरडीनी पेठे सत्संगने विषे नक्की पायो करे तो सत्संग वृद्धि पामे, नहि तो देश काळादिकनी विषमताए करीने लांपडानी पेठे उडी जाय. ॥ २१५ ॥

हरिभक्तने विषे जे बळवान प्रकृति होय तेने पण सत्पुरुषना संगे करीने टाळे तो टळी जाय छे. ने ते सहज प्रकृति टाळयाना वचनामृतमां श्रीजीमहाराजे त्रण उपाय कह्या छे तेनी विगत जे, वक्ता जे सत्पुरुष तेने विषे अतिशे हेत ने तेमना वचनने विषे अतिशे विश्वास ने वढीने कहे तो पण तेने हितकारीज समजे ए त्रण उपाय छे. ते उपर श्लोक जे " [1]निर्मानत्वम-

---

१ अर्थः—निर्मानपणुं, विषयमां अनाशक्ति,*

संगत्वमहिंसा ममतत्यजिः ॥ आत्मनिष्ठा च तस्यैव संति भक्तेरलंक्रियाः ” ॥ २१६ ॥

केम समजे तो असत् देशकाळादिके करीने लेवाय नहि ? उतर जे, एक तो स्थानकने ओळखे ने श्रीजीमहाराजनी मरजीने ओळखे तथा सत्पुरुषने ओळखे तो असत् देशकाळादिके करीने पण लेवाय नहि. ॥ २१७ ॥

शुकजीने जो ज्ञानांशनी समजण हती तो श्रीकृष्ण भगवानना चरित्रने विषे संशय थयो नहि ने परीक्षित राजानी जन्मोत्रीमां एनी मोटप अतिशे कही छे तो पण एने ज्ञानांश विना श्रीकृष्ण भगवानना चरित्रने विषे संशय थयो छे. ने ब्रह्माने पण तेमनी पेठेज थयुं ने नारदने पण संशय थयो जे भगवान घरोघर कइ रीते रह्या हशे ? ते निमित्त जोवा गया ते घरोघर दीठा माटे एकांतिकनो संग करीने ज्ञानांशनी समजणनुं अति दृढपणुं करवुं ने इंद्रियो, मन, बुद्धि ने जीव एमने विषे भगवाननो निश्चय थया पछी सत्पुरुषना संगे करीने जीव बहु वृद्धिने पामे छे ते उपर

*अहिंसा, ममतानो त्याग अने आत्मनिष्ठा ते सर्व भक्तिना अलंकारो छे. ॥

वेलो जेम झाडने योगे करीने वृद्धि पामे छे ते द्रष्टांते करीने वार्ता करी. ॥ २१८ ॥

आ त्रण ठेकाणे देहाभिमान ओळखाइ आवे छे तेमां (१) भोजन समय (२) भय जणाय त्यारे (३) स्त्रीओने पडखे निसरे त्यारे ए त्रण ठेकाणे देहाभिमान ओळखाय छे. ॥ २१९ ॥

उपासनानी पक्व अपक्वपणानी वार्ता हनुमानजीने सुदर्शनचक्र तथा गरुडजीना द्रष्टांते करीने वार्ता करी तेमां गरुडजीनी उपासना अपक्व जाणवी, ॥२२०॥

त्रण शरीरनी भावनाए रहित थका श्रीजीमहाराजनुं भजन करवुं ते त्रण शरिरनी भावनानी विगत जे जोया संबंधी के सांभळवा संबंधी ए आदिकनी जे जे इच्छा उपजे ते स्थुल देहनी भावना कहेवाय. ने मनमां संकल्प विकल्पनो जे घाट उपजे ते सुक्ष्म देहनी भावना कहेवाय. ने ए घाट ज्यारे लय थावा मांडे त्यारे ते कारण शरीरनी भावना कहेवाय. ॥ २२१ ॥

मोटा पुरुषनी जे क्रिया छे ते जीवना कळयामां आवे नहि केम जे, एतो निःस्वादी थका स्वादने करता होय ने निर्लोभी थका लोभने करता होय इत्यादिक सर्वे क्रिया अलौकिक होय छे माटे

जीवना कळयामां न आवे जेम सूर्यनी प्रकाशरुप जे शक्ति छे ते नेत्रमां आवे छे तेने इंद्रियो देवता ने जीव कोइ कळी शकता नथी ने वळी जेम वैराज-पुरुषना गोलकनी जे शक्ति छे ते देव मनुष्यादिकना इंद्रियादिकने प्रकाश करे छे तेने पण कोइ कळी शकता नथी ने वळी जेम पुरुषोतम भगवाननी जे शक्ति छे ते तो अक्षर ने मूळ पुरुषादिक सर्वेने प्रकाश करे छे पण तेने कोइ जाणी शकता नथी. ने वळी जेम शुरवीर पुरुष होय छे ते बरछी के तीर नाखे छे तेमां हाथनी शक्ति जाय छे पण हाथमां जेटली शक्ति छे तेटली तेमां जाती नथी पण लेशमात्र जाय छे. तेम पुरुषोत्तम भगवाननी जे शक्ति छे ते तो ब्रह्म, माया ने काळादिकने विषे लेश मात्रज आवी छे ने पोताने विषे तो अपार रही छे एवो महिमा दृढपणे समजीने भजन स्मरण करवुं, ज्ञानी भक्त जेते पुरुषप्रयत्ने करीने स्वभावने टाळे छे माटे ए श्रीजीमहाराजने गमे छे. ॥ २२२ ॥

अधर्म सर्गना मोटेरा एवा जे लोभादिक पांच दोष छे तेने धर्म सर्गना निर्लोभादिक जे पांच गुणरूप उपाय कह्या छे तेणे करीने जीतोने भक्ति करवी एम पांच अध्याये करीने कह्युं छे ने छठ्ठा अध्यायने विषे

ज्ञान वैराग्य ने माहात्म्ये सहित भक्ति कही छे ते माहात्म्य एम जाणवुं जे भगवानना दिव्य भाव ने मनुष्य भाव ते एकज छे पण रंच मात्र फेर नथी. ॥२२२॥

निराकार थइने भगवानने भजवा ते निराकार केम थावुं ? उत्तर जे, मायिक आकार मात्रने टाळीने जाणपणारूपे वर्तवुं ए निराकार समजणनुं लक्षण छे ते आकार बे प्रकारना छे एक बाहेरला छे ने एक मांहेला छे तेमां पण बे प्रकार छे एक रागे सहित छे ने एक रागे रहित छे ने ते रागपण बे प्रकारना छे एक विषय संबंधी छे ने एक श्रीहरि संबंधी छे तेमां जे श्रीहरि संबंधी राग छे ते तो धर्म ज्ञानादिक साधने युक्त छे ने एवी जातना रागने तो अति दृढपणे करीने राखवो ने ते वचमां बीजा आडा अवळा घणा संकल्प आवी जाय तेनी तो उपेक्षाज न राखवी जेम वरताल जवानो मुख्य संकल्प होय ने मार्गमां आडां अवळां घणांक पदार्थ आवी जाय ते जेम गणतीमां न होय तेम, ने वळी जेम निशानना (मध्यना २२ ना) वचनामृतमां कह्युं छे जे, एक निशान लेवानोज मुख्य संकल्प छे तेम, ने हमणां तो बीजा संकल्पनुं बळ जणाय छे. ने मुख्य संकल्पनुं बळ नथी जणातुं पण अंते जातां एज वृद्धि पामशे केम जे ते श्रीहरि संबंधीछे माटे ते

उपर साकर कोळांना वेला नाना ने तेनुं फळ मोटुं तेना द्रष्टांते करीने वार्ता करी. ॥ २२३ ॥

शास्त्रमां विषय जीत्यानुं कह्युं छे ते केम जीताता नथी ? उतर जे, ज्ञान वैराग्यादिक साधने युक्त एवो जे एकांतिक भक्त छे ते मंडे तो विषयने टाळी नाखे पण देहनी स्थिति एवीने एवीज रहे नहि तेणे करोने वातचितने सुवाण रहे नहि ने कांतो देह पडी जाय ने बीजाने तो विषय जीत्यानो एक उपाय छे जे, ए विषयना ताल ज्यारे आवे त्यारे ए तालने भांगी नाख्या करे ते एमने एम सुरत राखीने कर्या करे तो अल्पकाळमां राग ओछा थइ जाय छे त्यां द्रष्टांत, जेम वृक्षने एकवार कापी नाखे तो कांटा बहु वळोआ निसरे पण एमने एम दश विश वार कापे तो न निसरे अथवा निसरे तो लगारेक निसरे एम पंच विषयना ताल भांग्या करेतो विषय जीताय छे. ॥ २२४ ॥

श्रीहरिजीना भक्तने हरि भजवामां कोइ अंतराय छे के नथी ? उत्तर जे, अंतराय तो छे तेनी विगत जे मोटा गृहस्थ छे तेमने तो गाम गरास अने वाहनादिक तथा व्यवहार जे राज्य कार्यादिक तथा खान-

पानादिक ए सर्वे हरि भजनमां अंतराय करनारा थाय छे ने गरिब हरिभक्तने पण ए मोटा ग्रहस्थ अंतराय करनारा थाय छे. ने गरीब जे त्यागी छे तेने तो बरोबरीआ जे त्यागी तथा मोटा मनुष्य ए अंतराय करनारा थाय छे ए अंतराय केम न थाय? उत्तर जे धर्म, ज्ञान ने वैराग्य ए त्रणे अंगे सहित जे भक्ति तेणे युक्त एवा जे सत्पुरुष तेमने ओळखीने तेमनी अनुवृत्तिमां रहीने जो एमनो समागम करे तो कोइ अंतराय न थाय त्यारे कहेशो जे बीजानो द्रोह न थाय? एम कोइ कहे तो एमां द्रोह शानो थाय ने एम न समजे ने सर्वेने सरखा समजे तेने तो पशु जेवो मूर्ख जाणवो ने शास्त्रमां पण कह्युं छे जे संत छे ते तो त्रीस तथा चोसठ लक्षणे करीने युक्त छे ने श्रीजीए पण सत्संगीजीवनने विषे धर्म रक्षाना अध्यायमां बे प्रकारना संत कह्या छे तेमां अल्प बुद्धिवाळानो संग पापीनी पेठे दुरथी त्याग करवानुं कह्युं छे ने बहु बुद्धिवाला संतना संगे करीने त्रण अंगे सहित जे भक्ति छे ते वृद्धिने पामे छे. एम कह्युं छे ते पछी मुक्तानंदस्वामी तथा स्वरुपानंदस्वामी तथा सच्चिदानंदस्वामी एमना प्रसंगनी वार्ता निसरी तथा पर्वत भाइ तथा डोडीआ पुंजा भक्त एमनी वार्ता विस्तारीने

बहु थइ तेमां पण सच्चिदानंदस्वामी देह मुकीने ब्रह्म-पुरमां गया ने त्यां चोरनी पेठे छुपाइ रह्या एवी रीते वार्तानो प्रसंग बहु निसर्यो त्यारे संते कह्युं जे एवामां स्वभाव होय के नहि? उत्तर जे, मुक्तानंद स्वामी तथा स्वरुपानंदस्वामी ए आदिक जे संत तेमणे पुरुष प्रयत्ने करीने पोताना स्वभावने टाळ्या होय तेवा संतने विषे न होय. त्यारे ते संते कह्युं जे एवाने विषय ते बंधन करे के न करे? उत्तर जे, बहु उपशम रुप ऐश्वर्यने पाम्या होय ते तो जीवना कल्याणने अर्थे विषयनुं ग्रहण करे पण तत्काळ विषयना बंधनने टाळी नाखे ने जे अल्प उपशम रुप सामर्थीने पाम्यो होय ते तो शास्त्रना रहस्यने पोतानी मेळे समजे ने बीजा तो एवानी पासे शास्त्रना रहस्यने शीखे तो जाणे. ॥ २२५ ॥

शान्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयुं जे चांद्रायण ने धारणा पारणादिक जे व्रत तेने आवरदा पर्यंत कर्या करे तो वासना टळे के नहि? उत्तर जे, एम कर्याथी उपरथी टळ्या जेवुं जणाय पण कारण शरिरमांथी न टळे जुओने सौभरी ऋषिने ने च्यवन ऋषिने उपरथी तो जणातुं न हतुं पण कारण शरिरमां वासना हती तो परणवुं पडयुं माटे विषयने विषे दोष बुद्धि थया

विना वासना टळे नहि. ने जेम अमारे विषे तमारे हेत छे पण जो दोष आवे तो अमारो संग गमे नहि तेम नित्य प्रलयादिकनो विचार करीने मायिक पदार्थने विषे दोष बुद्धि समजीने आत्म सत्तारुप थइने श्रीजी महाराजनुं ध्यान करीने वासना टाळे त्यारे टळे छे. ते उपर शुरवीर पुरुष होय तेने देह, लोक, भोगादिकने विषे वृत्ति नथी रहेती ने रणमां टुक टुक उडी जाय छे ने सति पण बळी जाय छे तेम छे. ॥२२६॥

तपे करीने जीवनुं अंतःकरण शुद्ध थाय छे ने श्रीहरिजी पण प्रसन्न थाय छे एम शास्त्रमां कह्युं छे पण भक्तिए करीने अंतःकरण शुद्ध थाय छे एम शास्त्रमां केम कहेता नथी? उत्तर जे, तपे करीने विषयनी निवृत्ति थइ जाय छे ने अंतःकरण शुद्ध थाय छे. ने भक्तिमां तो सकाम भक्तने विषयनो संबंध रहे छे एटले अंतःकरण शुद्ध थातुं नथी माटे भक्तिए करीने अंतःकरणनी शुद्धि शास्त्रमां कहेता नथी. ॥ २२७ ॥

भक्ति, तप, ज्ञान वैराग्य, स्वधर्म अने व्रतादिक एमां कोण श्रेष्ठ छे. उत्तर जे, निष्काम भावे करीने ए साधनने करे तो सर्वे श्रेष्ठ छे. नहि तो सर्वे समान छे. ॥ २२८ ॥

एक दिवस जम्यानी वात निसरी त्यारे स्वामीए कह्युं जे अमे सर्वे तपासी जोयुं त्यारे एम जणाणुं जे रसे करीने तो प्रमाद थया विना रहेज नहि. ॥ २२९ ॥

मुमुक्षुने जेम छे तेम समजतां पोतानी मेळे सर्वेने आवडतुं नथी ने केटलाकने तो समजातुंज नथी ने केटलाक समजे छे ते पण विषयने मुकी शकता नथी केम जे जुओने साठ हजार वालखिल्य ऋषि छे ते समजता नथी ने बृहस्पति, इंद्र ने दक्षादिक ते सर्वे समजे छे पण ते विषयने मुकी शकता नथी ने एम समजे छे जे आपणे तो एमज रहेवाय. एम मनमां आंटी पाडी छे. तेम आ लोकना भक्तने विषे पण एम समजण छे त्यारे पूछयुं जे केम समजवुं ? उतर जे, धर्म ज्ञानादिक साधने करीने ब्रह्मरूप थइने परब्रह्म एवा जे श्रीहरिकृष्णजी महाराज तेमने अतिशे शुद्ध ने अति निर्विकार ने सर्व थकी परने सर्वना अंतर्यामि ने सर्वना प्रेरक ने सर्वना स्वामी ने सर्वना कर्ता ने सर्वना कर्म फळप्रदाता एवा समजीने अनेक गुणे करीने युक्त एवा जे श्रीजीमहाराज तेमनी अतिशे दृढ उपासना करवी. ॥ २३० ॥

"उत्तम भक्तने सुषुप्तिनी पेठे वर्ते छे" एम वचनामृतनो प्रसंग निसर्यो त्यारे हरिभक्ते शंका करी जे सुषुप्तिमां तो अज्ञान छे ते ज्ञानी भक्तने न होय माटे एनुं केम समजवुं त्यारे मोटा संते कह्युं जे ज्ञानी भक्तने जागृतने विषे सुषुप्तिनी पेठे तो विषयने विषे अभावे युक्त वर्तवापणुं छे ते भगवाने गीतामां कह्युं छे जे "या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ॥ यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः" ॥ २३१ ॥

प्रत्यक्ष श्रीहरिजी के तेमना संत मळया एटले कल्याण थइ रह्युं पण त्रण अंगे सहित भक्तिरुप साधनने कर्या विना कारण देहनी वासना नाश पामती नथी ने श्रीजीमहाराज पण प्रशन्न थाता नथी ने ते

१ अर्थः—सर्वजीव प्राणी मात्रने आत्मा परमात्माना विषयवाली बुद्धि रात्रीनी पेठे अप्रकाश करनारी छे, अर्थात् विषयी जीवोने ते मार्ग नथी चलातुं अने ते आत्मा परमात्माना विषयवाली बुद्धिमां संयमी पुरुष जागे छे अर्थात् आत्मा परमात्माना स्वरुपने जोतो थको रहे छे. अने जे विषयोमां भूत प्राणीमात्र जागे छे ते ज्ञानवान मुनिनी रात्री छे अर्थात् ते विषयोमां तेने अभाव वर्ते छे. । (गी. अ. २-६९)

साधन तो एकांतिक भक्तना संगे करीने ने अति दृढ पुरुष प्रयत्ने करीने शीखे तो सिद्ध थाय छे एम समज्या विना निष्काम भक्ति थाती नथी ने जे पोताना मनने जाणे भक्ति करे छे ते तो सकाम थइ जाय छे ते भागवत धर्ममां नवधा भक्ति सत्पुरुषो पासेथी शीख्यानुं कह्युं छे ने भगवाने पण गीतामां कह्युं छे जे "मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ॥ स गुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते"॥ माटे निष्कामपणे श्रीजीमहाराजनी प्रसन्नताने अर्थे त्रणे अंगे सहित भक्ति करवी पण बीजुं इच्छवुंज नहि ए एकांतिक भक्तनी समजण छे ने जे सकाम भक्ति छे ते तो देहने अर्थे तथा काम, लोभ, रसास्वादने मान, इत्यादिकने अर्थे थइ जाय छे ते सारुं समजीने भक्ति आदिक साधन करवां. एवी रीते वार्ता बहु करी छे पण आतोदिश मात्र लखी छे. ॥ २३२ ॥

एक दिवस मोटा संते कह्युं जे शहेरना ने गामडाना हरिभक्तनी समजण केवी छे तेने तमे ओळखो

---

१ अर्थः—मने जे निष्काम भक्तियोगे करीने आराधे छे, ते योगी सत्वादिक गुणोने उल्लंघीने वर्ते छे. अने पोते अक्षर ब्रह्मरुप थाय छे. ।

(गी. अ. १४–२६)

छो ? त्यारे संते कह्युं जे नथी ओळखता ते उपर मोटा संते ब्रह्मादिकनां ने इंद्रादिकनां द्रष्टांत दइने बहु वार्ता करी तेनी विगत जे ब्रह्मादिकने ने इंद्रादिकने विषय विना न चाले तेम परमेश्वर विना पण न चाले तेमां एटलो फेर छे जे ब्रह्मादिक छे ते तो देश काळादिकना विषमपणाने विषे पण परमेश्वरने मुकी शके नहि ने विषयने तो मुकी दे ने इंद्रादिकने तो परमेश्वर जे ते देशकाळादिकनी विषमताए करीने गौण थइ जाय पण विषय ने मुकी शके नहि तेमां ब्रह्मादिक देवने ठेकाणे शहेरना हरिभक्त जाणवा ने इंद्रादिक देवने ठेकाणे तो गामडाना हरिभक्त जाणवा. ॥ २३३ ॥

एक दिवसे मोटा संते कह्युं जे मायापर दिव्य धामने विषे एक मोटो ओरडो छे ने तेने चारे पासे नानी नानी ओरडीउं छे तेमां मोटा ओरडामां तो पुरुषोत्तम भगवान रहे छे ने एमनी दृढ उपासनाए करीने जे नक्कि हरिभक्त थया होय ने भगवाननां मनुष्य चरित्रने विषे कोइ दिवस मोह न पाम्या होय एवा जे भक्त होय ते तो हजारो जीवना कल्याण करे एवा समर्थ होय छे ने जे नानी नानी ओरडीउं छे तेमां तो सर्वे अवतार रहे छे ने जे एमना भक्त छे ते तो पोताना कल्याण करे छे ने बीजाना तो मांडमांड

करे एवा छे माटे पुरुषोत्तमना भक्त तो बहु श्रेष्ठ छे. ॥ २३४ ॥

एक संते पूछयुं जे सद्गुरु ने सच्छास्त्रने वचने करीने दृढ वैराग्यने पाम्यो होय ने दृढ श्रद्धावान् होय ने अष्ट प्रकारना ब्रह्मचर्यने अतिशे दृढ पाळतो होय ने अहिंसा धर्मने विषे दृढ प्रीतिवान होय ने आत्मनिष्ठा पण अति परिपक्व होय तो तेने माथेथी जन्म मरणनी निवृती थइ जाय छे एम श्रीजीमहाराजे सारंगपुरना ११ ना वचनामृतमां कह्युं छे ते साचुं कह्युं छे के फोस लाववाने अर्थे कह्युं छे. त्यारे मोटा संते कह्युं जे ए तो साचुं कह्युं छ त्यारे संते कह्युं जे एम केम वर्तातुं नथी त्यारे मोटा संत कहेजे एटली भूल छे अथवा प्रमाद छे त्यारे ते संत कहेजे ए साधनने केम शीखवां? त्यारे मोटा संत कहेजे सत्पुरुष पासेथी नित्य प्रलयादिकना विचारे करीने वैराग्य शीखवो ने सत् असत्ना विचारे करीने आत्मनिष्ठा शीखवी एम वर्तवाने विषे श्रद्धा जे त्वरा ते राखवी एवी रीते बीजा सर्वे गुण सत्पुरुष पासेथी शीखवां त्यारे शान्तानंद स्वामीए कह्युं जे वैराग्यादिक गुणनी अवधि छे के नहि? उतर जे, श्रीजीमहाराजना चरणकमळ विना क्यांय

पण अणुमात्र प्रीति न रहे ए वैराग्यनो अवधि छे ने उर्ध्वरेता थवाय ए ब्रह्मचर्यनो अवधि छे ने श्रीहरिजीनी कथा वार्ता आदिकने विषे अतिशे त्वरा वर्ते ए श्रद्धानो अवधि छे. ॥ २३५ ॥

आ सर्वे गरिब जेवा जणाय छे पण एक एक ब्रह्मांडनी क्रिया करे एटली एटली प्रवृत्ति ए सर्वेने विषे रही छे ने जेने पंच विषयनी वासना जो लगार रही होय तो ज्यारे तेने स्वतंत्रपणुं आवे त्यारे सर्वे ब्रह्मांडना शब्द, स्पर्श, रुप, रस, अने गंधने भोगवे तोय पण पूर्ण थवाय नहि माटे धर्म ज्ञानादिक गुणने विषे पक्व रुचि करे तो ज्यारे एने स्वतंत्रपणुं आवे त्यारे दत्तात्रेय के कपिलजी के शुकजी के रामानुजाचार्य जेवा थाय माटे पुरुष प्रयत्ने करीने महिमा पूर्वक त्रण अंगे सहित भक्ति करवी ने एने विषे अति दृढ रुचि राखवी एज सत्संग कर्यानुं फळ छे. ॥ २३६ ॥

व्यवहारमां रहीने श्रीजीमहाराज केम मूख्य रहे ? उत्तर जे, जो श्रीहरिजीनो महिमा समजीने व्यवहार करे तो श्रीजीमहाराज मूख्य रहे जेम चक्रवर्ति राजा होय तेना महिमाने जाणीने तेना जे कामदार होय ते कामकाज कर्या करे छे तेम श्रीहरिजीना

महिमाने समजीने व्यवहार करे तो परमेश्वर मूख्य रहे त्यारे शंका करी जे महिमा समजीने व्यवहार करे तो व्यवहार मूख्य थया विना केम रहे ? त्यारे मोटा संत कहे जे ल्यो एनो उत्तर करीए एम कहीने बोल्या जे, प्रथमथीज नित्य प्रलयादिकनो विचार करीने ने पिंड ब्रह्मांडने अति असार जाणीने ने काखना मुवाळा जेवो ने स्वप्न तुल्य व्यवहार जाणीने ने सत् असत्ना विवेके करीने व्यवहारना रुपने यथार्थ असत्य समज्यो होय तो व्यवहार मूख्य थाय नहि, ने एम न समजे तो परमेश्वर मूख्य थाय नहि ने संसार मूख्य थइ जाय छे. ॥ २३७ ॥

शान्तानंद स्वामीए कह्युं जे सत्संगी क्यारे थाय? उत्तर जे, ज्यारथी जेणे वर्तमान धार्यां त्यारथी ते सत्संगी तो थयो त्यां द्रष्टांत जेम कुंभारे चक्र उपर माटीनो पिंडो घडो करवाने अर्थे मुक्यो त्यारथी एनुं नाम घडो पडयुं पण ए चक्रथी उतरशे ने तडके सुकवशे ने घडशे ने निभाडामां बाळशे ने पछी पाणी भरीने वावरशे, ते एटले ठेकाणे जो नक्की रह्यो तो जाणीए जे हवे आ निवडयो ने नक्की घडो थयो तेम भगवानना माहात्म्यपूर्वक त्रण अंगे सहित भक्ति करते करते आत्माने विषे ज्यारे परमात्मानुं दर्शन थाय त्यारे सत्संगी

संपूर्ण थयो जाणवो. ते एकादशीना (मध्यना ८ना) वचनामृतने विषे कह्युं छे जे यज्ञ करते करते ज्यारे हृदयने विषे पुरुषोतम भगवान दर्शन आपे त्यारे यज्ञ पुरो थयो जाणवो. त्यां पर्यंत इंद्रियोनी वृतिने भगवानना स्वरुपने विषे होम्यारुपि यज्ञ ते निरंतर कर्या करवो. ॥ २३८ ॥

एक दिवस मोटा संते उपासनानी वार्ता करी जे, आपणे जेम श्रीजीमहाराजने पुरुषोतम भगवान कहिए छीए तेमज रामचंद्रजी आदिकना उपासक छे. ते पण पोतपोताना इष्टदेवने पुरुषोतम कहे छे एमज आपणे कहीए छीए के बीजी रीत छे एम पोतानुं मन शंका करे अथवा कोइक प्रतिपक्षी पूछे त्यारे जो दृढ ठेराव न कर्यो होय तो पोताने शंका थाय ने उत्तर पण निशंकपणे यथार्थ थाय नहि माटे पुरुषोतमपणानो दृढ ठेराव करवो. त्यारे संते आशंका करी जे केम समजे तो निशंकपणे पुरुषोतमपणानो दृढ ठेराव थाय? उत्तर जे, ज्यारे श्रीजीमहाराज प्रगट थया त्यारे जे जे अवतारना उपासक श्रीजीमहाराजने दर्शने आवता ते सर्वेने श्रीजीमहाराज भजनमां बेसारीने पोत पोताना इष्टदेवनां दर्शन करावता एवी रीते चोविशे अवतारनां दर्शन करावता तथा मुसलमानने अल्लानां तथा श्राव-

कने तिर्थंकरनां दर्शन करावता हवा. एम जे जे मतना आवे तेने पोत पोताना इष्टदेवनां दर्शन करावीने ते सर्वेने पोतानो आश्रय करावी देता हवा. तथा व्यापकानंद स्वामीने पोताने विषे चोविशे अवतार लीन करावीने पोताने विषे पुरुषोत्तमपणानो निश्चय करावी दीधो ए वातमां पण मर्म छे तथा पर्वतभाइ हरिभक्ते एम संकल्प कर्यो जे परमेश्वरना अवतार केवा हशे ? त्यारे ते भक्तने आगळ आवीने चोविशे अवतार दर्शन आपता हवा अने ब्रह्मपुरने विषे पोतानां दर्शन जेवा तेवा जीवने सहजेज करावता हवा एवी जातनी अनेक प्रकारनी सामर्थीनी वार्ता सत्संगमांथी समजीने श्री-जीमहाराजने विषे पुरुषोतम–पणानी उपासना निशं-कपणे अति दृढ करवी ने जे स्वयं पुरुषोतम भगवान छे ते तो आ फेरेज आव्या छे ए वार्ता परम सत्य छे ने वळी परमेश्वरनी मरजीने जाणे एवा जे परम भगवद् भक्त तेमणे पण ए वार्ता कही छे. ॥ २३९ ॥

एक समे वार्तानो प्रसंग निसर्यो जे सर्वे पोतानो मेळे ठराव करी ले छे पण शुद्ध परंपराए करीने नक्की करता नथी. त्यारे संते कह्यु जे शुद्ध परंपरा केम समजवी ? उत्तर जे, पुरुषोतम भगवान के तेमना एकांतिक भक्त तेमनी पासेथी श्रीहरिकृष्णजी महा-

राजना जे अवतार छे तेमनी रीतने समजे तथा एकांतिकनी समजणने समजे तथा ब्रह्मपुरने गोलोकादिक धामना महिमाने समजे तथा ते धामना पार्षदोनो तथा मृत्युलोकना संत तथा पार्षदोनो तथा आ लोकना तीर्थोनो तथा धामोनो महिमा समजे ते शुद्ध परंपरा कहीये एम समज्या विना तो केटलाक आत्मानंद स्वामीने तथा रामानंदस्वामीने तथा नरनारायणादिकने पण पुरुषोतम समजे छे माटे ए कही एवी जे शुद्ध परंपरानी रीत तेणे करीने पुरुषोतम समजवा. ॥ २४० ॥

सर्वे संत श्रीहरिजीनी भक्ती करे छे तेमां केटलाक ज्ञान शिखे छे ने केटलाक तो वैराग्य शिखे छे ने केटलाक धर्म तथा भक्तिने शिखे छे पण परस्पर इर्षा शा सारुं करे छे ? उत्तर जे, श्रीजीमहाराज तथा तेमना अति वहाला एवा जे एकांतिक भक्त ते पासेथी नवधा भक्ति तथा प्रेम लक्षणा भक्तिने शिखीने तेनो मर्म समजीने निष्काम भावे करीने भक्ति करे तो इर्षा न आवे ने एवी रीते सत्पुरुष पासेथी तो शिखता नथी ने पोतानी मेळे अहंममत्व सोता करे छे माटे परस्पर इर्षा थाय छे. ॥ २४१ ॥

एक दिवस मोटा संते धर्म, अर्थ, काम ने मोक्ष ए प्रधान छे जेमने एवा जे पुरुष तेमनी वार्ता करी देखाडी जे, जे मोक्षपरायण वर्तता होय तेमना मनमां कोइ पदार्थनी स्पृहा न होय ते गमे तो स्त्री पूत्रादिक नाश पामी जाओ के लाखोनी दोलत होय ते जाती रहो के गाम गरास होय ते पण जातां रहो पण एना अंतरमां ए कांइ खटके नहि ने मुंझवण पण थाय नहि ने नरसिंह महेतानी पेठे श्रीहरिजीनुं भजन सुखेथी कर्या करे पण अंतरमां बीजानी पेठे दुःखिओ थाय नहि. ॥ २४२ ॥

ज्ञानी एवा जे मोक्षार्थी ते अर्थादिकनो संग्रह करता नथी ने जे करे छे ते पण एम समजीने करे छे जे कल्याण रूप धर्ममां रहीने अर्थने उपजावे छे ने तेनुं धर्मरुप जे अर्थ छे तेनुं फळ विषय भोगज छे एम नथी समजता ने ते विषय भोगवे छे ते पण इंद्रियुंने लडाववी एज फळ नथी जाणता पण देह रहे एटलुंज फळ समजे छे ने ते देह राख्यानुं फळ पण एटलुंज छे जे त्रण अंगे सहित भक्ति करीने श्रीहरिजी महाराजना एकांतिक भक्त थावुं ने जे अज्ञानी छे ते तो एम समजे छे जे धर्मनुं फळ धन मळ्युं ए छे ने धननुं फळ विषयभोगववा ए छे ने तेनुं फळ इंद्रियोने

लडाववी ए छे ने फरी पण एमने एम कर्या करवुं एवी रीते असत् समजणनो शास्त्रमां ना पाडी छे ते उपर नीचे प्रमाणे श्रीमद् भागवतना प्रथम स्कंधमां बे श्लोक छे जे "[1]धर्मस्य ह्यापवर्ग्यस्य नार्थोऽर्थायोपकल्पते । नार्थस्य धर्मैकांतस्य कामो लाभाय हि स्मृतः" "कामस्य नेंद्रियप्रीतिर्लाभो जीवेत यावता । जीवस्य तत्वजिज्ञासा नार्थो यश्चेह कर्मभिः" अने जे अर्थपर वर्ते छे ते पण धर्ममां रहीने अर्थनो संग्रह करे छे ने जे धर्मपर वर्ते छे ते पण धर्म सोताज अर्थने भेगा करे छे पण ए बेय जणा अर्थने मोक्षना मार्गने विषे वावरे छे माटे ए पण ठीक समजे छे ने जे कामपर वर्ते छे ते तो अर्थ धर्म ने कामपर करे छे माटे एनी समजण बराबर नथी. ॥ २४३ ॥

---

१ अर्थः—मोक्षोपयोगी निष्काम धर्मनुं फळ द्रव्य प्राप्ति नथी; पण मोक्षज छे. तेमज धर्मोपयोगी अर्थनुं फळ भोग विलाश नथी परंतु धर्मज छे. अने देह निर्वाहोपयोगी खानपानादिक भोग इन्द्रियोने तृप्ती करवा माटे नथी परंतु देह निर्वाह माटे छे, ने जीववानुं फळ कर्मो करी मेळवेलां द्रव्यथी भोगविलाश भोगववा ते नथी, परंतु अद्वितीय ज्ञान जाणवा माटेज छे. । (भा. प्र. अ. २ श्लो. ९-१०)

पृथ्वी पर जे चाळता होय ते तो पडे पण जे आकाश मार्गे गति करता होय ते केम पडे छे तेमां आकाशने ठेकाणे तो ब्रह्मपुर जाणवुं ने तेने विषे गति करनारा जे समाधिवाळा सर्वे हरिभक्त ते जेते ब्रह्मपुरने विषे तेजोमय शरिरवाळा देखे छे ते केम सत्संगमांथी पडी जाय छे? उत्तर जे, ए वार्ता तो एम छे जे अति दृढ श्रीजीमहाराजना भक्त न होय ते योग भ्रष्ट थाय छे पण पडता नथी ते भगवद् गीतामां कह्युं छे जे "[1]पार्थ! नैवेह नामुत्र, विनाशस्तस्य विद्यते॥ नहि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात! गच्छति" "[2]प्राप्य पुण्यकृतांल्लोकानुषित्वा शाश्वतीःसमाः॥ शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते" ने वळी ज्यांसुधी

१ अर्थः—हे अर्जुन! योगाभ्यासथी पडी गयेला योगीनो आ लोक परलोकमां (स्वर्गादिक भोग तथा ब्रह्मानुभव सुखमां) विनाश नथी. कारण के कल्याणने मार्गे चालनार कोइपण योगी क्यारेय दुर्गतिने नथी पामतो। (गी. अ. ६-४०)

२ अर्थः—भोगनी इच्छाए योगमार्गेथी पडेलो योगी, अतिशय पुण्यशालीना लोकने पामी त्यांना अतिसुखरुप भोगने भोगवीने भोग तृष्णा पूर्ण थतां योगाभ्यासना आरंभने योग्य, पवित्र सद्ग्रहस्थने घेर जन्म पामे छे।

एकांतिक भक्त न थयो होय त्यां सुधी तेने इंद्रियो अंतःकरण रुप जे माया ते पीडे छे ने एकांतिक भक्तने तो माया सहाय करे छे जेम गुण बुद्धिवाळा सत्संगी होय तेने कुसंगी डगावे छे ने जे नक्की सत्संगी छे तेनी तो खुशामत करे छे एम श्रीजीमहाराजे लोयाना दशना वचमामृतमां कह्युं छे. ॥ २४४ ॥

देह तो नर्करूप छे तेने पूजा सेवादिके करीने शुं फळ थाय ? उतर जे, एम तो मुमुक्षुने पोताना देहने समजवो ने जे सत्पुरुषनो देह छे ते तो निर्गुण छे जुओने सच्चिदानंदस्वामीना शरीरने बेडी, भींत, ने ताळांसोता कमाड ए कोइ आडां आव्यांज नहि ने स्वामी संतदासजीने पण हिमाळो रोकी शक्यो नहि ने विज्ञानदासजीने पण ताळांसोतां कमाड ने भींत ते आडां आव्यांज नहि ने ते आकाशमार्गे उडीने गोलोकमां विरज्या नदीने विषे जळ पान करीने पाछा ज्यां हता त्यां आव्या माटे ए सर्वे ब्रह्मरुप हता तो आवरण कोइ आडुं न आव्युं ते श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे "गुणापाये ब्रह्मशरीरमेति" एवी रीत्ये जे भजन

---

१ अर्थः—त्रण गुणोनो नाश थाय छे त्यारे ब्रह्मशरीर एटले भागवती तनुने पामे छे. ।

स्मरणे करीने तथा धर्मादिक साधननी पकवताए करीने भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या छे ते तो निर्गुण छे ने छेल्ला प्रकरणना ३५ ना वचनामृतमां पण श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे छो लक्षणे युक्त जे भक्त छे तेने पुजने करीने परमेश्वर पुजाय छे ने तेनो द्रोह करे तो श्रीहरिजीनो, द्रोह थाय छे "साक्षात्संबंधतो यस्य कर्त्ता श्रद्धा च कर्म च। ज्ञानं स्थानं च द्रव्यादि गुणवच्चापि निर्गुणम्" एम कही धर्मादिक चार साधनोनी तथा संत असंतनी अतिशे वार्ता करी. ॥ २४५ ॥

अने मुक्त बुद्धि शीखवी ने ते तो सत्वगुणी होय तेमनाथी शीखाय छे तेनुं लक्षण जे "प्रवृत्ति च निवृत्ति

१ अर्थः—कर्त्ता, श्रद्धा, कर्म, ज्ञान, स्थान अने द्रव्यादिक सर्वगुणवाळां होय छतां पण निर्गुण भगवानना साक्षात् संबंधथी निर्गुण थइ जाय छे.।

२ अर्थः—हे अर्जुन! प्रवृत्ति जे वैभवनां साधनरुप धर्म अने निवृत्ति जे मोक्षनां साधनरुप धर्म, तेमज ते बन्ने धर्मोनुं पालन करता सर्व वर्णाश्रमीओने करवा योग्य तथा नहीं करवा योग्य कार्य, अने शास्त्रनी मर्यादा निवृत्त थवारुप भयस्थान तेमज शास्त्र प्रमाणे वर्तवा रुप अभयस्थान ए आदिकने जाणनारी बुद्धि सात्विकी कहेवाय छे.।

(गी. अ. १८-३०)

च कार्याकार्ये भयाभये ॥ बंधं मोक्षं च यावेत्ति बुद्धिः सा पार्थ ! सात्विकी " ॥ २४६ ॥

एक दिवस मोटा संते कह्युं जे इंद्रियोमां अंतःकरणमां ने कारण देहमां भगवाननुं ध्यान आपण सर्वे करीए छीए ते जो सत् असत्नो विचार करीने ने त्रण शरिरथी जुदा पडीने जीवमां ध्यान करीए तो जीव शुद्ध थाय ते अमदावादना बीजा वचनामृतमां कह्युं छे जे नाही धोइने पुजा करवी ने जेम कोइ शाहुकार अन्नजळ देवारुप सदाव्रतनी पेढी करी जाय छे तेम श्रीजीमहाराज कल्याणरुप सदाव्रतनी पेढी करी गया छे ने जे धर्मने विषे दृढपणे वर्ततो होय ने सत्पुरुषनो अति दृढ विश्वास होय तो तेने गमे तेवुं कठण प्रारब्ध होय तो पण ते टळी जाय छे. ॥ २४७ ॥

एक दिवस मोटा संते वात करी जे पुरुषोतम भगवान जेते अक्षर, मूळपुरुष, प्रधानपुरुष ने विराटादिक ए सर्वेना नियंता रुपे केम रह्या छे ? तो जे जेम श्रीजीमहाराजनी आज्ञा आचार्यजी महाराज उपर छे ने तेमनी आज्ञा मोटा साधु उपर छे ने तेमनी आज्ञा मंडळना साधु उपर छे एवी रीते रह्या छे ने एमां जे तारतम्यपणुं छे तेने श्रीजीमहाराज जाणे छे

अथवा तो जेना उपर एमनी प्रसन्नता होय ते जाणे छे पण ते विना बीजो कोटी उपाये करीने पण जाणी शके नहि. ॥ २४८ ॥

काळकर्मादिने विषे जे कर्तापणानो विश्वास ते तो मोटा ऋषिओने छे ने जे आधुनिक पंडित छे तेमने तो नथी ए तो नास्तिक जेवाज छे ने जे श्रीजीमहाराजना भक्त छे ते तो पुरुषोतम भगवाननेज जगतना कर्ता जाणे छे ने बीजा कोइने मानता नथी. ॥२४९॥

एकांतिक भक्तनी वृत्तिमां भगवान रह्या होय एवानुं वर्तन केवी जातनुं होय ? उत्तर जे, एवानी जे क्रिया ते आचार्यजी महाराजने अर्थे होय के मंदिरने अर्थे होय पण पोताने अर्थे न होय ने एवा जे गृहस्थ हरिभक्त होय तेने पण ॥ प्रसंगमजरं पाशमात्मनः कवयो विदुः " स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतं" ए श्लोकमां कह्युं छे एवी रीते सत्संगने विषे ममत्व अने वर्तन होय. ॥ २५० ॥

१ अर्थः – जीवने संबंधीओमां तथा विषयोमां कोइपण रीते न छेदाय एवा पाशरुप दृढ प्रसंग छे तेज प्रसंग जो एकांतिक साधुओमां कर्यो होय तो मोक्षनुं द्वार उघाडुं थइ जाय छे. ।

(भा. तृ. अ. २५–२०)

एक दिवस मोटा संते आ किर्तन गवराव्युं जे "एक वात सुणो व्रजवासीरे पुरुषोतम बोल्या प्रीते" ए उपर विस्तारीने पोते वार्ता करी जे आकाशने ठेकाणे तो अक्षर छे ने अंधकारने ठेकाणे माया छे ने वादळांने ठेकाणे महाविराट छे ने पक्षिने ठेकाणे क्षुद्र विराट छे ने विजळोने ठेकाणे अक्षरना मुक्त छे ने पोते तो आकाशने विषे जेम शब्द छे तेनो पठे अक्षरमां रह्या छे अने "[1]मायापरैत्यभिमुखं च विलज्जमाना" ए श्लोकमां कह्युं छे एम पुरुषोतम भगवान आगळ माया उभी रहेती नथी ने महापुरुषादिकने तो पासे रहे छे ते वैराजपुरुषना ने प्रधानपुरुषना ने मूळपुरुषना ने अक्षरना जे भक्त छे ते तो परतंत्र छे ने पुरुषोतमना जे भक्त छे ते तो स्वतंत्र छे ने ते जेवो तेवो होय तो पण इंद्र, ब्रह्मा, वैराजपुरुष के प्रधानपुरुष जेवो थाय छे ने जेने उपासना अतिशे दृढ होय तो ते मूळपुरुष जेवो पण थाय ने सत्पुरुषना संगे करीने धर्म, ज्ञानादिकने अति पक्व करे तो अक्षर जेवा एकांतिक भक्त पण थाय छे ते वार्ता सोनाना तथा अंग्रेजना महेताना

१ अर्थः—वळी जे परमात्मानी आगळ माया पण शरमाइने दूर नाशी जाय छे.।
(भा. द्वि. अ. ७-४७)

द्रष्टांते करीने करी तेमां एम जाणवुं जे पुरुषोतमना जे एकांतिक भक्त छे ते सोनानी पठे पूर्वे कह्या तेम श्रेष्ठ छे तथा अंग्रेजना महेतानी पेठे श्रेष्ठ छे. ॥२५१॥

अने "कर्मात्मकं येन शरीरबन्धः" ए श्लोकनी[1] वार्ता करी जे जीव जेते प्रथम देहाभिमाने युक्त थको पंच विषय सबंधी क्रियाने जेम ममत्वे सहित करे छे ने ते पछी सत्संग करीने ते जीवरुपे पोताने मानीने श्रीजीमहाराजने अर्थे तेवोज ममत्व राखीने नवधा भक्ति अतिशे करे ने तेमना भक्तनी पण ममत्व राखीने सेवा चाकरी करे त्यारे अंतःकरण शुद्ध थाय छे. त पछी सत्तारुप थइने वारमवार उपशम करीने जलना फुंवारानी पेठे अनेक प्रकारे थइ जे इंद्रियोनी वृतियो तेनो पिंडीकरण वारमवार कर्या करे त्यारे ए जीवने अतिशे बंधनरुप जे कारण शरिर ते नाश थइ जाय छे. ते उपर आ त्रण वचनामृत वंचावीने वार्ता करी ते त्रण वचनामृतनां नाम (१) मध्यनुं ५० मुं रहस्यनुं ने (२) मध्यनुं ४५ मुं जे साधु ब्रह्मचारी अयोध्यावासी ने गृहस्थ ए सर्वे तमे खबडदार रहेजो ने (३) अमदावादनुं बीजुं जे नाही धोइने पुजा करवी. ॥ २५२ ॥

---

१ अर्थः—सकाम कर्म शरीरना बंधन रुप छे.।

समाधिवाळाने श्रीजीमहाराजनी मरजी जणाय के नहि ? उतर जे, श्रीजीमहाराजनी साथे अतिशे एकतापणाने पामी जाय छे तेने क्यारेक जणाय छे ने बीजाने तो न ज जणाय ने जेने धर्म ज्ञानादिक अति पक्व होय एवो जे एकांतिक भक्त छे तेने तो सदाय जणाया करे छे. ॥ २५३ ॥

मानी प्रकृति होय ने मान मळतुं होय तेनुं मान केम टळे ? उतर जे, वैराज पुरुषनो तथा प्रधानपुरुषनी तथा मूळपुरुषनी सामर्थीने जुवे ने तपास करे जे एमना जेवी सामर्थी केटली छे जेनुं हुं मान राखुं छुं एम विचार करे तो मान टळी जाय ने वळी मोटा मोटा श्रीहरिजी महाराजना साधु जे शतानंदमुनि ने स्वरुपानंदस्वामी तथा मुक्तानंदस्वामी तथा हरिभक्त पर्वतभाइ एमना जेवी सामर्थी मारामां केटली छे जे हुं मान राखुं एम विचारे तो मान रहे नहि.॥२५४॥

श्रीजीमहाराजना महिमानी तथा जीवना स्वरुपनी वार्ता समजे छे तो पण स्वभाव टळतो नथी तेनुं केम हशे ? उतर जे, ए तो श्रीहरिजीना महिमानुं तथा जीवना स्वरुपनुं वारमवार श्रवण मननादिके करीने स्वभावने घटाड्या करे तो टळे छे नहि तो न

टळे ए उपर बे वचनामृत वंचाव्यां तेनां नाम (१) मध्यनुं ३७ मुं सहज मकृति टाळयानुं ने (२) मध्यनुं १५मुं शत्रु भावनुं. ॥ २५५ ॥

निष्ठाना स्वरूपने जाण्यानुं लक्षण ए छे जे समुद्रमां वहाण बुडतुं होय तथा दैव इच्छाये करीने वगडामां एकलाज नोखा पडी गया होइए ने वळी देह पण अति मांदो होय ने पोतानी मेळे क्रिया करवा समर्थ न होय तो पण कायर न थवाय. ने श्रीजीमहाराजना अंतर्यामिपणानो जे विश्वास ते लेश मात्र पण गौण पडे नहि तेनी पक्व निष्ठा कहीए तथा श्री हरिजी अथवा सत्पुरुष ने कोइक नाना साधुना वचनमां वर्तावे तो पण जेम श्रीजीमहाराजनी समीपे तथा मोटा संतनी समीपे वर्ततो होय तेमज वर्ते पण लेश मात्र आडुं अवळुं करे नहि तेनी पकवनिष्ठा कहिए अने एवी पकव निष्ठा केम थाय ? उतर जे, ए बे प्रकारनी पकवनिष्ठाना लक्षणनी वार्ता कर्यामां तथा सांभळयामां श्रद्धा बहु राखे तथा मोटा पुरुषनो संग करे तो पक्वनिष्ठा थाय छे. ॥ २५६ ॥

श्रीजीमहाराजने देखे छे पण पोताना स्वरूपने जुदुं देखतो नथी ए केम हशे ? उतर जे, ए तो साधन

काळने विषे जो जीव, इश्वर, ने परमेश्वर एमना स्वरुपनो भिन्न भिन्न श्रवण मनन ने निदिध्यास कर्यो होय तो दृढ स्थितिमां पण जुदां जणाय छे, नहि तो न जणाय. ॥ २५७ ॥

बद्रिकाश्रम तथा श्वेतद्विपना मुक्त केम वर्ते छे? उत्तर–जे बद्रिकाश्रमना मुक्त तो जाणपणा रुप थइने इंद्रियो अंतःकरणने जीते छे ने श्वेतद्विपना मुक्त तो वासुदेव भगवाननुं ध्यान करे छे माटे ए तो निरन्न कहेवाय छे केम जे ए तो बे शरिरनी भावनाए रहित वर्ते छे ने आत्म सत्तारुप थइने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करीने कारण शरिरना रागने टाळे छे माटे निरन्न कहेवाय छे ने श्रीजीमहाराज दयाए करीने एकवार तो सर्वे हरिभक्तने देहनो त्याग करावीने ब्रह्मपुरमां लइ जाय छे ने पोताने विषे प्रीति पण अतिशे करावे छे ने पोतानुं अलौकिक सुख पण अतिशे आपे छे ते पछी जेने ज्यां मोकलवा घटे तेने त्यां मोकले छे पछी ते भक्त ए सुखने संभारतो थको बीजा रागने टाळीने पाछो श्रीजी पासे आवे छे. ॥ २५८ ॥

श्रीजिमहाराजने सर्वे भजे छे पण जेम छे तेम जाणवा बहु कठण छे ने आत्माने पण सर्वे संत जाणे छे पण आत्मारुपे वर्तवुं कठण छे त्यारे केम करे तो

आत्मा रुपे वर्त्युं कहेवाय ? उतर जे, नित्य प्रलयादिके करीने सर्वे क्रियाओने असत्य ने नाशवंत ने स्वप्न तुल्य जाणीने क्यांय प्रीति न राखे ने एमने एम अखंड ठेराव कर्या करे तो आत्मा रुपे स्थिति थाय छे. ॥ २५९ ॥

ब्रह्मपुरादिक धामना मुक्त श्रीजी महाराज भेळा पृथ्वी उपर आव्या होय ते केम ओळख्यामां आवे ? उतर जे, ब्रह्मपुरना जे मुक्त होय ते तो धर्म ज्ञानादिक जे एकांतिक भक्तनां लक्षण तेणे युक्त होय ने तेमज वर्तता होय ने वार्ता पण तेमज करे ने जे वैकुंठना मुक्त होय तेने धर्म प्रधानपणे वर्ततो होय ने बीजुं गौण होय ने जे गोलोकना मुक्त होय तेने तो भक्ति प्रधान होय ने बीजां गौण होय ने जे श्वेत–द्विपना मुक्त होय ते तो आत्मसता रुपे वर्तता थका श्रीजीनुं ध्यान करीने कारण शरीरना भावने टाळ्ता होय ने जे बद्रिकाश्रमना मुक्त होय ते तो स्थुळ ने सुक्ष्म ए बेय देहना भावने टाळ्ता थका प्रधानपणे त्यागने विषे वर्तता होय ने जे स्वर्ग लोकना होय तेने कीर्ति प्रधानपणे वर्तती होय ने जे आधुनिक होय तेने विषयनी आसक्ति प्रधानपणे वर्तती होय. ॥ २६० ॥

परमेश्वरतो पूर्ण काम छे ने तेमने कांइ जोइतुं

नथी ने ग्रहण करे छे तेनुं केम जाणवुं ? उतर जे, ए तो जीवना कल्याणने अर्थे परमेश्वरे अतिशे दयाए करीने मनुष्य भावनुं ग्रहण कर्युं छे ने जो ए कोइ पदार्थने अंगीकार न करे तो आपणुं श्रेय केम थाय ? माटे पोते एवो संकल्प कर्यो छे जे अमने भूख, तरश, शीत, उष्णादिक मनुष्यनी पेठे थावो ते वात श्रीजीए पंचाळाना चोथा वचनामृतमां कही छे. ॥ २६१ ॥

लय, विक्षेप, रसास्वाद अने कषाय ए चारने टाळयानो शो उपाय छे ? (१) लयतो भगवाननी लीलाना चिंतवने करीने तथा स्वामिनारायण नामना भजने करीने टळे छे (२) विक्षेप तो श्रीजीमहाराजना माहात्म्यना विचारे करीने तथा आत्मा अनात्माना विवेके करीने टळे छे (३) रसास्वाद तो नियमने विषे यथार्थपणे वर्तवे करीने टळे छे (४) कषायतो सत्ता रूप थइने श्रीजीमहाराजना ध्याने करीने टाळे तो टळे छे. ॥ २६२ ॥

पंच विषयमां अरुचि केम थाय ? उतर जे, ए विषय सबंधी उद्यमने विषे अतिशे दुःखने वारमवार जोया करे तो अरुचि थाय न जो विषय सहेजे मळे तो पण एने भोगववे करीने श्रीजीमहाराजनी अप्रसन्नता थाय छे एमां लेश मात्र संशय नथी एम

मनमां यथार्थ दृढ निश्चय करे तो अरुचि थाय. ॥२६३॥

परमेश्वरने यथार्थ समज्यानी जे वार्ता छे ते जो हरिभक्तने न समजावे ने छानी छानी राखे तो तेने विषे तमोगुण वृद्धि पामे छे ते ए मोटो थाय तो पण संकर्षण जेवो थाय छे ने श्रीहरिनी सेवाने विषे अखंड रही शके नहि केम जे एने तमोगुण प्रधान छे माटे. ॥ २६४ ॥

निर्वासनिक भक्त अमने गमे छे एम श्रीजी महाराजे कह्युं छे माटे एम केम थवाय? उतर जे, बे प्रकारना भक्त छे तेमां एक तो सवासनिक छे ने बीजो निर्वासनिक छे ने ए बेयनुं कल्याण तो श्रीजीमहाराज करे छे पण सनकादिक जेवा निर्वासनिक भक्त उपर जेवो श्रीजीमहाराजनो राजीपो जणाय छे तेवो ब्रह्मादिक जेवा सवासनिक भक्त उपर राजीपो जणातो नथी ए वात मोक्ष धर्ममां कही छे जे भगवान ब्रह्मादिकनी पुजा पगे करीने ग्रहण करे छे ने एकांतिक भक्तनी पुजा तो मस्तके करीने ग्रहण करे छे ने ब्रह्मादिकनी तो ब्रह्मांडमां बहु मोटप जणाय छे ने सनकादिक तो गरिब जेवा जणाय छे पण ए बहु मोटा छे ने एवाने संगे करीने नीर्वासनिक थवाय छे. ॥ २६५ ॥

धर्म, वैराग्य, भक्ति, ने विचार एमां श्रेष्ठ ते कयो हशे ? त्यारे सर्वे संते विचारने श्रेष्ठ कह्यो त्यारे मोटा संते कह्युं जे अमने पण एज जणाय छे ते जुओने परमेश्वरनी मोटप जे एमने भजी भजीने तो शुक नारदादिक पण भगवान कहेवाय छे एवा ए भगवान अनेक सामर्थीए युक्त छे ने पूर्ण काम छे ने एमने कोइ पदार्थ मात्र जोइतुं नथी ए तो केवळ दयाये करीने जीवनां कल्याणने अर्थे मनुष्य भावने ग्रहण करे छे ने श्रीजीमहाराजे उतम मुमुक्षुनी शिक्षाने अर्थे तथा सर्वे आविर्भावनी शिक्षाने अर्थे प्रथम वनमां रहीने अष्टांग योग साध्यो ने शरिरमां रुधिर तो रहेवा दीधुंज नहि ने अन्न तो जमताज नहि ने वायु भक्षण करीने रहेता ने स्त्रीनो तो गंधज गमतो नहि. एवी रीते अति त्यागी एवा जे श्रीजीमहाराज ते जेते आपणा अल्याणने अर्थे जमवा मंड्या ने वस्त्र पण पहेरवा ओढवा मांड्यां. पण आपण सर्वेथी जेम घटे तेम यथार्थ सेवा थइ नहि. केम जे कोइ सत्संगीए छ महिना के पांच वर्ष पर्यंत रोज रोज थाळ करीने के करावीने श्रीजीमहाराजने अतिशे प्रीतिये करीने जमाडी शक्या नहि ने वस्त्राभूषण पण वर्षो वर्ष भावे सोता अर्पण करी शक्या नहि एवी रीते महिमा

समजवामां घणी कसर रही जाय छे. ॥ २६६ ॥

सत्तारूप थइने मांही रहीए तो सुख रहे छे ने बाहेर रहीए तो दुःख थाय छे ते केम वर्तिए तो दुःख न थाय ? उत्तर जे, जेम मांही वर्तिए छीए ने सुख रहे छे तेमज देहमां आवीए त्यारे तेमज वर्तिए तो दुःख थायज नहि ते वर्त्यानी रीत जे जेम तेम बोली जवाय ने कोइक कांइक कहेतो तेनुं दुःख लगाडीए नहि ने क्यां आपणे विदुर नीति भण्या छीए जे ते प्रमाणे न बोलयुं तो लाज नहि रहे एम तो कांइ नथी माटे मांही ने बाहेर जाणपणारूपे वर्तिए तो दुःखज नथी. ॥ २६७ ॥

विषयने भोगववा न दइए तो मन संकल्प विकल्प कर्या करे ने जो विषयने भोगववा दइए तो जीवनुं भूंडुं थाय छे माटे आहार विहार जुक्त राखवो ए ठीक छे. ॥ २६८ ॥

श्रीकृष्ण भगवाने अहिंसा धर्म प्रवर्ताव्यो नहि ने एकली मारकुटज केम करी ? उत्तर जे, शिशुपाळने जरासंधादिक जे आसुरी राजा हता तेमणे ज्यारे भागवत धर्म पृथ्वी उपर प्रवर्तवा न दीधो त्यारे श्रीकृष्ण भगवाने बिचारीने अर्जुन भीमादिक द्वाराए करीने अधर्म रुपि राजाओनी समाप्ति करावी ने युधि-

ष्ठिर राजा द्वाराए करीने श्रीमद् भगवद् गीता रु
सधर्म तेने प्रवर्तावता हवा. ॥ २६९ ॥

मंडळमां जे बखेडो थाय छे तेनुं कारण ए छे
सरखा रुचिवाळा न होय माटे मांहोमांही संप र
नथी ने एक रुचिवाळा होय छे तेमां पण वैराग्यने
करीने सरस नरस होय छे ते उपर कुटीचक, बहुद
हंस ने परमहंस तेनी विगत जे ज्ञान गौण ने आश्र
धर्म मुख्य होय ते कुटीचक कहेवाय. ने आ
धर्म तथा ज्ञान ते बे तुल्य होय ते बहुदक कहेव
ने आश्रमधर्म गौण ने ज्ञानाभ्यास मुख्य होय ते
कहेवाय. ने आत्मा परमात्माने साक्षात् पाम्यो होय
परमहंस कहेवाय एमना दृष्टांते करीने वात करी
कुटीचक ने ज्ञान गौण ने आश्रम धर्म मुख्य होय
एम जाणे जे बहुदक हंस ने परमहंस ए त्रण
मारा जेवा केम वर्तता नथी? एवी अवळी जे सम
छे ते खोटी छे ने जे सरस वर्तता होय ते एम ज
जे, जे उतरता होय ते पण मारी पेठे वर्ते तो ठीक
एनी समजण तो श्रेष्ठ छे. ॥ २७० ॥

एक दिवस मोटा संते सांजने समे पोतानी ज
दया करीने एम वार्ता करी जे भक्तिए करीने जी
कल्याण तो थाय छे पण त्रण अंग विना यथार्थ ह

भक्त थातो नथी ते अंग कयां तो दासपणुं, प्रीति ने आत्मनिष्ठा एनी वार्ता विस्तारीने करीने ए त्रण गुण जेने परिपूर्ण होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय छे अने ए भक्तने ने श्रीहरिजीने लेश मात्र अंतराय रहेतो नथी ने अतिशे हेते करीने एक जेवुं थइ जाय छे तेथी ए भक्तने श्रीजीनी मरजी पण जाण्यामां आवे छे ते माटे तेमनी मरजी प्रमाणे ज वर्ते छे ने कोइक वात न जणाय तो तेने श्रीजीमहाराज पोते जणावी दे छे जेम बे मित्र होय तेमने कोइ प्रकारनो अंतराय रहेतो नथी ने एक जेवा थइ जाय छे. तेम परमेश्वरने ने एकांतिक भक्तने पण एक जेवुं थइ जाय छे ने ते पूर्ण भक्त कहेवाय छे. ॥ २७१ ॥

एक दिवस स्वामिए वात करी जे पोताने मान थाओ के अपमान थाओ के राम पात्र लइने घेर घेर मागी खाओ के हाथीए बेसो ने सुख थाओ के दुःख थाओ ने शरिर रोगी के निरोगी रहो पण आवा पुरुपोतम भगवाननी प्राप्ति थइ छे माटे अलमस्त थका श्रीजीमहाराजने भज्या करे पण ए पुरुष कोइमां लेवाय नहि. ते एकांतिक भक्त कहेवाय. ॥ ७२२ ॥

परोक्ष वातने प्रत्यक्ष जेवी केम करीए तो थाय? उतर जे, जेम दश विश प्रमाणिक मनुष्य होय ने ते

पण समीप संबंधी होय ते सर्वे एम कहे जे आ वार्ता तो एमज छे ने परम सत्य छे तो ते वात सत्य मनाइ जाय पण लगारे संशय रहेज नहि तेम मोटा पुरुष कहे जे श्रीजीमहाराज जेवा ब्रह्मपुरने विषे ऐश्वर्य, पार्षद ने सामर्थो सोता बिराजे छे तेवाने तेवाज आ पृथ्वी पर विचरे छे ने ते मनुष्यरुपने विषे एवी ने एवी सामर्थी सो ए सोने हजारे हजारो जीवने देखाइ आवे छे ने ते कहे छे पण खरा एटले प्रत्यक्ष थया ने परोक्ष रह्या नहि एवुं जे श्रीहरिना स्वरुप संबंधी ज्ञान ते एकांतिकनी परंपराए करीने पमाय छे एम जाणवुं ते उपर सर्पना द्रष्टांते करीने वात करी. ॥२७३॥

एक दिवस मोटा संते कह्युं जे डोळीआ मनुष्यनो संग करवो नहि तेणे करीने अंतर मळीन थइ जाय छे ने पाछो तपासीने अंतर शुद्ध करे तो शुद्ध थाय छे पण एवी रीते करतां पण मोटानेज आवडे ने बीजाने तो शुद्ध अशुद्धनी खबरज पडती नथी ते वळी जेम वहाणने विषे अल्प भार होय ते जेम सर सर चाल्युं जातुं होय ने पछी तेने विषे घणो भार भरे तो तेम न चाले ने धीरुं पडी जाय छे ए तो द्रष्टांत छे तेम डोळीआ मनुष्यना संगे करीने इंद्रियोने

विषे ने अंतःकरणने विषे रज तमना वेग लागे छे ते पापरुप मेल पेसे छे तेणे करीने भजन स्मरणमां मंद पडी जाय छे ने जेम प्रथम हेते सोतुं भजन स्मरण थातुं होय तेम न थाय ते सारुं तो दत्तात्रेयादिक भगवान हता तो पण बीक राखीने वर्त्या. ॥२७४॥

वळी मोटा संते अर्थाराम इंद्रियाराम अने गुणाध्यान ने दोषाध्याननी वार्ता विस्तारीने करी तेने सांभळीने बीजा संते कह्युं जे केम समजीने दोषाध्यान करे तो बाध न आवे ने केम करे तो बाध आवे ने गुणाध्यान केम करवुं ने केम न करवुं ? उतर जे, जेने विषे जे दोष होय तेने कोइक प्रसंगे करीने कहेवाय तो तेनो दोष नहि ने अवगुण लीधो पण न कहेवाय ने जेने विषे ए दोष न होय तेने विषे ते परठे तो दोष लीधो कहेवाय ने तेनुं अतिशय भूंडुं थाय ने कल्याणना मार्गमांथी पडी जवाय ने जेम होय तेम कहे तेनो तो दोष जणातो नथी ने जुओने श्रीजीमहाराजे पण प्रथमना ३६ना वचनामृतमां कह्युं छे जे नारद सनकादिक जेवा जे साधु छे ते एने रांकने पापी जाणे छे ए दोषाध्यान न कहेवाय अने मुक्तानंदस्वामी तथा शतानंदजी जेवा मुनि छे ते पण एम जाणता हता जे आ भक्तने विषे आ-

टला दोष छे ने आ भक्तने विषे आ दोष नथी ने वचनामृतमां श्रीजीमहाराजे पण कह्युं छे जे अमे जोया करीए छीए जे आ भक्तने आ वर्तमानमां आटली कसर छे ने आ भक्तने कसर नथी ते ठीक छे एम मोटा मोटामां जोया करीए छीए माटे एवी रीते जे कह्युं ते दोषाध्यान न कहेवाय त्यारे हरजी ठक्करे कह्युं जे एक भक्त तो मोटो होय ने बीजो भक्त तो नानो होय ने तेमां दोष तो नक्की होय ते जणाय तो खरो माटे ए दोष लीधो कहेवाय के नहि ? उतर जे, न कहेवाय केम जे विवेकवान होय तेने तो साचुं खोटुं जणाय खरुं ए कांइ दोष लीधो न कहेवाय. ॥२७५॥

एक दिवसे मोटा संते कह्युं जे दास, प्रेमी ने ज्ञानी ए त्रण प्रकारना भक्त छे तेमने परमेश्वर ज्यारे पोता संबंधी क्रियामां के पोताना भक्त संबंधी क्रीयामां जोडे त्यारे दासने प्रेमी ए बेय तो ते क्रियामां जोडाइ जाय केम जे ए बेयने तो क्रिया कर्यानुं ध्यान अव्यक्तपणे रह्युंज हतुं अने ज्ञानी तो तेमां न जोडाय ए तो क्रिया मात्रने गौण करीने श्रीजीमहाराजने विषेज प्रधानपणे जोडाय छे माटे जेम घटे तेटलीज क्रिया करीने रहेवा दे ने एकांतिक तो त्रणे कहेवाय खरा. ॥२७६॥

बे प्रकारना मनुष्य छे तेमां एकनां देह इंद्रियो ने अंतःकरण ए सर्वे अर्थ, धर्म ने काम पर वर्ते छे ने अर्थादिकने सारु उद्यम करे छे ने ते आत्माने जाणे छे ने सुक्ष्म देहने पण जाणे छे ने ते अर्थादिकने विषे अनेक भेद रह्या छे तेनी विगत जे कोइकने तो इंद्रादिकना अर्थ कामादिक जोइए छीए ने कोइकने तो ब्रह्मादिकना ने कोइकने तो बृहस्पत्यादिकना ने कोइकने तो वैराज पुरुषना ने कोइकने तो प्रधान पुरुषना ने कोइकने मूळपुरुषना अर्थ कामादिक जोइए छीए ने ते अर्थादिक तो लोभ, काम, स्वार्थ, स्नेह, मान, क्रोध, इर्षा, मद मच्छरादिके करीने भरेल छे अने बीजाने देह इंदियोने अंतःकरण ए सर्वे मोक्ष पर वर्ते छे ने तेनां लक्षण जे प्रकृति पुरुष ने तेनां सर्वे कार्य तेने असत्यने अत्यंत असार ने नाशवंत ने तूच्छ ने स्वप्नतुल्य एवां जाणे ने जीवात्माने ब्रह्म साथे एकपणाने पमाडीने परब्रह्म पुरुषोत्तमने भजे छे ए वात उपर आ त्रण श्लोक छे तेनां नाम जे ॥"आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रंथा अप्युरुक्रमे॥

१ अर्थः—आत्मस्वरुपमांज आराम माननारा, काम क्रोधादिक दोषोथी रहित मुनीओ पण, बहु पराक्रमवाळा परमात्मामां निष्काम भक्ति करे छे. कारण के भगवानना गुणो आत्माराम मुनोओने पण आकर्षण करे तेवा होय छे. (भा.प्र.अ.७-१०)

कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थंभूत गुणो हरिः ॥ १ ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा, न शोचति न कांक्षति ॥ समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥२॥ धर्मस्थितै रुपगतैर्बृहतासहैक्यं, सेव्यो हरिः सितमहःस्थित दिव्य मूर्तिः । शब्दाद्यरागिभिरिति स्वमतं वदन्तम् ॥ त्वां भक्ति धर्म तनयं शरणं प्रपद्ये " ॥३॥

---

१ अर्थः—ब्रह्मरुप थयो एटले जेने आत्मस्वरुपनो आविर्भाव थयो छे अने प्रसन्न मन छे, एटले क्लेश कर्मादि दोषथी जेनुंमन व्याप्त नथी अने कोइनो पण शोक करतो नथी, तेमज कोइ पदार्थने इच्छतो पण नथी अने सर्व भूतमां सम छे एटले कोइ वस्तुनो आदर नहि करनार अर्थात् सर्व वस्तुने तृणवत् माने छे ते पुरुष मारे विषे परा भक्तिने पामे छे. । (गी. अ. १८-५४.)

२ अर्थः—धर्म स्थितैरुप—शब्दादिक विषय रागे रहित, पोताना वर्णाश्रम धर्ममां सद्वर्तता, अने अक्षरब्रह्म साथे आत्मस्वरुपना साधर्म्यपणाने विचारता, अर्थात् हुं अक्षरब्रह्म छुं एवी भावना करता जनोए अक्षरब्रह्मना तेज पुंज मध्ये नित्य विराजमान, दिव्य मूर्ति जेमनी छे एवा भगवान सदा उपास्य छे. आवा पोताना सिद्धांतने कहेनारा, भक्तिधर्मना पुत्र आपना शरणने पामुं छुं. ।

(स. जी. प्र. ५ अ. ६६. श्लो. २१)

आ त्रण श्लोकमां जेवी वात कही छे तेवी जातनी रुचि अतिशे पक्व करी होय तो कोइ काळे ने कोइ विघ्ने करीने पण भक्तिनो नाश थाय नहि त्यां द्रष्टांत छे जे जीवने ज्यारे अंत समो आवे छे त्यारे मूर्छावस्था थइ जाय छे ते समय कांइ खबर रहेती नथी ने पाछो ज्यां देह धरे छे त्यां पूर्वनी पेठे राग द्वेषादिकने लइने उठे छे तेम जेने धर्म ज्ञानादिक संबंधी अति पक्व रुचि थइ होय तो ते ज्यां जाय त्यां एवीज रुचि लइने उठे छे. ॥२७७॥

श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने दृष्टि आगळ धारीने इंद्रियोद्वारे करीने अंतरमां उतारवी ने आत्मसत्ता रुपे रहीने मूर्ति सामुं जोइ रहेवुं एम कर्या करे तो इंद्रियोमांथी राग ओछा थइ जाय छे ने एम वर्त्या विना तो धर्मने विषे रहीने विषयने भोगवतो होय पण विषयने मुकी शके नहि ने जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने दृष्टि आगळ ध्याने करीने धारीने इंद्रियोमांथी विषयना रागने टाळतो होय ते तो मूकी दे केम जे तेनी इंद्रियोनी वृत्ति कोमळ होय छे तेने जेम फेरवे तेम फरे छे जेम नानो वडनो वृक्ष होय तेने जेम मरडे तेम मरडाइ जाय छे पण बहु मूळ घालेल ने अति विस्तारवान् जे वड होय ते मरडयो मरडाय नहि माटे

पुरुष प्रयत्ने करीने प्रतिलोमपणे वर्त्यानो आग्रह राखवो. ॥२७८॥

पुरुषोत्तम भगवानना स्वरुपने केम समजवुं ? उत्तर जे, जेवी रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्तिओ छे तेवीज पुरुषोतम भगवाननी मूर्ति होय पण स्वरुप स्वभाव गुण ने विभूति आदिके करीने तथा ऐश्वर्य प्रकाश ने शक्त्यादिके करीने ए अवतारने विषे ने श्रीजीमहाराजने विषे अत्यंत विलक्षणपणुं छे. ॥२७९॥

साधर्म्यपणुं केम जाणवुं ? उत्तर जे, जेम दावानळे वनना एक देश बाळयो होय तोपण वन बाळ्युं कहेवाय तेम भगवाननी आज्ञा प्रमाणे भगवानने मार्गे चाल्यो जे भक्त ते भगवान अने सत्पुरुषने संगे करीने निर्गुणपणाने पाम्यो कहेवाय छे. ने ए निर्गुणपणुंज भगवाननुं साधर्म्यपणुं छे ने आपणे सर्वे साधर्म्यपणाने पाम्या छीए तो जीवनां कल्याण करीए छीए ते साधर्म्यपणाने विषे दृष्टांत छे जेम एक पर्वत तो साकरनोज होय ने एक पर्वत तो पोणा भागनो साकरनो होय ने एकतो अर्धो साकरनो होय ने एक तो पा भागनो साकरनो होय ने एक पर्वतनां तो शिखर माथे सो के पचास मण साकर पडी होय त्यां जे जीव जाय ते सर्वेनां मुख गळयां थाय तेम साधर्म्य पणामां भेद छे. ॥२८०॥

आत्माने ने भगवानना महिमाने केम जाणवो ? उत्तर जे, आत्माने एम जाणवो जे चोराशी लाख जातना देह धर्या पण क्यांय मर्यो नथी ने जेवो छे तेवोज रह्यो छे माटे अजर, अमर, छे ने अछेद्य, अभेद्यादिक जे लक्षणे करीने जीव सत्ताने जाणवो ने पुरुषोत्तम भगवाननो महिमा तो एम समजवो जे जेनी बीके करीने समुद्र चोसठ गाउ उंचो जळने धरी रह्यो छे ने जेनी बीके करीने वायु पण निरंतर वाय छे ने ए भगवान जळना बिंदुमांथी आवी काया करी आपे छे एवी जातनो महिमा अपार रह्यो छे एम पुरुषोत्तम भगवानने समजवा. ॥२८१॥

एक दिवस मोटा संते कह्युं जे जेटलां पदार्थ बाहेर रह्यां छे तेटलांज जीवमां रह्यां छे ने जीवनी अहंवृत्ति बळवान् छे केम जे अतिशे सरस भगवाननी वार्ता संतनी सभामां थाती होय ने अहंवृत्ति जो बीजे ठेकाणे जाय तो तरत चालीने उठी नीकळे. ने ए अहंवृत्ति बहु विस्तारवान् जणाय छे जुओने साहेब लोक घोडाने ने स्वारने तोळीने दोडावे छे ने तेने फरीने तोळे तो जे आगळ निसर्यो होय तेमां चार पांच शेर वधु भार थाय छे त्यारे पुछयुं जे अहंवृति केम टळे ? उत्तर जे, शिक्षापत्री, धर्मामृत, ने निष्काम

शुद्धि ए त्रण ग्रंथ प्रमाणे नियममां प्रमाद मुकीने देहने वर्तावे ने सत्पुरूषना संगे करीने धर्म ज्ञान वैराग्य ने माहात्म्ये सहित श्रीजीनी भक्तिने शीखे ने तेमज वर्ते तो अहंवृत्ति टळे ने ए अहंवृत्ति जन्म मरणनुं कारण छे. ॥ २८२ ॥

धर्म, ज्ञानादिके करीने बे सरखा होय तेमां एक तो श्रीहरिजी महाराजनी अनुवृत्तिने विषे वर्ते छे ने एक नथी वर्ततो ए बेयमां कोण श्रेष्ठ छे? त्यारे संते कह्युं जे, अनुवृत्तिमां वर्ते छे ते श्रेष्ठ छे ते जे यथाथ महिमा समजतो होय तेज अनुवृत्तिमां वर्ते छे. ॥ २८३ ॥

सत्संग करे छे तेने दिव्य देह केम बंधाय छे? उत्तर जे, जेम मूर्तिनुं बिबुं मीणनुं करे छे तेमां पांच प्रकारना रस रेडे छे ते रसनी मूर्ति बंधाय छे ने मीणनुं बिबु गळी जाय छे ने ते उपर जे माटीनुं खोखु होय तेने भांगो नाखे छे तेम धर्म, ज्ञानादिक साधन जेम जेम पक्वताने पामतां जाय तेम तेम दिव्य देहने विषे प्रकाशादिक ऐश्वर्य आवतां जाय ने चार साधन जीवने विषे संपूर्ण प्राप्त थाय छे त्यारे दिव्य देह सर्वे प्रकारे संपूर्ण थाय छे ने ते पछी माटीनां खोखांने ठेकाणे जे स्थुल देह ते पडी जाय छे ने जेम मूर्तिने

गसी भूंसीने दिव्य करे छे तेम ए एकांतिक भक्तने श्रीहरिजी महाराज अति दयाए करीने ने भीनी दृष्टिए करीने सर्वे कसर टाळी नाखे छे ने देहाभिमान तो स्थुल देहने विषे रहे छे ने मान तो सुक्ष्म देहने विषे रहे छे ए रीते बे प्रकारे मानना विवेकनी वात करी. ॥ २८४ ॥

नर ने मादा नामे बे प्रकारना जीव असुरमां ने देवमां रह्या छे ते नर जो असुर होय तो अनेक जीवने असुर करे छे ने ते जो देव होय तो हजारो जीवने देव करे छे ने नर विना एकली मादाने फळ लागे नहि तेम एकांतिक भक्तना संग विना एकांतिक थवाय नहि ते उपर पोपैयाना वृक्षना दृष्टांते करीने वात करी. ॥ २८५ ॥

विषय खंडनना वचनामृतनी वात करो ते समजीने विषय भोगवे तो सुखीओ रहे, नहि तो दुःखीओ थाय त्यारे संते पुछयुं जे केम समजीने विषय भोगववा? उत्तर जे, धर्मामृत, शिक्षापत्री अने निष्काम शुद्धि ए प्रमाणे जे वर्तवुं तेने समजीने विषय भोगव्या कहेवाय. ॥ २७६ ॥

स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए पूछयुं जे वासना बहु बळवान छे ते केम जीताय? उत्तर जे, सत्पुरुषना

समागमे करीने धर्मादिक चार साधनने पक्व करे तो वासना जीताय ने शुद्ध भक्त थाय छे. ॥ २८७ ॥

भगवानना भक्तने व्यवहारना विक्षेप बाध करे के नहि ? उत्तर जे, जे समर्थ होय ते तो विक्षेपने अंतःकरणमां प्रवेश करवा दे नहि ने उपरथी तो खरखरो बहु करे ने जे असमर्थ होय तेने तो ए विक्षेप अंतःकरणमां प्रवेश करी जाय छे. ॥ २८८ ॥

भक्तनो भगवानमां प्रवेश थाय छे ए मध्यनुं ३८ मुं वचनामृत ज्यारे वंचाव्युं त्यारे सोमला खाचरे कह्युं जे देह मुकीने प्रवेश थातो हशे ? के देह छते प्रवेश थातो हशे ? उत्तर जे, देह छते पण प्रवेश थाय छे केम जे जेनो जेने विषे अतिशे स्नेह होय तेनो तेने विषे प्रवेश कहेवाय छे. ॥ २८९ ॥

सर्वे जीवोना कर्म तो एक नथी ने उत्पति तथा प्रलय एक काळे केम थाय छे ? उत्तर जे, उत्पत्यादिक तो वैराज पुरुषने लइने थाय छे जेम कोइक मोटा साधुने जुनागढ जावुं होय त्यारे तेमना मंडळना साधुने गमे के न गमे तो पण तेमनी साथे जावुं पडे छे एम वैराज पुरुषने उत्पति, प्रलयनी रीत छे. ॥ २९० ॥

महततत्वादिक चोविश तत्त्व जे ते भिन्न भिन्न

उपजे छे के एक काळे उपजे छे ? उत्तर जे, एकज काळे उपजे छे जेम बाळक उत्पन्न थाय छे तेम. ॥ २९१ ॥

जीव मात्र बहु क्रिया करे छे पण जे करवानुं छे ते रही जाय छे जेम लहिआ थावुं के कवि थावुं ए आदिक साधन तो जीव आळसने मेलीने करे छे पण एकांतिक थयानुं साधन तत्पर थइने जीव करतो नथी ने जीवने प्राकृत वस्तुमां जेवुं हेत थाय छे तेवुं हेत भगवान के भगवानना मोटा साधुने विषे होय तो काइ वातनी कसर न रहे ने बहु मोटो थाय. ॥ २९२ ॥

संत सभामां एम प्रसंग निसर्यो जे सरल स्वभाव सारो छे ? त्यारे मोटा संत कहे जे, सरल स्वभावने विषे एक दोष छे जे सत्पुरुषना संगे करीने धर्म ज्ञानादिक गुणे सहित श्रीजीमहाराजनी भक्ति करतो होय ने तेने अल्प बुद्धिवाळा साधु मळे ने आडी अवळी वार्ता करीने कोइक बीजे मार्गे चडावि दे तोपण चडी जाय माटे सर्वे ठेकाणे सरलपणुं ठीक नहि ने ज्यां राखवुं घटे त्यां समजीने राखे तो सरलपणुं ठीक छे ने आंटी पण ज्यां राखवी घटे त्यां राखे ते धर्मादिक पाळयाने विषे तो समजीने राखे ने ज्यां न राखवी घटे त्यां

न राखे तो समजु कहेवाय, नहि तो स्वभाव वश कहेवाय. ॥ २९३ ॥

धीरज वखत पर रहेती नथी ते केम समजे तो रहे ? उतर जे, श्रीजीमहाराजनी भक्ति माहात्म्ये सहित होय ने आत्मनिष्ठानो विचार अति पक्व होय तो धीरज रहे ने ते आत्मनिष्ठानो विचार करनारा पण त्रण प्रकारना छे तेमां एकने तो क्रिया कर्या पहेलां विचार रहे ते प्रथमथीज विचारीने पछी क्रिया करे ने बीजाने क्रिया करतां मध्ये सांभरे ने त्रीजाने क्रिया करी रहे त्यारे सांभरे ए त्रणे उत्तम मध्यम ने कनिष्ट कहेवाय ने जेने सांभरेज नहि तेतो अधम कहेवाय, ने उत्तम धीरजवाळा तो मुक्तानंदस्वामी हता ने मुक्तानंदस्वामीने कोइक भक्तजन कांइक वात कहेवा आवे त्यारे प्रथम तो ते साम्रुं जोइ रहेता ने तपास करता पछी कहेवुं घटे तो कहेवा नहि तो अंतर-द्रष्टि करीने श्रीहरिना भजनमां मंडया रहेता एवी रीतनो बळीओ विचार होय तो वखत उपर धीरज रहे ने वळी पिंड ब्रह्मांडने स्वप्नतुल्य, अति असार ने काखना मुवाळा जेवा समजीने ने त्रण शरिर थकी प्रथक जाणपणारूपे निरंतर वर्त्या करे तो वखत उपर धीरज रहे ते उपर जडभरत अने अखंडानंदस्वामी आदिकना द्रष्टांते करीने वार्ता करो. ॥ २९४ ॥

एक संते पुछयुं जे "श्रीजीमहाराज ने बीजा अवतार सर्वे सरखा छे? के कांइ भिन्न भाव छे?" त्यारे मोटा संते कह्युं जे, सर्वे सरखा छे त्यारे ते संत कहे जे "सामर्थीमां न्युनाधिकपणुं केम छे?" त्यारे मोटा संत कहे जे, एतो ज्यां जेटली सामर्थी जणाववी घटे त्यां तेटली जणावे. त्यारे वळी ते संत कहे जे व्यासजी ने परशुराम, तो आवता मन्वंतर ने विषे सप्तर्षि थाशे एमनुं केम? अने श्रीजीमहाराज ज्यारे प्रथम प्रगट थया त्यारे जे जे अवतारना उपासक पोताने दर्शने आवता तेने तेने तेते मूर्तियुंनां दर्शन करावी देता ने व्यापकानंदस्वामीने विषे चोविशे अवतार लीन करावी दीधा, ने पर्वतभाई ज्यारे खेतर खेडवा जाय त्यारे त्यां पोताना हळने आगळ सर्वे अवतार जाणे चालता होय एम पर्वतभाइने भगवानना अवतारनां दर्शन थातां. माटे ए सर्वे आविर्भाव तो पुरुषोत्तम भगवानने आगळ न्युन जणाय छे ए वात सांभळीने सर्वे दिग्मूढ जेवा थइ गया ने ते पछी मोटा संत कहे जे, श्रीजीमहाराजने मुखे तो घणीकवार एवी वात श्रवण कर्यामां आवी छे पण समजणमां आववी कठण छे ने शास्त्रमां पण होय ते पण अति मोटा सत्पुरुष पासेथी समजाय छे. ॥ २९५ ॥

आज वर्तमान काळे जे परम एकांतिक भक्त होय तेमने पुरुषोत्तम भगवान ब्रह्मपुरना भक्तोनी पेठे दर्शन देता हशे ? त्यारे मोटा संत कहे जे. आ पृथ्वीने विषे जे परम एकांतिक भक्त होय तेमने ब्रह्मपुरना मुक्तोनी पेठेज दर्शन आपे छे ने ते साथे वार्ता पण करे छे ने कोइ क्रिया भक्तने न आवडे तो ते भक्तने शिखवी पण दे छे ने ते भक्तने पण कोइक वात पूछवी होय तो पूछी ले छे. एम ते भक्तने अति साधर्म्यपणुं वर्ते छे ने जेम अति हेतवाळा बे मित्र होय तेने जेम कोइ वातनो अंतराय रहेतो नथी तेम ए भक्त पण श्रीजीमहाराजने विषे अतिशे स्नेहे करीने जोडाइ जाय छे माटे कोइ रीतनो अंतराय रहेतो नथी ने आजना मुक्तोनी सामर्थी तो जुओ जे संतदासजी बद्रिकाश्रममां जइने आव्या. ने सच्चिदानंदस्वामीने बेडी तथा ताळां तथा भींत तथा नदी ने गढ ने किल्लो आदि कोइ आवरणज थयां नहि. ने रतना भक्तने पण ताळां ने भींत आड करी शक्यां नहि ने विश्राम भक्त सुतारना संकल्पे करीने लाखो कीडियोना जीव देवतानां रुपने धरीने ने विमानमां बेसीने देवलोकने पाम्या ते अवतार अवतारीना संकल्पमां पण न्युन अधिक पणुं अतिशे छे जे अवतारीना मुक्त तो संकल्प

करे ते मात्रमां ते क्रिया सिद्ध थाय छे ने अवतार छे ते तो संकल्प करीने ते क्रियामां पोते भळे त्यारे सिद्ध थाय एवी अनेक प्रकारनी वार्ता सत्संगमां छे. ॥ २९६ ॥

सर्वे संतने तथा हरिजनने उपासना ने भजन स्मरणादिक सर्वे क्रिया ते सरखी छे तो पण ए बेय प्रकारना भक्तने परस्पर नाना मोटापणुं केम थइ जाय छे? उत्तर जे, जेम खेतरमां खेडु बीज वावे छे तेमां पण नाना मोटा छोडवा थइ जाय छे तेतो खातर के धरतीना फेरथी थाय छे तेम भगवानना भक्तने पण संग, साधन, श्रद्धा, उपासना ने श्रीजीमहाराजनी जे श्रवणादिक नव प्रकारनी भक्ति तेमां जेटलो फेर रहे छे तेटली ते भक्तमां नानप मोटप रहे छे. ॥ २९७ ॥

अहंवृत्ति जेते सकाम ने निष्काम भक्तिए करीने अतिशे वृद्धि पामे छे तेमां सकाम भक्तिए करीने तो मनुष्यथी लइने प्रकृति पुरुषना जेवी मोटपने पामे छे ने निष्काम भक्तिए करीने जीवसत्ता जेते अक्षरना साधर्म्यपणाने पामे छे अने सत्संगमां आवतां वेतज जाणे जे हुं मोटो थाउं एम मोटप आवे नहि. ते तो जेम जेम सत्संगने विषे दृढ निष्ठा थाती जाय ने एकां-

तिक साधु पासेथी धर्मज्ञानादिकने शिखीने ते साधनने पक्व करे तो मोटपने पामे छे. ॥ २९८ ॥

शक्ति, ऐश्वर्य, ने विभूति, ए त्रण एकज छे के भिन्न छे? उत्तर जे, शक्तिने ऐश्वर्य तो एकज छे ने विभूति तो जुदी छे. ॥ २९९ ॥

जे सत्संगी होय ते जे राजाना राज्यमां रहेतो होय तेने ते राजानुं कह्युं करवुं पडे तेम जे ब्रह्मा, सूर्यादिकने अनुसरे छे ते तेवा थाय छे ने जे पुरुषोत्तम भगवान के तेमना मोटा साधु तेमनी अनुवृत्तिमां वर्ते छे ते तो अक्षर जेवा थाय छे ने जेने कांइक आडुं अवळुं वर्तांणुं होय ने ते जो पोताना धर्ममां खबरदार थइने वर्ते तो पाछो शुद्ध थइ जाय छे. ॥ ३०० ॥

मन तो सत्वगुणमांथी थयुं छे माटे तेमां रज, तमना विकार केम रह्या छे? उत्तर जे, मन तो विषयनुं प्रकाशक छे तेनी दीपकने द्रष्टांते करीने कह्युं जे मन जो विकारवान् होय. तो नारद, सनकादिकनुं मन विकारवान् केम नथी. ॥ ३०१ ॥

जे स्थितीवान् होय ने ते ठीक वर्तता न होय ने जे स्थितीवान् न होय ते जेम संत कहे तेम करे छे. ए केम हशे? उतर जे, स्थितीवान् नथी तेने सा-

धन छे ने जे स्थितीवान् छे तेने साधन नथी ते उपर संतदासजीनी वार्ता बहु करी. ॥ ३०२ ॥

अक्षरब्रह्म सर्वने विषे व्यापकपणे केम रह्या छे? उतर जे, ऐश्वर्यें करीने सर्वेने विषे रह्या छे जेम सूर्य प्रकाशे करीने सर्व जगतने विषे रह्या छे तेम ॥३०३॥

उपास्य, उपासक, ने स्थानक ए त्रणनी शुद्धता कहो? उतर जे, पुरुषोतम भगवानने तूल्य उपास्य कोइ नथी ए उपास्यनी शुद्धता कहेवाय ने जे अक्षरना साधर्म्यपणे वर्तवुं ते उपासकनी शुद्धता कहेवाय ने स्थानकनी शुद्धता तो अक्षर ब्रह्मज छे एम जाणवुं. ॥ ३०४ ॥

जीव सदाय सुखी केम रहे? उतर जे, पोताने कंइ जोइए ज नहि एम जे वर्ते ने वळी कोइक पदार्थ सत्संगने अर्थे जोइतुं होय तो पण ते पदार्थ पोतावते कोइ पासे मगायज नहि एवी रीते जे वर्ते ते सदाय सुखी रहे छे. ॥ ३०५ ॥

पंचविषयनी अरुचि केम थाय? उतर जे, सर्वे माइक वस्तुने विषे दोषाध्यान निरंतर कर्या करे तो विषयने विषे अरुचि थाय. ॥ ३०६ ॥

इंद्रियोने विषे ने अंतःकरणने विषे ने जीवने विषे भगवाननो निश्चय होय तेनी प्राप्ति कहो ? उतर

जे, जेने इंद्रियुंने विषे भगवाननो निश्चय होय ते तो देह मुक्या पछे इंद्र जेवो थाय ने जेने अंतःकरणने विषे निश्चय होय ते तो देह मुक्या पछे ब्रह्मादिक त्रण देव जेवो थाय ने जेने जीवने विषे निश्चय होय ते तो देह मुक्या पछे अक्षरना मुक्त जेवो थाय छे. ॥ ३०७ ॥

संते कह्युं जे महाराज मल्या एटले शान्ति थइ गइ त्यारे मोटा संत कहे जे, उत्तम मुमुक्षुने तो दर्शने करीने ज शान्ति थाय छे एम मानी अने लोभी एवा जे मुमुक्षु होय तेने तो मान ने लोभ सोता जो सत्संग रहे तो शान्ति रहे नहि तो उद्वेग रहे. ॥ ३०८ ॥

अक्षर तो सर्वे ठेकाणे छे तेमां पुरुषोतम भगवान क्यां रहेता हशे ? उत्तर जे, पुरुषोतम भगवान पोताना एकांतिक भक्तमां रहे छे ने ते भक्त पण अनंत छे माटे तेमने मध्ये जे अति उतम भक्त होय तेमां मूळ स्वरूपे रहे छे जेम रासरमणमां श्री श्यामाजी पासे मूळ रुपे रहेता तेम रहे छे. ॥ ३०९ ॥

भगवानना भक्त केवा होय ते केवा धामने पामे छे ? उतर जे, भगवाननी दृढ उपासना ने एकांतिक धर्म ए बे जेमां संपूर्ण होय ते तो देह मुक्या पछी

अक्षरधामने पामे छे. ने धर्मने विषे कसर होय तो मूळ पुरुषने पामे छे ने एथी वधु सवासनिक होय तो प्रधानपुरुषने तथा वैराजपुरुषादिकने पामे छे ने जेने ए बेमां कसर होय ते ब्रह्मादिक देव जेवो थाय ने गुण बुद्धिवाळो होय ने साधुनी सेवा चाकरी करतो होय ते तो इंद्र जेवो थाय केम जे सारंगपुरना ११ना वचनामृतमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, पांच साधने करीने संपूर्ण होय ते तो अक्षरधामने पामे ने कोइ अंगमां न्युनता होय तो ए विना बीजा भगवानना धामने पामे, ने अति सवासनिक होय तो देव लोकादिकने पामे. ॥ ३१० ॥

स्वाद, मान, क्रोध ने इर्षा ए आदिक दोषने टाळवानां साधन कर्या करे ने तेने विषे दोष द्रष्टि राखे तो धीरे धीरे ए दोष निवृत्ति पामी जाय छे एम स्वभाव टाळयानी रीत छे. ॥ ३११ ॥

स्थुलने सुक्ष्मदेहना भाव टाळवाना साधनने विषे बद्रिकाश्रमना ऋषि मंडया छे ने कारण शरिरना भावने टाळवाना साधनने विषे श्वेतद्विपना मुक्त मंडया छे. ॥ ३१२ ॥

स्वयं, अंश, कळा ने विभूति ए चारना भेदने केम समजवा ? उतर जे, सगुण निर्गुण ए बे प्रकारना

भगवानना अवतार छे तेने मध्ये सगुण तो प्रद्युम्न, अनिरुद्ध ने संकर्षण ए स्वयं अवतार छे ने ब्रह्मा विष्णु ने शिव एतो अंशावतार छे. ने कस्यपादिक कळावतार छे. ने निर्गुणमां तो श्रीकृष्णादिक स्वयं अवतार ने दत्त कपिलादिक अंशावतार ने मच्छ कच्छादिक कळावतार एम छे ने विभूति तो इंद्रादिक ने जाणवी ने विभूति तो भगवाननी छडी छे. गीतामां तो राजाने पण विभूति कह्या छे. माटे छडी तो सर्वने मानवा जोग छे ने राजा परीक्षितनुं ऋषिये सन्मान न कर्युं तो केटली उपाधी थइ ने ते राजाओने विषे निरंतर जे स्वाभाविक गुण रहे छे ते तो पोताना छे ने जे विशेष ऐश्वर्य जणाय छे ते परमेश्वरनुं छे एम जाणवुं. ॥ ३१३ ॥

देहने विषे जीवने जेवी आत्म बुद्धि ने पुज्य बुद्धि छे तेवी जो महत्पुरुषने विषे आत्मबुद्धि ने पुज्य बुद्धि आदरे सहित राखे तो ज्ञानादिक सद्गुण जीवने विषे आवे छे. एमां कांइ संशय नथी. ने जीवतो पोतानी मेळे बहु करे छे पण ते लेखे आवतुं नथी ने जो मोटा पुरुषनी मरजी प्रमाणे वर्ते तो अल्प करे तो पण बहु थाय जेम रसे युक्त अन्न अल्प जमे पण त्रप्त थाय छे ने भाजी बसेर जमे तथा छास बे पतर पीवे तो पण तेने संतोष न थाय. ॥ ३१४ ॥

एक दिवस गुणातितानंदस्वामीए पुछयुं जे वासनामय जे लिंग शरिर नाश पाम्युं केम जणाय? त्यारे मोटा संते कह्युं जे, उतम पंचविषय प्राप्त थया होय तेने मुकी दे तो फरी पाछा सांभरे नहि. ते जेम जन्मांतरनां विषय सुख नथी सांभरतां तेम हमणाना विषय पण न सांभरे त्यारे लिंग देहनो नाश थयो जाणवो. ॥ ३१५ ॥

एक दिवस मनोहरदास भगवाननी वार्ता सांभळवा बेठा हता ते वार्ता श्रवण करते करते लक्ष थइ गयो त्यारे शान्तानंदस्वामीए कह्युं जे आमने बहु सुख आवतुं हशे? त्यारे मोटा संत कहे जे, तमारे समाधि जोइए छीए त्यारे ते संते कह्युं जे, महाराजनुं दर्शन थाय तो श्रेष्ठ छे त्यारे स्वामिए कह्युं जे इंद्रियोने विषयमांथी रेती जेवी लुखी करी नांखे ने जीव सताने अक्षर साथे एकपणाने पमाडीने पोते अक्षररुप थइने पुरुषोतम नारायणनी उपासना कर्या करे. एम जे वर्तवुं तेने तो समाधि करतां पण श्रेष्ठ मानीए छीए. ॥ ३१६ ॥

पुस्तकने अर्थे ने भगवानना चरणारविंदने अर्थे जीव बहु दाखडो करे छे ए सर्वे छे तो खरुं पण मोटा

पुरुषना समागममां रहीने ने धन, स्त्री, आदिक पदार्थनो त्याग करीने श्रीजीमहाराजनी अनुवृत्तिमां रहीने पोतानुं उतम कल्याण करवुं ए श्रेष्ठ समजण छे ने जे एवी बुद्धिनुं ग्रहण नथी करता तेनां पुस्तक आदिक पडयां रहे छे ने पोते सत्संग थकी पडी जाय छे. ॥ ३१७ ॥

अमदावादना बीजा वचनामृतमां "सत्तारुप थइने मानसी पुजा आदिक सर्वे करवां एम कह्युं छे ते सत्तारुप केम थवाय ?" उत्तर जे, पंचविश साधने युक्त जे वर्तता होय ते सत्तारुप कहेवाय एवी रीते वार्ता करी. ॥ ३१८ ॥

द्वितीय प्रकरणं समाप्तम् ॥

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम् ।

ध. धु. आचार्य श्री रघुवीरजी महाराजनुं जीवन चरित्र

सनातन धर्मनुं रक्षण करवा माटे अने संसृति थकी तरवाने इच्छता मुमुक्षुजनोना उद्धारने माटे अने उद्धव संप्रदायने प्रवर्तावावाने अर्थे परब्रह्म परमात्मा श्री सहजानंदस्वामीए पोतानी आचार्य पदवी उपर स्थापन करेला आ रघुवीरजी महाराज ते श्रीजीमहाराजनाज भत्रिजा हता. ते आचार्य वर्यनो जन्म भगवान श्री सहजानंद स्वामिए पोताना विचरणथी पवित्र करेक्षा उतर कोशळ देशने मध्ये आंबलीया गाममां सं. १८६८ना फाल्गुन वदी चोथ्यने दिवस थयो हतो सारा गुणोथी सेवाता अने दुर्गुणोथी पराभव नहि पामता अने हमेशां सत्य बोलनारा एवा आ आचार्य वर्य बाल्यावस्थामांज परोपकार करवामां तत्पर रहेता ए कारणथीज मातापितानी पेठेज सर्व लोकोने प्रिय लागता हता. त्यारपछी योग्य समये शास्त्रोक्त विधि प्रमाणे यज्ञोपवीत संस्कार पामीने थोडाज समयमां वेद अने वेदांगमां प्रवीण थया विद्यानी पेठे विनयथी

पण संपन्न थया अने यौवननी शोभानी पेठे विवेकनी शोभाथी पण शोभवा लाग्या. विद्या, धन, अने परिवारना उत्कर्षपणानी पेठे सरल स्वभावथी पण शोभता एवा आचार्यश्री रघुवीरजी महाराज, मधुर अने कोमळ वाणी तथा श्रेष्ठ धर्मोथी सेवकवर्गने पण आकर्षण करता. ज्यारे भगवान श्री सहजानंद स्वामी पोते लांबा वखत धारण करेली, अने धर्मनुंज रक्षण करनारी परनुं एक हितज करनारी आचार्यनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवाना लक्षणने जणावनारी अने बहारना व्यवहारे करी आनंद रुप जणाती. परंतु अंतरमां उपशम पामवाना लक्षणवाळा आत्माना आनंदना अनुभवने लगार अटकायत करनारी पोतानी आचार्य पदवीने योग्य पुरुषमां अर्पण करी आनंदमय अने मात्र पोताथी ज सारी रीते जाणी शकाय एवा पोताना दिव्य अक्षर धाममां जवाने इच्छा करी त्यारे आ श्रीहरिनी द्रष्टिए गुणयुक्त पोताना मोटा अने नाना भाइना बे पुत्रोमां ज प्रवेश कर्यो जेमांना एक आचार्यवर्य श्रीरघुवीरजी महाराज हता अने बीजा अयोध्या प्रसादजी महाराज हता पोते लांबा वखत पर्यंत धारण करेली आचार्य पदवीने आ बेने विषे विभाग पाडी स्थापन करवानी इच्छावाला श्रीहरिए ते बन्नेने पोताना पुत्रपणे स्वि-

कारीने आचार्य पदवीपर अभिषेक कर्या तेमां आ श्री रघुवीरजी महाराजने श्रीलक्ष्मीनारायण देवथी अलंकृत दक्षिण देशमां कर्या उद्धव संप्रदायनी प्रवृत्ति कराववा रुप आचार्य पद्वीने समर्पण करी.

आ रघुवीरजी महाराजने संवत १८८२ना कार्तिक मासनी शुकलपक्षनी एकादशिने दिवसे आचार्य पदवी प्राप्त थइ जे समये भगवान श्री सहजानंद स्वामी आलोकमांथी अंतरध्यान थइ गया ते समयने आरंभीने श्रीजीनी आज्ञाने वारमवार संभारीने सत्पुरुषो द्वारे उद्धव संप्रदायने चोतरफ प्रवर्तावीने प्रतिदिन वृद्धि पमाडवा लाग्या अने प्रतिदिन वृद्धि पामेली आचार्यनी संपत्ति तेणे करीने स्पृहा करवा योग्य थया. श्रीहरिना चरणकमलना आश्रयवाला परमहंसो पण भगवाननी आज्ञाने संभारीने ते आ रघुवीरजी महाराजनी आज्ञामां रहीने प्रथमनी पेठेज सर्व मुमुक्षुओने अनंत सदुपदेशे करीने सारी रीते बोध आपता थका लोकना हित माटे देशांतरमां विचरवा लाग्या अने आचार्यवर्य ते पण आ परमहंसो श्रीहरिना चरण कमलना आश्रयवाला छे एम जाणी ते सर्वने विषे बहु प्रेम दर्शावता थका सन्मान पूर्वक प्रतिदिन पूज्यभाव

राखवा लाग्या. अने पोते गृहस्थाश्रममां हता तो पण तेनुं कर्म कोइ सकाम भाववाळुं न हतुं के जेथी वासनारुप कर्म बंधनने माटे कल्पाय अने समग्र पोतानुं जीवन एक श्रीलक्ष्मीनारायण देवनी सेवा करवामांज व्यतित करवुं एवो सदाशय हमेशां रहेतो अने परमहंसना धर्म प्रवर्तावबा तथा सारी विद्यानी उन्नति करवी तथा शान्तिमां रहेवुं ए आदिक तेओश्रीना दिव्य गुणो सर्वे परमहंसोने पण आदर करवा योग्य थया अने वळी आ आचार्यश्रीए भगवानना तैयार थयेलां मंदिरोमां तथा नवां करावेलां मंदिरोमां मूर्तिओ पधरावबी तथा सच्छास्त्रो रचवां ए आदिके करी श्री हरिनी आज्ञाने पालन करता थका वरताल आदिक मंदिरोमां मूर्तिओनी प्रतिष्ठा करी तेमां मुख्यपणे करीने तो वरतालना मंदिरमां श्री लक्ष्मीनारायण देवने पडखे द्वारिकानाथ भगवाननी प्रतिष्ठा करावी अने गढपुरने विषे रेवती बलदेव तथा श्रीकृष्ण भगवाननी मूर्तिनी प्रतिष्ठा करावी तथा धोलेरा, गढपुर. अने जुनागढमां श्रीहरिकृष्णजी महाराजनी प्रतिष्ठा करावी अने खंभातमां नवुं मंदिर करावी ते मंदिरमां श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा श्रीराधाकृष्णदेवनी प्रतिष्ठा करावी तथा भरुचमां नवुं मंदिर करावी रेवती बलदेव तथा श्रीकृष्ण भग-

वाननी प्रतिष्ठा करी तथा सुरतमां मंदिर करावीने श्री नारायण मुनि तथा श्री राधाकृष्ण देवनी प्रतिष्ठा करी तथा मुंबइमां मंदिर करावीने श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा राधिका युक्त गोलोक बिहारी भगवाननी प्रतिष्ठा करावी तथा निमाड देशमां धर गाममां नारायण भगवाननी प्रतिष्ठा करी तथा बुरानपुरमां हरिकृष्ण महाराज तथा श्री लक्ष्मीनारायण देवनी प्रतिष्ठा करावी अने सावदामां श्री राधाकृष्णदेवनी प्रतिष्ठा करावी तेमज सोरठ देशमां माणावद्र गाममां नवुं मंदिर करावीने श्रीहरिकृष्ण महाराजनी प्रतिष्ठा करावी अने उनामां श्रीबालमुकुंद भगवाननी प्रतिष्ठा करी उपरोक्त ते ते प्रतिष्ठाओना महोत्सवमां तेओश्रीए हरिभक्तोनो अतिशय आदर, अने प्रतिष्ठा करवामां कांइ पण स्खलन नहि थयेलुं वैदिक कर्म तथा हजारो हजार ब्राह्मणोने जमाडवा तथा दक्षिणाओ आपवी. ए आदिकने श्रीजीमहाराजना समय प्रमाणेज कर्युं हतुं अने आ आचार्यवर्यना शान्त अने पवित्र स्वभावथी सत्संगनी कीर्ति दिन प्रतिदिन वृद्धि पामीने दरेक दिशाओमां व्यापि रही.

आ आचार्यश्रीनो संतोनी सेवा करवानो प्रेम।

एक समये वरताल मंदिरमां रहेता संतो पैकीमां कोइ एक संतने चार पांच दिवस तावनो सख्त मंदवाड रह्यो ते कारणे अन्ननी अरुची थवाथी तेटला दिवस तेमनाथी कंइ पण अन्न लेवाणुं नहि; पांचमे दिवस रात्रिमां ताव उतरी जतां अन्न जमवानी रुची थवाथी तेमने बाजरानो फरसो रोटलो माग्यो त्यारे ते मांदा साधुनी सेवा करनार साधुए पोताने त्यां ते रोटलो करवा माटे पूरती सामग्री नहोती तेथी विचार्युं जे आचार्यजी महाराजना रसोडे हवेज आदिक सर्व सामग्री मळशे एम धारी ते आचार्यजी महाराजना उतारे गया त्यां जइ कोइ पाळाने कहीने हवेज आदिक सामग्री मंगावी लउं एवो विचार करे छे तेटलाकमां तो ते साधु लगभग अर्ध रात्रीना समयमां भगवद् ध्यान करी हरता फरता ने माळा फेरवता आचार्यश्री रघुवीरजी महाराजनी नजरे चड्या साधुने जोतांज "आ साधुने कंइ पण जोइतुं हशे एम धारी" पोतेज चालीने तेनी पासे गया ने पूछ्युं 'केम स्वामी शुं जोइए छे?' त्यारे ते संते उपरोक्त हकीकत जणावी

ते सांभळी आचार्यश्रीए कह्युं जे "तमे क्यां चूलो सळगावशो ने क्यां बधी सामग्री लइ जशो तेमां घणी-वार लागी जशे अने अहीं तो बधुं तैयार छे माटे हमणांज रोटलो तैयार करावी राखुं छुं. थोडी वार पछी लइ जजो" आम कहेतां साधु पाछा धर्मशा-लामां गया ने रघुवीरजी महाराज पोते अबोटीउ पहेरी हाथ पग धोइ चालण चूलाने सळगावी तैयार करी उपर तावडी मूकीने पछी बाजराना लोटमां थोडो चणानो लोट नाखी अंदर हवेज तथा मेथीनां पांदडां नांखी सुंदर लोट बांधीने रोटलो करवा लाग्या. एटलाकमां तो अक्षर भुवनमां पोढेला श्रीहरि ते वातने अंतर्यामी पणे जाणीने ढोलीआमांथी जागीने बेठा थया अने पोतानी सेवामां निरंतर तत्पर रहेनारा मुकुंदानंद वर्णीने कह्युं जे ब्रह्मचारी क्षुधा लागी छे माटे कंइ पण जमवानुं आपो त्यारे वर्णीए कह्युं जे कृपानाथ! रात्रे जमीनेज पोढ्या छो ने वली अत्यारे क्षुधा केवी? त्यारे श्रीहरिए कह्युं जे ते वातनी खबर नथी पडती परंतु क्षुधा तो बहुज लागी छे माटे गमे ते उपाय करी जमवानुं लइ आवो त्यारे वर्णी कहे जे महाराज! अत्यारे क्यांथी संयोग बनशे? पछी श्रीहरिए कह्युं जे "रघुवीरजी महाराजने रसोडे जाओ

त्यांथी मळशे" विश्वासु वर्णी श्रीहरिनां उपरोक्त वचन सांभळीने त्यां गया त्यां तो रघुवीरजी महाराज पोतेज रसोडामां रोटलो करता हता अने पडखे एक रोटलो तावडीमांथी उतारीने नीचे मूकेलो हतो समीपे जइ वर्णीए कह्युं महाराजने क्षुधा लागी छे अने अत्यारेज कंइ पण जमवानुं मंगाव्युं छे' त्यारे आचार्यश्रीए कह्युं जे आ रोटलो हमणांज मांदा साधु माटे तैयार करेलो छे ते लइ जाओ ने महाराजने जमाडो वर्णी ते रोटलो लइ महाराज पासे आव्या ने रोटलो जमवा माटे आप्यो श्रीहरि जमवा लाग्या. जमतां जमतां पूछयुं जे अत्यारे रात्रिना समयमां ताजो रोटलो क्यांथी? आम पूछयाथी वर्णिए सविस्तर हकीकत कही ते सांभळी श्रीहरि अत्यंत राजी थया ने थोडोक रोटलो जमीने कह्युं जे जाओ त्यां साधु रोटलो लेवा आव्या हशे तेने आ प्रसादिनो रोटलो आपजो एम कही पोतानो रोटलो वर्णिना हाथमां आप्यो ते लइ वर्णि आचार्यश्रीने रसोडे गया त्यांतो ते पहेलांज रोटलो लेवा माटे आवीने उभेला संतने आचार्यजी महाराजे रोटलो आप्यो अने मुकुंदानंद वर्णिए पण प्रसादिनो रोटलो आपीने कह्युं जे "ल्यो आ श्रीहरिजीए प्रसादीनो रोटलो आप्यो छे ने कह्युं छे

जे 'मांदा साधुने जमाडजो एटले ताव उतरी जशे' " एम कहीने वर्णिए ते रोटलो पण साधुना हस्तमां आप्यो ते लइने धर्मशाळामां गया ने प्रसादिनो रोटलो तथा बीजामांथी अर्धोएक मांदा साधुने जमाड्यो त्यारथी ते साधुनो ताव उतरी गयो ते फरी आव्योज नहि.

बीजे दिवस संत हरिभक्तोनी सभा मध्ये दिव्य ढोलीआ उपर श्रीहरि बिराजमान थया अने आचार्यश्री पण सभामां आवी श्रीहरिनां दर्शन करी पोताने आसने बेठा त्यार पछी श्रीहरिए ते सभामां केटलीक प्रसंगोपात वार्ता कर्या बाद रात्रीना बनावनी सविस्तर हकीकत कहेतां रघुवीरजी महाराजनी मुक्त कंठे प्रशंसा करी जे "आचार्य तो आवा जोइए," "के जेमणे अमारा संतनो महिमा समझीने अर्ध रात्रीमां पोतेज जाते रोटलो करी आप्यो" आम कह्या पछी ते शिवाय बीजा पण तेमना सद्गुणोनी घणी प्रशंसा करी आ प्रमाणे ते आचार्यश्रीनो संतोनी सेवा करवामां प्रेम हतो.

आ आचार्यश्रीए रचेला ग्रंथो.

१. बार स्कंधनो हरिलीला कल्पतरु जेमां भगवान श्री सहजानंद स्वामीनुं चरित्र विस्तार पूर्वक दर्शावेल छे.

२. भाव प्रबोधिनी नामनी सर्वमंगल स्तोत्रनी व्याख्या.

३. भावार्थ प्रकाशिका नामनी जनमंगल स्तोत्रनी टीका.

४. शिक्षापत्रीनुं भाष्य.

ते भाष्यमां स्थले स्थले अप्रतिपत्ति. विप्रतिपत्ति. अन्यथा प्रतिपत्तिनो निषेध करवा पूर्वक मूळ अभिप्राय प्रकट करेलो छे.

आ प्रमाणे आ आचार्यश्रीए शास्त्रद्वारा तथा भगवानना मंदिरो करवां तथा तेमां मूर्तिओनी प्रतिष्ठा करवी ते द्वारा अने रुडा उपदेशद्वारा लांबा वखत पर्यंत उद्धव संप्रदायनी वृद्धि करीने छेल्ली अवस्थामां परमात्म स्वरुपमांज एक प्रीति जेमने थयेली छे एवा थका वहारत्य वृत्तिने त्याग करवानी इच्छाथी पोतेज जेमने यज्ञोपवीत आपीने बाल्यावस्थामांथी संपूर्ण विद्याभ्यासमां पारंगत करेला छे एवा पोताना भत्रिजा

श्री भगवत्प्रसादजी महाराज, तेमने आचार्य पदवीपर अभिषेक करीने पोते सर्वांतर्यामी परमात्मा श्री पुरुषोतमनारायण श्री सहजानंद स्वामीनी मूर्तिमां मनने धारण करी ते श्रीजीनी आराधना करवामांज तत्पर थया त्यार पछी समय थतां जुना वस्त्रनी पेठे शरीरने त्याग करी अक्षर धाममां जवानी इच्छा करतां सर्व ब्रह्मचारीओ तथा साधुओने बोलावीने समयोचित उपदेश आपीने तथा श्री भगवत्प्रसादजी महाराजने संप्रदायने पालन करवुं एज जेमां मुख्य कर्तव्य छे एवा आचार्यपदने शोभाडनार परमधर्मनो उपदेश आपीने संवत १९१९ ना महा शुदि बीजने दिवसे श्वास जेमनो शान्त थयेलो छे. अने भगवाननी मूर्तिमां निमग्न थयेला एवा आ श्री रघुवीरजी महाराज आ शरीरनो त्याग करी श्रीजीना अक्षर धाममां गया.

———o———

श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम्. ॥

अथ श्री सहजानंद स्वामी सुनु रघुवीराचार्य विरचित वार्ता लीख्यते.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः

हवेलीनुं काम करीए ते रहेवामां आपणा उपयोगमां आवे अने भगवान भक्ति माने अने जो न माने तो आपणो न्याय न पहोंचे अने भंडारमां वारो करवा गया ते रोटला जमवामां पोताना उपयोगमां आवे ने भगवान भक्ति माने अने जो न माने तो आपणो न्याय न पहोंचे ए आदिक अनेक क्रियाओ करीए ते आपणा उपयोगमां आवे अने भगवान भक्ति माने पण न माने तो आपणो न्याय न पहोंचे पण आवी रीते करे तो न्याय पहोंचे जे, अतिशे हेते करीने करे ने गदगद कंठ थइने अतिशे श्रद्धाए करीने करे ने एम जाणे जे नाशवंत एवुं जे आ देह तेणे करीने भगवानने अर्थे थयुं एटलुंज मारुं सुफलपणुं थयुं एम करे तो भगवान अतिशे भक्ति माने, ने आपणो न्याय पहोंचे. अने ग्रहस्थ हरिभक्त होय ते अनेक ठेकाणे खर्च करे ने कोइक व्यवहार संबंधी कारज आवे ने घरमां द्रव्य न होय तो माथे करज

करीने पण करे ने भगवानने अर्थे तो आटामां लवण जेटलुं थाय तो पण भगवान दयालु छे ते भक्ति माने अने जो न माने तो आपणो न्याय न पहोंचे अने आवी रीते करे तो न्याय पहोंचे अने भगवान भक्ति माने जे, व्यवहारमां रहेता होय ने भगवाननी आज्ञा यथार्थ पाळे ने एकादश नियम प्रमाणे वर्ते ने दशमो वीशमो भाग भगवानने अर्थे अतिशे हेते करीने निष्काम–भावे करीने अतिशे श्रद्धाए करीने काढे ने एम जाणे जे, जेटलु पदार्थ भगवानना उपयोगमां आव्युं एटलुंज मारुं सुफल थयुं. एम करे तो भगवान भक्ति अतिशे माने ने आपणो न्याय पहोंचे ते उपर विदुरजीनी स्त्रीनी वात करी जे, भगवानने विषे बहु हेत तेणे करीने शरीरनुं भान भुली गयां ने भगवानने अतिशे हेते करीने केळां जमाडवा मांडयां ते छोडां जमाडे ने रस रस पडतो मेल्यो. त्यारे विदुरजीए कह्युं जे, अरे भान विनानी भगवानने छोतरां जमाडे छे तेमने पेटमां दुःखशे नहि ? त्यारपछी तेमने देहनी स्मृति थइ त्यारे भगवानने सारां सारां केळांनो रस जमाडवा मांडयो त्यारे भगवाने कह्युं जे, मोरे जम्या ने स्वाद आवतो हतो तेवो स्वाद हवे नथी आवतो. एवी रीते अतिशे हेते करीने गदगद कंठे थइने भग-

वानने अर्थे श्रद्धाए सहित करे त्यारे भगवान खरेखरी भक्ति माने ने आपणो न्याय पहोंचे. ॥ १ ॥

आ देहे करीने करवानुं शुं छे? तो एकांतिक धर्म शीखवो ए करवानुं छे ते एनाज सर्व काळने विषे ने सर्व क्रियाने विषे मनसूबा करवा जोइए पण एना नथी थाता ने आ देहनी सेवा कर्यांना मनसूबा थाय छे ने रात दिवस खबडदार थइने मंड्या छीए जे, एने खवरावबुं, पीवरावबुं, नवरावबुं, पेरावबुं, ओढाडवुं, सुवरावबुं ने जगाडवुं ए आदिक जे अनेक रीते आ देहनेज सुख थाय तेम कराय छे. अने तेनाज मनसूबा रातदिवस थाय छे ने ए मनसूबा करतां थाके पण नहि. ने ए मनसूबा करतां तृप्ति पण थाय नहि ने नवीन ने नवीन श्रद्धा वधती जाय छे. अने ए मनसूबा करे त्यारे इंद्रियोने ने अंतःकरणने खुळासो रहे ने इंद्रियो अंतःकरण थाके पण नहि. ने प्रफुल्लित रहे पण संकोच तो क्यारेय थाय नहि ने भगवाननी भक्ति संबंधी जे जे क्रिया करे तेमां थाकी जाय ने इंद्रियो अंतःकरण संकोचने पामी जाय छे. ॥ २ ॥

विषयना संकल्पने विषयना मनोरथ अनेक थया करे छे त्यां श्लोक "मनोरथानां न समाप्ति–रस्ति

वर्षायुतेनाप्यथवापि लक्षैः ॥ पूर्णेषु पूर्णेषु पुनर्नवानामुत्पत्तयः सन्ति मनोरथानां" भावार्थ के, मनोरथ थातां कहेतां तेनी दश हजार वर्षे करीने पूर्णता नथी थाती अने लाख वर्षे करीने पण पूर्णता नथी थाती. शा हेतु माटे तो जेजे मनोरथ पुरो करे सते फरीने बीजा हजारो हजार मनोरथनी उत्पति थाय छे ते हेतु माटे मोटा पुरुष कहे छे जे, मनोरथनी [1]समाप्ति थाती नथी अने मनोरथनी समाप्ति क्यारे थाय तो महिमाये सहित भगवाननी एकांतिक भक्तिने आत्मनिष्ठाए सहित ज्ञान जे पुरुषना हृदयमां आवे त्यारे तेना मनोरथनी समाप्ति थाय छे. पण भगवाननी भक्ति ने ज्ञान ने आ सत्संग विना तो कोटी उपाये करीने ने कोटी साधने करीने पण ए मनोरथनी समाप्ति थाती नथी, अने ज्यारे माइक पदार्थना मनोरथनी समाप्ति थाय, त्यारे तो भगवाननी भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, गुण, ऐश्वर्य, विभूति उपासना ने अनुवृत्ति ए आदिक अनंत भगवान संबंधी मनोरथ थाय छे.

---

१ अर्थः—हजारो हजार अने लाखो वर्षे करीने पण मनोरथनी समाप्ति थती नथी, कारण के प्रथम करेला मनोरथो पूर्ण थतां फरीने नवा संकल्पो उत्पन्न थाय छे.।

जेम देहगेहादिक संबंधी मनोरथ थाता ते करतां पण अनंत गणा भगवान संबंधी मनोरथ थाय छे. ॥ ३ ॥

भगवाननो भक्त होय तेने तो एक भगवानज जीवितव्य होय ने एवो भक्त होय ने ए संसारमां रह्यो होय तोपण तेने संसारनो प्रसंग लागेज नहि ने ए सगां संबंधी, घर, पूत्र, धन, स्त्री, नात, जात, भाइ, व्हेन, ए आदिकमां रह्या होय पण ए कोइनो नथी. ते जुवोने पर्वतभाइ तथा राजोभाइ संसारमांज हता तोपण एने लगारे संसारनो प्रसंग लाग्योज नहि. ने स्त्रीने तथा छोकरांने कुकडां जेवां जाण्यां ते ज्यार पर्वतभाइये दाणा बधा सदाव्रतमां आपी देवा मांड्या त्यारे महाराजे पर्वतभाइने कह्युं जे छोकरांने वास्ते वर्ष दहाडाना दाणा खावा सारुं राखीने आपो, त्यारे पर्वतभाइए कह्युं जे कणबीनां छोकरां ने कुकडां तो ज्यां त्यांथी उकरडा बुकरडामांथी दाणां खोतरी खाय पण भूख्यां रहे नहि एम कहीने जेटला दाणा थाय ते बधाय सदाव्रतमां आपी देता एक वखते पर्वतभाइनो दिकरो मांदो हतो ते अंतकाळ समे घरे मेलीने महाराजने दर्शने आव्या ते वात मयाराम भट्टे श्रीजीमहाराजने कही ते महाराजे बहु ठपको दीधो ने कह्युं जे, बहु खोटुं कर्युं त्यारे पर्वतभाइए कह्युं जे एमां शुं

खोटुं कर्युं ? महाराजने दर्शने आव्या ने मरनारो हशे तो मरी जशे ने हुं दर्शने न आव्यो होत तोय मरनारो होत तो मरी जात अने ए तो छाणमां कीडा उत्पन्न थाय ने मरे तेम छोकरां तो उपजे ने मरे एमां शुं खरखरो करवो ? ने शोक करवो ? एमां कांइ दाखडो छे ? खाटलानो पायो भांग्यो होय तो तेनो खरखरो ने शोक करवो पडे कां जे लाकडां सारुं गरयमां (वनमां) लेवा जावुं पडे ने सुतार पासे पायो कराववो पडे ते एनो खरखरो ने शोक कइंक करवो पडे पण दिकरानो शोक शा सारुं करवो पडे ? एम बोल्या. अने राजाभाइए पण गढडे महाराज पासे आवीने कह्युं जे, मने साधु करो त्यारे महाराजे कह्युं जे, अमे कहीये तेम करवुं छे के साधु थावुं छे ? त्यारे राजाभाइये कह्युं जे, तमे जेम कहो एम करवुं छे. त्यारे महाराज कहे अमे तो एम कहिये छीए जे, जीवित पर्यंत पर्वत–भाइनुं सांती हांको त्यारे राजाभाइये पोताना व्यवहारनो त्याग करीने पर्वतभाइनुं सांती हांक्युं ने तेमना व्यवहारनुं काम कर्युं ने पोताना दिकरा कांइक पूछवा आवे तो सामुं जुवे नहि. ने कांइ बतावे पण नहि ने बोलावे पण नहि ए पण बहु कठण कां जे एक

गाममां रहेवुं ने एवी रीते वर्तवुं घणुं कठण पण ज्यारे भगवाननी महिमाए सहित एकांतिक भक्तिने आत्म निष्ठाए सहित ज्ञान आवे त्यारे कोइ वात करवी एने कठण पडे नहि. ने ए जे जे क्रिया करे तथा जे जे मनो रथ करे ते भगवान संबंधीज करे ने देह गेहादिक संबंधी मनोरथ सर्वे निवृत्ति पामे छे. ॥ ४ ॥

सर्व जीव प्राणीमात्रनुं रुडुं इच्छवुं पण कोइनुं भुंडुं तो क्यारेय पण इच्छवुंज नहि एम कहीने श्रीजी-महाराजने अने साहेब लोकने राजकोटमां मेळाप थयो तेनी वात करी जे महाराजने टोपीवाळे कह्युं जे, हे नारायण स्वामी ! हुं तो सवारमां उठीने खुदाने एम कहुं छुं जे हमारा बी रुडा करजो ने हमारा शत्रुका बी रुडा करजो. एवुं सांभळीने एना उपर महाराज बहु राजी थया. ॥ ५ ॥

एक हरिभक्ते पूछयुं जे, सत्संगीनो ने महाराजनो बहु द्रोह करतो होय तेना उपर तो बहु अभाव वर्ते छे ने जाणीए एनुं क्यारे अवळुं थाय एम रहे छे, ते तो ए टळे एम नथी जणातुं ? त्यारे बोल्या जे भग-वानना भक्त होय तेने महाराजनो ने सत्संगनो द्रोह कोइ करे त्यारे तेना उपर अभाव तो रहे खरो ने

अंतःकरणमां दुःख थाय खरुं पण पोतानी स्थितिमांथी नीकळी जवाय एवा वसमा लगाडवा नहिं जेणे करीने अंतःकरणमां उद्वेग थाय ने धर्म, ज्ञानादिकनो विचार भूली जवाय के भगवानना महिमानो ने ध्यान स्मृतिनो विचार भूली जवाय के देह इंद्रियो ने अंतःकरणना भावथी जुदा आत्मारुपे वर्तवुं के अक्षररुपे वर्तवुं के भगवानने जीवात्मामां धार्यानो विचार भूली जवाय ने पोताना हृदामां तम व्यापी जाय, एटले कोइ रुडो विचार तो रहेज नहि. एवा वसमा लगाडवा नहि. अने आपणे वसमा लगाडीए अने आपणे एना कांइ भूंडाने ईच्छीए ते आपण शुं करी शकीए आपणने तो श्रीजीमहाराजे शीक्षापत्रीमां ना पाडी छे जे, कोइना भूंडा थाय एवा संकल्प पण करवा नहि. करता हरता तो एक श्रीजीमहाराज छे ते कोइ वातनी उपाधी कराववी हशे तोपण एना हाथमां छे अने आपण भगवान भूलीने के रुडा विचारने भूलीने जेवा तेवा संकल्प करवा मांडीए त्यारे भगवानने कर्ता हर्ता ने अंतर्यामी पुरा क्यां जाण्या छे. अने जो जाण्या होय तो एम जणाय जे यत्किंचित जे कांइ क्रिया थाय छे ते भगवाननी प्रेरणाये करीनेज थाय छे ने भगवान सर्वं वातने हस्तामळ जाणे छे

ने आपणे एम जाणीये जे भगवान नथी जाणता तो एटली आपणे निश्चयमां कसर छे. ते उपर कृपानंदस्वामीनी वात करी जे एमने महाराजनो वियोग थाय त्यारे बहु दुःख थाय त्यारे गुणातितानंदस्वामीए कह्युं जे, दादोखाचर, सोमलोखाचर, ने सुरोखाचर तमारा मित्र छे ते एमने तमे कहो तो ए महाराजने कहे तो तमने महाराज पासे ने पासे राखे त्यारे कृपानंद स्वामीए कह्युं जे, एम कहेवाय नहि निश्चयमां बाध आवे. दादोखाचर कहे त्यारेज महाराज जाणे ने अमथा शुं नथी जाणता ? महाराजतो सर्व वातने हस्तामळ जाणे छे ने महाराजनी अंतर्यामी शक्तिए करीने अनंत कोटीब्रह्मांड ने अनंत कोटी ब्रह्मांडना जीव इश्वरनी क्रिया ते प्रवर्ते छे. माटे आपणे कोइ वातनी चिंता राखवी नहि, आनंदथी भगवाननुं भजन स्मरण ध्यान कर्या करवुं. ॥६॥

भगवाननी दयानो पार ने अंत नहि ने जीवना अवगुणनो पार ने अंत नहि ते जुवोने महाराज क्यां प्रगट थया ने दया करीने आ देशमां आवीने आपणने दर्शन दीधां ते मोटी मोटी नदीयोने मोटा मोटा नद उतरीने ने मोटा मोटा पर्वतने मोटां मोटां वन उतरीने ने मोटी मोटी झाडीने मोटां मोटां अरण्यने उतरीने

ने मोटां मोटां शहेर ने मोटा मोटा देशने उतरीने आंही आवीने अधर्मनो उच्छेद करीने एकांतिक धर्मनुं स्थापन कर्युं. ॥ ७ ॥

श्रीजीमहाराजने आ लोकनी बहुज अरुचिने अभाव, ते पेटमां अन्न रहे नहि. ने स्त्री उपर वास उतरे तो उलटी थइ जाय ने उदासी थइने जाणीये जे, जरुर जाता रहेशे एम थइ जाय. एवी आ लोकनी बहुज अरुचि पण आपणा उपर दया करीने ए सर्वे दुःखनुं सहन करीने आपणा भेली रुचि मेळवीने आपणने भगवान भजवा शीखव्या. ने पोते धर्म पाळीने आपणने धर्म पाळवा शीखव्या, ने पोते तप करीने आपणने तप करवा शीखव्या, ने पोतामां अपार आत्मविद्याने परमात्म विद्या ने वेद विद्या ने शास्त्र विद्या ने ब्रह्मविद्या ने अक्षिविद्यादिक घणीज प्रकारनी विद्या आपणने शीखवी. ने पोतामां अपार ज्ञान हतुं ते आपणने शीखव्युं. ने पोते भक्ति करीने आपणने भक्ति करवा शीखवी ने पोते अष्टांग योग सिद्ध करीने साधुने अष्टांग योग शीखव्यो ने पोते ध्यान करीने आपणने ध्यान करवा शीखव्युं ने पोते माळा फेरवीने आपणने माळा फेरवतां शीखव्या ने पोते आ ब्रह्मांड भराइ जाय एटली वार्ता करीने आपण सर्व साधु तथा

हरिभक्तने वातो करवा शीखव्या ने पोते पुजा करीने आपणने पुजा करतां शीखव्या ने पोते सेवा करीने आपणने सेवा करतां शीखव्या. ॥ ८ ॥

श्रीजीमहाराज रामानंदस्वामी पासे रह्या त्यारे तेमनी सर्वे सेवा पोते करी अने पोते मंदिर कराव्यां तेमां पोतानो राजीपो बहुज ने आ गोपीनाथजीनुं मंदिर पोते कराव्युं तेमां पोतानो बहु राजीपो ने केटलीकवार घेला नदीमांथी पोते मस्तक उपर पथ्थर लेता ने लेवरावता ने कांकरी लेवरावता घणीकवार दर्शन कर्यां छे. ते एकवार श्रीजीमहाराजे मस्तक उपर पथ्थर लीधो ते सोमलोखाचर ने सुरोखाचर कहे लावो महाराज तमारे साटे अमे लइये त्यारे महाराज कहे तमारे भक्ति होय तो घेलामांथी ल्यो. अने मंदिरनुं काम चाले ते कामनी निरंतर महाराज खबर राखता ने कडीआने बतावता ने काम करवाने वास्ते साधुने बोलावता जे, चालो साधु महाराज! कडीआ खोटी थाय छे. एम कहीने बोलावता अने मंदिरनुं जे काम करता तेना उपर बहु राजी थाता ने तेने प्रसादीना थाळ आपता ने वस्त्र अलंकारादिक अनेक वस्तुओ आपता एकवार साधु माथे पत्थर खाणेथी उपाडी लाव्या ते महाराज बहु राजी थया ने टाढुं

जल पोते पान करी सर्वेने सारी पेठे पायुं ने साधुने बाथमां दाबीने सारी पेठे मल्या ने चरणारविंद देवा मांडया. ते साधुए हृदयमां लेवा मांडयां त्यारे महाराज कहे मस्तके ल्यो माथां तप्यां हशे ते टाढां थाय एम करीने बहु राजी थया. ने एवी रीते पोते सेवा करीने आपणने सेवा करवा शीखवीने आपणा उपर अतिशय दयाने अतिशय हेत तो पण आपण सर्वे जेम छे तेम महिमा समजी शक्या नहि ने सेवा पण करी शक्या नहि. ॥ ९ ॥

श्रीजी महाराजनी दयानो पार नहि ते जुवोने मोटा मोटा राजाए राखवा मांडया पण रह्या नहि, ने देवलोकमां पण रह्या नहि अने ब्रह्माना लोकमां पण रह्या नहि ने महतत्त्वना लोकमां पण रह्या नहि ने प्रधान पुरुषना लोकमां पण रह्या नहि ने प्रकृतिपुरुषना लोकमां पण रह्या नहि ने सर्वोपरि जे अक्षर एनी सेवानो अंगिकार मनमां आवे तो करे ने मनमां न आवे तो न करे एवा जे पुरुषोतम भगवान ते आपणा जेवा मनुषरूपे थया ने पोते जे जे साधन कर्या ते आपणा पासे कराव्या सारुं कर्यां ते आपणने ब्रह्मरूप करीने पोतानी सेवानुं सुख देवा सारुं आपणा पासे साधन कराव्यां. ॥ १० ॥

भगवानना स्वरूपमां बे जणा अखंड वृत्ति राखता होय ने एक जणने आंखनुं मटकुं भरीये एटलीवार भगवाननी विस्मृति थाय तो ए स्वामी कोटी कल्पे पण भागे नहि ने अक्षर धाममां जाय तो पण भागे नहि ने तेमज धर्म पण बे जणा पाळता होय ने एक जणने अणुंमात्र न्युनता रहे तो ते स्वामी कोटीं कल्पे पण भागे नहि ने ज्ञानाभ्यास बे जणा करता होय ने एक जणने कोइ वातनी कसर रहे तो पण कोइ रीते ए वांधो कोटी उपाये भागे नहि ने बे जणने उपासना सरखी होय ने एक जणने लगारेक न्युनता रही गइ ते कोटी कल्पे पण स्वामी भागे नहि ने भगवाननो महिमा बे जणा सरखो समजता होय ने एक जणाने लगारेक न्युनता रहे तो ए स्वामी कोटी कल्पे पण भागे नहि ने भगवाननी ने एकांतिकनी अनुवृत्तिमा बे जणा वर्तता होय ने एक जणने लगारेक न्युनता रहे तो कोइ रीते स्वामी भागे नहि ने भगवानना गुण, स्वरुप, ऐश्वर्य, विभूति ने बे जणा सरखा समजता होय ने एक जणाने लगारेक कसर रही जाय तो कोइ रीते स्वामी भागे नहि ने भगवानमां बे जणानी अतिशय हेते करीने वृत्ति अखंड चोटी गइ होय ने एक जणाने अरधी निमिष मात्र स्वामी रही जाय तो ए स्वामी

कोटी कल्पे पण भागे नहि त्यां द्रष्टांत जेम बे जण सरखा चाल्या जाता होय ने एक जण वांसे रही जाय ते कोइ रीते भेगो थाय नहि तेम. अने ए खामी क्यारे भागे तो अति उत्कृष्ट श्रद्धा उपजे ने उत्कृष्ट ज्ञानी भक्तनो समागम थाय तो ए खामी भागे ने खामी कोइ रीते भागे एम न होय तो ते उत्तम भक्त श्रीजी महाराजने कहे जे एना दोष टाळो तो भगवान एनुं एटलुं कह्युं माने एटले एना दोष टळी जाय ने ए उत्तम भक्तने भगवाने बधो सत्संग सोंप्यो छे ते भगवान एनुं जरुर एटलुं कह्युं माने माटे एने राजी करे तो कोइ वातनी कसर रहे नहि. ॥ ११ ॥

त्यागी मात्रने गाळ दीधानो मनसूबो थयो एटले वर्तमानमां चुकी रह्यो केमजे क्रोध आवे त्यारे अंतःकरणमां मलीन संकल्प थाय पछे क्रोध ए संकल्पने बहार काढी नाखे एटले ए मा, व्हेन आदिक सामी गाळ दे छे माटे त्यागी मात्रने गाळ दीधानो संकल्प थयो के उपवास पडे, तो गाळ देवायज केम ? ने एवो मनसूबो थायज केम ? ने एवो मनसूबो थाय ते त्यागीने अतिशे खोट ने अतिशेज भूल कहेवाय अने एक हरिभक्ते सांती हांकतां हांकतां भुलमां बळदने गाळ

दीधी पछे बळदने दंडवत् करीने एक उपवास कर्यो तो त्यागीने ए मार्गे चलायज केम ? चलायज नहि. ॥ १२ ॥

महाराजे अमने मोटा कर्या छे ते अमारे कांइ नवुं करवुं नथी महाराजना वचनमां रहेवुं छे ने बीजा सर्वेने महाराजना वचनमां राखवा छे एज करवुं छे ने एज करावबुं छे. ने ए वचन लोपीने ने ए वचननुं उलंघन करीने कोइ सुखीयो थयो नथी अने थाशे पण नहि ने अमे जो महाराजना वचनथी बारुं कांइ कहीए के पृथाथी बारुं कांइ कहीये तो ए वचन तमारे मानवुं नहि ने महाराजनी प्रथा प्रमाणे तो जरुर मान्युं जोशे केम जे आपणे सर्वेने श्रीजीमहाराजने राजी करवा छे ने ए विना बीजो श्रीजीने राजी करवानो उपाय नथी. ॥ १३ ॥

आ सत्संगमां आव्या पछी शुं करवानुं छे तो ए करवानुं छे जे धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने महिमाए सहित भगवाननी एकांतिक भक्ति ए करवानुं छे ने ए शीखवानुं छे ते काम, क्रोध, लोभ, मान, स्वाद स्नेह ए आदिक अधर्म सर्गनो त्याग करवानो छे ने ज्यारे अधर्म सर्गनो त्याग करे छे त्यारे एमां एकांतिक

पराभक्ति आवे छे ने ज्यारे एमां एकांतिक पराभक्ति आवे छे त्यारे तेना हृदयमां कोइ आवरण टकी शके नहि जेम अर्जुनने प्रथम शंका थइ ने ज्यारे समजाणुं त्यारे कोइ वातनी शंका रही नहि ने व्यवहारिक अंतराय कोइ आडो आव्योज नहि तेम ए भक्तिमां कोइ अंतराय आडो आवेज नहि जेम गंगाजी समुद्रमां भळ्यां ते कोइ अंतराय आडो आव्योज नहि मोटा मोटा पर्वत तोडी फाडीने समुद्रमां भळ्यां तेम ज्यारे अधर्म सर्गनो त्याग करीने एवी एकांतिक पराभक्ति आवे त्यारे तेनां हृदयमां कोइ अंतराय ने आवरण आडुं आवेज नहि एक भगवान ने आत्मा ए बेज रहे ए करवानुं छे. ॥ १४ ॥

स्वभाव जीताणो होय तोय पण तेनो विश्वास करवोज नहि ने जो विश्वास करे तो जरूर विघ्न करे एवो ए छे माटे कामनो, क्रोधनो, लोभनो, माननो, स्वादनो, स्नेहनो, इर्षानो, असुयानो, दंभनो, कपटनो, त्रण गुणनो, पंचविषयनो, इंद्रियोनो ने अंतःकरणनो ए आदिक कोइनो विश्वास करवोज नहि अने जो विश्वास करे तो जरूर कल्याणनो मार्ग बगाडी नांखे ते जुवोने अंग्रेजे पेश्वाने जीतीने नजर केद कर्यो हतो ने तेनो जो विश्वास कर्यो तो लाखो माणसने मारी

नाख्यां ने केटलाक टोपीवाळाने मारी नाख्या ने देशमां हाहाकार वाग्यो ने सौ वस्तिने बहु दुःख थयुं ते माटे स्वभाव जीताणो होय तोय पण तेनो विश्वास करवोज नहि तो स्वभाव जीताणो न होय तेनो तो विश्वास थायज केम ? थाय ज नहि ने विश्वास करे तो जरुर विघ्न करे माटे शत्रु मात्रनो विश्वास करवो ज नहि ने शत्रु नानो ने दुबळो होय तो तेने दुबळो ने नानो जाणवोज नहि तेम अंतरशत्रु ने दुबळा ने नाना जाणवाज नहि ने तेनो विश्वास करवाज नहि ॥ १५ ॥

रात्रीए सुवुं त्यारे भगवाननी ने मोटा साधुनी स्तुतिने प्रार्थना करीने सुवुं ने मोटा मोटा हरिभक्तने संभारीने सुवुं ने सुवुं त्यारे भगवाननी मूर्तिनी स्मृति राखवानो संकल्प राखवो अने उंघवानो संकल्प राखवो नहि ने भगवाननुं ध्यान करतां करतां निद्रा आवे तो आववा देवी पण असावधानपणा थकी तो निद्रा आववा देवी नहि अने जो असावधानपणा थको निद्रा आवे तो अंतरशत्रु जरुर पराभव करे जेम बहु आकरुं मनुष्य होय तेनां सर्वे संबंधी मारी नांख्यां होय ने सर्वे पदार्थ खेंची लीधां होय ने मा, बहेन ने

दिकरीने लइ यवनने आपे त्यारे तेने अतिशे दाझ थाय ने ते दाझे करीने अतिशे क्रोधायमान थयो होय ने ते समे तेना खोळामां माथुं मुकीने सुता त्यारे तेनुं माथुं काप्या विना रहेशे? नहिज रहे जरुर माथुं कापी नांखशे तेम अधर्म सर्गने आपणे दिवस आखो खोद खोद करीए तेणे करीने खीजी रह्या एवा वैरी जे काम, क्रोध. लोभ, मान, स्वाद, स्नेह, ईर्षा, दंभ कपट ने असुया ए आदिकने मन, बुद्धि, चित्तने, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध, श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जीव्हा, घ्राण, वाक, पाणी, पाद, वायु, ने उपस्थ ए आदिकनुं आपणे दिवस आखो पराभव करीने अतिशे खीजव्या होय ने पछी रात्रीए एनो विश्वास करीने एना खोळामां माथु मुकीने सुता ते माथुं काप्या विना रहेशे नहि. जरुर माथुं कापशे माटे भगवाननी ने साधुनी स्तुति करतां करतां निद्रा आवी जाय तो ए आपणी रक्षा करे ने आपणी सहाय करे. ॥ १६ ॥

अंतरशत्रुनो विश्वास तो करवोज नहि त्यां राम खुमाणनी वात करी जे ए वैरे निसर्या हता ते रात्रे सुवेज नहि ने हाथमां घोडीनी सरक झालीने उभा रहे ने एम सरक झालीने उभा रहे नहि ने सुवे तो

जरुर बारीगर माथुं कापी नांखे तेम आपणे इंद्रियोने अंतःकरण ने अधर्मनो सर्ग ए साथे शत्रुपणुं ने वैर बहु कर्युं छे माटे एनो विश्वास करवोज नहि ने ए शत्रु कांइ एकवार माथुं कापे छुटको करे एवा नथी एतो अनंत माथां कापे तो पण मुके एवा नथी.।१७।

घांटीओ कठण छे तेने जो भगवाननो महिमा विचारी ने एक घडी धीरज राखे तो कांइ कठण नथी ते कइ घांटी कठण छे तो कामनो वेग आवे ए घांटी, स्नेहनो ने स्वादनो वेग आवे ए घांटी, इर्षानो ने दंभनो वेग आवे ए घांटी, मत्सर ने असुयानो वेग आवे ए घांटी, एवी अनेक प्रकारनी घांटीओ आ जीवने आवे छे ने ए घांटीओने ओलखीने नोखा पडतां न आवडे तो जरुर ए घांटीओ सत्संगमांथी पाडी नाखे छे. ने ए घांटी आवे त्यारे धीरा रहीने सत्तारुप मानीने भगवानना महिमानो विचार करीने ए घांटीओथी नोखा पडीने भगवान सामुं जोइ रहेवुं एटले ए घांटीओ कांइ पराभव करी शके नहि.।१८।

मंदिरमां रहेता होइए ते मंदिरनो ममत्व राखवो एमां श्रीजीमहाराजनो बहु राजीपो छे ने जे मंदिरमां पोते रहेतो होइए. ते मंदिरनी क्रियानी पोताने

सोंपणी होय ते क्रिया करीने पछी जे जे साधन करे ते साधन सर्वे सिद्ध थाय छे ने ध्यान, ज्ञान, एकांतिकपणुं ने धर्मादिक सर्वे सिद्ध थाय छे ते जेने क्रिया करतां करतां साधन सिद्ध थयां छे तेने कहे छे जे मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, सर्वनिवासानंद स्वामी, कृपानंद स्वामी, गुणातितानंद स्वामी, सच्चिदानंद स्वामी, सिद्धानंद स्वामी, बाळमुकुंदानंद स्वामी ने महापुरुषानंद स्वामी ए आदिकने ध्यान, ज्ञानादिक, साधन क्रिया करतां सिद्ध थयां छे पण कोइने निरममत्व थइने साधन सिद्ध थयां नथी. ॥ १९ ॥

समागम करवा जावुं ते समागम करीने एज करवानुं छे ने समागम करीने अनुवृत्ति, सरलपणुं, श्रद्धा, ममत्व, ध्यान, ज्ञान ने एकांतिकपणुं एमांथी एकेयवानुं आव्युं नहि त्यारे समागम क्यां कर्यो छे? नथीज कर्यो ने जेने खोट के स्वभाव टाळवा होय तो एटलो समागम तो जे मंदिरमां आपणे रहेता होइए त्यां पण साधु होय ते साधुना जेटला गुण शीखवा निष्कामपणुं, निर्लोभपणुं, निःस्वादपणुं, निःस्नेहीपणुं ने निर्मानीपणुं ए आदिक अनंत गुण साधुमां होय ते शीखवा ने शीखी रह्या पछी ए साधुने कहेवुं जे

तमे कहो तो हुं वरताल के जुनेगढ वातो सांभळवा जाउं एम कहीने एमने राजी करीने जावुं ने त्यां जइने वातोने आकारे जीवने करीने ए वातोने जीवमां उतारीने एकांतिक थकी एकांतिक धर्मने जीवमां प्रवेश करावीने ते प्रमाणे वर्तवुं अने खरेखरा एकांतिक भक्त थावुं एम तो करता नथी ने वडोदराना दक्षिणी जेवुं करे छे ते दक्षिणी ज्यारे टोपीवाला पासे जाय त्यारे टोपीवालो एम जाणे जे आ माणस गायकवाड सरकारनो छे ने गायकवाड सरकार पासे आवे त्यारे गायकवाड सरकार एम जाणे जे ए माणस टोपीवालानो छे एम करतां करतां लाखुं रुपीआ लइ गयो पछे खबर पडी त्यारे तेने तोपे बांध्यो तेम केटलाक माणसने एम जे समागमनो ओथ लइने क्यांइ कारसामां आवेज नहि ने कहेनाराने बीक लागे जे कांइ कारसामां लेशुं तो जातो रहेशे ने समागम करवा जाय छे त्यां पण मोटा एम जाणे जे कांइक दबावीने केशुं के कारसामा लेशुं तो मूळगो समागम करवा नहि आवे एम जाणीने मोटा पण कोइ कहे नहि एटले महाराजनी प्रथा प्रमाणे वर्तवुं के भक्ति सेवा करवी के वचन प्रमाणे वर्तवुं एमां कोइ कारसामां आवेज नहि एवो समागम करवा पण केटलाक शीखे

छे ने एवो समागम करवा शीखवो नहि ने पूर्वे कह्यो तेवो समागम करवा शीखवुं. ॥ २० ॥

श्रीजीमहाराजना वचनमां ने आज्ञामां फेर पाडवा देवो नहि ने जो फेर पाडे तो श्रीजीमहाराजनो बहुज कुराजीपो थाय छे ने ते उपर एक वात करी जे रामदास भाइनुं मंडळ जेतलपुर हतुं त्यांथी महानुभावानंद स्वामी आज्ञा विना श्रीजीमहाराजना दर्शन करवा सारुं चाल्या ते मार्गमां क्यांय जमवानुं मळ्युं नहि ने भूख्या ने भूख्या गढडे आव्या त्यारे महाराज बहु कुराजी थया ने कह्युं जे केनी आज्ञाये आव्या छे ने मियांजीने एम कह्युं जे तमे एने एम कहो जे तमे पाछा जाओ हमणां दर्शन नहिं थाय त्यारे ते वाडीये गया ने भूख्या तरस्या बेसी रह्या त्यारे सोमलेखाचरे श्रीजीमहाराजने एम कह्युं जे तमे ए साधुने पाछुं जावानुं कह्युं पण एतो बेचार पांच दिवसथी तमारा दर्शन वास्ते आव्या ने वाटमां क्यांय अन्न मळ्युं नहि ते उपवासी छे त्यारे एम बोल्या जे जाओ एमने पाछा तेडी लावो त्यारे ए ज्यां हता त्यांथी तेडी लाव्या ने ते समे श्रीजीमहाराज दादाखाचरना दरबारमां आथमणा बारनो जे ओरडो छे त्यां बिराजमान हता त्यां आवीने चरणारविंदे अडवा गया त्यारे चर-

णारविंद पाछुं ताणी लीधुं ने एम बोल्या जे "ए चरणारविंद तो बहुज दुर्लभ छे त्यारे महानुभावानंद स्वामीने आंख्युंमां आंसुनी धार चाली त्यारे श्रीहरिजी बोल्या जे तमारे जेवी हमणां दर्शन करवानी ने चरणारविंदनो स्पर्श करवानी आतुरता छे तेवीने तेवी हजार कल्प सुधी आतुरता रहे तोय ए चरणारविंद मळवुं दूर्लभ छे एम कहीने चरणारविंद दीधां एमां केवानुं शुं छे? तो श्रीजीमहाराजना वचनमां अणुमात्र फेर पाडवो नहि ने पाडे तो बहु कुराजीपो थाय छे माटे श्रीजीने राजी करवा होय तेने वचनमां खबडदार थइने रहेवुं. ॥ २१ ॥

महाराजनां वचन, नियम के मथा प्रमाणे वर्ते छे त्यारे तेना जीवमां बहु बळने दैवत आवे छे ने तेथी देह इंद्रियोने अंतःकरण दबाय छे तेथी अधर्म सर्ग पण दबाय छे ने तेथी मनुष्य पण बहु दबाय छे ने मनुष्यमां भार पण बहुज पडे छे ते उपर हरिभक्तनी वात करी अने जे महाराजनुं वचन लोपे के मथा लोपे तो तेमांथी दैवत, ऐश्वर्य ने तेज जातुं रहे छे ने जाणीए ए मनुष्यज नहि ते उपर परम चैतन्यानंद स्वामीने अद्वैतानंदस्वामीनी वात करी जे परम चैतन्यानंदस्वामी ने अद्वैतानंद स्वामी सत्संगमां

हता त्यारे जेम मुक्तानंद स्वामीनी वातो सांभळवामां मनुष्यो तणाय तेम एमनी वातो सांभळवामां मनुष्यो तणातां ते ज्यारे बंन्ने स्वामी सत्संगमांथी गया त्यारे जेम महाराजमां मनुष्य तणातां तेम तेना वांसे पण तणाणां ते पोते गया ने पछे पाछा आव्या ने सत्संगमां राख्या पण प्रथमनुं दैवत हतुं ते कांइ रह्युंज नहि ने जाणीए जे ए परमचैतन्यानंद स्वामी ने अद्वैतानंद स्वामीज नहि एवी रीते दैवत हराइ गयुं. तेम महाराजनी प्रथाने वचन लोपे तेमां दैवत रहेज नहि दैवत मात्रने रुडा गुण मात्र हराइ जाय छे. ॥ २२ ॥

धर्मनी आपण रक्षा करीए तो धर्म आपणी रक्षा करे ते आपण शुं धर्मनी रक्षा करीए तो रक्षा ए जे, महाराजनी आज्ञा यथार्थ पाळवी ने आपत्कालमां पण फेर पडवा देवो नहि ए धर्मनी रक्षा करी केवाय छे अने धर्म आपणी शुं रक्षा करे तो ए रक्षा जे, देह पर्यंत कोइ सत्संगमां विघ्न आवे नहि ने कोइथी सत्संग बहार काढी शकाय नहि ने अंतःकरणमां सुख वर्त्या करे अने ज्यां धर्म होय त्यांज भक्ति अखंड रहे छे ने त्यांज भगवान पण निरंतर रहे छे अने जेना हृदयमां धर्म निवास करीने रहे छे तेना हृदयमां

भगवान पण अखंड रहे छे एज धर्म पाळ्यानुं फळ छे. ॥ २३ ॥

एक हरिभक्ते पुछयुं जे कोइक बलवान संकल्प थाय तेने केम टाळवो ? उत्तर जे, पोताने जे संकल्प थाय ते उपर अनंत प्रकारना दोषेयुक्त विचारने लावबा ने संकल्पने टाळवा अने न टळे तो मोटा एकांतिक भगवानना भक्तने कहीने ए संकल्पने टाळवा ए संकल्प मोटाने कहीए तेणे करीने लाज जाय नहि मोटाने कहीए तेणे करीने तो सामी लाज वधे ने मोटा आपणी सहाय करे ने दया करे एटले स्वभाव टळी जाय पण मोटाने निष्कपट थइने कहेवाय नहि ने स्वभावने दाबी राखे ने बीजाने जणवा दे नहि पण ए स्वभाव जणाया विना रहेज नहि जेम थाबडथुबड जे घरनी पुरणी करी होय ने ते उपर गार करी होय ते फाटया विना रहेज नहि. ते अमारे सेवके गार करीने दबावी त्यारे अमोए कह्युं जे आ शुं कर्युं छे त्यारे तेणे कह्युं जे ज्यारे ज्यारे गार करीए छीए त्यारे फाटी जाय छे ते सारी पेठे दबावी छे ते हवे केम फाटशे ? नहिज फाटे तो पण फाटी गइ तेम स्वभावने गमे तेवी रीते दबावी राखे तोय पण जणाया विना रहेज नहि ने स्वभावने दाबी राखे एटले टळे पण

नहि ने स्वभाव जीवने बहु दुःख दे जेम कोइक मोटुं माणस लाजवाळुं होय तेने घरमां स्त्री बहु भूंडी होय ते बहुज दुःख दे, गाळो दे, मारे तो पण लाजे करीने ते दुःखनुं सहन कर्या करे पण कोइने कहेवाय नहि तेम ए स्वभाव बहु दुःख दे पण लाजे करीने कोइ मोटा संतने कही शके नहि. ॥ २४ ॥

टोकरी बांधी ते गाय मोर चाले तेम मोटेरा ने वृतांतमां सर्वथी मोरे चालवुं केम जे मोटानी सारप्ये सर्वेनी सारप्य कहेवाय. ॥ २५ ॥

एक शेठे गावणुं कराव्युं तेने सांभळीने शेठाणीने तान आव्युं ते ढींचण उपर ताल नाख्यो त्यारे शेठे माथुं हलाव्युं त्यारे शेठाणी कहे शेठजी माथुं केम हलाव्युं ? त्यारे शेठ कहे आजथी अमारां आळस्यां केम जे तमारुं तान बीजे तुटवा मांडयुं तेम आपण भगवानने राजी करवा आव्या ने भगवानना एकांतिक भक्त थइने भगवाननी सेवामां अखंड रहेवाय ए करवा आव्या ने भगवानने भगवानना एकांतिक भक्तने अति शुद्धभावे करीने राजी करवाने आव्या ने देहने, देहना भाव, ने गुणने, गुणना भाव, अवस्थाने अवस्थाना भाव मुकीने, अक्षरने, अक्षरना भावने जीवा-

त्माने विषे धारीने अक्षररूप थइने भगवाननी सेवामां रहेवाय ए करवा सारुं आव्या. एवुं अनुसंधान राखवुं ए तान भूली गया अने मान मोटपने मार्गे चलाय ए बीजे तान तुट्युं ने महाराजनी आज्ञाने धसारो लागे एवा खानपानने मार्गे चलाय ए बीजे तान तुट्युं ने बहु रजोगुणने मार्गे चलाय ए बीजे तान तुट्युं ने पंचविषयनो अभाव करवा आव्या ने विषयनो भाव थाय ए बीजे तान तुट्युं एवी रीते ज्यां ज्यां विषयमां आसक्ति थाय ए गावणानां तान तुट्या जेवुं छे ने एवा भक्तने जोइने भगवानने एम थाय जे एतो अमारो भक्त नथी एने तो विषयने विषे तान तुटे छे माटे एतो विषयनो भक्त छे. ॥ २६ ॥

चार प्रकारनी मुक्ति आपे छे पण भक्तियोग ने सेवा ते नथी आपता ते पण आपी छे तेनी पुष्टि करवी. ॥ २७ ॥

सने-पात मनुष्य मात्रने छे जेम संकल्प थाय तेम बोलवा मांडे ते सनेपात कहेवाय ने भगवानना संबंध विना जे जे बोलाय अथवा भगवाननी मूर्ति मुकीने जे जे बोलाय ते सनेपात छे. ॥ २८ ॥

पाणी छे तेने कोइक रोकनारो मळे त्यारे पृथ्वीमां

उतरे छे तेम शास्त्र सांभळे, वातो सांभळे, धारे, विचारे ने मनन करीने अंतःकरणमां रोके त्यारे जीवमां उतरे ने ते विना जीवमां उतरे नहि. ॥ २९ ॥

मनने कहेवुं जे अनंत वर्ष सुधी में तारुं कह्युं कर्युं हवे मने भगवान मल्या छे ते हवे तारुं कह्युं नहि थाय. ॥ ३० ॥

महाराजना वचन पाळीए तो झट पार आवी जाय ने साधने करीने आपणे मोक्ष करवा इच्छीए तो वार लागे ते उपर स्वामी कार्तिकनुं द्रष्टांत छे. ॥३१॥

पंच विषयना संकल्प कर्या विना थाय छे ने भगवान संबंधी थाता नथी तेनुं कारण जे अहियां आवे छे त्यारे तेने उतम वैराग्य होय पण एनुं अनुसंधान भूली जाय छे ने मोटाना अवगुण ले छे तेणे करीने ते उतरी जाय छे ने पंचविषयनो अभाव तो उतम वैराग्ये करीने थाय छे. ॥ ३२ ॥

श्रीजी महाराज आव्या त्यारे अति तप कर्युं ने संतने पण अति तप कराव्युं. ॥ ३३ ॥

पोताने पूर्णकामपणुं मनाणुं छे तेणे करीने थातुं नथी ते उपर उकाभाइनुं द्रष्टांत छे. ॥ ३४ ॥

देवनो अवगुण ले ने मोटानो अवगुण ले तो अंतःकरण मलिन थइ जाय छे. ॥ ३५ ॥

जीवनी बुद्धि पूगती नथी ने भगवानना स्वरुपने समजवा जाय छे जे मच्छ कच्छादिक भगवानना अवतार थाय छे ते अंश थइने आवे छे ते उपर ब्रह्मानुं तारनुं, जळना टीपांनुं द्रष्टांत दीधुं छे. ॥ ३६ ॥

श्रीजीमहाराजे कह्युं जे तमे सर्वे कुसंगी थइ जाओ छो ते हुं आवीने सर्वेने नित्ये सत्संगी करी जाउं छुं ॥ ३७ ॥

श्रीजी महाराजे कह्युं जे तमे सर्वे मने केवो जाणो छो त्यारे सर्वे कह्युं जे भगवान जाणीए छीए त्यारे कहे जे जेम छे तेम नथी जणातुं ते उपर कह्युं जे पर्वत उपाडो ते वात. ॥ ३८ ॥

पेटलादनो वाणीओ हतो तेणे एम धार्युं जे कसीआना वांकमां नथी आववुं ने कचेरीमां नथी जावुं ने मंदिर करवुं छे तेनी वात कही. ॥ ३९ ॥

भगवानने विषे निष्ठा होय ते सौने जणाय विना न रहे भक्तिनिष्ठा, ज्ञाननिष्ठा, वैराग्यनिष्ठा ने उपासनानी निष्ठा ते उपर मुसलमान हतो ते ब्राह्मण थयो हतो पण मुसलमानपणुं अंतरमां हतुं ते नीकळी आव्युं तेम गुण दोष होय ते जणाया विना रहे नहि. ॥ ४० ॥

श्रीजीमहाराजने स्त्री, धन तेनी अतिशे अरुचि कराववी छे ते उपर महाराजे कह्युं जे भागवतनी टीका करावीने श्लोके श्लोके स्त्री धन त्याग करवो एम मेलवुं. ॥४१॥

भगवाननो निश्चय परिपक्व होय तो जे जे गुण कथानो वार्तानो ए आदिक होय ते शोभे ते उपर द्रष्टांत जेम घोडो होय तेने खीले बांधीए तो सरा-जाम नाखवा दे बीजुं जेम हवेलीनो पायो उंडो नाख्यो होय तो जेवडी इमारत करीए तेवडी थाय. ॥४२॥

रुडो देशकाळ होय त्यारे भगवान भजवा ने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, उपासना ए आदिक गुण शीखी लेवा ने वहेवारनो तो कांइ निर्धार रहेतो नथी ते उपर खेडानो ब्राह्मण धनेश्वर तेने नव लाख रुपिआ हता ने हवे छोकरांने खावा धान नथी ने फिरंगीना जेवुं राज्य होय तोय पण निर्धार रहेतो नथी. ॥४३॥

पांच घडी रात्री वित्या पहेलां सुतो ते तो वर्त-मानमां चुक्यो ते बरोबर छे ने बीजुं पंगत्य विना एकलुं खावुं ते पण बहु भुंडुं छे एम निश्चे जाणवुं. ॥ ४४ ॥

मोक्षनी वात छे ते सर्वेंथी ग्रहण करे ते समजु कहेवाय छे. ते नानो मोटो जे कहे तेथी ग्रहण करवी जेम हंस पक्षी छे ते दूधनुं ग्रहण करे छे तेम ग्रहण करवुं. ॥४५॥

रात्रीए झोलुं आवे तेनुं सत्रारमांथी जतन करवुं ते उपर सुपर्णानंद वडोदराना हरिजननुं द्रष्टांत. ॥४६॥

"समलोष्टाश्मकांचनः" जे त्यागीने सोनुं काम न आवे ने कचरो तो काम आवे ते सोनुं त्यागीने देह पर्यंत रखाय नहि ने राखे तो परमेश्वरनो गुन्हेगार थाय एवी रीते जीवमां पंच विषयना दोषना वेग लगाडी देवा, नहि तो कल्याणवो मार्ग बगडी जाय छे. ॥४७॥

पंच विषयनो अभाव न थयो होय तो विषयनुं खंडन थाय त्यारे क्रोध व्यापे त्यारे नेत्र श्रोत्र ए आदिकने फेरवी नाखे छे. ॥४८॥

मोटा योगी होय ते काळने आवतो देखे छे ने काळने पोतामां प्रवेश करवा देता नथी ने ते काळ तेने पराभव करी शकतो नथी ने भगवान तेडवा आवे त्यारे जाय ते भगवानने प्रतापे करीने आधुनिक होय ते तो एम जाणे जे हुंकाळनो लीधो न

जाउं ते सारुं सुतां बेसतां सर्वे क्रियामां खटको राखीने भगवाननी स्मृति वीसारे नहि. ॥४९॥

एक ब्राह्मण हतो तेमां ब्रह्मराक्षसे प्रवेश कर्यो ते छोकरां स्त्रीने खाइ गयो ने ब्रह्मराक्षस निसरी गयो त्यारे रोवा लाग्यो. ॥५०॥

मोटा मोटा गया ने विषम देशकाळ थइ गया माटे जेम मोटा मोटा वर्तता तेम आपणे पण वर्तवुं पण तेमां फेर पडवा देवो नहि जेम कुंवर बादलो थाय त्यारे कुंवरने माथे चिंता आवी पडे तेम माथे चिंता राखीने भगवान भजवा ते उपर माया आवीने कहेशे भला थइने मने राखो जे जुवो ने एनुं केवुं बळ छे जे रखे माराथी हेत ओछुं करे माटे मायानुं बळ बहु छे ते उपर द्रष्टांत मोणपरना हरिभक्तनुं जे माळे जाइश त्यारे उंघने कहीश जे हवे आव. ॥५१॥

जेना उपर हेत होय ते तेने वाली वस्तु आपे छे तेम महाराजे दया करीने धर्म ने भक्ति आप्यां छे. ॥ ५२ ॥

पृथ्वी उपर भगवान पधारे ने जीवनो मोक्ष थाय ते उपर गंगाजीनी सांख्य लाव्या. ॥५३॥

भगवानना भक्त साथे कोइ रीतनी आंटी पडे तो तेने मेली देवी पण राखवी नहि. ॥५४॥

रामचंद्रजी अने रावणने युद्ध थयुं त्यारे रामचंद्रजीनी सेना वाळाए एम धार्युं जे एनुं निशान लेवुं छे तो मराणा घायल थया तेने तेने जीवता कर्या ने राजी थया तेम काम, क्रोध, लोभादिक अधर्म सर्ग जीत्यामां इंद्रियो अंतःकरण ने देहने दुःख थाय तेमां महाराजनी मरजी प्रमाणे वर्ते तो रक्षा करे ने राजी थाय. ॥ ५५ ॥

लक्षावधि मनुष्य छे ते सर्वेने महाराजने विषे निष्ठा छे तेमां जो कोइक प्रथा लोपे तो सर्वेनी कुद्रष्टि थइ जाय जे अमे प्रथा लोप्यानी वात करीए तो कोइने गमे नहि ने मनाय नहि माटे प्रथा लोपवी नहि ने लोपे तो जीवनो नाश थइ जाय ने महाराज साजा राखे छे तोय प्रथा लोपता जाय तेम न वर्तवुं. ॥ ५६ ॥

सत्संगमां आवे छे ते हरिजन सर्वेने उपासना, धर्म, नियम, सरखा छे तेमां केटलाक वधी जाय छे ने केटलाक बरोबर रहे छे. ने केटलाक घटी जाय छे. तेनुं शुं कारण छे? तो श्रद्धा रुचि ने तारतम्यता छे ते उपर द्रष्टांत शेठनुं छे जे पाक करीने जमाडे छे ते जमनारा छे तेमां केटलाक थोडुं जमे ने केटलाक रुचि प्रमाणे जमे छे. ॥५७॥

"विनाशकाळे विपरित बुद्धि" जे भीमोराना काठी सारा मनुष्य ते महाराजनुं वांकुं बोल्या. ॥५८॥

समजणनी जीवमां एवी पेडय उतारवी ते काम क्रोधादिकनो वेग आवे त्यारे जाळवी राखे पण अंतःकरणने क्षोभ पामवा दे नहि. ॥ ५९ ॥

क्रुर स्वभाव छे ते वातो सांभळे छे त्यारे एके जणातो नथी पछी तो बधा जणाय छे? उतर जे, अति घोर पापना परिणामे करीने परिपक्व अवस्थाने पामीने स्वभाव थयो ते कोइ रीते टळतो नथी ते भगवाननो महिमा, उपासना, भक्ति अने आत्मनिष्ठानो जीवमां वेग लगाडी देतो धीरे धीरे टळे जेम नदीना घरामां अति अशुद्ध पाणी होय तेने नवुं पाणि आवीने सारी पेठे धोइ नाखे छे त्यारे पाणी शुद्ध थाय छे तेम. ॥६०॥

लोकालोक उपर विष्णु भगवान काळचक्र लइने सर्वे मनुष्यनी रक्षा करे छे. ॥६१॥

मनने कहेवुं जे आज दिन सुधी तारे ने मारे मित्राचार रहेतो ते केटलाक कल्प सुधी तारुंज कर्युं हवे मारे पांच दश वर्षनुं काम आव्युं माटे मारुं कह्युं तारे मानवुं पडशे, नहि माने तो तारे मारे मित्राचार नहि रहे ने तारुं कह्युं हवे हुं नहि मानुं. ॥६२॥

દેહ જેવું માંહી છે તેવુંજ બહારે નિસરે ને બહારેનું માંહી પેસે તો બાહેર નિકળેલ દેહને માંખ્યો, કાગડા, ને જનાવરને કોણ ઉડાડે ને તે સાચવવું ઘણું કઠણ છે માટે એવા દેહ સારું ભગવાનની આજ્ઞા ન લોપવી ને શ્રીજીમહારાજના વચન પ્રમાણે કરવું તે ગાયને પ્રદક્ષણા કરવા જેવું છે ને પોતાનું ધાર્યું તથા શાસ્ત્રમાં કહ્યા પ્રમાણે કરવું તે પૃથ્વીને પ્રદક્ષિણા કરવા જેવું છે. ॥૬૩॥

આ જીવને સ્વભાવ પ્રકૃતિનું કેવું છે જેમ કુડલીને દાટો દીધો તે બાહેરથી પેસે નહિ ને માંહિથી નિસરે નહિ ગવડાવે તોય ન નિસરે તેમ મોટાની વાતું સાંભળે પણ તે કહેલ વાત પેસે નહિ ને માંહેથી ભૂંડા સ્વભાવ નિકળે પણ નહિ. ॥૬૪॥

ગૃહસ્થને જાતાં આવતાં રસ્તામાં પીડા થાય તેમ ન કરવું તે પર શ્રીજીમહારાજે કાગળ લખ્યો હતો જે ત્યાગી તથા અયોધ્યાવાસીને ગૃહસ્થને જાતાં આવતાં દુઃખ થાય તેમ ન કરવું. ॥૬૫॥

એક બીજા સામ સામા વઢે ને પાછા મોઢામાં ખડ લઇને પગે લાગે છે માટે પ્રથમથી એવો વિચાર રાખીને એમ ન કરવું પડે તેમ કરવું તે ઉપર પોતાનું

कह्युं जे अमारा दांत पड्या तेथी राती पाघडी राखीए तेमां कोइ कहे ते सारुं आगळथी कर्युं छे. ॥६६॥

पूजा करीए छीए ते वखते एकलुं रहेतां शंका थाय छे. ने साधु भेळे रहेतां शंका थाती नथी. ॥६७॥

अहं वृत्ति ते कंदने ठेकाणे छे तेमांथी जे वासना निकळे छे ते वेलाने ठेकाणे छे. ने भक्ति व्यभिचारने पामी जाय छे ते अव्यभिचारी राखवी जे भगवान विना कोइ पदार्थमां हेत न थाय तो अव्यभिचारी कहेवाय तेमां तप, यज्ञ, तिर्थ, त्याग, व्रते करीने तेनो भार आवे ते ठीक नहिं एक भगवानज जीवितव्य थाय ते भक्ति खरी ते उपर रुकमणीजोनी वरमाळानुं द्रष्टांत दीधुं. ॥६८॥

वैराग्य, अवैराग्य ने कहे जे मारुं राज्य थातां तुंने नहि रहेवा दउं त्यारे अवैराग्यनुं कहेवुं जे क्यांक रहेवा दे त्यारे वैराग्य कहेजे मोटाने त्यां पड्यो रहेजे तेथी मोटानी ओथे पदार्थनो जोग थाशे. ॥६९॥

इंद्र महोल करावतो हतो त्यां बगदाल्व ऋषी सभामां गया ते इंद्रे सन्मान करी सभामां बेसारीने पूछयुं जे आ तमारे माथे आ शुं छे त्यारे ऋषीए कह्युं जे खडनो पूळो छे त्यारे इंद्रे कह्युं जे खडना पूळाने शुं

करशो ? त्यारे ऋषी कहे त्रणे ऋतुमां आडो देवा काममां आवे छे ने रात्रे ओशीकुं थाय छे त्यारे इंद्र कहे तमे पर्णकुटी राखो तो ? त्यारे ऋषी कहे थोडुं जीववुं तेमां शुं करीए वळी इंद्र कहे तमारे छातीमां अर्धामां मुवाळा छे ने अर्धामां नथी तेनुं केम ? त्यारे ऋषी कहे ज्यारे इंद्र मरे त्यारे तेनुं अमारे स्नान आवे छे ते एक मुवाळो तोडी नाखीये त्यारे इंद्र ने विचार थयो जे आटलो आवरदावाळा कांइ नथी करता त्यारे मारे शुं करवुं. ॥ ७० ॥

महाराज मांदा हता त्यारे स्थान जोवा गया ते बद्रिकाश्रम, श्वेतद्विप, वैकुंठ, गोलोक ए आदिक घणांक धाम जोयां पण असरधाम जेवुं कोइ निर्भय बीजुं नथी. ॥७१॥

आपणा आत्माने नरकनो किडो मानवो नहि केम जे आपणने तो पुरुषोतम भगवान मळ्या छे ते आपणे तो अक्षर मानवुं ने जु प्रसवे त्यारे लीख आवे ने हाथणी प्रसवे त्यारे बळद जेवडुं बच्चुं आवे ने जेम वामनजी भेळी लाकडी वधी तेम आपणे वधता जाइए छीए तेम. बाळकना हाथमां चिंतामणी दीधी होय तेनुं तेने माहात्म्य नहि एटले तेनो तेने आनंद नथी. तेम

भगवान पुरुषोत्तम मळ्या छे तेनो अंतरमां आठे पहोर केफ रहेतो नथी जे मारुं पूर्णकामपणु थयुं छे एवुं नथी समजतो ए हरिना भक्तने मोटी खोटय छे आपणे तो भगवाननो खप नथी पण भगवान पराणे आपणने वळग्या छे ते श्रीजीमहाराज कहे जे भूत बाझे छे ते पण नथी मुकतुं तो अमे केम मुकशुं एम कहेता संसार मुकीने आंही आवे ते दुःख मात्र टाळीने सुखीओ थइ जाय पण आंही आव्या पछी पण एक मोटुं दुःख वासनानुं रहे छे ते वासना, काम, लोभ, रसास्वाद, स्नेह, मान ए पांचनी रहे छे ते वासना आत्मनिष्ठा तथा महिमाए सहित निश्चय जे भगवानना स्वरूपने विषे अचळ निष्टाए करीने टाळवी ए सिद्धांत वार्ता छे. ॥ ७२ ॥

वडोदरानो बाणीओ वरताले आव्यो ने कथा वार्ता सांभळीने काम क्रोधने जाणपणारुप दरवाजा बाहेर दीठा. ॥ ७३ ॥

वजैयाने महाराजे वात करी जे प्रेमानंदस्वामीनुं पाणी राखजो ते उपर जनक सुलभानुं द्रष्टांत. ॥७४॥

आपणे तन, मन, धन, भगवानने अर्पण कर्युं त्यारे जे भगवाननी आज्ञा होय तेम करवुं नहि तो

काठीए ब्राह्मणने गाय आपी ने पछी दूध दोवा गयो तेम थाय. ॥ ७५ ॥

सर्वे शास्त्रमां पंच विषयना दोष कह्या छे वेद पुराण, श्रुति, स्मृति, वचनामृत, धर्मामृत तथा हरिगीता ए आदीक सर्वेने विषे दोष कह्या छे ते जे पंच विषय तेमां एकेकाने विषे सहस्र दोष रह्या छे ने अधर्म सर्ग-रुप सहस्र सहस्र फडसवां रह्यां छे ते जीवने मोक्षना मार्गमां आवरण करे छे माटे श्रीजीमहाराजनी मरजीने मोटा साधुनी मरजी प्रमाणे मन, कर्म, वचने वर्ते तो ए दोष पराभव करे नहि. ॥ ७६ ॥

शास्त्र केवाने समाजाय छे तो जे भगवानना वच-नने आकारे इंद्रियो, मन, बुद्धि, चित, अहंकार ने कर्यां होय ने भगवाननो अति दृढ निश्चय होय ने भग-वाननी भक्ति दृढ होय एवाने शास्त्र समजाय छे ने बीजाने तो शास्त्र समजातां नथी ते उपर. श्लोक "अहंवेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा। भक्त्या भागवतं शास्त्रं न बुद्ध्या न च टीकया"...व्यासजीए

अर्थः-व्यासजी-हुं जाणुं छुं अथवा शुकजी जाणे छे अने संजयतो जाणे छे अथवा नथी जाणतो कारण के भागवत शास्त्र भक्तिथी समजाय छे परंतु बुद्धि के टीकाथी तेवुं समजातुं नथी. ।

सतरपुराण कर्यां ने पछी ध्यान करवा बेठा तो पण अंतःकरणमां शान्ति न थइ पछी नारदजीए भक्ति बतावी त्यारे शान्ति थइ. ॥ ७७ ॥

जीवने प्रमाद बहु रहे छे तेणे करीने गाफलता रहे छे तेणे करीने अंतरशत्रुनो भय नथी रहेतो ते उपर ब्रह्माए कामने पांच बाण आप्यां ते कामे मोहरूप बाण ब्रह्मा उपर मुक्युं तेणे करीने ब्रह्मा सरस्वति केडे दोडया ने व्याकुळ थइ गया ने नारदजीने परण्यानुं मन थयुं ने शिवजी पण व्रतभंग थया ने सनकादिकने पण लगारेक क्रोधनी चटकी आवी माटे भगवानना भक्तने गाफलपणे न वर्तवुं ने अंतरशत्रुनो विश्वास न राखवो. ॥७८॥

सात माळनी हवेली छे तेमां रह्या छीए ने खाधा पीधानी खोट नथी ने अंतसमे भगवान तेडवा आवे छे एटलो अनुग्रह कर्यो छे माटे शास्त्रमां जुवो तो खरा क्यांय एवां वचन नथी जे हवेलीमां रह्या ने भगवान तेडवा आवे माटे श्रीजीमहाराजनां वचन पाळवां ने जो जेम तेम वर्तशुं ने तेमां पांच मळीने प्रकरण फेरवशे ने महाराजना वचन पाळवानुं कहेशे तेमां हन्य हन्य नहि थाय माटे मोटेरा हशे ते कहेशे जे आज

कांइ कारखानुं नथी माटे सांज सवार भेगा थइने आवो बेशीए ने बार वगाडीए तो केम थाय माटे श्रीजीमहाराजनां वचन पाळवा शीखवुं. ॥ ७९ ॥

पांच दोष अधर्म सर्गना, ने चार गुण धर्म सर्गना ने ए धर्म सर्गना गुणने ओळखीने शीखवा ने अधर्म सर्गना दोषने ओळखीने पछी ते दोषने टाळवा अने भगवाननुं ध्यान करीने भगवानने संतनी प्रार्थना करीने दिन थइने भगवानने तथा संतने कहेवुं जे हे महाराज! मारामां काम, क्रोध छे ते नाश पमाडो ने एम मागीने ते ठेकाणे धर्म ज्ञाननुं स्थापन करवुं तेनी एम विगत छे जे भगवानना अकेक अंगनुं ध्यान करीने अकेक दोषने टाळवो ने अकेक गुणने शीखवो ने एम शीख्या विना न आवे ते उपर वाणीओ पाणीनो मेळ करीने उतरवा गयो ते बुडी मुवो तेम थाय. ॥ ८० ॥

मोरे मतारानी बीक लागती त्यारे श्रीजीमहाराज दश बार ठेकाणे चोकी बेसारता ते कोइथी लाग लेवाणो नहि तेम काम, क्रोधादिक शत्रुनी बीक लागे छे ते वास्ते नेत्र श्रोत्रादिक सर्वे ठेकाणे चोकीयुं बेसारी देवी ते चोकीयुं ते शुं? तो भगवानने स्था-

पन करवा जेम आ सर्वे सभा बेठी छे तेमां चोरने गोतवो होय तो मळे तेम पोताना दोषने ओळखीने टाळे तो टळे ते उपर खेडुनुं द्रष्टांत जे खेतर खेडयुं होय पण रांप काढी न होय त्यां सुधी चोख्खुं न थाय तेम दोष मूळमांथी टळी गया न होय त्यां लगी काचुं, अधर्म सर्गना दोष केवा छे तो भूत जेवा छे जेम कोइ पुरुषमां भूते प्रवेश कर्यो होय ते पुरुषना सर्वे गुण, स्वभाव, ज्ञानने दबावीने भूतना सर्वे गुण, स्वभाव, जणाय छे तेम जे पुरुषमां काम, क्रोध, लोभ, मोहादिक अधर्म सर्ग प्रवेश करे छे त्यारे तेने कोइ जातनुं ज्ञान रहेतुं नथी. ॥ ८१ ॥

भगवानना चरित्रने कहेवां ने सांभळवां अने तेनो इंद्रियो अंतःकरणने विषे वेग लगाडी देवो ने अंतःकरण वासित कर्या विना शान्ति थाय नहि ते उपर मुक्तानंद स्वामीनो वात करी जे तेमणे श्रीजी-महाराजने पूछयुं जे शांति थाय तेवी वात कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराजे घर मुकीने लोज आव्या त्यां लगीनुं तिर्थयात्रानुं चरित्र कह्युं तो पण वळी पूछयुं जे हे महाराज ! शान्ति थाय तेवी वात कहो ? त्यारे श्रीजी-महाराज कचवाणा ने कह्युं जे गुजरातमां फरवा जाओ

त्यारे आसने जइने नित्यानंद स्वामीने पूछ्युं त्यारे नित्यानंद स्वामी बोल्या जे महाराजे लीलानी वात करी तेज शान्ति थयानो उपाय छे ते उपर स्वरुपानंद स्वामीनी वात करीने कह्युं जे भगवानना चरित्रने कह्या सांभळया विना अंतःकरण निरुत्थान थाय नहि. ॥८२॥

एवो दुराग्रह होय जे पोतानुं भुंडुं करीने सत्संगनुं भुंडुं करवा इच्छे जेम लोकमां नाक कापीने केटलाक अपशुकन करे छे हमणां सरकारनो एवो कायदो छे जे चोरने राखे ने रोटलो खवरावे अने चोर तो चाल्यो जाय पछी ते राखनारने दशगणो दंड भरवो पडे तेम इंद्रियो, स्वभाव, ने अंतःकरण चोर छे ते कल्याणना मार्गमां विघ्न करे छे. ॥८३॥

कुंजडी इंडा मुकीने आ देशमां आवे ते बच्चांने सुरतवडे सेवे छे तेम श्रीजीमहाराज प्रत्यक्ष आपणा सामुं जोइ रह्या छे नहितो आवी रीते धर्म पळे ? नपळे अने आपण सर्वे आंही सभा करीने बेठा छीए ते महाराज आवीने आ सभा सामुं जुवे छे ने एम कहे छे जे ठीक करो छो आमने आम करज्यो एम कहीने सर्वेने अमृत द्रष्टिए करीने जुवे छे तेथी आपणने काम

क्रोधादिक बाध करी शकता नथी ने जे सभामां नहि बेसता होय ने महाराजनी द्रष्टि जेना उपर नहि पडती होय तेने काम क्रोधादिक पीडशे ने अंतःकरण बगडी जाशे ने धर्म पाळ्यामां श्रद्धा नहि रहे माटे सौ तपास करजो जे शुं करवा आव्या छीए ने शुं थाय छे? प्रत्यक्ष शास्त्रने परोक्ष शास्त्र ने प्रत्यक्ष वचन ने परोक्ष वचन तेमां बहु फेर छे. ॥८४॥

आव्या छीए कल्याणने वास्ते, ने थाय छे देहनुं जतन, पामवुं छे अक्षरधाम ने देहनुं जतन करीने तेना ठेराव करी राख्या छे ते खोटा छे. ने भगवानने राजी कर्यांना ठेराव करवा ते साचा छे. ॥ ८५ ॥

ओडने कोइक मारतुं होय तो मार खाय पण कोइने कहे नहि जे मारी रक्षा करो तेम आपणने इंद्रियो अंतःकरण तथा भूंडा भूंडा स्वभाव ने काम क्रोधादिक पीडे छे पण कोइक मोटा संतनी आगळ निर्मानी थइने कहेवाय नहि जे आ स्वभाव थकी मने मुकावो ते वात श्रीजीमहाराज कहे जे अमे अमदावाद गया हता पछी रायपरनो दरवाजो आव्यो त्यां रोक्या जे परवानो लावो पछी श्रीजीमहाराजे राठोड धाघलने मोकल्या जे महाराज रायपरने दरवाजे आव्या छे पण

जातां जातां रायपरना दरवाजानुं नाम भूली गया पछी सर्वेए कह्युं जे कये दरवाजे महाराज आवे छे दरीआपरने ? तो कहे हा. पालडीने ? तो कहे हा रायपरने ? तो कहे हा पछी कोइने निर्धार थयो नहि तेम पोताना धर्म, ज्ञान, उपासना, भगवाननुं स्वरुप, भगवाननुं धाम, भगवानना गुण, ऐश्वर्य, सामर्थी, विभूतिने भगवानना अवतार अवतारी भेद समजवानी रीत ए आदिक वात आपणने यथार्थ न समजाणो होय तो आपण थकी बीजाने शो समाश थाय ? नज थाय. ॥८६॥

व्यापकानंद स्वामी रात्रीए ध्यान करता हता त्यारे एक साधुए कह्युं जे सुइ जाओ त्यारे स्वामी कहे निद्रामां शो माल छे ? महापुरुष ! सुख मात्र भगवानना ध्यानमां रह्युं छे तेनो आपण अभ्यास करीए तो ए सुख आवे नहि तो न आवे. ॥ ८७ ॥

श्रीजी महाराजे एक हरिभक्तने कह्युं जे पाणी पीवुं नहि त्यारे ते कहे ठीक महाराज पछी तेणे छ महिना सुधी न पीधुं पछी गढडे महाराजने दर्शने आवतां मार्गमां कारीयाणीनी सीममां एक हरिभक्ते पराणे पाणी पायुं पछी बळतरा थइ ते मांड मांड महाराज पासे उपाडीने लइ गया पछी महाराजे कह्युं जे शा सारुं पाणी पायुं. ॥ ८८ ॥

एक हरिभक्त हतो ते एक सिंगोडुं खाइने रहेतो ते केम जे भगवाननो भक्त होय तेने जो भगवाननी आज्ञा होय तो अन्नपाणी निद्रा विना पण देह रहे परिक्षित राजाने सात दिवसनी अवधी हती त्यारे सर्वे पदार्थमांथी वैराग्य पामीने मोक्षनुं जतन करवा मंडया ने आपणने तो क्षण मात्रनो अवधी नथी तोय मोक्षनुं जतन करता नथी ने सर्वे पदार्थमांथी वैराग्यने पामता नथी. ॥ ८९ ॥

मोटुं मनुष्य होय तेने अति आदर करीए तो रहे ने उतरतुं मनुष्य होय तो तेने तिरस्कार करीए तोपण न जाय तेम भगवान संबंधी जे गुण तेनो अति आदर करीने अति जतन करीने राखे तो रहे नहि तो न रहे ने दोषनो अति अनादर करीए तोय जाय नहि. ॥ ९० ॥

मोरली वागे त्यारे मोटा मोटा नाग होय ते तणाइने आवे ने पैडकां होय ते पडयां पडयां अंबळाय तेम भगवानना खरेखरा भक्त होय ते कथा, वार्ता, किर्तनमां आव्या विना रहेज नहि. ॥ ९१ ॥

कवि मुखवाणी होय परमुख वाणी होय तेने सांभळे छे तो आजे वृचनामृत छे सेतो श्री मुखवाणी छे ते तो जरुर सांभळवी जोइए तेने सांभळते थके

जीवनुं अंतःकरण तत्काळ शुद्ध थाय छे ने गुणरूप मायानी निवृत्ति थाय छे ने एमां आळस रहे छे ते बहु खोट जाय छे ने बहु भूल थाय छे माटे आळस न राखवी. ॥ ९२ ॥

सती होय ते जय रणछोड बोले त्यारे बळ्या विना छूटको नहि तेम त्यागीना आश्रमने पाम्यो ने जे ग्रहस्थाश्रममां रह्यो तेने वर्णना ने आश्रमना धर्मने जाण्या जोइए ने सौ सौना धर्म पाळ्या जोइए पण ते धर्मने दुषण न देवुं ते दुषण ते शुं ? तो सत्संगमां रहीने धर्मने घसारो दे ने यथा प्रमाणे वर्ते नहि. ॥ ९३ ॥

कोइक हरिभक्ते साधुने कह्युं जे तमारामां काम, क्रोध, लोभ, मान, स्वाद, स्पर्धा, इर्षा, अहंकार, रजोगुण, चपलता ए देखीए त्यारे अमारे भार न पडे एतो अमारामां होय माटे धर्म, ज्ञान, वैराग्य, उपासना, शान्तपणुं, शरलपणुं, भक्ति, निःस्वाद, निर्मान, निर्लोभ, निःस्नेह ए आदिक गुण देखीए त्यारे भार पडे माटे आपणो भार जाय एवी क्रिया कर्यानुं शुं काम ? ॥ ९४ ॥

बे जण लडता होय तेमांथी जे भागेडु थयो ते पाछो सामो थइ शके नहि तेम जे भक्त इंद्रियो अंतः-

करण थकी एकवार हटयो ते फरीने सामो थइ शके नहि ते माटे आगळथी खबडदार वर्तवुं ने इंद्रियो अंतःकरणने दाबीने शुरविर थइने वर्तवु ने श्रीजीमहराज छतां जोने साधुने केवुं वर्तन आकरुं हतुं तोपण राजी थका पाळता तेनो विचार करवो. ॥ ९५ ॥

ब्राह्मणनो दिकरो तथा कणबीनो दिकरो नानो होय ने ते जो बीजा कोइनुं न खपे तेनुं खायतो नात बहार न थाय ने पछी मोटो थया केडे खायतो नात बहार थाय तेम आपणे न समजता हता ते दिवस तो जेम तेम वर्त्यां पण हवे तो भगवाने जे पदार्थ भोगव्यानी ना पाडी होय तेने भोगव्यानी इच्छा थाय ततो एवुं खाधा जेवुं छे माटे जे वातनो त्याग कर्यो तेनो संकल्प न करवो. ॥ ९६ ॥

धर्म मवर्तावनो ए बहु कठण छे ने तेथी धर्म पाळवो बहु कठण छे केम जे धर्म जाय तो सर्वे गुण मात्र जाय ने जो धर्म राखीए तो शम, दम, ए आदिक गुण रहे नहितो न रहे. ॥ ९७ ॥

श्रीजीमहाराजे शिक्षापत्री लखीने शोधी पछी सर्वे साधुने कह्युं जे आमांथी जे एक, बे अक्षर, कानो, मात्र, अनुस्वारनी, भूल काढे तेने थाळ आपीए पछी

सर्वे साधुए शोधी तेम आपणे धर्म ज्ञान ए आदिक गुण शीखवा होय तो अति दाखडो करीए तो समजाय. ॥ ९८ ॥

प्रत्यक्ष वचनने, शास्त्र, ने परोक्ष वचनने शास्त्र तेमां बहु फेर छे केम जे प्रत्यक्षथी काम थाय एवुं परोक्षथी न थाय. ॥ ९९ ॥

जीवनुं कल्याण थावुं ए वेद पुराण सर्वे शास्त्रमां बहु कठण कह्युं छे ते श्रीजीमहाराजे बहु सुगम करी दीधुं हवे तो दूधमां जामण नांखीए एटली वार छे जामण ते शुं? तो महाराजना वचनने पाळवां ते जामण छे. ॥ १०० ॥

सूर्यने सामा दैत्य लडवा आवे छे ते ब्राह्मण अर्घ्य दे छे ते बाण थइने लागे छे तेम मतपंथ छे तेने घणो आपणा उपर राग द्वेष छे पण आपणुं वृतांत जोइने उंडा आघात लागे छे तेणे करीने कोइ सामा पग भरी शकता नथी. ॥ १०१ ॥

विद्या भणे त्यारे अतिशे घोष करे तो विद्या अंतःकरणमां प्रवेश करे छे तेम धर्म, ज्ञान उपासना ए आदिकनो अभ्यास अतिशे करे तो अंतःकरणमां प्रवेश थाय छे पछी जीवमां प्रवेश थाय छे. ॥ १०२ ॥

श्रीजीमहाराज उतर खंडमांथी आव्या ने जे जे

धर्म, ज्ञान, वैराग्य, उपासना ने माहात्म्ये सहित भक्ति ए आदिक अनेक कल्याणकारी गुण पोताने विषे देखाड्या ते पोताना भक्तने शीखव्या सारुं ने अज्ञानरुपी मायाने टाळवा सारु ने ते अज्ञानरुप माया केवी छे तो जेम लोकालोकनी परलीकोरे अंधकार छे तेने सुदर्शन चक्र भगवान मेले छे तेथी प्रकाश थाय छे तेवी रीते श्रीजीमहाराजे जे जे रीते वर्तिने गुणने शीखाड्यो ते गुण पोतामां आवे त्यारे अंधकाररुप मायाने टाळे जेम सरोदा छे तेना तार बराबर मळे नहि एक सांधे त्यां बीजो तुटे ने बीजो सांधे त्यां त्रीजो तुटे पण बरोबर तार मळे नहि तेम सर्वे त्यागी तथा गृहस्थ छे ते जाणे आ ताल पुरो थाय तो पछी भगवान सारी पेठे भजीए ने एकांतिक धर्म शीखीए पण कोइ ताल कोइना पण पुरा थया नथी. ॥१०३॥

सर्वे तिर्थमां भगवाने बहु चरित्र कर्या होय ते श्रेष्ठ, ने तेथी जे स्थानने विषे बहु रह्या होय ते तिर्थ श्रेष्ठ, ने तेथी जे स्थानकने विषे जनम्या होय ते श्रेष्ठ ने तेथी स्वधाम पधार्या होय ते सर्व तिर्थ करतां श्रेष्ठ छे ते क्रिया आ स्थानकने विषे श्रीजीमहाराजे करीने आ गोपीनाथजीनी मूर्तिने विषे पोतेज रह्या छे. ॥ १०४ ॥

ठेरावमां दुःख छे ने निर्वाहमां सुख छे जेम मनुष्यना दांत पडी जाय छे त्यारे खाधाना सर्वे ठेराव खोटा थइ जाय छे ते उपर अलैयोखाचर आदिकचार जणानुं द्रष्टांत छे. ॥ १०५ ॥

मनने कह्ये चाले तेनुं सारुं थायज नहि ते उपर पार्वतीने पूत्र जन्म्या त्यारे देव सर्वे आव्या ते भेळे शनिश्चर आव्यो तेणे गणपति सामुं जोयुं त्यारे तेनुं माथुं पडी गयुं तेम मननुं कह्युं माने ते सत्संगमांथी पडी जाय छे ते एनुं माथुं पडयुं जाणवुं. ॥ १०६ ॥

आ वार्ता दूर्गपुरने विषे रहीने करेली तेमांथी संक्षेपे लखेली छे.

इतिश्री सहजानंद स्वामी सुनुं रघुविराचार्य विरचिता वार्ता समाप्ता ॥

———o———

श्रीहरिः ॥

सद्‌गुरु शुकानंद मुनिनुं जीवन चरित्रः—

पवित्र वृत्तालयपुरनी पासेज दर्भावती (डभाण) नामनुं एक गाम छे जे गाममां पूर्वे भगवान स्वामिनारायणे सर्वाश्चर्यकारी महाविष्णुयाग कर्यो हतो. ते गाममां औदीच्य विप्रकुळमां जन्मेला कोइ जगन्नाथ भट्ट नामे हता आ ब्राह्मण एज गाममां विद्याभ्यास करतां संस्कृत भाषामां तथा प्राकृत भाषामां पण पूर्ण पांडित्य पामीने बाल्य थकीज विषयथी विमुख थइ नैष्ठिक ब्रह्मचर्यमां प्रीतिवाळा थइ प्राचीन पुण्य पर वशात् साधुओनो समागम थतां तेमना उपदेशथी वैराग्य अतिशय वृद्धि पामतां थयेली भगवानना चरणकमळना समाश्रयनी त्वराने लीधे ते मुनि जनो साथे दुर्गपुर प्रत्ये गया. आ जगन्नाथ विप्रनुं पोताना चरणारविंदना समाश्रयनी त्वराथी आववुं सांभळीने भगवान विषयविमुख अने आत्माभिमुख जनो उपर पोतानुं सहज अभिमुखपणुं जाणे जणावता होय ने शुं? एम मुनि मंडळने साथे लइ पोताना निवास स्थान थकी तेमना आववाना मार्गमां सन्मुख थया ते पछी भगवाने कृपा कटाक्षवडे जोएला आ विप्र तेमना चरणारविंदनी समीपे पराभक्तिथी साष्टांग प्रणाम करी

भगवाने अभिनंद कर्यां थका मुनिमंडळथी विंटाएला भगवाननी पाछळ पाछळ चालतां दुर्गपुरनी अंदर गया. त्यां भगवत् दर्शन अने संतसमागम करतां कोइ दिवसे भगवाने तेमनी प्रार्थनाने अनुसारे श्रीमत् उद्धव संप्रदायथी प्राप्त थती परमहंस दीक्षा मुक्तानंद महामुनिने आगळ राखी आपी ने मुक्तानंद मुनिए जेमनुं शुकानंद एवुं नाम पाडयुं छे. एवा ते मुनिने पोतानी पासेज सदाय राख्या ते समये मुक्तानंद मुनिने महाप्रभुए कह्युं के हे मुने! तमोए आमनुं "शुकानंद" एवुं नाम पाडयुं ते उपरथी तमो तेमनुं पूर्वजन्म जरुर जाणताज हशो. आ तो शुकदेवजीज फरी अवतर्या छे आ प्रमाणे तेमना वैराग्य आदिक गुणो सर्वने जणावता थका पोताना आज्ञापत्रादि लखवामां पोताना अंतरंग (खानगी) पणे तेमनी नियोजना करी.

फरीथी कोइ समये भगवाने आ मुनिना ज्ञान वैराग्यना प्रकर्षथी परम प्रसन्न थइने सभामां प्रशंसा करी के आ शुकमुनि बहु मोटा साधु छे अने जे दिवसथी अमारी पासे रह्या छे ते दिवसथी एमनो चढतो ने चढतो रंग छे पण मंद तो पडतोज नथी माटे ए तो मुक्तानंद स्वामि जेवा छे. (आ वात कारीयाणीना त्रीजा वचनामृतमां छे) आ मुनिनो जेम प्रति-

दिन पोताना उपदेशना आज्ञापत्रो लखवामां नियोग कर्यो हतो तेमज सांप्रदायिक ग्रंथो लखवामां पण प्रधानपणे नियोग कर्यो हतो जेथी तेमणे संस्कृत प्राकृत सांप्रदायिक अनेक ग्रंथो पोताना हाथथीज लख्या छे तेथी आ मुनिनी भगवाननो जमणो हाथ छे एवी प्रख्याति थइ हती तथा अनेक ग्रंथोना संशोधनमां भगवाने नियोग करतां सदा लेखनमां अने संशोधनमां तत्पर वर्त्या हता कोइ समये भगवाने आ मुनिनी सभामां एवी प्रशंसा करी के डभाणनां अमोने परम प्रिय त्रण वस्तु छे तेमा आ मुनि मुख्य छे ते त्रण कयां तो एक आंबानुं वृक्ष जे हमणां लक्ष्मी बागमां रहेलु छे बीजो बळदीयो अने त्रीजा आ मुनि छे.

वली कोइ समये दूर्गपुरमां रात्रीए भगवाने कहेला उपदेश गर्भित आज्ञा पत्रो लखतां दिवामां तेल खूटी जतां दीपक निस्तेज थइ गयो पछी स्वयं प्रकाश दिव्य तेज स्वरुप भगवाने वारेवारे आज्ञा करतां पण अंधकारथी जेनी द्रष्टि रोकाइ गइ छे एवा आ मुनि लखवा माटे नहि समर्थ थइने भगवानने विनंती करी के प्रदिप प्रशांत थइ गयो छे अने अंधकार सर्वत्र व्यापि गयो छे माटे हुं शी रीत्ये लखी शकुं. एम कह्यु ते पछी तेमनी उपर प्रसन्न थयेला भगवाने आ मिषथी आ मुनिने मारुं परमेश्वररुप प्रदर्शावुं एम निश्चय करी पोताना चरणना

अंगुठामांथी दिव्य तेज प्रकट कर्युं सूर्यादिकना समग्र तेजोने पण तिरस्कार करनारा अति प्रकाशमान सर्वत्र प्रसरेला ते तेजथी नेत्रनी गति रोकाइ जतां विस्मय पामेला आ मुनिए भगवानने प्रणाम करी हे भगवन्! अति उग्र अति अद्भुत तेजनो उपसंहार करो मारा जेवा जनना नेत्रनी गति आ तेजथी रोकाय छे तो तमारुं कल्याण तमरूप जे प्रकारे जोइ शकुं तेवुं सौम्य तेज प्रकट करो एम प्रार्थना करी प्रार्थनाने अनुसारेज भगवाने चरणना अंगुठामांथी सौम्य तेज प्रकट करतां भगवानने प्रणाम करी पछी तेज तेजना सहायथी भगवाने कहेला आज्ञापत्रो बाकीनी रात्रिमां मुनिए लख्या.

वळी कोइ समये भगवाने कांइक लखवा माटे आ मुनिने बोलाववतां तेमने ज्वर आवेलो होवाथी पगलुं पण चालवा असमर्थ थतां पोतानुं चालवामां असामर्थ्य भगवानने जणाव्युं भगवाने पोतानो पारमेश्वर प्रताप प्रकट करवा कोइ पासे बे हाथ झालीने पोतानी पासे लेवरावीने हे शुकानंदमुने! में निवेदन करेलो आ भाग हमणां कोइ पण प्रकारे लखी आपो एम आज्ञा करी ज्वरथी पीडा पामेला अने सर्व अवयवो जेमनां शिथिल थइ गयां छे एवा मने तमो केम आवी आज्ञा करो छो एम कहेता अने पोताना दिव्यरूप सन्मुख

द्रष्टि जेमनी छे एवा ए मुनिने भगवाने प्रेमगर्भित नेत्रथी निश्चळपणे क्षण मात्र जोया ते पछी भगवाननी दिव्य अमृत द्रष्टिथी ज्वर वेगे रहित थइ जतां तेमने प्रणाम करी आज्ञा मुजब लखवानी बाबत हती ते लखी ते दिवसने आरंभीने ज्वरादि व्याधि क्यारेय पण आ मुनिने आवती नहि. ते पछी भगवाने अंतर्ध्यान थतां तेमनो विरह नहि सहन थवाथी शरीरमां प्रतिदीन अनास्था वृद्धि पामती गइ पूर्वोक्त भगवानना अनुग्रहथी जे निरोगीपणुं प्राप्त थयुं हतुं तेतो तेमना खेदने माटे थयुं ते पछी आ मुनि मनमां खेद करी सावधान मनथी हे भगवन! आपना अनुग्रहथी थयेलुं निरोगीपणुं पण हवे तमारा विरहने लीधे रोग जेवुंज जणाय छे माटे मने थोडी थोडी प्रतिदीन ज्वर पीडाज आपो एवी प्रार्थना करतां प्रार्थना सुरेश्वर पामी बार वर्ष पर्यंत प्रतिदीन ज्वरथी पीडा पामता थका पण उद्वेगने नज पाम्या आ मुनिए उमरेठ आदि घणां गामोमां सत्संगनी अभिवृद्धि करी हती वचनामृतना संग्रह करवामां आ मुनिनुंज प्रधानपणुं हतुं.

आ मुनिए रचेला ग्रंथो.

सत्संगि जीवन महाग्रंथनी "हेतु नामनी टीका" (१) "ज्ञानदीप" ओगणचालीश श्लोकना प्रमाणनुं

(२) विश्वमंगल स्तोत्र (३) भागवत् दशम स्कंधनो गुजराती अनुवाद (४) सत्संगिजीवनमां रहेली हरि-गीतानो गुजराती अनुवाद (५) सत्संगिजीवनना द्वितीय प्रकरणमां रहेला भक्ति अध्यायनो गुर्जर अनुवाद (६) धर्मामृतनो गुजराती अनुवाद (७) बुद्धिप्रदीप गुजराती अनुवाद सहित (८) प्रार्थना माला गुजराती अनुवाद सहित (९) इत्यादि.

एवी रीते श्रीमान उद्धव संप्रदायमां शुकदेवजी फरीथी अवतर्या छे एवी प्रख्यातिने पामेला भगवा-नना जमणा हाथरुप भगवानना दिव्य नाम सहस्त्रमां 'शुकरक्षित पुस्तकः' ए रीते भगवानने मान्य पुस्तकोना रक्षण करनारा पणे प्रख्यातिने पामेला आ शुकानंद-मुनि नाना प्रकारना ग्रंथो रचीने सत्संगनी वृद्धि करीने पोते संवत १९२५ ना मागशर मासनी अमावास्याए वरतालमां दिव्य अद्भुत स्वरुपवाळा, मुक्तो सहित भगवाननुं प्रत्यक्ष दर्शन पामी परम आनंदथी परिपूर्ण थइ भौतिक देहनो त्याग करी भगवानना दिव्य अक्षर धामने पामी गया.

इति संक्षिप्त जीवनचरितम् ॥

श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम्।

अथ श्री सहजानंद स्वामी शिष्य शुकानंद-मुनि विरचित वार्ता प्रसंग लिख्यते.

अष्टमिने दिवसे सवारे ग० प्र० प्रकरणनुं ओगणीशमुं वचनामृत वंचाव्युं ने त्यार पछी बपोरे ग० प्र० प्रकरणनुं सडतालिशमुं वचनामृत वंचाव्युं ते बन्नेमां धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ने भक्ति ए चारनी वात आवी त्यारे एक संते पूछयुं जे धर्म ज्ञानादिक शीखवानी रुचि थाय ने देह पडी जाय ते अक्षरधामने पामे के पुनरावृत्ति थाय ? उतर जे, जेने चारे संपूर्ण होय ते तो अक्षरधामने पामे ने भगवाननी सेवामां रहे अने जे सवासनिक भक्त होय तेने ज्यां धर्मज्ञानादिक तत्काळ सिद्ध थाय तेवो योग भगवान करी दे छे ने ते तो भारे योगभ्रष्ट कहेवाय जेम भरतजी योगभ्रष्ट हता तेवो योगभ्रष्ट थाय. ॥१॥

जय विजय योगभ्रष्ट कहेवाय के नहि ? उतर जे, ए तो योगभ्रष्ट न कहेवाय एणे तो संतनो अपराध कर्यो ते आसुरीमति थइ गइ ने महोरे कह्यो

जे योगभ्रष्ट ते तो भारे अवतार जेवो थाय ने धर्म ज्ञानादिकने तत्काळ सिद्ध करे ने बीजा केटलाकने धर्मादिकनी रुचि करावी दे एवो समर्थ थाय छे. ॥ २ ॥

जय विजयने भगवाने पोताना धामने दरवाजे सर्वेने खाळवाने बेसार्या हता ने आज्ञा करी हती ते सारुं सनकादिकने खाळ्या तेमां एने बहुज दंड दीधो एवडो एनो शो वांक ? उतर जे, सनकादिकनो उपहासे युक्त तिरस्कार कर्यो ने लक्ष्मीजीनो पण अपराध ने तिरस्कार कर्यो तेणे करीने लक्ष्मीजीने एम मनसूबो थयो जे आ ठेकाणे आवा पुरुष न जोइए तेणे करीने तेनो जीव आसुरी भावने पाम्यो हतो ने पछी सनकादिके शाप दीधो तेणे करीने दैत्य थया त्यारे वळी पूछयुं जे पार्षद हता त्यारे तो भगवानने भगवानना भक्तने लगारेक दुःखव्या तेणे करीने दैत्य थया ने पछी तो भगवानने भगवानना भक्तने बहुज दुःख दीधुं ने युद्ध कर्युं ने त्रीजे जन्मे धामने पाम्या ए केम ? उतर जे, दैवी होय त्यारे लगारेक द्रोह करे तो बहु पाप थाय छे ने असुर भाव थया पछी एवुं थाय नहि केम जे एनो स्वभावज एवो छे जे भगवानने भगवानना भक्तनो द्रोहज करे

त्यारे वळी पूछयुं जे, श्रीजीमहाराज एकांते बेठा होय त्यारे करीम भाइने एम कहेता जे कोइने आंही आववा देशो नहि त्यारे मोटा मोटा साधुने पण खाळता तेमज जय विजयने आज्ञा हती ते खाळेज तो तेमां कांइ सनकादिकने क्रोध न आव्यो जोइए त्यारे कह्युं जे सनकादिकने तो क्रोध आव्योज नथी, ने क्रोध आव्यो होत तो वैकुंठनाथ भगवानने ए एम कहे नहि जे हे महाराज! तमारी मरजी होय तो आ धामथी जय विजयने पाडो ने मरजी न होय तो न पाडो पण अमारे ए वातनो आग्रह नथी माटे एमने क्रोध आव्यो होत तो एम बोलत नहि अने जेने अति रुढने उग्र प्रकृति होय तेने दैत्य करीने तेनी प्रकृतिने टाळे छे जेने रुढ प्रकृति तो होय पण लगारेक कोमल होय तेने ब्राह्मण करीने टाळे छे तेम जय विजयने अतिरुढ ने उग्र प्रकृति हती ते भगवाने एम जाण्युं जे आमने दैत्य कर्या विना एनी प्रकृति नहि टळे एम जाणीने दैत्य कर्या ने मुचुकंद राजानी रुढ प्रकृति हती पण लगारेक कोमल हती तो भगवाने ब्राह्मणनो अवतार आप्यो ने प्रकृतिने टाळी नाखी. ॥३॥

दैत्यना देहमां तो सामुं प्रकृति वृद्धि पामे छे ने

तमे तो कहो छो जे प्रकृति टाळवा सारुं दैत्य कर्या? उतरजे जे, दैत्यना देहने पाम्या पछी भगवानने पामे छे त्यारे एने एना स्वभावने विषे गुण भाव हतो ते अत्यंत दोषभाव आवे छे त्यारे एना स्वभाव टळी जाय छे. ॥४॥

जय विजयनुं ने सनकादिकनुं भागवतितनुं कह्युं छे ने अक्षरना मुक्तने तो कह्युं छे जे "न[1] तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः" एने पण भागवती तनुं कह्युं छे ते कइ रीते समजवां? उतरे जे, एकतो आठवलुं सोनुं होय ने एक तो बारवलुं सोनुं होय ने एक तो सोळवलुं सोनुं होय ने एकतो कुंदन सोनुं होय तेने तो जे एनी परिक्षावालो होय ते जाणे छे. तेम मोटा एकांतिक होय ते यथार्थ ओळखे ने बीजाने तो कांइ ओळखाय नहि अने मोटा होय ते तो अहिंआं पण सर्वेने ओळखे जे आने आटली भागवती तनु थइ छे ने आने आटली बाकी छे ने जय विजयने तथा सनकादिकने तथा नारदजी एमने पण जाणे. ॥५॥

मोटा पण बे प्रकारनी स्थितिवाला छे ते कहीए (१) साधन काळमां ने स्थिति काळमां एवी समजण

१अर्थः-ते धामने सूर्य, चंद्र अने अग्नि प्रकाश करता नथी.

छे जे आवरणने भेदतां भेदतां अक्षरधाममां जावुं छे (२) साधनकाळमांज एवी समजण छे जे क्यांइ जावुं नथी ने जाणपणामां रह्या थका ध्यान कर्याज करे छे अने स्थितिकाळमां तो अक्षररुप थैने ध्यान करे छे माटे देह मुकशे त्यारे एने एम जणाशे जे हुं तो अक्षरधाममांज बेठो छुं. पण बीजुं कांइ आवरण नहि देखाय ते उपर गोपालानंद स्वामीए देह मुक्यो त्यारे कह्युं जे सर्वे संत जमीने आव्या? त्यारे कह्यु जे हा त्यारे स्वामीने महाराजनां दर्शन थयां ने शरिर रोमांचित गात्र थइने सर्वे इंद्रियोनी वृत्तियुं ऊंडी जाणपणामां उतरी गयुं ने देह मुक्यो अने प्रथम कह्यो तेवी स्थितिवाळा ज्यारे देह मुके त्यारे भगवाननां दर्शन थाय ने नेत्र आदिक सर्वे इंद्रियोनी वृत्तियुं बाहेर जणाय ने देह मुके छे. ॥ ६ ॥

वचनामृतनी कथा वंचावतां पोताना त्रण मनसूबानी वात करी तेमां बे मनसूबा तो श्रीजीमहाराजे पुरा कर्या ने एक बाकी रह्यो ते महाराज पुरो करे तो बहु सारुं ते मनसूबो शुं? (१) जे महाराज डभाणना ब्राह्मण पासे कथा करावता हता ते महाराज तेने पूछे ने वात करे ने ते ब्राह्मण महाराजने पूछे तेने जोइने एम मनसूबो थयो जे महाराजनी आगळ

कथा करीए ने पूछीए ने महाराज मने पूछे ते मनसूबो तो सारी पठे पुरो कर्यो जे महाराज आ लोकमां जे काम सारु आव्या ते कामनी सर्वे वात मने कही ने में महाराजने पूछी जे संप्रदाय प्रवर्ताव्यानी रीती, तथा बहु झाझा जीव कल्याणने मार्गे चाले तथा थोडे दाखडे बहु जीव अक्षरधामने पाम्यानी रीती तथा ग्रंथ करवानी रीती, तथा अनेक प्रकारनां प्रकरण फेरव्यां तेना खरडा मारी पासे लखाव्या, तथा एकवार मने ताव आव्यो ने महाराजने कागळ लखाववो हतो पण लखनार नहि. ते मनुष्य एकवार तेडवा मोकल्युं ने बीजीवार मोकल्युं त्यारे में कह्युं जे ताव आव्यो छे तोपण महाराज कहे तेडी लावो ते हुं मांड मांड गयो त्यारे कहे आंइ सुवो त्यारे हुं सुइ गयो ते महाराज मारा माथुं एक घडी जोइ रह्या ते दहाडाथी एवो ताव आव्या नथी अने महाराज कहेता जे शुकमुनि तो अमारा हाथ छे ए प्रकारे अनेक रिते महाराज राजी थया ने मनसूबो पूरो कर्यो. (२) मुक्तानंद स्वामी आदिक साधुने जोइ एम मनसूबो थाय जे आपणे साधु थाइए तो बहु सारुं ते महाराजे साधु कर्यो ने मुक्तानंद स्वामी तथा गोपालानंद स्वामी ए आदिक सर्वे राजी थया ए मनसूबो महा-

राजे पुरो कर्यो. (३) आ त्रीजो मनसूबो बाकी रह्यो ते महाराज पुरो करे तो बहु सारुं ते शुं? तो देह मुकवा पहेलां एक वर्ष के छ महिना सुधी सारी पेठे मंदवाड आवे तो बहु सारुं ते शा सारु जे मंदवाडे करीने जीव निरवासनिक थाय छे तेवो बीजे साधने करीने नथी थातो. एक विषयमां राग ने देहमां आसक्ति ने शुभवासना ए त्रणे मंदवाडे करीने नाश पामे छे ते कहीए छीए जे प्रथम विषयमांथी आसक्ति मंदवाडे करीनेज टळे छे जे, आ सारा साधु कोइ विषयने ग्रहण करताज नथी ने सारुं मिष्ट भोजन जमताज नथी तोपण जमवानुं सारुं भोजन होय तो बे चार ग्रास वधु जरुर जमाय खरुं ने ताव आव्यो होय तो अन्ननुं नाम लेतो उलटी थाय अने ज्यारे मने ताव आवे त्यारे अर्धशेर के पाशेर अन्न जमाय खरुं ने हमणां मंदवाड आव्यो ते अन्न तो दीठुंज गमे नहि ने कोइ पदार्थ सारुं लागेज नहि ने मुक्तानंद स्वामीने मंदवाड आव्यो त्यारे तो महाराजना थाळनी प्रसादी लेवानो मनसूबोज थाय नहि एक भातनो दाणो लेवाय एवी अरुची मंदवाडे करीने थाय छे एवी रीते विषय जीत्यानी वात कही. ॥ ७ ॥

देहमांथी आसक्ति मंदवाडे करीने टळी जाय छे

ते कहीए जे, मुक्तानंदस्वामी आदीक मोटा मोटा साधुने कोइ वासना नथी पण लगारेक देहमां हेत छे ते मंदवाडे करीने टळी जाय छे ते जोतां एम थाय छे जे सर्वेने देहमांथी हेत भारे मंदवाडे करीने तुटे छे ते केम जे मंदवाडे करीने देह गंधाइ उठे ने मल मूत्र तेणे करीने सामुं जोवाय नहि ने दिशा वारेवारे जावुं पडे ने उलटी थाय ने मूळ आवे ने ते मंदवाडे करीने बहु दुःख थाय त्यारे एम थाय जे आ पापरूप देह पडे तो बहु सारुं थाय त्यारे देहमांथी आसक्ति टळी जाय छे ॥ ८ ॥

शुभवासना ते पण मंदवाडे करीने टळे छे ते शुभवासनाने कहीए तेने सांभळो जे, मुक्तानंद स्वामीने शुभ वासना हती ने क्षय रोग थयो तोपण देह रह्यो जे एमने एवी शुभ वासना हती जे श्रीजीमहाराज आ लोकमां रहे त्यां लगी मारो देह रहेतो महाराजनां चरित्र सर्वे जोवामां आवे ते एवी वासना हती ते सारुं महाराजे देह राख्यो नहितो क्षयवाळानो देह रहेज नहि ने क्षय रोग थया पछी आठ वर्ष सुधी स्वामीनो देह रह्यो ते शुभ वासनाने बळे करीने रह्यो अने स्वामीनी बीजी वार्ता कहीए छीए जे मुक्तानंद स्वामीने देह मुकवा आडा त्रण

दिवस रह्या त्यारे कहे हवे मंदवाड कशो नथी हवे तो साजा थया ते गाडी उपर बेसीने देशमां फरशुं ने मोटां मोटां शहेरोमां वातो करीने आचार्यजी महाराजनी पधरामणी करावशुं ने उद्धव संप्रदायनी प्रतिष्ठा करशुं त्यारे नित्यानंद स्वामीए कह्युं जे स्वामी हुं तमारो शिष्य छुं ते तमारो मनसूबो पुरो करीश पछी नित्यानंद स्वामीने माथे हाथ मुकीने बरडो थाबड्यो ने पछी स्वामीए देह मुक्यो एवी रीते विषय ने देहमां हेत ने शुभवासना ते मंदवाडे करीने टळे छे त्यारे मुनीए कह्युं जे मोटाने मंदवाड आवे ते तो ठीक पण गरीबने तो तत्काल देह पडी जाय तो ठीक त्यारे कह्युं जे कांइ जोइयेज नहि एवो विचार करवो जेम निष्कुळानंद स्वामीए पोताने कह्युं जे पूर्वने पापे करीने दुःखी थाय छे ने वळी भगवानना भक्तनो अवगुण लइश तो तेनो क्यां छुटको थाशे? ॥ ९ ॥

संत कितॅन बोल्या पछी ते उपर वात करी जे आ देहे करीने धर्म न सधाणो, ज्ञान न सधाणुं, वैराग्य न सधाणो, महिमाए सहित भक्ति न सधाणी उपासना न सधाणी ने अनेक जीवनां कल्याण करवा सारुं श्रीजीमहाराजे मंदिरो कर्यां छे तेनी सेवा आ देहे करीने न थइ तो ए देह केवुं छे तो वरोल गायनी

सेवा कर्या जेवुं जाणवुं केम जे दुध तो मळे नहि ने छाण मूत्र वाळवुं पडे. ॥ १० ॥

सवारमां वात करी जे जगतमां एम कहे छे जे आ मनुष्यनुं कमळ फर्युं छे ते कमळ हृदयने विषे उंधुं रह्युं छे ते सवळुं थाय छे अने ते कमळ फरे त्यारे तो अवळी समजण होय ते सवळी समजण थाय छे ए एनुं कमळ फर्युं कहेवाय छे ते शुं तों धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, उपासना, ऐश्वर्य, गुण, विभूति एने शीखवानो अभ्यास करे ते ज्यारे सिद्ध थाय छे त्यारे ए भगवानना एकांतिक भक्त थाय छे अने ज्यारे ए गुण सिद्ध थाय छे त्यारेअधर्म सर्गनो दोष कोइए हृदयमां रहेजनहि अने जगतना सुखनो,विषयना सुखनो,देहना सुखनो, हृदयमां क्यारेय अंकुर ऊठेज नहि ने ए सुखमां तो अपार दुःख जणाया करे छे अने एक भगवाननुंज सुख अंतःकरणमां फुवारानी पेठे स्फुर्या करे ए एनुं कमळ फर्युं कहेवाय छे. ॥ ११ ॥

रहस्यनुं वचनामृत वंचाव्युं तेमां एम कह्युं छे जे, जेम नदियो समुद्रने विषे लीन थै जाय छे ने सतिने पतंग जेम अग्निने विषे बळी जाय छे ने जेम शुरो रणने विषे टुकटुक थइ जाय छे तेम पोताना आत्माने अक्षर ब्रह्म संघाथे एक रस लीन करी नाखे त्यारे

अक्षरना गुण आत्माने विषे आवे छे ने ते अक्षरने विषे अनंत कोटी ब्रह्मांड परमाणुं सरखां जणाय छे एवा ए अक्षर मोटा छे ने ए अक्षर भगवाननो अलौकिक अपार महिमा समजे छे ने सदा निर्विकार छे, सदा निर्लेप छे, अतिशुद्ध छे, अति सुखरुप छे, अति असंग छे; निर्गुण छे, शान्त छे, श्रीहरिजोने विषे अतिशे प्रीतिये युक्त छे श्रीहरिजीना स्वरुपने विषे स्थिर थैने रह्या छे सदा निर्दोष छे ने श्रीहरिजीनी यथार्थ मरजीने जाणे छे ने तेज प्रमाणे यथार्थ वर्ते छे ने ते श्रीहरिजीनी जेवी मरजी छे तेज प्रमाणे स्वभावे युक्त छे ने श्रीहरिजीनी सेवामां अखंड रह्या छे ने श्रीहरिजीना अति उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाला छे ने अति उत्तम निर्विकल्प स्थितिवाला छे ने मायाना आवरणे रहित छे एवा अनंत अक्षरने विषे गुण छे ते आत्माने विषे आवे छे त्यारे अनंत कोटी ब्रह्मांड परमाणुंवत थइ जाय छे त्यारे आ लोकनां सुख परमाणुंवत थइ जाय एमां शुं कहेवुं ? ए तो थायज अने एवो महत् गुण आवे त्यारे कोइ लोकांतरना सुख नजरमां आवेज नहि अने गमे तेवा उत्तम विषय प्राप्त थाय तो पण एमां माल मनायज नहि एवी जीवमां महत् समजण आवे तो ए भगवानने रहेवानुं

पात्र थयो ने एना हृदयमां भगवान अखंड रहे छे. ए वचनामृतनो आ भाव छे. माटे अक्षर ब्रह्म संघाथे पोताना आत्माने एक करीने तेने विषे अंतर द्रष्टि करीने श्रीहरिजीनी मूर्तिने जोया करवुं अने जाणपणारुप जे भगवानना धामनो दरवाजो त्यां रहीने अंतर द्रष्टि करीने श्रीहरिजीनुं ध्यान भजन करवुं ने निरंतर एवुं अनुं-संधान राखवुं जे हुं अक्षर ब्रह्म छुं ने मारे विषे श्रीहरिजी अखंड रह्या छे ए अंतर द्रष्टि मुकवीज नहि शा माटे जे अंतर द्रष्टिवालानी समजणमां ए गुण छे जे भगवाननुं समीपपणुं रहे छे ने बुद्धि सुक्ष्म थाय छे ने अहं ग्रंथि गळे छे ने दोषने ओळखे छे ने ते दोषने टाळी नाखे छे ने उत्तम विषयनी प्राप्ति थाय तो पण लेवाय नहि ने एकांतिकने ओळखे छे ने भगवाननी मरजीने जाणे छे ए अंतर द्रष्टिवालानी समजणमां गुण छे ने बाह्य द्रष्टिवालानी समजणमां ए दोष छे जे भगवानने छेटे समजे छे जे बुद्धिमां स्थुलता रहे छे तेणे करीने एकांतिक धर्म समजाय नहि ने अहंग्रंथि वृद्धिने पामे छे तेणे करीने दोषने ओळखे नहि ने ते दोष तत्काळ टळे पण नहि ने देशकाळे करीने विषयने विषे चोटी जाय छे ने एकांतिक भक्तने तत्काळ ओळखे नहि ने

भगवाननी मरजीने तत्काळ जाणी शके नहि ए बाह्य दृष्टिवालानी समजणमां दोष छे. ॥ १२ ॥

सारंगपुरना १४ ना वचनामृतमां प्रमादने मोहनी वात आवी त्यारे संते पूछ्युं जे एकांतिक भक्तिमां प्रमादने मोह कांइ अंतराय करे छे के नथी करता? उतर जे, जेने प्रमादने मोह होय तेने एकांतिक धर्म तो आवेज नहि कांजे एनी समजणज अवळी होय ते शुं? तो मोटा एकांतिक साधु होय तेने न्युन समजे ने न्युन होय तेने एकांतिक समजे एटले एने एकांतिकपणुं आवेज नहि केम जे एकांतिक धर्म आववानो द्वार बंध थाय छे ते एवो जेने मोह होय तेमनी समजणज विपरीत होय छे ते शुं तो पुरुषो-तमने अवतार जेवा जाणे ने अवतारने पुरुषोतम जेवा जाणे ने एकांतिक धर्मने साधारण धर्म जेवो जाणे ने साधारण धर्मने एकांतिक धर्म जेवो जाणे ने जगत मिथ्या छे तेने सत्य जाणे ने भगवान सत्य छे तेने सत्य न जाणे ने जीवात्मा सत्य छे तेने असत्य जाणे ने देह मिथ्या छे तेने सत्य जाणे एवो ए मोह छे ते कोइ रीते टळे एवो नथी ते भगवाने महा दाखडे करीने अढार अध्याय गीतानुं ज्ञान कर्युं

त्यारे अर्जुनने समजाणुं त्यारे बोल्या जे " [1]नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत ।॥ स्थितोऽस्मि गत-संदेहः करिष्ये वचनं तव " त्यारे अर्जुनने मोह टळ्यो ने स्मृति वृद्धिने पामी अने उद्धवजीने एकादश स्कंधना अठ्ठाविश अध्याय सुधी भगवाने ज्ञान कर्युं त्यारे उद्धवजी बोल्या जे श्लोकः " [2]विद्रावितो मोहमहांधकारो य आश्रितो मे तव सन्निधानात्' हे महाराज ! मारो मोह रूप अंधकार हवे नाश पाम्यो हवे जेम कहो तेम करूं. अने प्रमाद शुं जे करवानुं न करवुं ने न करवानुं करवुं ते शुं जे एकांतिक धर्म शीखवो ते करवानुं छे ते न कराय ने बीजुं नथी करवानुं ते करे छे चार पहोर तुंबडां घसे ने भगवाननुं ध्यान एक घडीये पण न थाय ने आ देहने घस भूस करवुं होय तो थाके

१ अर्थः—हे भगवन् ! आपनी कृपाथी मारुं विपरीत ज्ञान नाश पाम्युं छे, अने यथार्थ ज्ञान प्राप्त थयुं छे. हवे हुं निःसंदेह अने स्वस्थ थयो छुं माटे आपना वचननुं आप कहेशो तेम पालन करीश. । (गी. अ. १८–७३)

२ अर्थः—उद्धव–हे भगवन् ! में जे मोहरूपी महा अंधकारनो आश्रय कर्यो हतो, ते महा मोह-रुपी अंधकारने तमारा समागमथी नसाडी मुक्यो छे. । (भा. ए. अ. २९–३७)

नहि ने भगवानना गुण गावा होय तो थाकी जाय छे ने बीजी क्रिया करतां थाके के काय नहि ने भगवाननुं ध्यान करवुं होय तो थाकी जाय छ एम ए प्रमादने जाणवो. ने आळश ए जे भगवाननी भक्ति न करवी ने केवळ खाइने सुइ रहेवुं. ने ए मोह, प्रमाद अने आळस ए त्रणे भगवाननी एकांतिक भक्तिने विषे मोटा अंतराय रुप छे एम जाणीने त्याग करवा.॥१३॥

शयन आरती थया केडे वचनामृत वंचाइ रह्यां ने किर्तन, स्वभाविक चेष्टाने बोली रह्या पछी एकलीयां किर्तन बोलीने स्वामीने पूछयुं जे आ किर्तननुं चरण समजातुं नथी जे ॥ मन भेदी तनडामां न टकी आवी देखाणी बारीरे ॥ ए चरण उपर स्वामीए वात करी जे अतिशे भगवानना प्रेमी भक्तने भगवाननुं दर्शन थाय छे त्यारे मन भेदाइ जाय छे जेम कामी पुरुषने मनगमती स्त्री मळे ने मन भेदाइ जाय छे ने जेम अतिशे लोभीने धन मळे ने मन भेदाइ जाय छे अने तनडामां न टकी ते शु जे तेनी ते मूर्ति जीवमां प्रवेश करी जाय अने तेनी ते मूर्ति आगळ देखाय छे अने ए प्रेमी भक्तने भगवान एवी रीते दर्शन दे त्यारे ए भक्तनी वृत्ति भगवानने विषे चोंटी जाय छे ने ते भक्तने भगवान विना क्षणमात्र रहेवाय नहि ने

भगवानना वियोग थाय तो विरहे करीने रही शके नहि जेम माछलुं जळ विनानुं रही शके नहि तेम ते भक्त पण भगवान विना रही शकेज नहि ने भगवाननो वियोग थाय तो बहुज दुःख थाय ने रहेवाय पण नहि ने ज्ञानी भक्तने वियोगे करी दुःखतो थाय पण बहु न थाय ने ए तो ज्ञाने करीने एम जाणे छे जे मारा जीवात्मामां भगवान अखंड रह्या छे ने प्रेमी भक्तने विक्षेपे करीने दुःख थाय छे तेने ज्ञान शीख्युं जोइए अने ज्ञानी भक्ते विचारे करीने सर्व पदार्थमांथी मन लुखुं करी नांख्युं होय ते प्रेमी भक्तनी पेठे भगवानमां चोटाय नहि तेने प्रेम शीख्यो जोइए केम जे प्रेमे करीने भगवानने विषे चोटाय छे अने ज्ञानी भक्तने एक वात सुगम छे ने प्रेमी भक्तने एक वात बहुज कठण छे ते शु ? तो ज्ञानी भक्त तो भगवाननुं ध्यान जीवात्मामां करे छे. ते एने प्रथम कारण शरिरनो नाश थाय छे ते कारण शरिर महाकठण छे ते ज्ञानी भक्तने प्रथम टळे छे अने पछी सुक्ष्मने स्थुल टाळवुं लगारे कठण पडतुं नथी ते ए ज्ञानी भक्तने सुगम छे ने प्रेमी भक्त तो भगवाननुं ध्यान बाह्य द्रष्टिने आगळ करे छे ते प्रथम स्थुल ने पछी सुक्ष्म ने पछी कारण देह टळे छे ते ए प्रेमी भक्तने तो त्रण

देह टाळवा कठण छे ते प्रथम स्थुल टाळवुं कठण छे एथी सुक्ष्म महाकठण छे ने तेथी कारण तो बहुज कठण छे. ॥ १४ ॥

एक संते कह्युं जे शास्त्र काळे करीने समजाय छे ते मोरे मने गोपाळानंद स्वामीए कह्युं जे तुं गीता भण त्यारे में गीता भणवा मांडी ते केवळ वांची जाउ पण कांइ समजाय नहि ने हवे वांचु छुं त्यारे अक्षरे अक्षर समजाय छे ते एम जणाय छे जे शास्त्र काळे करीने समजाय छे त्यारे शुकस्वामीए कह्युं जे हा शास्त्रकाळे करीनेज समजाय छे ते उपर वात करी जे महाराज वातो करता ते अमे सांभळीने अंतरमां उतारीने वचनामृत अमे लख्यां ने शोध्यां ने वांच्यां पण कांइ समजाणुं नहि अने पछी गोपाळानंद स्वामीए वचनामृतमांथी वातो समजावीने कह्युं जे आवी वात तो कोइ शास्त्रमां नथी ते धर्मनी, ज्ञाननी, वैराग्यनी, भगवानना महिमानी, उपासनानी, जीवनी, इश्वरनी, मायानी, अन्वयनी, अने व्यतिरेकनी एवी अनंत वातो वचनामृतमांथी करीने कह्युं जे महाराजे वातो करी छे तेवी तो कोइ शास्त्रमां नथी त्यारे वचनामृतनी वात समजाणी अने ए वात अमे लखी हती पण एवी समजाती नहि ते शास्त्र काळे करीने सम-

जाय छे ते पण मोटानो विश्वास होय ने अंतर द्रष्टि होय तो एने तुरत समजाय छे. ॥ १५ ॥

एक संते पूछयुं जे अंतर द्रष्टि राखवी ने बाह्य द्रष्टि राखवी ते शुं छे? उतर जे, जे क्रिया करवी ते विचार करीने देह इंद्रियादिकथी जुदा पडीने हुं तो एनो जाणनारो छुं एम जुदा पडीने सर्वे क्रिया करवी पण कोइ क्रियामां ए विचार भूलीने देह इंद्रियोरुप थइने करवीज नहि त्यारे संते कह्युं जे, भाइस्वामी एम वात करता जे महाराजे प्रकरण फेरव्युं त्यारे कह्युं जे, जे क्रिया करवी ते उत्थान ओळखीने करवी पण संकल्प भेळा भळवुं नहि एम उत्थान ओळखीने जाणपणामां रहीने सर्वे क्रिया करे एज अंतरद्रष्टिनी बाराखडी छे. ॥ १६ ॥

एकादशीने दिवस आ किर्तन सांभळ्यां जे "स्वामिनारायण स्वामिनारायण उंचे सादे गाय, सांभळीने यमदूत तेने दूरथी लागे पाय" ए किर्तन सांभळीने संते पूछयुं जे ए किर्तन कुसंगी लोक गाय तो यमदूत छेटे रहे के न रहे? उतर जे, स्वामिनारायण कहेवुं ए महामंत्र छे ते शुं? तो सत्संगीगाता होय के कुसंगी गाता होय पण यमना दूत तो छेटे रहे छे एवो ए नामनो प्रताप छे माटे हालतां, चालतां,

खातां, पीतां, नातां, धोतां, बेसतां. उठतां, ए आदिक सर्वे क्रिया करतां थकां सदा ए मंत्रनो जप करवो ने एम जे मंत्रनो जप करे छे तेनी सामुं श्रीजीमहाराज जोइ रह्या छे अने वळी एम वात करी जे कथा, वार्ता, भजन, स्मरण, ए आदिक जे जे क्रिया करीए छीए ते सर्वेने श्रीजीमहाराज जोइ रह्या छे ने अक्षर धामना मुक्त तथा गोपालानंद स्वामीने आगळ महाराज वात करे छे जे ए बहु सारुं करे छे ने आपणा उपर बहुं राजी थाय छे ने एकादशीनो उपवासकरे छे ने बार वाग्या लगण जाग्रण करी कथा, वार्ता, किर्तन करे छे. ते बहु सारुं करे छे एम श्रीजीमहाराज अक्षरना मुक्तने कहे छे ने आपण सर्वे सामुं जोइ रह्या छे. ॥ १७ ॥

गढडे श्रीजीमहाराज सभामां वातो करीने पछी पोढवा जाता त्यारे मनुष्यने मोकलीने खबर कढावता जे कोण कोण वातोनुं मनन करे छे ने कोण भजन, स्मरण, ने किर्तन गाय छे अने जे वातोनुं मनन करता ने किर्तनादिक करता तेना उपर बहु राजी थाता अने आज पण जे जे भजन, स्मरण, कथा, किर्तन, वार्ता, नाम स्मरण, वचनामृत, हरिस्मृति ए कंठे करीने बोले छे ने राते उठीने भगवानुं ध्यान

करे छे ने उंचे सादे स्वामिनारायण स्वामिनाराय
नाम ले छे ते सर्वेने श्रीजीमहाराज सांभळे छे
सर्वेना साम्हुं जोइ रह्या छे ने बहु राजी थाय छे
आ बहु सारुं करे छे एम सर्वे मुक्तने ने गोपालानं
स्वामीने कहे छे ने स्वामी पण राजी थाय छे. ॥१८

एकवार विजयात्मानंद स्वामी भजन करता हत
जे हे स्वामिनारायण! हे स्वामिनारायण! त्यारे मह
राज शुं कहो छो एम जे स्वामिनारायण कहे छे ते
महाराज जाणे छे जे आ भक्त मने साद करे छे. ॥१९

एक वार श्रीजीमहाराज गढडेथी चाल्या
कारीयाणी आव्या ते वस्ताखाचरने मनसूबो थयो
महाराज क्यां उतरशे मेमान छे एम मनसूबाने मह
राज अंतर्यामिपणे जाणीने कट लइने चाली निकळ्य
पछी तो बहु ताण करी पण रह्या नहि ने रात दो
पहोर गइ त्यारे गाम कुंडलने पादर चाल्या जता हत
अने ते समे मामैया पटगर सुता उठीने उंचे सा
स्वामिनारायण, स्वामिनारायण भजन करता हता
सांभळीने महाराज कट वळीने गया पछी मामैया
पटगरे कह्युं छे अहो? अहो? महाराज क्यांथी आव्य
त्यारे श्रीजीमहाराज कहे तमे साद कर्यो ते अ
आंही आव्या पछी तो श्रीजीमहाराजे मामैयापटगरने

कह्युं जे तमे स्वामिनारायण एम साद कर्या ते सांभ-ळीने अमे आंही आव्या नहि तो अमारे चाल्या जवा हता एम कहीने मामैयापटगर उपर बहु राजी थया. ॥ २० ॥

संत नृसिंहानंद स्वामीए वात कही देखाडी जे कोइ हरिभक्ते पूछ्युं जे धन तो वावर्यामां काम आवे छे ने स्वाद तो जमीए छीए त्यारे सारुं लागे छे ने शरी-रमां सुख थाय छे अने मान तो ज्यां जाइए त्यां मोटा माणस आदरभाव करे छे ने सन्मान करे छे ते सारुं लागे छे. पण आ स्नेह ते शुं काममां आवे छे ते ज्यां त्यां हेत थइ जाय छे? उतर जे, ए त्रण देवनो मोह छे तेणे करीने ज्यां त्यां जीव चोटी जाय छे, अने तेमां ब्रह्मानो मोह शुं छे? तो स्त्रीने संतान जन्मे त्यारे मूर्छा जेवुं थइ जाय छे तो पण ते दुःखने भूली जइने वळी पाछी तेज मार्गे चाले छे ने स्त्रीने पुरुषने विषे हेत थाय छे ने पुरुषने स्त्रीने विषे हेत थाय छे. अने विष्णुनो मोह शुं? तो जीव प्राणी मात्रने पोतानी प्रजानुं भरण पोषण करवुं तेमां अनेक प्रकारनां दुःख आवे छे तो पण सहन कर्या करे छे. अने शिवनो मोह ते शुं? तो मृत्युकाळ आवे त्यारे डचकां आवे जीभ झलाइ जाय ने बोलाय नहि तो

पण एम जाणे जे हुं जीवीश अने चाकरीना करनारा पण एम जाणे जे हजी जीवशे तेमज मरनाराने आशा न टळे अने चाकरीना करनाराने पण आशा टळे नहि. एम त्रणे देवना मोहे करीने ज्यां त्यां हेत थइ जाय छे ते मोह क्यारे टळे ? तो ज्यारे त्रण गुण ने त्रण देह ने त्रण अवस्थाथी जीवात्माने नोखो समजीने अक्षररूप थइने पुरुषोत्तमनुं ध्यान, उपासना, करे पण तेमां कंटाळे नहि ने आज्ञा प्रमाणे वर्ते तो ए त्रणे देवनो मोह टळी जाय छे. ॥ २१ ॥

बपोरे छेल्ला प्रकरणनुं ३३ मुं वचनामृत वंचाव्युं तेमां स्त्री, धन, देहाभिमान, अने स्वभाव, नी वार्ता आवी ते वात सांभळीने हरिभक्ते पूछ्युं जे स्वभाव ते क्यां रहे छे ? उतर जे, स्वभाव तो कारण देहमां रहे छे ने कारण देह तो अव्यक्त ने वासनामय छे ते कोइने जाण्यामांज आवतुं नथी जेम अतिशे झीणुं बीज होय ते जणातुं नथी तो वृक्षनां डाळां, पांदडां जणायज क्यां ? तेम कारण देह देख्यामां आवतुं नथी तो स्वभाव क्यांथी ओळख्यामां आवे ने टळे पण ज्ञानो अने ते कारण शरिरने स्वभाव तो टाळवा महा कठण छे ते जेम काळमिंढ पत्थरनो महाकठण पर्वत होय ने तेमां कापीने सडक काढवी होय ते बहु कठण छे ते

तो महा दाखडो करे त्यारे मांड मांड निसरे तेम कारण शरीरने स्वभाव टाळवा महा कठण छे. ने जेम काठियावाडमां महा कठण पत्थरामां कुवो करवो होय तो अतिशे दाखडे करीने थाय छे तेम कारण शरीर टाळवुं महा कठण छे ते जो मोटा संतनो संग थाय ने तेनी वातो सांभळतां सांभळतां बहु ज्ञानाभ्यास थाय ने पछी जीवमांथी ज्ञानाग्नी प्रगटे तो कारण शरीरने बाळी नाखे छे ते उपर हरिभक्त श्लोक बोल्या त्यारे स्वामीए कह्युं जे ए श्लोक नहि आमां कह्युं छे जे ज्ञान रूप अग्नीए करीने कारण शरीर बळे छे जेम काष्टमांथी मथवे करीने थयो जे अग्नी ते काष्टने बाळ छे तेम त्रण अवस्थाने त्रणगुण ने त्रण शरीरथी पर जे शुद्ध जीवात्माने संतने शब्दे करीने थयो जे ज्ञानरूप अग्नी तेणे करीने कारण शरीर सेकाइने बळी जाय छे त्यारे कारण शरीर छे ते सुक्ष्म शरीर अने स्थुळ शरीरने धरावे एवुं रहेतुं नथी जेम घउं, डांगर, खांडीए एटले उगे नहि बीजा अन्नादिकने लगार लगार सेकीए एटले उगे नहि ने राजगराने हाथे करीने चोळीए एटले एनुं लगारेक नाकुं घसाइ जाय एटले उगे नहि तेम ज्ञाने करीने कारण शरीर घसाइ जाय छे पण ज्ञानाग्नी जीवमांथी प्रगट थया विना कारण शरीरने बाळवानो

बीजो उपाय नथी वळी हरिभक्ते कह्युं जे मोटा साधुनो निरंतर समागम रहे तो ज्ञानाभ्यास थाय छे ते तो निरंतर रहे एम जणातुं नथी त्यारे स्वामीए कह्युं जे प्रथम एने मोटा साधुने समागमे करीने समजणनी लटक जीवमां बेठी होय तो निरंतर मोटा साधुनो जोग न होय तो पण ज्ञानाभ्यास थाय छे पण एवी समजणनी लटक जीवमां बेठी जोइए जुओने एकलव्य भीलने कोइ धनुर्विद्या भणावे एवो जोग नहोतो पण शब्द वेधी थयो ने एक ब्राह्मण सत्संगी हतो ते चीन गयो त्यां नरा मुसलमाननी वस्ती हती ने दारु मांसना खानारा भेळो रह्यो पण सत्संगीना धर्म, नियम, एवाने एवा राख्या तो जुओ एने संतनो ने सत्संगनो जोग नहोतो तो पण सत्संग राख्यो ते एने समजणनी लटक जीवमां ठावकी बेठी हती तेम जेने ज्ञानाभ्यासनी लटक जीवमां ठावकी बेठी होय तो मोटा संतनो समागम न होय तो पण ज्ञानाभ्यासे करीने कारण शरीरने बाळी नाखे छे ते उपर काठियावाडनो चारण मालवे गयो हतो तेनुं द्रष्टांत दीधुं. ॥ २२ ॥

स्वामी बोल्या जे काल्य राते बहु सारी वात करी जे श्रीजीमहाराज पोढवा जता त्यारे खबर कढावता जे कोण कोण वातोनुं मनन करे छे ने

कोण कोण भजन, स्मरण, कथा, वार्ता, कीर्तन करे छे ने जे जे करता तेने जोइने बहु राजी थाता तेम आपणे भजन, स्मरण, जे जे करीए छीए ते श्रीजी-महाराज जोइ रह्या छे जेम आपणा हाथमां जळनुं टीपुं होय ने जाणीए छीए तेम आपणे जे जे क्रिया करीए छीए तेने श्रीजीमहाराज जोइ रह्या छे त्यारे हरिभक्ते पूछयुं जे अनंत भगवानना भक्त छे ते लाखो गाउ छेटे रहेता हशे ते सर्वेने श्रीजीमहाराज जोइ रह्या छे त्यारे श्रीजीमहाराजने दाखडो ने परिश्रम नहि पडतो होय? त्यारे कह्युं जे भगवान तो अनंत कोटी ब्रह्मांडना जीवने एक काळे जोइ रह्या छे पछी केळाने हाथमां लइने सर्वेने कह्युं जे जेम आपणे आ केळा सामुं जोइ रह्या छीए ते कांइ दाखडो ने परि-श्रम लगारे पडे छे? नथी पडतो, तेम भगवानने लगारे दाखडो नथी पडतो जेम ब्रह्मा, विष्णु अने शिव आ ब्रह्मांडना जीवनी उत्पति, स्थितिने प्रलय करे छे ते एमने कांइ दाखडो पडे छे? नथी पडतो तेमज भग-वान सर्वेने जोइ रह्या छे पण लगारे दाखडो ने परि-श्रम नथी पडतो. ॥ २३ ॥

वळी ते हरिभक्ते पूछयुं जे, तमे गढडानी वात करी जे गढडे श्रीजीमहाराज सभामां वात करीने

पोढवा जाता त्यारे खबर कढावता ते सर्वे वातने जाणता हता त्यारे शा सारुं खबर कढावता ? उतर जे, श्रीजीमहाराज तो त्यां सुता सुता सर्वे वातने अंतर्यामिपणे जाणता हता जे आ भक्त कथा वार्ता, किर्तन, वातोनुं मनन करे छे ते बहु सारुं करे छे ते अंतर्यामिपणे तो बहु राजी थाय पण ए भक्तने केम जणाय जे मारा उपर श्रीजीमहाराजनो राजीपो छे ते पोतानो राजीपो पोताना भक्तजनने जणाववा सारुं मनुष्यने मोकलता ने पोते तो सर्वे वातने अंतर्यामिपणे हस्तामळ जाणे छे. ॥ २४ ॥

संते पुछयुं जे कोइ जातनुं दुःखज आवे नहि ने सदाय सुखीआ केम रहेवाय ते कहो ? उतर जे, सुखीआ तो एम रहेवाय छे जे कोइ जातनी मान, मोटप, जोइएज नहि ने जेवा तेवा अन्न वस्त्रादिक जे मळे तेणे करीने देह निर्वाह करे ने मोटा संतनी वातो धारे विचारे ने कोइ पदार्थनी आशाज राखे नहि अने दुःख मात्र तो पदार्थनी आशामांज रह्यां छे त्यां श्लोक " [1]आशाहि परमं दुखं नैराश्यं परमं सुखम्"

---

१ अर्थः—आशा, परम दुःखनुं कारण छे. अने आशाथी रहितपणुं, ते परमसुखनुं कारण छे; कारण के पिंगला नामे वेश्या, यारनी आशा छोडी दोधा पछीज सुखे करीने सुती. । (भा. ए अ ८–४४)

यथा संछिद्य कांताशां सुखं सुष्वाप पिंगला" ते माटे भगवाननी एकांतिक भक्ति विना बीजा कोइ पदार्थनी आशाज राखवी नहि एज सुखीआ रह्यानो उपाय छे पण ते विना बीजो कोइ उपायज नथी. ॥ २८ ॥

पछी हरिभक्ते पूछयुं जे मोटो आपत्काळ आवी पडे पण सत्संगनी समजण मंद पडे नहि ने दिवसे दिवसे सत्संगनो रंग चडतो जाय तेनो शो उपाय छे? उतर जे, मायिक पदार्थने विषे जीवने सत्यता मनाणी छे ते मोटा संतनो समागम करतां करतां असत्यने असार थइ जाय ने कोइ पदार्थने विषे माल मनायज नहि जेम प्रल्हादजीने कोइ पदार्थने विषे माल मनाणोज नहि अने ते प्रल्हादजीने ज्यारे राजगादीए बेसारया त्यारे इंद्रे एम जाण्युं जे प्रल्हादजी तो दैत्यना कूळना छे ते मने दुःख देशे ते माटे हमणांज कांइक उपाय करुं तो ठीक पछी इंद्रे ब्राह्मणनो वेश लइ प्रल्हादजीने याच्यो त्यारे प्रल्हादजी कहे माग त्यारे इंद्रे राजलक्ष्मी मागी ते तेने आपी पछी प्रल्हादजीने कोटडीमां पुरी दीधा अने दश, पंदर, दिवस गया पछी इंद्रे कोटडी उघाडीने प्रल्हादजी सामुं जोयुं त्यां तो प्रल्हादजीने महा सुखीया ने शरिरे पुष्ट देख्या,

त्यारे इंद्रे प्रल्हादजीने कह्युं जे तमारुं सर्वे राज्य मैं
खेंची लीधुं ने कोटडीमां पुर्या तो पण महासुखीया ने
पुष्ट केम छो? त्यारे प्रल्हादजी कहे हे इंद्र! तें मार
सर्वे राजरुप पाप लीधुं ते हुं महासुखीओ थयो छुं ने
आनंदे युक्त थयो थको भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान कर
छुं तेणे करीने महासुखीयो छुं. एम प्रल्हादजी
बोल्या, त्यारे इंद्रने बहु पश्चाताप थयो ने एम जाण्युं
जे ए भगवानना भक्त क्यां ने हुं क्यां? अने जे
भगवानना भक्तने मोटा साधुनो समागम करतां करतां
प्रल्हादजीना जेवी समजण जीवमां नकी थाय तो
भगवान विना बीजा कोइ पदार्थमां माल मनायज
नहि ने ते भक्तने मोटो आपत्काळ आवे तो पण एनी
समजण लगारे मंद पडे नहि जेम नरसींह महेते कह्युं
जे "भलुं थयुं भांग्यो जंजाळ सुखे भजशुं श्रीगोपाळ"
एवी रीते जे भक्तनी समजण छे तेने मोटो आपत्काळ
आवे तो पण समजण मंद पडेज नहि ने दिवसे
दिवसे सत्संगनो रंग चडतो जाय छे पण मंद तो
पडतोज नथी. ॥ २६ ॥

संते पूछयुं जे अंतर द्रष्टिवाळानी समजणमां शो
गुण छे? उतर जे, अंतर द्रष्टिवाळानी समजणमां प
गुण छे जे भगवाननुं समीपपणुं रहे छे ने बुद्धि सूक्ष्म

थाय छे ने अहंग्रंथि गळे छे ने दोषने ओळखे छे ने दोषने टाळी नाखे छे. ने उतम विषयनी प्राप्ति थाय तोय लेवाय नहि ने एकांतिकने ओळखे छे ने भगवाननी मरजीने जाणे छे ए अंतर द्रष्टिवाळानी समजणमां गुण छे अने बाह्यद्रष्टि रहे छे तेणे करीने एकांतिक धर्म समजाय नहि ने अहंग्रंथि वृद्धि पामे छे तेणे करीने दोषने ओळखे नहि ने ते दोष तत्काळ टळे पण नहि ने देशकाळे करीने विषयने विषे चोटी जाय छे ने एकांतिक भक्तने तत्काळ ओळखे नहि ने भगवाननी मरजीने जाणी शके नहि ए बाह्यद्रष्टिवाळानी समजणमां दोष छे. ॥ २७ ॥

संते पूछयुं जे अंतर वृत्ति राखे तेने देहमां कांइ दुःख थाय खरु ? उतर जे, जेवा पाणा फेरवीए ने लाकडां फेरवीए ने परिश्रम पडे ने दुःख थाय तेम तो न थाय पण मन इंद्रियो मात्रनी अहंग्रंथि गळे तेणे करीने शरीरमां शिथिलपणुं रहे छे. ने अंतरवृत्ति राखे छे ते कहे छे जे ध्याने करीने देहने बहु कारसो लागे छे तेणे करीने शरीरमां मंदवाड थइ जाय छे ते केम कहे छे ? त्यारे कह्युं जे ध्यान करे ने अंतरवृति रहेवा मांडे त्यारे प्राणवायु मंद चाले तेणे करीने शरीरमां वायु थाय तेणे करीने शरीरमां कसर रहे छे. ॥२८॥

हरिभक्ते पूछयुं जे जेने अंतर द्रष्टि वर्ते अने बाह्य द्रष्टि वर्ते ते केम ओळखाय? उतर जे, जेने अंतर द्रष्टि वर्तती होय तेने उतम विषय मळे तो देशकाळे करीने लेवाय नहि ने रमणीक पदार्थ देखाय तो पण वृत्ति चोटे नहि अने जेने बाह्यद्रष्टि वर्तती होय ते उतम विषयने विषे देश काळे करीने लेवाय छे ने रमणीक पदार्थने देखे तो वृत्ति चोटी जाय ते विचारे करीने पण निसरे नहि ने बहु दाखडो करे त्यारे मांड मांड निसरे एवे लक्षणे करीने ओळखाय छे एक श्लोक "[1]यत्तदग्रे विषमीव परिणामेऽमृतोपमम्॥ तत्सुखं सात्विकं प्रोक्त-मात्मबुद्धिप्रसादजम्" सत्वगुणी सुख वर्तमान काळे तो विष जेवुं छे ने परिणाम काळे तो अमृत जेवुं छे ते शुं तो सर्वे इंद्रियोने वाळीने भगवान के आत्माने विषे जोडवां ते वर्तमान काळे तो विष जेवुं छे अने परिणामकाळे तो अमृत करतां

---

१ अर्थः—योगाभ्यासना आरंभमां बहु परिश्रमथी थवाना कारणे विषनी पेठे दुःखरुप अने योगनी परिपक्व दशामां शुद्धात्मस्वरुपना प्रकट थवाना कारणे अमृत समान, आत्मा संबंधी बुध्धिना निर्मलपणाथी उत्पन्न थयेल जे सुख ते सात्विक छे।

(गी. अ, १८-श्लो. ३७)

बहु सुख छे ने रजोगुणी सुख वर्तमान काळे तो अमृत जेवुं लागे छे ते शुं? तो सर्व इंद्रियो विषयमां जोडाय ते हमणां तो अमृत जेवुं छे ने परिणाम काळे तो विष करतां पण हळाहळ विष छे. ॥ २९ ॥

हरिभक्ते पूछयुं जे प्रत्यक्ष भगवानना भक्तने विषे अंतर्यामि शक्ति कइ रीते रही छे ने परोक्ष भगवानना भक्तने विषे अंतर्यामि शक्ति कइ रीते रही छे? उत्तर जे, प्रत्यक्ष भगवानना भक्तने विषे अंतर्यामि शक्ति एम रही छे जे ए भक्तने कोइक मोटो आपत्काळ आवनारो होय तो तेने टाळी नाखे छे अने ए भक्तने देहमां कोइक मोटो रोग आव्यो होय तो तेने टाळी नाखे छे ने ए भक्त द्वारे कोइक कार्य करावबुं होय ने जो ए भक्तनुं प्रारब्ध आवी रह्युं होय तो तेना देहने ते अंतर्यामिशक्ति राखे छे. ते जुओने गुणातितानंद स्वामीने शरीरमां मंदवाड आव्यो हतो ते कोइ रीते टळे एवो नहोतो पण तेने टाळी नाख्यो ने आवरदा आवी रही हती ते वधारी दीधी. अने वळी ए भक्तने धर्म, ज्ञान, वैराग्यादिक शीखवां होय तो ते अंतर्यामि शक्ति एना जीवमां बळने पोषे छे तेणे करीने धर्मादिक थोडा दिवसमां सिद्ध थाय छे अने ते भक्त काम, क्रोधादिक दोष

मात्रने पुरुष–प्रयत्ने करीने टाळी नाखे छे एवी रीते प्रत्यक्षना भक्तने विषे अंतर्यामि शक्ति रही छे ने परोक्ष भगवानना भक्तने विषे अंतर्यामि शक्ति रही छे ते तो जेवां जेवां कर्म करे छे ते प्रमाणे भोगवावे छे. ॥ ३० ॥

जे भक्त परोक्ष भगवाननी भक्ति करतो होय ते केवळ भगवानने राजी करवा सारुं अतिशे निष्काम भावे करीने करे तो तेनुं कल्याण थाय के न थाय? उतर जे, प्रत्यक्ष भगवान पृथ्वीने विषे न होय ने जो अति निष्काम भावे करीने भक्ति करतो होय तो तेने जन्मांतरे प्रत्यक्ष भगवानना भक्तनो योग थाय ने पछी भगवाननो योग थाय ते पछी भगवानना धाममां जाय. ॥ ३१ ॥

सवारमां जाणपणानुं छेला प्रकरणनुं ९ मुं वचनामृत वंचाव्युं त्यारे संते पूछयुं जे कइ रीते वर्ते त्यारे संपूर्ण जाणपणारुप वर्त्यो कहेवाय छे ते कहो? उतर जे, ज्ञान कहो के जाणपणुं कहो ए बे तो एकज छे पण नोखां नथी. अने जाणपणुं ते शुं तो चारनां स्वरुपने जाणे एज छे ते धर्मनां, ज्ञाननां, वैराग्यनां, भक्तिनां स्वरुपने जाणवां तेमां धर्म ते शुं तो लोभ, काम, रसास्वाद, स्नेह, ने मान ए पांच दोषने

जीतवा. अने ज्ञान शुं ? तो जीव, माया, इश्वर, ब्रह्म, परब्रह्म ए आदिक जे जे पदार्थ मात्रने यथार्थ जाण्या पछी भ्रान्ति थायज नहि. अने वैराग्य शुं ? तो प्रकृतिनुं कार्य जे नामरुप तेने विषे चित्त चोटेज नहि अने प्रिय पदार्थ तथा असाधारण गुणवान पदार्थने विषे चित्त चोटे नहि ते उपर गोपालानंद स्वामीने पोतानी वात करी देखाडी. अने महिमाए सहित भक्ति ते शुं तो अतिशे हेते करीने भगवानने विषे वृत्ति चोटी जाय छे अने महिमानो तो अवधी नथी. आ प्रमाणे ए चारेनां स्वरुपनी निरंतर स्मृति रहे एज जाणपणारुप भगवानना धामनो दरवाजो छे अने एवी रीत्ये निरंतर जाणपणामां रहेवुं तेज दरवाजे रह्यो कहेवाय छे अने एवो भक्त तो भगवानने अखंड रहेवानुं पात्र थाय छे. अने भगवान पण एवा भक्तना जीवमां निवास करीने रहे छे अने धर्मादिक चारनी स्मृतिरुप जाणपणुं छे एज भगवानना धामनो दरवाजो छे केटलाक संत एम कहे छे जे स्थुळ देहना भाव टाळया ने सुक्ष्म देहना भाव टाळया ने हवे कारण देहने करकोलीए छीए ते कांइ एम कारण देह करकोलाय एम नथी कारण देह तो ओळखातुंज नथी तो करकोलाय क्यांथी तेम जाणपणामां अखंड रहेवुं बहु कठण छे. ॥ ३२ ॥

रात्रे एक संते पूछयुं जे स्वभाव तो जीव साथे एक रस थइ गया छे ते कोइ उपाये करीने टळे एवा नथी ? उतर जे, स्वभाव तो कोइ रीते टळे एवा नथी पण जो मोटा संतने जीव सोंपी दे तो धीरे धीरे जीवमांथी स्वभाव काढी नांखे छे ते उपर द्रष्टांत ? जेम नळपाकने, भीमपाक ग्रन्थ छे तेमां सर्वे रसोइ करवानी विधि कही छे अने तेमां अनेक प्रकारना मसाला नाखवा ने वधु नखाय तो काढवानी रीत पण ए ग्रन्थमां कही छे ने कढीमां मीठुं वधु पडयुं होय तो आ रीते निसरे छे जे ज्यारे कढीमां मीठुं वधु पडयुं होय तो लोटनी पोटली बांधीने कढीमां नाखी ने उकाळे छे तेणे करीने मीठुं पोटलीमां आवे छे ने कढी खारी मटी जाय छे ने कोइ रीते कढीमांथी मीठुं निसरे एवुं नथी तो पण तेने कसबी काढे छे तेम स्वभाव कढीमां मीठानी पेठे जीवमां एक रस थइ गया छे ते मोटा संतनी वातो जीवमां प्रवेश करे ने मोटानो विश्वास होय तो स्वभाव टळे एवा नथी तोय पण टळी जाय छे ते माटे मोटाने मन, कर्म, वचने, करीने जीव सोंपी दे तो कोइ वातनी कसर रहेती नथी. ॥ ३३ ॥

सवारमां त्रण अंगनी वार्ता करीने कह्युं जे त्रण

अंगमांथी एक अंग आवे तो कांइ करवुं बाकी रहेतुं नथी. त्यारे कोइ संते पूछयुं जे चार साधन कह्यां छे ने तमे तो एक केम कहो छो ? त्यारे स्वामी कहे धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति ए चारने दासत्व, पतिव्रता, ने आत्मनिष्ठा ए त्रणमांथी एक अंग आवे तो कांइ करवुं बाकी रहेतुं नथी ते एक एक अंगमां ए चारे आवी जाय छे पछी संते पूछयुं जे कइ रीते अकेका अंगने विषे धर्म ज्ञान वैराग्यने भक्ति ए चार आवे छे ? उतर जे, दासत्वपणाना अंगमां चार आवे छे ते कहीए छीए ते दासत्वनुं ए लक्षण छे जे पोताना स्वामीनी जेम मरजी होय तेम करे पण मरजीथी बारुं लगारे करेज नहि ने खरेखरा दासनुं तो ए लक्षण छे जे धणीनी मरजी प्रमाणेज करे छे पण मरजीथी बीजी रीते करवानो मनसूबोज थाय नहि तेम जेने भगवानने विषे दासत्वपणानी भक्ति होय ते भगवाननी मरजी होय तेमज करे पण बीजुं करवानो मनसूबो थायज नहि एज दासत्व भक्तनुं लक्षण छे. ने ए भक्तने भगवान राजी केम थाय एम मनसूबो थया करे छे अने भगवाननो पण जे भक्त धर्म, ज्ञान, वैराग्य भक्तिने शीखे छे तेना पर बहु राजीपो छे एम जाणीने ए दासत्व भक्त धर्म-

दिकने शिख्या विना रहेज नहि अने जुओ उद्धवजीने दासत्वपणानी भक्ति हती तो देह पर्यंत जेम श्रीकृष्ण भगवाननी मरजी हती एम कर्युं पण पोतानुं मन गमतुं लगारे कर्युं नहि पछी भगवानने एम मनसूबो थयो जे उद्धवजी बद्रिकाश्रममां जाय तो बहु सारुं ते मनसूबाने उद्धवजीए जाणीने भगवानने कह्युं के महाराज हुं बद्रिकाश्रममां जाइश पण मारे ज्ञान नथी पछी श्रीकृष्ण भगवाने एकादश स्कंधमां उद्धवजीने ज्ञान कह्युं त्यार पछी उद्धवजी बद्रिकाश्रममां गया तेम ए दासत्व भक्त होय ते एमजाणे जे भगवानने मारी पासे चारवानां कराववां एम मरजी छे ते मारे जरुर एम कर्या विना रहेवायज केम ? ए तो जरुर करवांज छे. अने हवे पतिव्रत्ता स्त्रीने पोताना पतिने विषेज हेत होय छे ने बीजा पुरुषने तो सडेला कूतरा जेवा जाणे छे ए पतिव्रता स्त्री कहेवाय अने ते पतिव्रताना अंगनी भक्ति तो लक्ष्मीजीनी छे जेम लक्ष्मीजी छे ते वरमाळा लइने भमवानने वर्यां तेम भगवानने विषे जे हेत करवुं ते भक्ति छे ने भगवान विना बीजा सर्वे पदार्थ ने सडेला कूतरा जेवा जाणीने क्यांय हेत थायज नहि ते वैराग्य छे धर्म तो त्रणे अंगमां होय छे पण धर्म विना अंग होयज नहि अने हवे ज्ञान

बाकी रह्युं ते पण एवा भक्तोने विषे होय ते जुओ लक्ष्मीजीने भगवाने कह्युं अमने तमे शा सारुं वर्यां कोइक राजाने वरीए नहि ? त्यारे लक्ष्मीजीए कह्युं जे हे महाराज ! तमारी भक्ति सारूं तो मोटा मोटा राजा चक्रवति राज्यनो त्याग करीने वन प्रत्ये जाता हवा ते कोण राज्यनो त्याग करीने गया तो एक पृथु राजा ने बीजा गय राजा ने त्रीजा नहूष राजा ने चोथा भरत राजा ए सर्वेए तमारी भक्ति सारु राज्यनो त्याग कर्यो एवो तमारी भक्तिनो महिमा छे अने ए तमारी भक्ति ज्यां लगी स्त्रीने पुरुषनुं चिंतवन थाय छे ने पुरुषने स्त्रीनुं चिंतवन थाय छे त्यांसुधी पमाती नथी अने ज्यारे हृदय ग्रंथी छुटी जाय त्यारे ए भक्ति पमाय छे, एवी रीते लक्ष्मीजी बोल्यां त्यारे जुओ पतिव्रताना अंगमां पण ज्ञान आव्युं एवी रीते धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति ए चारे ए पतिव्रताना अंगमां आवे छे. अने हवे आत्मनिष्ठाना अंगमां चारे आवे छे तेने कहीए छीए जे आत्मसत्तारुपे वर्तवुं ते तो अंग छे अने देह, इंद्रियो, मन, बुद्धि, त्रणगुण, त्रण अवस्थाना भावथी नोखा पडवुं ए ज्ञान छे अने देह, इंद्रिय, मन, बुद्धि, गुण, अवस्था ए आदिक सर्वे खोटां समजाय ने तेमां दोष देखाय ते वैराग्य छे अने

प्रथम साधनकाळमां ए समजण छे ते सत्तारुप थइ भगवानमां जोडावुं ए भक्ति छे अने पछी आत्माने विषे सर्वे वृत्तिओ स्थिर थाय छे अने पछी ब्रह्मरुप थाय छे त्यारे तो खरेखरो भक्तिनो अधिकारी थाय छे त्यां श्लोक छे. "[1]ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्" एवो थयो त्यारे तो ए भगवाननी भक्तिनो अधिकारी थाय छे त्यारे जुओ एवामां तो खरेखरी अचळ भक्ति आवे छे एवी रीते आत्मनिष्ठाना अंगमां चारे अंग आवे छे एवी रीते त्रणे अंगमां धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति ए चारे आवे छे. ॥ ३४ ॥

वासना ने स्वभाव ए बे जेते जीवमां रह्या छे तेमां वासनामांथी काम क्रोधादिक स्वभाव निसरे

---

१ अर्थः—ब्रह्मरुप थयो एटले जेने आत्मस्वरुपनो आविर्भाव थयो छे अने प्रसन्न मन छे, एटले क्लेश कर्मादि दोषथी जेनुं मन व्याप्त नथी अने कोइनो पण शोक करतो नथी; तेमज कोइ पदार्थने इच्छतो पण नथी अने सर्व भूतमां सम छे. एटले कोइ वस्तुनो आदर नहि करनार अर्थात् सर्व वस्तुने तृणवत् माने छे ते पुरुष मारे विषे परमभक्तिने पामे छे. । (गी. अ. १८-५४)

छे ते त्रण देहना भावथी जुदा पडीने आत्मनिष्टा द्रढ करवी ने तेना संस्कार लगाडवा ने तप, वैराग्यना संस्कार लगाडवा ते वात सारा सारा साधु करता ते न समजाणी ने बाकी तो भेगा रह्या ते खाइने सुइ रह्या कांइ न कर्युं ने आ जीवने अनादीकाळनी भ्रमणा थइ छे ते देश, काळे, करीने एक निर्धार नथी रहेतो ने जीवमां जे स्वभाव छे ते जेम दूधमां घृत रह्युं छे तथा तलमां तेल रह्युं छे. तेम जीवमां अनादि काळना स्वभाव छे जेम भणनाराए भणवाना संस्कार लगाडया छे तेम जीवे अवळा स्वभावना ने पंच विषयना संस्कार लगाड्या छे ने पोतानी जाणे सारुं मानी ने बेठा छे ते उपर साखी कही जे " सबकुं दोदोलोचन सबकुं दोदो कान, आप आपके ख्यालमे गद्धा बी मस्तान " पण पोतानी भूल ओळखाती नथी ते क्यारे ओळखाय तो कोइ भगवानना एकांतिक साधु होय ते कहे जे आनो स्वभाव ठीक नथी त्यारे ओळखाय छे अने आचार्यजी महाराज पण जाणे केम जे एमने क्रियामां प्रेरवानो सहवास एटले ए पण जाणे अने केटलाकने जुनापणानुं मान ने पोताने मुंझवण आवती होय, ते जो समजु होय तो मुंझवण केम आवे ? ने केटलाक तो साधनने पण खोटां करे छे ने आशरानुंज

બળ લે છે ત્યારે મહારાજનો સિદ્ધાંત જે " [1]ધર્મસ્ત્યાજ્યો ન કૈશ્ચિત્ સ્વનિગમવિહિતો વાસુદેવે ચ ભક્તિર્દિવ્યાકારે વિધેયા સિતઘનમહસિ બ્રહ્મણા સ્વસ્ય ચૈક્યમ્ ॥ નિશ્ચિત્યૈવાન્યવસ્તુન્યણુમપિ ચ રતિં સંપરિત્યજ્ય સન્તસ્તન્માહાત્મ્યાય સેવ્યા ઇતિ વદતિ નિજાન્ધાર્મિકો નીલકંઠઃ ॥ એ શ્લોકમાં કહ્યું, તેને જાણતા નથી માટે જુના નવાનો કાંઇ મેળ નથી નવા હોય ને મોટા સાધુને સંગે કરીને તથા તેમના વિશ્વાસે કરીને પોતે સુખીયા રહે તથા બીજાને સુખીઆ રાખે ને ન સમજતા હોય તે પોતે દુઃખીઆ રહે ને બીજા એનો સંગ કરે તેને પણ દુઃખીઆ કરે ને કહ્યું જે મારે તો જે પદાર્થ કે મનુષ્યમાંથી ક્લેશ આવે તો ધ્યાન ભજન થતું હોય તેમ ન થાય માટે થોડું હોય તો થોડું રાખીએ પણ તે પદાર્થનો તથા મનુષ્યનો ત્યાગ કરીએ ત્યારે ધ્યાન, ભજન, થાય ને કેટલાકને તો ગમે એટલા ક્લેશ આવે તોપણ તે પદાર્થનો તથા મનુષ્યનો ત્યાગ કરી શકે નહિ તે ઉપર વચનામૃત વંચાવ્યા પ્ર. ૧૯–૩૭ ને છેલ્લાનું ૨૦–૨૪ મું ॥ ૩૯ ॥

નારાયણજી બોલ્યા જે દેવરામ માંદા હતા ત્યારે

---

૧ આ શ્લોકનો અર્થ પેજ ૨૧૩ ની ટીપ્પણીમાં કરેલો છે.।

श्रीजीमहाराज जोवा आव्या त्यारे लाकडां ने गजनुं द्रष्टांत दीधुं जेम लाकडांमां लोढानो गज नाखीने बाळे ते लाकडुं बळे ने गज न बळे ए रीते द्रष्टांत दीधु ते उपर देहनी ने जीवनी वात करी जे केटलीकवार आ देह पडयुं ने जीव अनादी छे ते भगवान भज्या विना केटलाक देह धरवा पडे छे. ॥ ३६ ॥

अद्‌भूतानंद स्वामीए वात करी जे स्वरुपानंद स्वामीए सहित अमे साठ साधु नगरमां गया ते जामनगरमां झोळी मागवा मांडी ते झोडीमां अकेकने लींबु जेटलुं अन्न मळवा मांडयुं ते वात श्रीजीमहाराजने कहावी मोकली त्यारे श्रीजीमहाराजे कहावी मोकल्युं जे एक सदगुरु हता तेने शेर एक अन्न एक साहुकारे बांधी आप्युं हतुं ते मळतुं तेना समागममां प्रथम मुमुक्षु एक जण आव्यो तेने ओसामण आप्युं त्यारपछी बीजाने हांडली धोवरामण आप्युं ने त्रीजाने पतर धोवरामण आप्युं एवी रीते मुमुक्षु खपवाळा रह्या माटे तमारे एटलुं मळे ते शुं थोडुं छे? ते वात सांभळीने अमारे सुधी हिंमत आवी ने तेमां बे त्रण साधु नाना हता तेने स्वामीए कह्युं जे तमे आ बकाली मूळा धुवे छे तेनां पांदडां पडयां रहे छे तेने लावीने जमो त्यारे तेणे कह्युं जे ते लावी गोळामां नाखीने

सौ जमीए त्यारे तेनी तो स्वामीए ना पाडी त्यारे तो ते नाना साधुए कह्युं जे अमे वचन लोपीए? त्यारे स्वामीए कह्युं जे आ तळावमां खडपलीउं छे ते उपरथी लावीने खावो. एम वर्ततां जामसाहेबने खबर पडी जे स्वामीना साधु झोळी मागे छे ते तेने अन्न मळतुं नथी पछी तेणे कह्युं जे स्वामी अमारुं अन्न ल्यो त्यारे कहे जे अन्न एकलुं तो न लइए त्यारे ते जामे कह्युं जे जे रीत्ये मारुं अन्न लइ शको ते उपाय मने बतावो त्यारे तेने कह्युं जे अमारा साधु झोळी मागवा आवे त्यारे झोळीमां नाखजो पछी तेणे साधु झोळी मागवा आवे त्यारे झोळीमां पराणे लाडवा नखावे एवी रीते बे चार दिवस एज रीत्ये थयुं तेनी स्वामीने खबर पडी त्यारे त्यांथी चाली निकळया. ॥ ३७ ॥

धमडकाना चोविश गाम ते साहेबे लइ लीधां बाकी गरास कांइ न रह्यो त्यारे तेमां रायधणजीना त्रण दिकरा तेमां मोटो दीकरो वसमो एटले जणसुं वेची खावा मांडी तेवामां श्रीजीमहाराज त्यां पधार्या त्यारे ते डोसी कहे जे महाराज! आ मोटो दिकरो छे ते जणसुं वेंची खाय छे माटे त्रणेने वहेंची आपो त्यारे महाराज कहे ठीक सर्वे घरेणांनी वस्तु भेगी

करो त्यारे तेणे सर्वे भेगुं कर्युं एटले महाराजे वहेंचवा मांड्युं त्यारे महाराज प्रत्ये डोशी बोल्तां जे ते दिवस तो आंख्युं ओडे हती अने रामानंदस्वामी आवता त्यारे एक डोसो सत्संगी हतां तेने अमे भक्ताणी कही बोलावतां एवुं हतुं पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे कोइकने होय तेनुं लइ लउछुं ने न होय तेने आपुं छुं. पण जे रीते तेने मारे विषे हेत थाय तेम करुं छुं पछी ते डोसी बोल्यां जे महाराज ! अमारे आम थयुं तो तमे ओळखाणा. ॥ ३८ ॥

वासना तो अमूर्त छे पण जेने वासना वळगी रही छे ते मूर्तिमान छे तेने टाळवानो उपाय जे स्व-धर्म, संग, आत्मनिष्ठा ने भगवानना माहात्म्ये सहित भक्ति ए छे ॥ ३९ ॥

भगवान राजी केम थाय ? त्यारे कह्युं जे, राजी थाय एवो एक खप जोइए तेमां गृहस्थने देवनी, आचार्यनी, दशोंद विशोंद ने नाम ए सेवा करवी ने त्यागीने देहे सेवा करवी तो भगवान राजी थाय तथा जेम जेनो धर्म कह्यो छे ते प्रमाणे रहेवुं ए रीते सत्संगनी प्रथानी विस्तारीने बहु वार्ता करी ने कह्युं जे त्यागी, ग्रहस्थना धर्म जुदा जुदा छे ते सर्वेने पोत-

पोताना धर्म प्रमाणे वर्तवुं ने आत्मनिष्ठा, वैराग्य, ने भक्ति ते तो बेय ने एकांतिक थकी शीखवां. ॥४०॥

राजबाइए श्रीजीमहाराजने पूछ्युं जे तमने भक्त उपर सेवा करतां राजीपो जणाय छे पण खरेखरो राजीपो तमारे केवा उपर छे त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे हाडकुं छ मास सुधी भूमीमां दाटी मूके पछी तेने कीडी मकोडी अडे नहि एवुं सुकुं थइ जाय ने तेमां चीकाश रहे नहि एवो पंचविषयमांथी जीव कोरो (लुखो) थाय त्यारे अमारे तेवा हरिभक्त उपर खरेखरो राजीपो थाय छे अने ते प्रकारनी निशाळो तथा सभाओ छे तेमां साधुनी सभामां तो विषयनुं खंडन थाय छे तेज साधुनी सभा कहेवाय ने तेज साधुनो मार्ग छे ने जेमां विषयनुं खंडन न थाय ते साधुनी सभा तथा मार्ग न कहेवाय. ॥ ४१ ॥

मध्यनुं ४७मुं वचनामृत वंचाव्युं तेमां पाताळ सुधी पृथ्वी फाटी ए वंचाव्युं तेमां पूछ्युं जे संतने कोइ पदार्थ आपे ने ते उपर जे इर्षा करे तेने पंच महापापी जेवो जाणवो माटे ते भेगुं तो बेसाय उठाय नहि ने बहु दोषेयुक्त कहेवाय त्यारे तेनुं केम समजवुं? ए उपर भरतजीना आख्यानना वचनामृतनी वात करी जे भगवान विना बीजा पदार्थमां हेत थाय

ते मोटुं पाप छे अने इर्षा तो जेने पदार्थमां सत्यता न मनाणी होय तेने तो थायज नहि त्यारे तेने पाप पण शानुं थाय. ॥ ४२ ॥

मोहने प्रमाद टळे त्यारे भगवाननुं सुख जणाय छे ने तेमां मोहनुं रुप जे सत् असत् न जणाय तेमां जे भगवान तथा आत्मा, तथा भगवाननुं धाम ने भगवानना भक्त ते सत्य छे ते सत्य न समजाय अने असत्य जे देहनां पदार्थ तथा देहनां संबंधी तेमां प्रीति ए मोह छे. ने प्रमाद जे भगवाननी प्राप्तिने अर्थे तथा आत्मज्ञानने अर्थे इत्यादिक जे सत्कर्म तेने अर्थे उद्यम न थाय ने देह तथा माइक पदार्थ आदिकने अर्थे क्रियामां प्रवर्ते तेनुं नाम प्रमाद माटे भगवानना दर्शन, स्पर्शादिक जे संबंध तेने विषे अकेकामां बीजां चार चार सुख रह्यां छे ते केने रह्यां छे तो एवो जे भगवानना दर्शनादिकनो विषयी थाय छे ते भक्तने विषे रह्यां छे ते उपर पर्वत भाइनी वात करी ते ज्यारे श्रीजीमहाराजनां दर्शने गढडे आव्या त्यारे पांच दहाडा सुधी अन्न न जम्या त्यारे श्रीजीमहाराजे पूछयुं जे पर्वत भाइ क्यां जमे छे ? त्यारे तेमनां घरनां मनुष्ये कह्युं जे मयाराम भट्ट जमे छे त्यां जमे छे पछी मयाराम भट्टने पूछयुं त्यारे तेमणे कह्युं जे महाराजने चोके

प्रसादी जमे छे. त्यारे ब्रह्मचारीए कह्युं जे आंही तो नथी जमता पछी पर्वतभाइने पूछ्यु त्यारे कहे जे दर्शन करीए छीए तेथी चाल्यु जाय छे तथा कृपानंद स्वामीनी वात करी जे दर्शन करता त्यारे पोताना देहनी पण विस्मृति थइ जाती एवा जे भगवान संबंधी पंचविषयना भोगी छे तेने प्रमादने मोह टळे छे. ॥ ४३ ॥

मोटानी जे वातो छे ते मधना रसने ठेकाणे छे जेम मधमां सर्वे रस आवे छे तेम ने वैताक तो काचुं पण खवाय पण जे मसाला नाखेल वैताकनुं शाक तेनो स्वाद बीजी रीतनो छे तेम मोटानी वातोमां रस अलौकिक छे. ॥ ४४ ॥

इतिश्री सहजानंद स्वामी शिष्य शुकानंद मुनि विरचिते वार्ता प्रसंग समाप्तः ॥

इति वार्ता संग्रहः

समाप्तः ॥

श्री सहजानंदस्वामी शिष्य सद्गुरु शुकमुनीकृत प्रार्थनामाळा प्रारभ्यते.

हुं जेते श्री स्वामिनारायण भगवानने नमस्कार करुं छुं ते केवा छे तो सर्व थकी अतिशे पर एवुं जे पोतानुं अक्षरधाम तेने विषे ब्रह्मरुप एवा जे पोताना भक्तजन तेमणे सेव्यां छे चरण जुगल ते जेनां एवा छे अने वळी केवा छे तो वेदांत जे उपनिषद् तथा व्याससुत्र तेणे करीने बहु प्रकारे जाणवा योग्य छे स्वरुप जेमनुं एवा छे अने प्रभु कहेतां अतिशे समर्थ छे अने वळी केवा छे तो अनेक कोटी एवां जे ब्रह्मांड तेनी जे उत्पति, स्थिति ने प्रलय तेना करनारा जे पुरुषने प्रकृति तेना नियंता छे अने करुणाना सागर छे. ॥ १ ॥

अने भक्ति धर्मना पूत्रने इश्वरना पण इश्वर एवा जेते श्री स्वामिनारायण तेने आश्रर्या एवा जे भक्तजन तेमने ते भगवान दिवस दिवस प्रत्ये प्रार्थना करवा योग्य छे कहेतां भगवान पासेथी जे मागवानुं छे तेनुं ते हरिभक्तने सुखे करीने ज्ञान थाय तेने अर्थे हुं जेते तेने लखुं छुं. ॥ २ ॥

हे श्री हरे ! सर्व निश्चय थकी उत्तम एवो जे तमारा स्वरुपनो निर्विकल्प निश्चय ते मने आपो. ॥३॥

हे प्रभो ! हे स्वामिन् ! हे सुखना सागर तमारी मूर्तिना संबंध थकी थयुं जे सुख ते सर्वे सुखथी उतम छे तेज सुख मने आपो पण ते विना बीजुं जे माइक सुख ते क्यारेय पण आपशो नहि. ॥ ४ ॥

हे हरे ! एक तमारा आकार विना बीजा जे आ लोकने विषे मायामांथी उत्पन्न थया एवा आकार मात्र ते अति तुच्छ थइ जावो तथा अतिशे दुःखरुप थइ जाओ. ॥ ५ ॥

हे भक्ति धर्मना पूत्र ! एवा हरिकृष्ण तमारा माहात्म्य ज्ञाने युक्त एवी जे तमारी एकांतिक भक्ति ते सर्वे थकी उत्तम छे ते भक्ति तमे मने आपो. ॥६॥

अने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान, ने क्रोध ए आदि जे दोष ते रुप जे अधर्मनो सर्ग ते तमारी एकांतिक भक्तिने विषे मोटो अंतरायरुप छे कहेतां मोटा विघ्नने करनार छे ते अधर्मना सर्ग थकी तमे मारी रक्षा करो. ॥ ७ ॥

ज्ञान, वैराग्य, विवेक, ब्रह्मचर्य, अहिंसा ने श्रद्धा ए आदिक जे रुडा गुण ते रुप जे धर्मनो सर्ग ते तमारी एकांतिक भक्तिने विषे मोटो सहायरुप छे कहेतां अतिशे सहायनो करनारो छे ते धर्मना सर्गने विषे मने अतिशे दृढ स्थिति देजो ॥ ८ ॥

हे स्वामिन् ! तमने व्हाला एवा जे तमारा एकांतिक भक्त तेमनो जे समागम ते मने निरंतर देजो ते समागम केवो छे तो सर्व सज्जने माग्यो छे. ॥ ९ ॥

आ लोकने विषे तमारी उपासनाए रहित एवा जे केवल ब्रह्मज्ञानी होय तथा शक्ति–पंथी होय तथा नास्तिक होय तथा कुंडापंथी होय तेनो जे संग ते कोइ प्रकारे मने क्यारेय पण थाय नहि तेवी रीते मारी उपर तमो कृपा करो. ॥ १० ॥

हे नाथ ! हे प्रभो ! हे स्वामिन् ! मने जे तमारुं भक्तपणुं छे तेने विषे कोइ दोष ते कोइ रीते कयारेय पण बाकी रहेवा देशोमां कहेतां तमारो भक्त एवो जे हुं ते तमारे विषे कोइ दोष रही जाय नहि एवी कृपा करजो ॥ ११ ॥

हे स्वामिन् ! तमे ने तमारा जे भक्त तेनो जे द्रोह ते कयारेय पण थाय नहि ए हुं तमारा पासे मागु छुं ते मने आपो. ॥ १२ ॥

तमारा चरणकमलनी सेवानी जे इच्छा ते विना बीजा कोइ पदार्थनी वासना बाकी रही जाय नहि एवी रीते मारी उपर तमे कृपा करो कहेतां एक तमारा चरणकमलनी सेवानी इच्छा रहे पण बीजा कोइ पदार्थनी वासना न रहे एवी कृपा करो. ॥ १३ ॥

स्थुल, सुक्ष्मने कारण ए जे मारा त्रण देह तेने विषे अहंबुद्धि थाशोमां कहेतां ए देह हुं छुं एम मनाशो मां अने ते देह संबंधी पदार्थ मात्र तथा देहना संबंधी जन तेमने विषे ममता थाशोमां कहेतां ए मारा छे एम मनाशोमां अने ते अहंबुद्धि ने ममता, ते तमारा एकांतिक भक्त एवा जे साधु तेमने विषे सर्व प्रकारे थाजो ॥ १४ ॥

हे प्रभो ! ब्रह्मरुप कहेतां ब्रह्म साथे एकत्व भावने पाम्यो एवो मारो जीवात्मा तेणे करीने कहेतां ते ब्रह्मरुप थइने परब्रह्म एवा जे तमे ते तमारे विषे मारे सर्व थकी अधिक एवो स्नेह थाजो ते तमे केवा छो तो सदा पोताना अक्षरधामने विषे विराजमान छो ने धर्मदेवना पूत्र छो. ॥ १५ ॥

तमारा दासनोदास एवो जे हुं ते मने तमारा समीपने विषे राखीने निरंतर तमारुं दर्शन दयो ते तमारुं दर्शन केवुं छे तो तमारा जे एकांतिक भक्त तेमणे निरंतर अतिशे प्रियपणे करीने इच्छयु छे ते दर्शन मने आपो ॥ १६ ॥

हे भक्ति धर्मना पूत्र ! हे भक्तवत्सल ! हे हरे ! तमारी स्तुति करीने ने तमने नमस्कार करीने ने

तमारी पासे में माग्या एवा जे आ गुण ते मने दया करीने आपो. ॥ १७ ॥

भक्ति धर्मना पुत्र एवा जे श्रीहरि तेना जे भक्त तेमणे दिवस दिवस प्रत्ये श्री हरिनी पूजा करीने तेमनी पासे आजे कह्युं छे तेज मागवुं पण बीजुं मागवुं नहि अने प्रमाद जे असावधानपणुं कहेतां करवानुं न करवुं ने न करवानुं करवुं एवुं जे गाफलपणुं तेनो त्याग करीने जे प्रकारे एवा गुण पोतामां आवे एवी रीते वर्तवानो प्रयत्न जतन अतिशे आदरे करीने करवो पण केवल एम मागीने आळसु थइने बेसी रहेवुं नहि अने एवा गुण पोतामां जेवी रीते आवे तेवा साधनमां सावधान थइने वर्तवुं. ॥ १८ ॥

॥ इतिश्री शुकमुनि रचिता प्रार्थना माळा संपुर्णा ॥

इति प्रार्थना

माळा ॥

शुद्धि पत्रम् ॥

पानुं	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	५.	छे	छे
३	३	रुस्त्री	रुखी
१०	४	योगिश्वा	योगिष्वा
१४	६	अथ	अर्थे
२०	११	द्दड	द्दढ
२१	१९	विरोध	निरोध
२२	१४	भगवानन	भगवानने
२३	२१	उत्पात्त	उत्पत्ति
३१	८	मराराज	महाराज
३५	१५	छ	छे
३६	७	ता	तो
४१	३	जेन	जेने
५०	५	त	ते
५०	५	दखाड्याने	देखाड्याने
५०	१२	भात्त	भक्ति
५४	१२	ईंद्र्यो	इंद्रियो
५७	५	द्दढपण	द्दढपणे
५८	१९	हाय	होय
१०७	२१	साचो	सामो

पानुं	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
११२	११	(५)	(६)
११८	१४	इत्यादाक	इत्यादिक
१३४	१६	जावनी	जीवनी
१३५	१३	ज्ञानटाला	ज्ञानटाळी
१४१	१५	तनो	तेतो
१४८	१९	सहि	सहित
१५१	११	तेता	तेतो
१७७	१२	निर्विज	निर्बिज
१७८	१६	यथाथ	यथार्थ
१७८	२१	सत्वसुण	सत्वगुण
१८१	१५	श्रीहरिजीनां	श्रीहरिजीनो
१८२	८	दहनुं	देहनुं
१८२	११	त्यजधर्मधर्मज	त्यजधर्ममधर्मच
१८३	६	अहार	आहार
१८७	१२	सत्पुरुझ	सत्पुरुष
१९५	६	ससुद्र	समुद्र
२२१	१५	पुपषोत्तम	पुरुषोत्तम
२७४	९	छ	छे
२८७	११	छ	छे
२९१	१३	म्वयं	स्वयं
२९५	१	चाळता	चालता

પાનું	પંક્તિ	અશુદ્ધ.	શુદ્ધ.
૩૧૫	૪	દહને	દેહને
૩૨૦	૯	યથાથ	યથાર્થ
૩૨૧	૧૫	કરો	કરી
૩૭૯	૧૧	ઘરામાં	ધરામાં
૩૮૨	૧૨	અસરધામ	અક્ષરધામ
૩૮૪	૨૦	ગ્રાસ્ત્ર	શાસ્ત્ર
૩૯૮	૧૬	સુનિના	મુનિના
૪૧૭	૩	છ	છે
૪૩૮	૧૭	ભમવાનને	ભગવાનને